भारतीय

भारत में सबसे ज्यादा बिकनेवाली सत्य कथा पत्रिका

25 रुपये

मनोरम कहानियाँ

अप्रैल 2002

ठगी कथा विशेषांक



ल्ली से
ाल चलने
ली ठगचाल

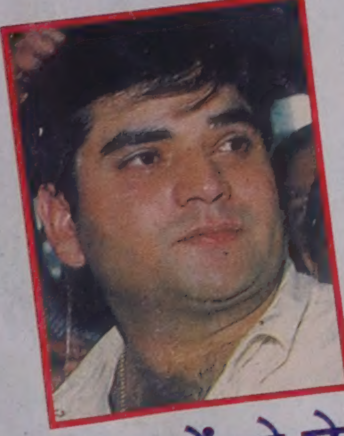
नाब का
टवरलाल

यपुर के
त्यारे
क्टर को
ाजीवन
ारावास

हाराष्ट्र का
भिनेत्री
अश्विनी कर्वे
हत्याकांड

साबरमती
एक्सप्रेस कांड:
सच क्या है?

कीर्तन
वाले ठग



विवादों के घेरे में
विकास यादव

लघु उपन्यास
राजमहल


सूरज की किरणों वाला
इसका उजाला....
Product of An
ISO-9002
Company
IS-418
L9140667
National
LAMPS
NATIONAL
नेशनल
बल्ब
PUBLISITES ADVTG.
आहूजा बल्ब प्रा० लि०
123/377, फजलगंज इण्डस्ट्रियल स्टेट, कानपुर–12
फोन: 213737, 213939 फैक्स: 0512–298298

भारतीय मनोरम कहानियाँ

अप्रैल 2002

इस अंक में

लघुकथाएं



कीर्तन वाले ठग



नितिश कटारा हत्याकांड



मीनाक्षी हत्याकांड



एक अभिनेत्री की मौत

प्रबंध सम्पादक
आर.के. लूथरा
प्रधान सम्पादक
विकास लूथरा
सहायक सम्पादक
वीरेन्द्र सिंह
ले-आउट
रोमी अरोड़ा
इलस्ट्रेटर
राजू गुप्ता

Advertisement Representatives
Delhi
Kishwar Parvez
Mobile: 9810224518
Mumbai
K.M. Srivastava
Ajay Chowdhary
Ph: 4090758
Kanpur
Anil Trivedi
Ph: 635588
Indore-Bhopal
Naveen Jain
Ph: 485243
Ahmedabad
P. Vinod Naidu
Ph: 3732852
Bangalore
M. Sathyavel
Ph: 5561316
Jaipur
Suresh Kaushik
Ph: 352321
Kolkata
Biswajit Dutta
Ph: 2346987
M:9830054021

सम्पादकीय कार्यालय
7, डी.डी.ए. कमर्शियल
सेंटर नं. 5, सेक्टर-1
रोहिणी, दिल्ली-110085
फोन: 7273591, 7167059,
फैक्स: 7167059

आवरण मॉडल: सनोबर कबीर, छाया: हरीश कुमार

E-mail: luthrapublications@hotmail.com
वर्ष 2 अंक 9



बाबा जसबीर सिंह:
भोली सूरत के
काले कारनामे

बाबा जसबीर सिंह एवं बाबा सुखदेव सिंह

कीर्तन वाले ठग

- प्रीत अमृत

लोगों में धर्म के प्रति भारी आस्था होती है। इसी लिए वह साधु-संन्यासी को भगवान मानकर पूजा करते हैं। पर आज के बदले युग में बाबा जसबीर सिंह एवं बाबा सुखदेव सिंह ने विदेश भेजने के नाम पर भोली-भाली जनता को ठगना शुरू कर दिया था



कीर्तन करते बाबा जसबीर सिंह

पंजाब का दिल कहे जाने वाले शहर बरनाला के उत्तर - पश्चिम में एक साधारण-सा गांव नाईवाल बसा हुआ है। कभी रेतीले टीलों वाली यहां की बंजर रही धरती को अब वहां के मेहनती किसानों ने लहलहाती, हरी-भरी सोना उगलनेवाली फसलों की धरती के रूप में परिवर्तित कर दिया है। इसी धरती पर कालांतर में कहीं से एक घुमक्कड़ साधु अचानक आ गए थे और वहां के शांत माहौल में ऐसे रमे थे कि वहीं के होकर रह गये। सदैव प्रभु में लीन रहनेवाले उस साधु बाबा ने दूर जंगल में रहने के लिए एक झोपड़ी भी डाल ली थी।

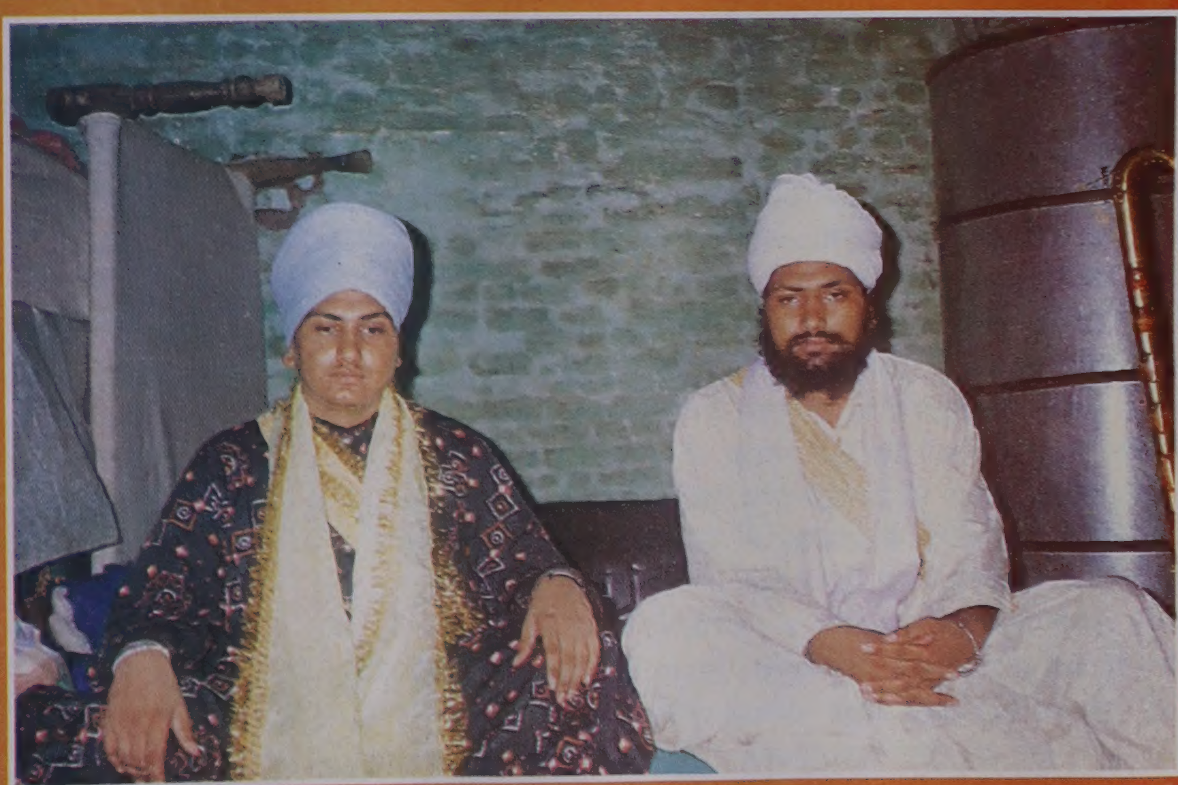
जैसा कि कहा जाता है कि 'जाति न पूछो साधु की'। कोई भी उनका नाम-पता नहीं जानता था। बस, हर समय 'नारायण... नारायण' जपते रहनेवाने उन साधु बाबा के पास कोई मिलने पहुंच जाता था, तो वह 'नारायण. ..नारायण' कहकर ही उसका स्वागत करते थे। इसी वजह से वहां के लोग उन्हें 'नारायण मुनि बाबा' कहकर पुकारने लगे थे। इस तरह वह 'नारायण मुनि या नारायण बाबा' के नाम से मशहूर हो गये थे।

नारायण मुनि या नारायण बाबा को यदि कोई अपने घर पर भोजन के लिए आमंत्रित करता था, तो वह विनम्रता के साथ हाथ जोड़कर इनकार कर देते थे। इसी तरह यदि कोई स्वादिष्ट भोजन या मिठाई आदि लेकर उनकी झोपड़ी पर आता था, तो वह उसे खुद नहीं खाते थे, बल्कि वहां आये अपने भक्तों में बांट देते थे अथवा वहां बैठे बहुत से कुत्तों के सामने डाल देते थे। जब कभी वह जरूरत महसूस करते, आसपास के किसी किसान के दरवाजे पर जाकर कहते, "दो रोटियां तैयार पड़ी हैं क्या?"

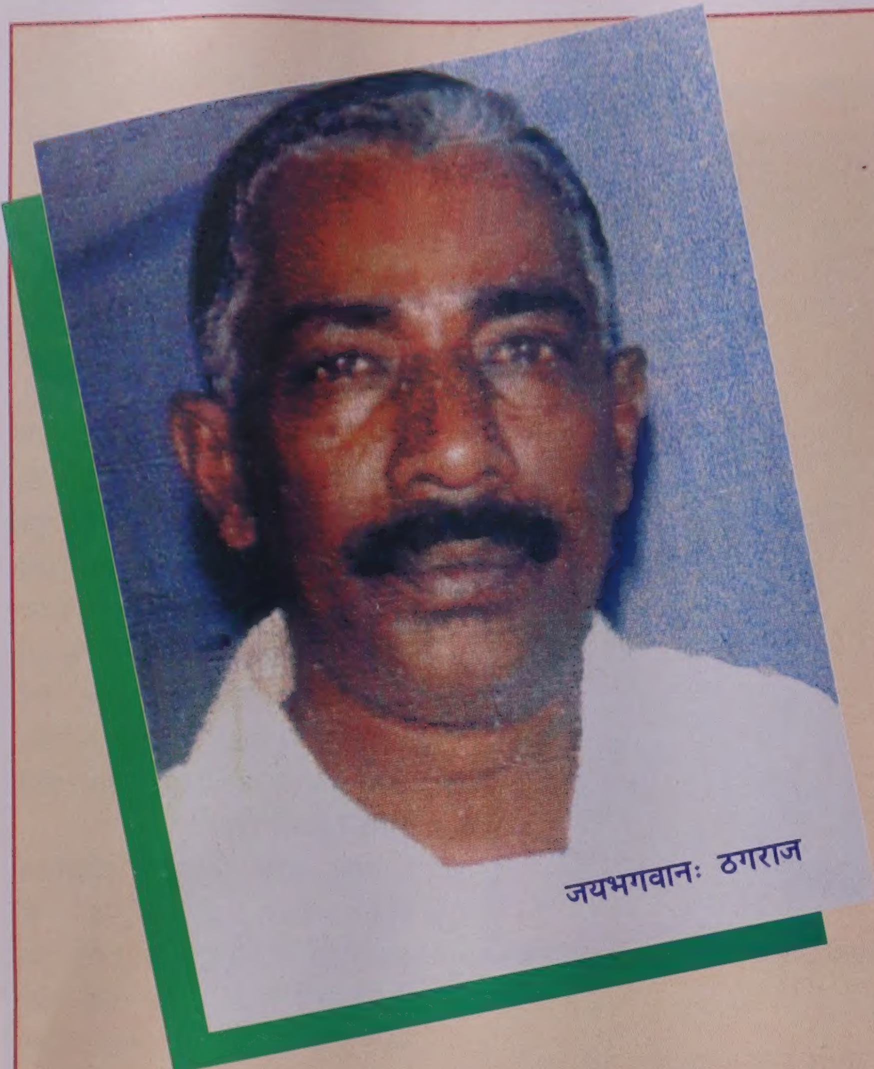
घर की मालकिन या कोई बहू-बेटी कहती कि तैयार है बाबा जी, तो वह केवल दो रोटियां, और दाल-सब्जी, जो भी उस समय तैयार होती, उसे ही खा लिया करते थे। बाबा चाय या दूध कभी नहीं पीते थे। यदि घरवालों ने कह दिया कि "अभी तो तैयार नहीं है बाबाजी। आप बैठिये हम तैयार कर देते हैं।" तो वह विनम्रता से मना कर देते थे और अगले दरवाजे पर जाकर वही सवाल करते थे।

ऐसे सच्चे साधु से प्रभावित होकर बाबा की झोपड़ी के आसपास के किसानों ने एक-एक बीघा जमीन स्वयं ही उन्हें भेंट स्वरूप दे दी थी। इस तरह उनके पास कुल मिलाकर दो-ढाई एकड़ जमीन हो गयी थी। उस जमीन में बाबाजी ने बरगद, पीपल और नीम जैसे पवित्र पेड़ लगा दिए थे। बाद में श्रद्धालुओं ने बाबा की झोपड़ी की जगह एक पक्का

(शेष पृष्ठ 71 पर)



बाबा जसबीर सिंह व बाबा सुखदेव सिंहः विदेश भेजने के नाम पर ठगी



जयभगवानः ठगराज

दिल्ली से नेपाल चलने वाली ठगचाल

- कुमार विकल

जयभगवान किसी सम्पन्न व्यक्ति को बिजनेस में रुपए लगाकर बैठे-बैठाये भारी लाभ का लालच देकर अपने आदमियों के साथ नेपाल भेजता था। फिर वहीं से उनका खेल शुरू होता था, जिसमें वह व्यक्ति पूरी तरह बरबाद हो जाता था और ठगे जाने के बाद भी वह किसी से कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर पाता था

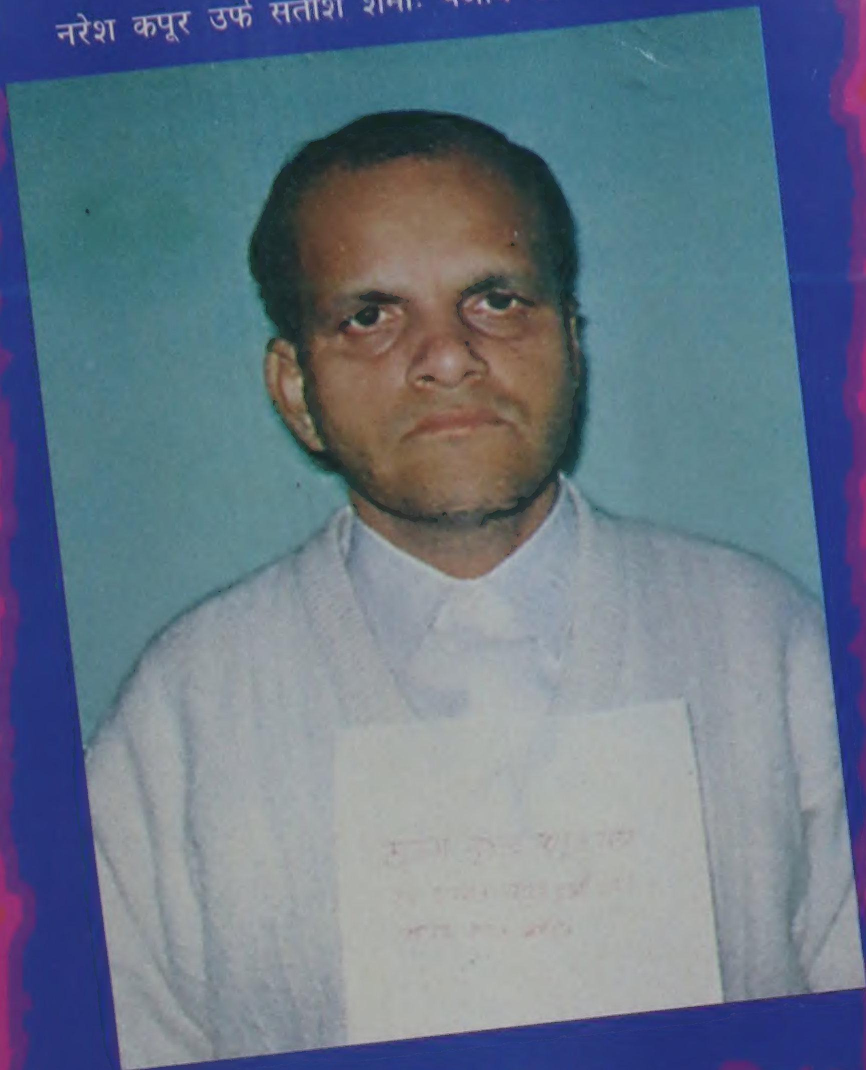
लालाराम वर्मा पी-2/381-382 सुल्तानपुरी में रहते थे। वह दो माह बाद अपने घर पहुंचे, तो उन्हें घर पर ताला बंद मिला। वर्मा को बड़ा आश्चर्य हुआ। अनिष्ट की आशंका भी हुई। वह पिछले 15-20 सालों से इस मकान में रहते थे। इसलिए पास-पड़ोस के लोगों से उनके अच्छे संबंध थे। उन्होंने अपने पड़ोसियों से अपनी पत्नी और बच्चों के बारे में पूछा, तो पता चला कि वह लोग करीब डेढ़ माह पूर्व ही मकान बेचकर रोहिणी चले गये हैं। लालाराम वर्मा का सिर चकरा गया। वह समझ गये कि उन्हें नेपाल में फंसाकर इधर ठगों ने उनके परिजनों को अवश्य ही किसी साजिश का शिकार बना लिया है। वर्मा अपनी पत्नी और बच्चों के पास पहुंचने के लिए बेताब थे। इसलिए उन्होंने पड़ोसियों से उनका पता पूछा। पता चला कि उनकी पत्नी और बच्चे फ्लैट संख्या 156 पाकेट-7, सेक्टर-21 रोहिणी में रह रहे हैं।

लालाराम वर्मा फ्लैट संख्या 156 पहुंचे। उनका दिल यह मानने को तैयार ही नहीं था कि अपने जिस परिवार को वह अपने मकान में छोड़कर गये थे, वह उन्हें किराये के मकान में मिलेगा। लेकिन हकीकत यही थी। दो माह की अवधि में न जाने उनके परिवार पर और क्या-क्या गुजरी हो, यही सोच-सोचकर वह घबराये हुए थे।

(शेष पृष्ठ 29 पर)



फरार अभियुक्त संजीव चोपड़ा



नरेश कपूर उर्फ सतीश शर्माः पंजाब का नटवरलाल

पंजाब के नटवरलाल कहे जानेवाले नरेश कपूर के हाथ इंदिरा विकास पत्र नामक एक ऐसा कुबेर का खजाना लग गया था, जिसकी बदौलत उसने ठगी के ऐसे-ऐसे कारनामे किये जिसे जानकर सभी दंग रह गये

पंजाब में एक और नटवरलाल

– वेद शर्मा 'नीर'

महानगर जालंधर के एस.एस.पी. श्री गौरव यादव के जेहन में बार-बार जालंधर के महाठग नरेश कपूर द्वारा पटना रेलवे स्टेशन से चोरी गये 600 करोड़ रुपए के इंदिरा विकास पत्रों से की जा रही जालसाजियों का रहस्य दिन-पर-दिन गहराता जा रहा था। कर्तव्यनिष्ठ श्री यादव बड़े चिंतित थे। हालांकि जालंधर पुलिस ने नरेश कपूर को पटना रेलवे स्टेशन से 600 करोड़ रुपए के चोरी किये गये इंदिरा विकास पत्रों के प्रकरण में सन्, 1998 में गिरफ्तार कर लिया था, किंतु नरेश कपूर अमृतसर के गुरु नानक अस्पताल से पुलिस को चकमा देकर फरार होने में सफल हो गया था। उस समय से लेकर

(शेष पृष्ठ 20 पर)

जयपुर का बहुचर्चित मीनाक्षी हत्याकांड

डा. राजेश! तेरा यह कैसा प्यार

— राम स्वरूप टाक



मीनाक्षी: प्रेमी को पति वरण करने का परिणाम

डाक्टर तो जीवनदान देनेवाला होता है, पर डाक्टर राजेश ने प्रेमिका से पत्नी बनी मीनाक्षी की हत्या करके लाश बीस फुट गहरे गड्ढे में दबा दी थी। पांच साल बाद खुले इस रहस्यमय हत्याकांड में डाक्टर को सजा तो होनी ही थी

ज यपुर में रामप्रकाश सिनेमा के निकट रहनेवाले बी.डी. सक्सेना रेशान थे। वही क्या, उनका पूरा रिवार ही उदास और दुखी था। क्सेना साहब की बेटी मीनाक्षी बे समय से लापता थी। उनका त्र भी मीनाक्षी को खोजकर लौट आया था। उन्होंने विह्वलता से छा, "मीनाक्षी का कहीं पता ला बेटा?"

"मैंने सब जगह ढूंढ़ लिया है पापा, पर दीदी का कहीं पता नहीं चला।"

"आखिर बिना बताये वह कहां चली गयी? तुमने उसके पति डाक्टर राजेश से पूछा था?"

"हां पापा, वह तो कहते हैं कि मुझे पता नहीं, वह कहां गयी है।"

"यह कैसे हो सकता है? कोई भी पत्नी बिना अपने पति को बताये कहीं कैसे जा सकती है?"

"वह तो ठीक है, लेकिन डाक्टर राजेश ने तो यही कहा है।"

"ठीक है, मैं खुद उससे बात करता हूं।" कहकर बी.डी. सक्सेना ने फोन करके राजेश को अपने घर बुला लिया।

ससुराल पहुंचकर राजेश ने झल्लाकर कहा, "आप लोग मुझे परेशान न करें। मुझे कुछ नहीं मालूम कि मीनाक्षी कहां चली गयी है। जब उसने मुझे कुछ बताया ही नहीं है, तो मैं आप लोगों को क्या बताऊं?"

डाक्टर राजेश की बात सुनकर उसके सामने बैठे सत्तर वर्षीय बी. डी. सक्सेना की आंखें हैरत से फैल गयीं। उन्होंने भर्राये स्वर में कहा, "यह तुम क्या कह रहे हो राजेश! आखिर मीनाक्षी तुम्हारी पत्नी थी। अगर तुम्हें उसके बारे में नहीं पता, तो और किसको पता होगा?"

सुनकर राजेश किसी गहरी सोच में डूब गया। आंखों पर लगा चश्मा उतारकर गरदन लटकाते हुए बोला, "कितनी निर्दयी निकली मीनाक्षी! घर छोड़ने से पहले उसने यह भी नहीं सोचा कि चले जाने के बाद उसके आठ महीने के बच्चे का क्या हाल होगा? उसके चले जाने के पीछे, अपनी बदनामी के डर से मैं तो किसी से कुछ कह भी नहीं सकता।"

"मीनाक्षी घर छोड़कर चली गयी और तुमने हमें इस बात की सूचना तक नहीं दी।" बी.डी. सक्सेना ने उलाहनाभरे स्वर में कहा।

"मैं तो यही सोच रहा था कि पिलानी में उसकी नौकरी लग गई है, अपनी नई-नई नौकरी में व्यस्त होगी। लेकिन जब छह महीने तक उसकी कोई खैर-खबर नहीं मिली, तो मैं पिलानी गया और उसकी तलाश की। जब वह वहां नहीं मिली, तो मैं बदनामी के डर से चुपचाप उसकी प्रतीक्षा करने लगा। मैं यही सोच रहा था कि आज नहीं, तो कल मीनाक्षी स्वयं ही वापस लौट आएगी। इसलिए आप लोगों से झूठ बोलता रहा।"

इसमें हम लोगों से झूठ बोलने की क्या जरूरत थी? फिर भी मीनाक्षी गयी कहां?" सक्सेना ने दुखभरे स्वर में पूछा।

(शेष पृष्ठ 38 पर)



शादी के अवसर पर
डाक्टर राजेश और मीनाक्षी

महाराष्ट्र के जिला नासिक से रोजी-रोटी की तलाश में अंबादास जोशी अपनी पत्नी सुरेखा, बेटे सुजीत और बेटी अश्विनी के साथ सन्, 1982 में मुम्बई के निकटवर्ती क्षेत्र कल्याण (चिकनघर) के एकविरा देवी कालोनी में आकर बस गये थे। अंबादास जोशी को मुलुंड के महापालिका स्कूल में अध्यापक की नौकरी मिल गयी। बेटे सुजीत ने बांद्रा के पेंटिंग स्कूल में दाखिला ले लिया।
बेटी अश्विनी को बचपन से ही चित्रकला, अभिनय, नृत्य और कविता करने का शौक था। मतलब कि जोशी परिवार पूरी तरह से शिक्षित तथा कला प्रेमी था। समय के साथ-साथ अंबादास जोशी के बेटे सुजीत ने पेंटिंग का डिप्लोमा पूरा कर लिया और कला प्रेमी होने के नाते उसने मंच पर एक व्यावसायिक कलाकार के रूप में काम भी शुरू कर दि बेटी अश्विनी को माता-पिता की तरफ से पूरा सहयोग मिला, तो उ भी कला के विभिन्न क्षेत्रों में कई पुरस्कार प्राप्त किये और उसे ख लोकप्रियता भी मिली। उसने मराठी में 'जेव्हा तायडी बदलते,' 'अ बाबा असे का वागतात' जैसे लोकप्रिय नाटक भी लिखे। अश्विनी के लिखे एक बच्चों के नाटक को सन्, 1993 में विशेष पुरस्कार मिला था

अश्विनी ने स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार को लेकर तमाम कविता लिखीं, जो एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित भी हो गयीं। इस कवित संग्रह को 'मनुका' नाम दिया गया। अपनी लोकप्रियता और लोगों मिलनेवाले सहयोग को देखते हुए अश्विनी ने सन्, 1995 में 'अभिरं



अश्विनी कर्वे और गोविंद प्रसादः ऐसा सोचा न था



शुभमः पापा, मेरा कुसूर क्या था

महाराष्ट्र का लोमहर्षक अश्विनी कर्वे हत्याकांड

एक अभिनेत्री की मौत

— के.एम. श्रीवास्तव

बालकला संस्था' की स्थापना की। अश्विनी इस संस्था की संस्थापिका बनी और उसने अपने पिता अंबादास जोशी को इस संस्था का संचालक बनाया। इस संस्था द्वारा अभिनय का प्रशिक्षण दिया जाता था।

अश्विनी ने दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिक 'धमालिका' में अभिनय भी किया। इस धारावाहिक में उसके साथ मराठी के चर्चित कलाकार सुहास भालेकर और किशोर नांदलस्कर ने भी अभिनय किया था। अश्विनी को इस धारावाहिक से अच्छी-खासी लोकप्रियता मिली। उसके स्वभाव में जहां एक तरफ कला के प्रति समर्पित होने की भावना थी, वहीं उसमें जिद्दीपन भी था। वह एक बार जिस काम को करने के लिए ठान लेती थी, वह उसे पूरा करके ही दम लेती थी।



अश्विनी धीरे-धीरे बसंत की 23 ऋतुएं पार कर चुकी थी। यानी अब वह 23 वर्ष की हो चुकी थी। बेटी कितनी भी प्रतिभावान हो, मां-बाप को उसके विवाह और सुखी जीवन की चिंता होती ही है। अंबादास जोशी को भी अश्विनी के विवाह की चिंता होने लगी। बारहवीं तक पढ़ाई करने के बाद अश्विनी अभिनय और लेखन की दुनिया से जुड़ गयी थी। इसलिए उसके लिए उचित वर की तलाश करने में अंबादास को काफी भागदौड़ करनी पड़ी। इसी भागदौड़ के दौरान उनके एक परिचित ने उन्हें बताया कि उसकी नजर में एक लड़का गोविंद है, जो अश्विनी के लिए हर तरह से उचित होगा। अंबादास जोशी को भी यह रिश्ता ठीक लगा।

मुम्बई का सबसे निकटवर्ती पर्वतीय स्थल है माथेरान। यहां पहुंचने के लिए मुम्बई लोकल ट्रेन से लगभग दो घंटे का समय लगता है। इसका निकटतम स्टेशन है नेरल। नेरल से ही माथेरान जाने के लिए खिलौना गाड़ी मिलती है। लोगों की आवाजाही के कारण नरेल छोटा-सा कस्बा होने के बावजूद यहां भीड़-भाड़ बनी रहती है। नेरल के ही पूर्व सरपंच शशिकांत कर्वे का बेटा गोविंद प्रसाद कर्वे विवाह योग्य था। स्वस्थ, सुंदर और आकर्षक गोविंद प्रसाद कर्वे ने बारहवीं तक पढ़ाई पूरी करने के बाद आई.टी. आई. से डिप्लोमा हासिल किया था और पिता के 'श्री फेब्रिकेशन इंजीनियरिंग' वर्कशाप का काम संभाल लिया था। शशिकांत कर्वे की पत्नी नीला नरेल के ही एक प्राइमरी स्कूल में प्रधान अध्यापिका थीं। खाता-पीता परिवार था। शशिकांत अपनी दो बेटियों, रोहिणी और सुवर्णा की शादी करके पहले ही मुक्त हो चुके थे।

शशिकांत चाहते थे कि उनके बेटे गोविंद प्रसाद का भी विवाह हो जाता, तो वह अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाते। घर और वर्कशाप की जिम्मेदारी गोविंद प्रसाद ने पहले ही संभाल ली थी। श्रीमती नीला की भी इच्छा यही थी कि गोविंद प्रसाद का विवाह जल्दी से हो जाए। वह भी उसके लिए योग्य वधू की तलाश कर रही थीं। इसी दौरान उनकी मुलाकात अंबादास जोशी से किसी ने करवा दी। दोनों परिवारों ने तय किया कि पहले लड़का-लड़की आपस में एक-दूसरे को पसंद कर लें, तो बात आगे चलायी जाए। अश्विनी और गोविंद प्रसाद को आमने-सामने लाया गया। दोनों ने एक-दूसरे को पसंद कर लिया और 'चट मंगनी पट ब्याह' वाली बात पर दोनों की शादी तय हो गयी। दोनों पक्षों ने यह तय किया कि शादी का खर्च लड़कीवाले ही उठायेंगे।

24 अप्रैल, 1999 को कल्याण के राम मारुति मंगल कार्यालय में बड़ी धूमधाम से अश्विनी और गोविंद प्रसाद का विवाह हो गया। इस शुभ अवसर पर मुम्बई के नाटक, फिल्म और टी.वी. के कई कलाकारों के अलावा शिक्षक आदि भी उपस्थित थे। इसी अवसर पर अश्विनी की कविता पुस्तक 'मनुका' का विमोचन भी अभिनेत्री नयना

"ऐसी एक रात आयी,
वह आग की लपटों में समा गई।
उसका तन, जल रहा था,
पति, उस जलते बदन पर तेल डाल रहा था,
वह भय और आतंक से चीख रही थी,
'बचाओ...बचाओ...' की आवाजें आ रही थीं
अंधेरी रात थी, वह बच्चे को पुकार रही थी।
यह सब कुछ उसी ने रचा था,
उसके शरीर पर, उसने तेल डाला था।
वह अपने पति से कह रही थी,
'मुझे बचाओ...बचाओ... मुझे बचाओ...'
लेकिन, वह सब कुछ चुपचाप देख रहा था।
उसका शरीर जलने का इंतजार कर रहा था।"

अश्विनी द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'मनुका' की एक कविता का अनुवाद जो उसके आखिरी समय में सच साबित हुआ।

मौत की फोन पर सूचना दी, तो उस समय वह पुणे गये थे और उनका बेटा सुजीत नाटक के लिए वाशी गया था। घर पर सिर्फ उनकी पत्नी सुरेखा ही थी। जब अंबादास जोशी और सुजीत घर लौटे, तो उन्हें यह दुखद समाचार मिला। समाचार मिलते ही वह सभी लोग नेरल चले आये थे।

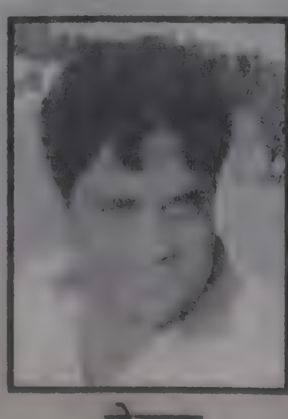
अंबादास जोशी की शिकायत के आधार पर नेरल पुलिस ने 24 दिसंबर को आगे की जांच के लिए गोविंद प्रसाद कर्वे को गिरफ्तार कर लिया। अपनी गिरफ्तारी के बाद गोविंद प्रसाद ने अपनी बीमारी का बहाना बनाया, तो पुलिस उसकी जांच के लिए उसे कर्जत के सरकारी अस्पताल ले गई। दो-तीन बार जांच करने के बाद, जब उसे कोई बीमारी नहीं मिली, तो पुलिस ने उसे 7 जनवरी, 2002 तक के लिए पुलिस रिमांड पर ले लिया।

अब यह गोविंद प्रसाद का दुर्भाग्य था या पुलिस का सौभाग्य कि इसी दौरान जे.जे. अस्पताल से अश्विनी और शुभम् की पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी आ गयी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट ने सारे रहस्यों से परदा उठा दिया। जे.जे. अस्पताल के डाक्टरों ने अपनी पोस्टमार्टम रिपोर्ट में लिखा था कि दोनों की मौत जलने से पहले ही हो चुकी थी। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में साफ-साफ लिखा था कि अश्विनी के सिर के पिछले भाग में किसी भारी चीज से दो बार किये जाने के निशान हैं और उसकी मौत जलने से पहले ही हो चुकी थी। लेकिन शुभम् की सांस नली में कार्बन के कण पाये गये थे। शुभम् की मौत जलने से पहले नहीं, जलने के बाद हुई है।

इस पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद पुलिस को पूरी तरह विश्वास हो गया था कि अश्विनी और शुभम् की किसी सोची-समझी योजना के तहत हत्या की गई है। गोविंद प्रसाद कर्वे को अभी तक इस बात की जानकारी नहीं थी कि अश्विनी और उसके बेटे की पोस्टमार्टम रिपोर्ट पुलिस को मिल चुकी है। वह अपने आपको इस मामले में निर्दोष ही बता रहा था। आखिर पुलिस ने अपने तरीके से उसके साथ पूछताछ शुरू की। पहले तो गोविंद प्रसाद अपना बयान बार-बार बदलता रहा था, लेकिन जब पुलिसिया प्रश्नों की बौछार होने लगी, तो वह टूट गया और उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

गोविंद प्रसाद कर्वे द्वारा पुलिस को दिये गये बयान के आधार पर जो कथा उभरकर सामने आयी, उसके अनुसार, विवाह के बाद से ही गोविंद प्रसाद और अश्विनी के बीच कभी नहीं पटी। दोनों के बीच हर दिन किसी न किसी बात को लेकर विवाद होता रहता था। हर काम अश्विनी अपनी इच्छा के अनुसार ही करती थी। गोविंद प्रसाद उसे घर-परिवार के तौर-तरीके समझाने की कोशिश करता था, लेकिन अश्विनी हमेशा उसका उल्टा ही करती थी। गोविंद ने उसे बार-बार समझाया कि जब वह नाटकों में काम करती थी, उस समय की बात अलग थी। लेकिन अब वह शादीशुदा है, इसलिए उसे अपने पति और ससुराल के अनुसार ही सब कुछ करना चाहिए। कई बार ससुरालवालों के समझाने के बाद भी अश्विनी ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया और हमेशा अपने नाटकों की ही बात करती रहती थी।

अश्विनी की इस बात से गोविंद प्रसाद मानसिक रूप से तनाव महसूस करने लगा था। घटना के एक दिन पहले, यानी 22 दिसंबर को गोविंद प्रसाद ने अश्विनी को शिव भगवान का प्रसाद दिया। घर की सुख-शांति के लिए उसने दो दिन का मौन व्रत रखा था। इसी लिए वह 22 दिसंबर को शिव मंदिर में पूजा करने गया था। उस रात अश्विनी ने गोविंद प्रसाद से पूछा, "तुम कुछ बोलते क्यों नहीं?"



लेखक
के.एम. श्रीवास्तव

इस बात को लेकर दोनों में नोक-झोंक हुई थी। अश्विनी ने गोविंद से कहा भी था कि अब वह दोनों ठीक से रहेंगे और अब वह कभी झगड़ा नहीं करेगी। उसे भला क्या पता था कि उस दिन के बाद उसकी आवाज हमेशा के लिए बंद हो जाएगी।

उस रात गोविंद प्रसाद की आंखों के सामने अश्विनी की एक-एक घटना गुजरती जा रही थी। उसकी आंखों में नींद नहीं थी। उसने अपने आपको समझाया और हमेशा के लिए इस तनाव से मुक्त हो जाने की योजना पर विचार करने लगा। अब वह किसी भी तरह से अश्विनी को लेकर कोई तनाव नहीं चाहता था। उसने पहले से ही तेजाब की बोतल लाकर घर के बाथरूम में छिपा दी थी। 23 दिसंबर, 2001 की सुबह अपनी योजना को कार्यान्वित करने से पहले गोविंद प्रसाद ने कई बार सोचा कि शायद उसके भाग्य में यही लिखा होगा। उसे अपने बच्चे का भी ध्यान नहीं रहा। संयोगवश उस दिन उसकी मां किसी काम से डोंबिवली चली गयी थी। गोविंद प्रसाद चार बजे के लगभग माथेरान चला गया। अश्विनी और उसका बेटा शुभम् घर पर ही थे।

लगभग साढ़े छह बजे अश्विनी अपने बेटे शुभम् को साथ लेकर बगल में ही चक्की पर आटा लेने गयी। घर खुला था। गोविंद प्रसाद सबकी नजरें बचाता हुआ दबे पांव घर के भीतर जा छिपा। अश्विनी शुभम् को लेकर जैसे ही घर में घुसी, मौका देखकर गोविंद ने पहले से ही तैयार रखी लोहे की छड़ से उसके सिर के पीछे जोर से मारा। इसके पहले कि अश्विनी कुछ समझ पाती, गोविंद प्रसाद ने उसी जगह पर दूसरा वार किया। हमला इतनी जोर से हुआ कि अश्विनी जहां खड़ी थी वहीं गिरकर ढेर हो गई।

इस भयानक कांड के बाद गोविंद प्रसाद घबरा गया था। बाद में वह बाथरूम में गया और वहां छिपाकर रखी तेजाब की बोतल उठा ले आया। अश्विनी के मृत शरीर को उसने हॉल में बिछी चारबाई छह की चटाई पर रखा। शुभम् की कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। वह मम्मी-पापा करता हुआ इधर से उधर घूमकर रो रहा था।

गोविंद प्रसाद ने सावधानी के तौर पर घर का दरवाजा बंद कर दिया और अश्विनी के शरीर पर तेजाब की बोतल खाली कर दी। उसके बाद उसने लाइटर जलाकर आग लगाने की कोशिश की। लेकिन आग नहीं लगी, तो वह दौड़कर बेडरूम में गया और चादर उठा लाया। चादर अश्विनी के शरीर पर डालकर उसने उसमें आग लगा दी। घर में धुआं देखकर शुभम् और भी जोर से रोने लगा। गोविंद प्रसाद पर तो जैसे शैतान सवार था। उसे अपने बच्चे का भी मोह नहीं रहा। वह दोबारा बेडरूम में गया और वहां से चादर लाकर शुभम् पर लपेट दिया और उसका गला घोंट दिया। गला घोंटने के बाद उसने शुभम् को भी अश्विनी के बगल में लिटा दिया। अबोध शुभम् मां की गोद में हमेशा के लिए सो गया।

इस घटना को दुर्घटना बनाने के लिए गोविंद प्रसाद ने चटाई के पास लालटेन गिरा दी, जिससे ऐसा लगे कि आग लगने से ही दोनों की मौत हुई है। यह सब करने के बाद गोविंद प्रसाद अपने घर से लगभग चार सौ फुट की दूरी पर रहनेवाले चाचा के पास गया और उनसे आग लगने की बात बताते हुए, उन्हें साथ लेकर नेरल पुलिस थाने पहुंचा।

इस घटना को लेकर जब गोविंद प्रसाद की मां श्रीमती नीला कर्वे से बात की गई, तो उसने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया। ●

(कथा पुलिस सूत्रों और अश्विनी के परिवारवालों के कथानुसार)

लूट का इतिहास रचनेवाला तानाशाहः सानी अबाचा

– रोमी शीराज मुद्राराक्षस

इस दुनिया में ऐसे अनेक तानाशाह हुए हैं, जिन्होंने पहले तो अपनी जनता को सब्जबाग दिखाकर स्वयं सत्ता हासिल कर ली, फिर इन्होंने न सिर्फ शासनतंत्र की धज्जियां उड़ा दीं, वरन् देश और जनता को जमकर लूटा। उनकी राह में जो भी अवरोध बनकर आया, उसे मिट्टी में मिलाने के साथ-साथ अवैध रूप से देश का पैसा विदेशी बैंकों में जमा कर दिया। और जब ऐसे तानाशाहों को देश छोड़ना पड़ा, तो वह फ्रांस, ब्रिटेन, अमेरिका, स्वीट्जरलैंड आदि देशों में लूटे गये धन की बदौलत शहंशाहों की तरह रहने लगे। ऐसे लोगों में युगांडा के ईदी अमीन, हैती के डुवेलियर, फिलीपींस के मार्कोस, जायरे के मोबूतू आदि प्रमुख हैं।

कुछ लोगों ने तो इस चतुराई से देश का धन गबन किया कि आज तक पता नहीं चल पाया कि लूटा धन आखिर गया तो गया कहां? इंडोनेशिया के पूर्व राष्ट्रपति सुहार्तो ने तो देश की हर कंपनी का ठेका अपने परिवार के सदस्यों को ही दे रखा था। माचिस से लेकर मोटरकारें तक सुहार्तो के ही बेटे-बेटी बनाते-बेचते थे। ऐसा ही एक तानाशाह था नाइजीरिया का सैनिक तानाशाह सानी अबाचा। अबाचा ने लूट की हर सीमा को पार करते हुए देश के बीस हजार करोड़ रुपये (भारतीय मुद्रा में) लूटे और उन पैसों को अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस व स्वीट्जरलैंड के बैंकों में जमा कर दिया। ऐसा माना जाता है कि अबाचा की लूट की रकम इससे भी ज्यादा है। यह भी माना जा रहा है कि अगर सन् 1998 में इस तानाशाह की मात्र 53 वर्ष की आयु में मृत्यु न हो गई होती, तो अबाचा लूट की दुनिया में वह मिसाल कायम करता कि सुहार्तो या मार्कोस जैसे तानाशाह तो बौने नजर आते। नाइजीरिया अफ्रीकी महाद्वीप के पश्चिमी किनारे पर स्थित एक ऐसा देश है, जहां तेल बहुतायत में होता है। तेल बेचकर इस देश को हर साल अरबों रुपयों की कमाई होती है।

सन् 1993 में अबाचा ने एक रक्तहीन क्रांति कर यहां की गद्दी पर कब्जा जमा लिया था। उस समय देश की जनता (करीब 12 करोड़) काफी खुश थी, क्योंकि वह करीब 15 साल से सैनिक शासन झेलती आयी थी और अबाचा ने झूठे वादे कर लोगों का दिल जीत लिया था।

अबाचा की शुरू से ही व्यापार में रुचि थी, क्योंकि अबाचा के पिता का कानो में ट्रांसपोर्ट का सफल धंधा था। कानो इस मुस्लिम देश का सबसे बड़ा प्रांत तो है ही, इसी प्रांत ने इस देश को सबसे ज्यादा सेनाधिकारी



लुटेरा राष्ट्रपति सानी अबाचा

व राजनीतिज्ञ भी दिये हैं। शुरू में अबाचा स्वयं तो व्यापार करता ही था, उसके दो भाई व बाद में दो बेटे भी व्यापार क्षेत्र में उतर आये थे। इसी व्यापार ने उसे सिखाया कि पैसा कैसे व कहां-कहां छिपाया जा सकता है। जब अबाचा की रुचि सेना में जाने की हुई, तो शुरू से ही वह उच्च पद पर पहुंचकर सैनिक क्रांति करके सत्ता पर काबिज होने का सपना देखने लगा।

अबाचा के साथ काम कर चुके अधिकारियों का कहना है कि अबाचा ने कभी भी देश या देश के नागरिकों की कोई फिक्र नहीं की। उसे चाहत थी, तो अपनी असीमित ताकत बढ़ाने की ओर अपार धन की। अगर कोई उसके रास्ते का रोड़ा बनता भी, तो उसे समाप्त करने में उसे जरा भी देर नहीं लगती थी। कई बार मीटिंग के दौरान वह काला चश्मा चढ़ाये सोया करता था। मगर यह जानते हुए भी अधिकारी कुछ नहीं कर पाते थे। वह शायद ही कभी किसी फाइल को उठाकर देखता था और सिर्फ उन्हीं बातों पर ध्यान देता था, जो उसके फायदे की होती थी। उसने अपने विरोधियों को जेल भेजवाया, लंबी सजाएं दिलवाईं व कइयों की हत्याएं तक करवा दीं। अबाचा के पहले सत्ता में रहे एक और लुटेरे तानाशाह

इब्राहिम बाबिनगिदा ने भी देश की काफी दौलत लूटी थी। पर सत्ता में आने पर अबाचा ने उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की। उल्टे स्वयं लूट-खसोट में लग गया। वह कई बार मूल्य से ज्यादा कीमत पर विदेशों से सरकारी सामान खरीदता और बेचने वाला असली कीमत अपने पास रखकर बाकी राशि अबाचा के किसी विदेशी खाते में जमा करवा देता। यही नहीं, अबाचा ने तमाम ऐसी मशीनों व उपकरणों के लिए पैसा चुकाया, जो कभी आई ही नहीं।

जब अबाचा सत्ता में नहीं आया था और सिर्फ सैनिक अधिकारी ही था, तब भी उसके दोनों बेटे मोहम्मद और इब्राहिम काफी मोटी रकम यहां से ले जाकर विदेशों में जमा किया करते थे। कई बैंकवालों का कहना है कि उन्हें मालूम ही नहीं था कि दोनों सभ्य तथा शालीन लड़के नाइजीरिया के तानाशाह के बेटे हैं व धन लूट का है। लूट के सारे मामले ने उस समय तूल पकड़ा जब 8 जून, 1998 को अबाचा किसी प्रांत में जाने की तैयारी में था। अपने संगमरमर से बने महल से निकलकर वह प्रांत की ओर बढ़ने के बजाय पास ही बने एक विशाल बंगले की ओर गया, जहां तीन भारतीय वेश्याएं उसका पहले से ही इंतजार कर रही थीं। अबाचा चूंकि 53 वर्ष का था। इसलिए उसे कामशक्ति बढ़ानेवाली गोली वियाग्रा की जरूरत पड़ी। अबाचा हृदय रोगी था या नहीं, या उसे उच्च रक्तचाप जैसी कोई बीमारी भी थी या नहीं, इसका तो कोई पता नहीं चलता (इन रोगियों को वियाग्रा न लेने की सलाह दी जाती है), मगर मरने का कारण वियाग्रा थी या कुछ और, इसकी जानकारी किसी को नहीं दी गई और अगले ही दिन काफी हड़बड़ी में उसे दफना दिया गया। न उसे राजकीय सम्मान दिया गया, न ही उसके शव का पोस्टमार्टम ही किया गया। इसके बाद ही सारे देश में यह सुगबुगाहट होने लगी कि अबाचा ने जो अरबों रुपये लूटे हैं, उनका क्या होगा?


अबाचा की पत्नी मरियम

सारे मामलों ने तब तूल पकड़ा, जब अबाचा की विधवा मरियम ने यह इच्छा जाहिर की कि वह अपने पति की मृत्यु से गहरे सदमें में है और सऊदी अरब स्थित पवित्र स्थानों की यात्रा करना चाहती है। इस फैसले से नये राष्ट्रपति ओबासांजो को कुछ शक हुआ और उसने पुलिस को निर्देश देकर मरियम को ऐन उस समय हवाई जहाज पर चढ़ने से रोक दिया, जब वह हवाई जहाज की ओर बढ़ने ही वाली थी। दरअसल मरियम के साथ करीब पचास बड़े सूटकेस थे। जब उन सूटकेसों को खोला गया, तो बारह सूटकेसों में तो कीमती कपड़े, जूते, जेवर, परफ्यूम आदि मिले, मगर बाकी 38 सूटकेसों में सिर्फ नोट ही नोट भरे थे। मरियम को तुरंत उसके घर में ही नजरबंद कर लिया गया। और तब शुरू हुई दुनिया की सबसे बड़ी लूट की तफ्तीश।

शीतयुद्ध के दौरान अमेरिका ने ही तमाम तानाशाहों द्वारा लूटे गये धन को अपने यहां जमा तो करवा ही रखा था, जांच करने से भी हमेशा आनाकानी ही करता रहता था। चूंकि ज्यादातर तानाशाह कम्युनिस्ट ताकतों से नफरत करते थे, इसलिए अमेरिका को ऐसे तानाशाह ही पसंद आते थे। अमेरिका जनता की त्रासदी से कभी भी पिघलता नहीं था। अमेरिका को पता था कि तानाशाह जनता को ही लूटकर पैसा अमेरिकी बैंकों में जमा कर रहे हैं, फिर भी अमेरिका चुप्पी साधे रहता था। कई बार जब अमेरिका ने पैसा वापस दिलवाया भी, तो वह रकम काफी मामूली ही रही। उस पर तुर्रा यह कि जांच ज्यादातर निजी जासूसों ने ही की, अमेरिकी खुफिया संस्थाओं ने नहीं। आज जब इन देशों का आर्थिक ढांचा चरमरा रहा है और पूरी दुनिया एक सूत्र में बंधती जा रही है, तभी अमेरिका को लगा कि अब तानाशाहों के पैसे की सही जांच करवानी जरूरी है। कई देशों में आये तानाशाहों ने उन देशों को इतना लूटा है कि वहां आर्थिक ढांचा ही चरमरा गया है। इसका असर विश्व व्यापार व अमेरिका पर भी पड़ना था, इसी लिए अमेरिका चुप्पी साधे नहीं रह पा रहा। यूरोपीय संघ ने भी लूटी गई संपत्ति की जांच को स्वीकृति दे दी है, साथ ही किसी भी विदेशी अधिकारी को घूस देना एक अपराध घोषित कर दिया है।

बाद में जांच से यह पता चला कि अबाचा का पूरा परिवार ही लूट में लिप्त था। काफी रकम तो स्वीट्ज़रलैंड के बैंकों में जमा है। अबाचा ने नाइजीरिया के खजाने से 203 अरब डॉलर चुराये और कई अरब रुपये उसने अवैध व्यापार के जरिये कमाये। उसके देश में जो भी कंपनी ठेका लेती थी, वह अबाचा को मोटी रकम देती थी। अबाचा ने देश को सुधारने व विदेशी दुष्प्रचार को रोकने के लिए भी काफी पैसा खर्च करने का नाटक किया। पर सारा पैसा विदेशी बैंक खातों में जमा करवाता रहा, जिनकी संख्या सौ से भी ऊपर है। अबाचा के सहयोगी रहे एक मंत्री के पास तो 5000 करोड़ रुपया जमा है। अबाचा के जमाने में भ्रष्टाचार खूब पनपा और अफसरों व सैनिक अधिकारियों की जेबें ही गर्म होती रहीं। हद तो यह है कि किसी भी विदेशी बैंक ने अरबों रुपया जमा करते समय जरा भी ध्यान नहीं दिया कि आखिर इतना रुपया जमा करवाने वाले के पास पैसा आया कैसे? वह भी नगद। अबाचा के दोनों बेटे मुहम्मद और इब्राहिम हवाई जहाजों में रुपया भरकर विदेश ले जाते थे और आराम से खातों में जमा करवा देते थे। सन्, 1997 में ही लंदन स्थित सिटी बैंक ने इस तरह पैसा जमा होने पर उंगली तो उठाई ही, यह भी कहा कि सारा पैसा तानाशाह अबाचा का है और संदिग्ध है। उधर स्विस बैंकों के अधिकारी आराम से पैसा जमा करते रहे और कई बार तो स्वयं नाइजीरिया जाकर पैसा ले आये, जिसे अबाचा परिवार ने बेहद पसंद किया। अबाचा के मरते ही जो सैनिक समिति बनी, उसने जगह-जगह से अबाचा के 77 करोड़ डालर खोज निकाले। अबाचा की कई बेनामी संपत्तियां भी थीं, जो जब्त कर ली गयीं। जांच शुरू होते ही अबाचा के पुत्र मुहम्मद ने सिटी बैंक खाते से मोटी रकम निकालने की कोशिश की, पर चूंकि पैसा टाइम डिपाजिट में था, इसलिए दो हफ्ते तक निकाला ही नहीं जा सकता था। शुरू में तो नयी सरकार ने विदेशों में जमा पैसे की ओर ध्यान ही नहीं दिया था, पर जब सेना के अफसरों ने राष्ट्रपति ओबासांजो को अबाचा के कारनामों की फाइल थमाई, तभी अमेरिका, फ्रांस आदि देशों के राष्ट्राध्यक्षों से संपर्क साधकर राष्ट्रपति ओबासांजो ने विश्वास जताया कि अबाचा द्वारा लूटा गया धन जल्द ही नाइजीरिया लौटेगा।

अमेरिका की एफ.बी.आई. ने हर खाते की जांच शुरू कर दी है। लंदन में एक जज ने फैसला देकर अबाचा के हर खाते को सील करवा दिया है। ओबासांजो के सुरक्षा सलाहकार लेबनान व कुवैत जैसे देशों में जाकर पैसे की जांच करवा रहे हैं। अबाचा के रिश्तेदारों व दोस्तों से भी गहरी पूछताछ जारी है। अबाचा की पत्नी मरियम इसे बदले की कार्यवाही तो बताती ही हैं, यह भी कहती हैं कि सारे खेल सेना के अफसरों का है, इसलिए अपनी गर्दन बचाने के लिए उनके निर्दोष पति पर इल्जाम लगा रहे हैं। उनके पास 38 सूटकेसों में नोट कहां से आये, यह पूछने पर वह बगलें जरूर झांकने लगती हैं। मरियम ने सरकार से सहयोग करने की बात तो कही ही है, पर अबाचा के पुत्र मुहम्मद ने इससे साफ इनकार कर दिया है, जो इस समय एक राजनेता की हत्या के आरोप में बंदी है। अबाचा के दूसरे पुत्र इब्राहिम की मृत्यु एक विमान दुर्घटना में पहले ही हो चुकी है। अबाचा ने लूट का जो इतिहास रचा है, वह अपने आप में अनोखा तो है ही, यह भी बताता है कि सत्ता के शीर्ष पर आये लोग कितने कम समय में कितनी लूट मचा सकते हैं। आज बहुत-से देशों में तानाशाह हैं, मगर उनकी लूट का स्तर क्या होगा, यह भविष्य में शायद ही पता चल पाये। ●

मुम्बई और ठाणे जिला की सीमा पर एक छोटा-सा स्टेशन है, दहिसर। ठाणे का पुलिस थाना काशीमीरा इसी की सीमा पर है। इसलिए दोनों ओर के लोगों का यहां आना-जाना लगा रहता है।

काशीमीरा क्षेत्र में 'अखिल भारतीय भ्रष्टाचार निर्मूलन समिति' का दफ्तर है, जो गरीब और मजबूर लोगों की सहायता करने के साथ-साथ भ्रष्टाचार के खिलाफ अपनी आवाज उठाता था। इस समिति के कार्यकर्ता और पदाधिकारी देश भर में अपना काम करते थे। इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष रवींद्र द्विवेदी काशीमीरा कमानी निवास, पांडुरंगबाड़ी में लोगों से मिलते थे और उनकी समस्याओं को सुनकर यथाशक्ति उन्हें निबटाने की कोशिश करते थे।

दहिसर से प्रकाशित स्थानीय साप्ताहिक समाचार पत्र 'मेरा देश मेरी मातृभूमि' के संपादक राजू कुरील रवींद्र द्विवेदी के इस काम से काफी खुश थे और उनकी प्रशंसा के समाचार अपने साप्ताहिक में प्रकाशित करते रहते थे। इस



नेता जी नं. 420

— के.एम. श्रीवास्तव

कार्यालय में लगभग सात महिला कर्मचारी भी थीं। ये सभी रवींद्र द्विवेदी के पत्रों को सरकारी, गैर सरकारी और उच्च अधिकारियों तक पहुंचाने या भेजवाने का काम करती थीं। सभी पत्रों का पूरा विवरण एक रजिस्टर में दर्ज रहता था। बड़े-बड़े पुलिस अधिकारियों के साथ, रवींद्र द्विवेदी के बड़े-बड़े चित्रों से उनका दफ्तर भरा पड़ा था। रवींद्र द्विवेदी को लोग प्यार से 'नेताजी' भी कहते थे।

नेता जी उर्फ रवींद्र द्विवेदी सफेद कुरता पायजामा, काली जैकेट पहनकर ही घूमते थे। इसलिए उनका नाम 'नेताजी' पड़ गया था।

7 जुलाई, 2001 को 'साप्ताहिक मेरा देश मेरी मातृभूमि' के प्रथम पृष्ठ पर एक समाचार प्रकाशित हुआ, जिसे पढ़कर सभी को आश्चर्य हुआ। समाचार में लिखा था, "झूठी शिकायतों का बादशाह, शातिर बदमाश, महाठग, रवींद्र द्विवेदी।" इस शीर्षक के साथ-साथ विस्तार से समाचार भी प्रकाशित किया गया था। प्रकाशित समाचार के अनुसार, भ्रष्टाचार निर्मूलन समिति के नाम पर समिति सम्पूर्ण भारत में भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने का राग अलापती थी। जबकि रवींद्र द्विवेदी झूठी शिकायतें भेजने में माहिर बताया जाता है। किसी भी सरकारी अधिकारी या पत्रकार के खिलाफ, मनगढंत, झूठी शिकायत भेजना या उन पर अश्लील आरोप लगाना रवींद्र द्विवेदी का गोरखधंधा था।

समाचार में आगे था, "कुछ भ्रष्ट अधिकारियों को अपना मोहरा बनाकर ईमानदार अधिकारियों के खिलाफ भी झूठे अश्लील आरोप लगाने की सनसनीखेज जानकारी मिली है। इसके खिलाफ विभिन्न पुलिस थानों में कई मामलों के बाद भी पुलिस कोई कार्रवाई नहीं कर सकी है। बताया जाता है कि नेताजी पर धोखाधड़ी, मारामारी, हत्या के प्रयास व बलात्कार तक के लगभग एक दर्जन मामले दर्ज हैं।"

साप्ताहिक में प्रकाशित इस समाचार ने सबको चौंका दिया। इतना ही नहीं, इस तरह के समाचार 'दोपहर का सामना', 'खबरें' 'आजकल', 'दैनिक विचार और आवाज' समेत कई प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए।

3 अगस्त, 2001! शाम को रवींद्र द्विवेदी अपने दफ्तर में बैठा था। दफ्तर की सभी लड़कियां अपने बॉस द्विवेदी उर्फ नेताजी के आदेश का पालन कर काम में लगी थीं। तभी उनके किसी आदमी ने उन्हें फोन पर सूचना दी कि कस्तूरबा मार्ग पुलिस थाने से कुछ अधिकारी उनकी गिरफ्तारी के लिए पहुंचने वाले हैं। नेताजी ने सूचना पाकर पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना दी कि कुछ गुंडे उनके दफ्तर में आकर उन पर हमला करने वाले हैं। लेकिन पुलिस ने नेताजी की शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया। इस बीच कस्तूरबा मार्ग का पुलिस दल नेताजी की गिरफ्तारी के लिए उनके दफ्तर पहुंच चुका था। अपनी गिरफ्तारी के लेकर रवींद्र द्विवेदी उर्फ नेताजी ने काफी शोर मचाया, लेकिन कस्तूरबा मार्ग पुलिस थाने के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक चन्द्रमोहन के आदेश पर नेताजी को गिरफ्तार करके थाने लाया गया।

थाने में नेताजी ने सभी पुलिस अधिकारियों को नौकरी से निकलवा देने की धमकी दी। लेकिन पुलिस ने उन्हें लॉकअप में डाल दिया। आखिर यह सारा किस्सा क्या था?

3 अगस्त को प्राणजीवन सावला ने कस्तूरबा मार्ग पुलिस के पास शिकायत दर्ज करवायी थी कि 'अखिल भारतीय भ्रष्टाचार निर्मूलन समिति' के राष्ट्रीय अध्यक्ष रवींद्र द्विवेदी ने बावन वर्षीय प्राणजीवन सावला से नकली 'एंट्री करप्शन कमेटी' और रेल-विभाग का मुफ्त 'प्रवास पास' देने के बदले उनसे 40 हजार रुपये ऐंठ लिए। जब प्राणजीवन सावला को इन दोनों पहचान-पत्रों के नकली होने का पता चला, तो उन्होंने इसकी शिकायत पुलिस से की। इसी आधार पर कस्तूरबा मार्ग पुलिस ने कथित नेताजी को गिरफ्तार किया।

इस गिरफ्तारी के बाद एक और मामले का भंडाफोड़ हुआ, जिसके अनुसार यह समिति सरकारी विभाग 'एंटी करप्शन ब्यूरो' के समानांतर 'एंटी करप्शन कमेटी' की तरह काम कर रही थी। भ्रष्टाचार निर्मूलन समिति



रवींद्र द्विवेदीः राजनीति की आड़ में धंधेबाजी

के नाम से पंजीकृत संख्या 7284 को नेताजी ने सन्, 1991 में पंजीकरण कराया था। लेकिन बाद में इसी पंजीकृत संख्या का उपयोग वह एंटी करप्शन कमेटी और अखिल भारतीय भ्रष्टाचार विरोधी समिति के नाम के साथ भी करता था। रवींद्र द्विवेदी उर्फ नेताजी, गोरखपुर उ.प्र. का रहनेवाला था। उसके पिता का नाम राम मूरत है। पढ़ाई-लिखाई में कमजोर, नेताजी बने रवींद्र को बड़े-बड़े लोगों से मिलने-जुलने और अपने आप को चर्चा में रखने का काफी शौक था। इस संबंध में वह दिल्ली और लखनऊ के कई चक्कर भी काट चुका था और बड़े-बड़े मंत्रियों के सचिवों से मुलाकातें भी कर चुका था।

सन्, 1990 में रवींद्र मुम्बई आया और अपने आपको सामाजिक कार्यकर्ता बताकर लोगों के बीच अपनी अच्छी पहचान बनाने में सफल हो गया। उसका कार्यक्षेत्र शुरू से ही पांडुरंगबाड़ी काशीमीरा रहा। इसी बीच उसकी मुलाकात भ्रष्टाचार विरोधी मंच के अध्यक्ष गिरधर चतुर्वेदी से हो गई। चतुर्वेदी अपने काम से काफी लोकप्रियता हासिल कर चुके थे। समाज और प्रशासन ने उनका कई बार सम्मान भी किया है। रवींद्र द्विवेदी ने चतुर्वेदी की इस लोकप्रियता का लाभ उठाया और अपना जाल फेंकना शुरू किया। जब गिरधर

नेताजी ने सूचना पाकर पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना दी कि कुछ गुंडे उनके दफ्तर में आकर उन पर हमला करने वाले हैं। लेकिन पुलिस ने नेताजी की शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया

चतुर्वेदी को रवींद्र द्विवेदी की हरकतों के बारे में पता चला, तो उन्होंने उसे अपनी संस्था से निकाल दिया। वहां से निकाले जाने के बाद रवींद्र द्विवेदी पांडुरंगबाड़ी में चन्द्रभूषण शर्मा के यहां रहने लगा। कुछ दिनों बाद उसने चन्द्रभूषण शर्मा के मकान पर कब्जा कर लिया और वहीं से अपनी गतिविधियां चलाने लगा। उसने सन्, 1993 में 'राम मंदिर' निर्माण के नाम पर रसीद बुक छपवायी और काफी रुपया बटोर लिया। पुलिस के पास इसकी शिकायत भी की गयी थी।

किसी शातिर अपराधी की तरह काम करने वाला रवींद्र द्विवेदी इतना तेज था कि वह अपने साथ चार-पांच आदमी लेकर किसी भी पुलिस अधिकारी के दफ्तर में पहुंच जाता और कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद उनके साथ अपने फोटो भी खिंचवाया करता। ऐसे ही उसने सौ से अधिक फोटो अपने दफ्तर में लगा रखे थे।

रवींद्र द्विवेदी का जाल सम्पूर्ण भारत में फैला हुआ था। एंटी करप्शन कमेटी के नाम पर वह कार्ड देकर, पांच हजार से पच्चीस हजार रुपये तक वसूलता था और बड़े-बड़े अधिकारियों और अमीरों के खिलाफ नेताओं और उच्चाधिकारियों के पास इसकी शिकायत भेज दिया करता था।

उसके खिलाफ, पहली बार 1991 में भायंदर पुलिस के पास मामला दर्ज हुआ। 1993 अ 1994 में अपराध क्रमांक 110 अ 107 के तहत ठाणे के मजिस्ट्रेट उसे 'तड़ीपार' करने का आदेश दिया था। कुछ दिनों तक व तड़ीपार रहने के बाद, फिर अप धंधे में संलग्न हो गया। धीरे-धी उसके अपराधों के मामले बढ़ गये। काशीमीरा पुलिस के पा अपराध क्रमांक 100/92, धा 384, 385, 101/93, धारा 143 147, 148, 149, 336, 337 382, 504, 506, 5/95, धार 37(1) 136, 36(ई), 134 आर्म्सएक्ट 27, 49/95, धार 395, 363, 341, 440, 504 506, 120 (8), 85/(घ) 95 औ 87/95 के तहत धारा 452, 323 324, 504, 506 के अंतर्गत छ मामले दर्ज किये जा चुके थे। यह नहीं, नेताजी के खिलाफ अकेले भायंदर पुलिस थाने में दर्जनों मामल दर्ज हुए। इसके बावजूद उसक हौसले नहीं टूटे। और 1999 म उसने भ्रष्टाचार निर्मूलन समिति क नाम से अपनी समिति को एफ-7284 क्रमांक से पंजीकृत करवा लिया

समिति के पंजीकृत होते ही उसने नई दिल्ली, चेन्नई, हैदराबाद कोलकाता, अमृतसर, गुवाहाटी शिमला जैसे शहरों में भी अपने दफ्तर खोल दिये और खुलकर स्वय ही भ्रष्टाचार करने लगा। वह अधिकतर अपने आपको एंटी करप्शन का ही अध्यक्ष बताया करता। अपनी इसी 'पहचान' के चलते उसने उत्तर भारतीय नेताओं के संरक्षक नाम से मुम्बई में कार्यालय खोला और लाखों रुपये बटोर लिये। इस बात का पता जब स्थानीय नेताओं को लगा, तो उन्होंने रवींद्र द्विवेदी के खिलाफ शिकायतें दर्ज करवाईं। एक बार तो उसने भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा के नाम पर काफी बड़ा कार्यक्रम किया और लोगों को बेवकूफ बनाया।

जिस समय कस्तूरबा मार्ग पुलिस ने इस झूठी शिकायतों के बावशाह को गिरफ्तार किया, उस समय उसके दफ्तर से विभिन्न मंत्रियों और विभागों को भेजी जाने

वाली झूठी शिकायतों के लगभग डेढ़ सौ पत्र भी मिले।

कस्तूरबा मार्ग पुलिस ने उसे अदालत में खड़ा किया, जहां से उसे जमानत मिल गई। दो दिन बाद काशीमीरा पुलिस ने रवींद्र द्विवेदी उर्फ नेताजी को उसके दफ्तर से फिर दोबारा गिरफ्तार कर लिया।

भ्रष्टाचार निर्मूलन समिति की आड़ में एंटी करप्शन कमेटी के नाम से नकली पहचान-पत्र बेचने वाले नेताजी को गिरफ्तार करके, काशीमीरा पुलिस थाने ले आयी। काशीमीरा पुलिस थाने के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षण महादेव पिंपलकर इस नकली नेता के बारे में अच्छी तरह जानते थे, क्योंकि उसने पिंपलकर के खिलाफ भी पुलिस के उच्च अधिकारियों के पास शिकायतें भेजकर उनका तबादला करवा दिया था। लेकिन जब इस नकली नेताजी की असलियत के बारे में जानकारी मिली, तो अधिकारियों ने रवींद्र द्विवेदी के खिलाफ कार्रवाई करने का आदेश दे दिया।

वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक महादेव पिंपलकर ने काशीमीरा में एक पत्रकार-सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में उन्होंने बताया कि पुलिस से जानकारी मिली कि भ्रष्टाचार निर्मूलन समिति के नाम से ठाणे में दफ्तर चलाने वाला रवींद्र द्विवेदी संस्था के नाम को अंग्रेजी में अनुवाद करके 'एंटी करप्शन कमेटी' का नाम देता है। इस नाम से लोगों को भ्रम होता है कि यह कोई सरकारी संस्था है। इस बात का लाभ उठाकर रवींद्र द्विवेदी हजारों रुपये लेकर आई-कार्ड बेचता है। इस कार्ड को वह 25 हजार रुपये तक में उसने बेचा है। एंटी करप्शन के नाम पर उसने कई प्रतिष्ठित लोगों को ब्लैकमेल भी किया है।

ऐसे ही एक शिकायत पानी सप्लाई करने वाले आत्माराम गांवड़ ने भी की थी। आत्माराम ने बताया कि रवींद्र द्विवेदी ने उसे अपने दफ्तर में बुलाया और कहा कि वह जो पानी लोगों को सप्लाई करता है, वह गंदा पानी होता है। वह या तो उन्हें दस हजार रुपये दे या वह उसकी शिकायत करके उसे जेल भेजवा देंगे और पानी सप्लाई बंद करवा देंगे। आत्माराम भी एंटी करप्शन कमेटी का नाम सुनकर डर गया और उसने नेताजी को दस हजार रुपया लाकर दिये। नेताजी ने उसे इतने भर से ही नहीं छोड़ा। उससे कहा कि वह हर महीने दो हजार रुपये उन्हें देता रहे।

रवींद्र द्विवेदी ने पत्रकारों के सामने इस बात को स्वीकार किया कि उसे इस नकली एंटी करप्शन कमेटी के नाम पर हर महीने लगभग तीन लाख रुपए की कमाई होती है। इस कमाई से वह 72 हजार रुपये का भुगतान अपने दफ्तर में काम करने वाले लोगों को वेतन के रूप में देता है। पुलिस ने उसके खिलाफ आरोप-पत्र तैयार करके अदालत भेजा, जहां से उसे जमानत मिल गई। काशीमीरा पुलिस ने उसके खिलाफ भा.दं.सं. की धारा 34, 384, 419 और 420 लगाई। अदालत ने उसे जमानत दे दी। रवींद्र द्विवेदी की शैतानी खोपड़ी में क्या-क्या था, इस बात का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसने एंटी करप्शन कमेटी के अध्यक्ष के नाम पर पुलिस अधीक्षक नांदेड़ (महाराष्ट्र) के पास पहुंचकर अपना परिचय दिया और सुरक्षा के नाम पर पुलिस की जिप्सी नंबर एम.एच-12 पी-ओ 432 से नांदेड़ जिले का दौरा किया था इस तरह वह अपने साथ किसी आरोपी को भी साथ ले जाता था। और उससे मोटी रकम लेकर उसका काम करवाता था।

पुलिस को शक है कि इस नकली संस्था के नाम पर रवींद्र द्विवेदी उर्फ नेता जी ने देश भर में जो अपने अधिकारी नियुक्त किये हैं, वह लोगों को झूठा कार्ड और प्रमाण पत्र देकर व पदाधिकारी बनाकर रुपये बटोर रहा था। जिन लोगों को उसने ये प्रमाण-पत्र दिए थे, संभवतः वे स्वयं भी ऐसी ही ठगी कर रहे होंगे। इस संस्था पर बैन लगाने और इसके देश भर में फैले कार्यकर्ताओं के कार्य पर रोक लगाने के लिए केन्द्र से मांग की जा रही है। ●

(कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित)

एक और नटवरलाल

(पृष्ठ 7 का शेष)

अभी तक नरेश कपूर और जालंधर पुलिस के बीच चूहा-बिल्ली वाला खेल लगातार चल रहा था। आखिर 10 जनवरी, 2002 को एस.एस.पी. श्री गौरव यादव के कुशल नेतृत्व में जालंधर पुलिस को एक बड़ी कामयाबी मिली। नरेश कपूर को देहरादून (उत्तरांचल) में सतीश शर्मा के नाम से जालसाजी की बेनामी संपति के साथ जालंधर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने नरेश कपूर उर्फ सतीश शर्मा की पत्नी और बेटी के साथ-साथ लगभग बीस लोगों के एक बड़े गिरोह का पर्दाफाश किया, जो बैंकों से कई करोड़ रुपए डकार चुका था।

नरेश कपूर उर्फ सतीश शर्मा ने अपना अपराधिक जीवन सन् 1989 में अपने पार्टनर सुभाष चंद हत्याकांड से आरंभ किया था और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा था। महाठग के जीवन की काली किताब के पहले अध्याय में ही रहस्य-रोमांच की अनेक लोमहर्षक घटनाएं जुड़ी हैं, जिन्हें जानने के लिए नरेश कपूर उर्फ सतीश शर्मा के अतीत को पढ़ना जरूरी है।

महानगर जालंधर के 601, माडल टाउन निवासी वेद कपूर का पुत्र नरेश कपूर बचपन से ही ऊंची उड़ानों के साये में जीता रहा था। पिता के छोटे-मोटे कामों से उसे न संतोष था, न ही कोई रुचि। जवानी में कदम रखते ही ठोस जमीन पर जीने वाले पिता से उसकी तकरार स्वाभाविक थी। रोज-रोज की तू-तू, मैं-मैं से तंग आकर आखिर एक दिन वेद कपूर ने कह दिया कि "अगर तुम्हें अपनी मनमानी ही करनी है, तो तुम अपना अलग कारोबार क्यों नहीं कर लेते?"

"क्या कारोबार करूं मैं? आपके पास कुछ होता, तभी तो कुछ करता।"

"लाखों लोग नौकरियां करते हैं। तुम्हें कोई नौकरी नहीं मिलती?" नरेश कपूर की बात को बीच में ही काटकर वेद कपूर ने अपना क्रोध दबाकर कहा।

"आपने नौकरी करके इस मकान के अलावा और क्या बना लिया है?" नरेश ने वेद कपूर को कोरा-सा जवाब दिया।

"मैंने तो कुछ नहीं किया। देखता हूं, तू क्या तीर मारता है?" वेद कपूर ने शिकायत के लहजे में कहा।

"जब आप अपने होकर मेरी भलाई नहीं चाहते हैं, तो गैरों से मैं क्या उम्मीद करूं?" नरेश कपूर की बातों में निराशा साफ झलक रही थी।

"अगर तू ऐसा ही समझता है, तो ऐसा ही सही। आज तो मैंने कह दिया। आज के बाद मैं कुछ नहीं कहूंगा। तुझे जो जी में आए, कर।" वेद कपूर ने उसके विचारों से तंग आकर कहा। उन्हें नरेश कपूर से कोई आशा भी नहीं थी। इस तकरार के बाद तो बाप-बेटे में बोलचाल तक बंद हो गयी। नरेश कपूर के खुराफाती दिमाग में कई योजनाएं आयीं, पर वह उन पर अमल नहीं कर पाया।

1985 में नरेश कपूर ने प्रीतनगर, सोढ़ल (जालंधर) निवासी सुभाषचंद के साथ मिलकर "अमित पाईप" के नाम से फैक्ट्री चालू की। नरेश कपूर और सुभाष ने जी-तोड़ मेहनत की। धीरे-धीरे पाइपों का कारोबार चल पड़ा। मगर नरेश कपूर ने चार साल में इस व्यापार में जितना रुपया कमाया, उससे वह संतुष्ट नहीं था। तब उसने प्रापर्टी डीलर का काम शुरू किया। नरेश कपूर जमीन-जायदाद के इस व्यापार में होनेवाले लाभ में अपने शैतानी दिमाग के कारण सुभाष के हिस्से में हेराफेरी करता रहा। सुभाषचंद को जब मालूम हुआ, तो उसने कहा, "तुम ऐसा क्यों करते हो? जब हम दोनों बराबर के हिस्सेदार हैं, तो यह बेईमानी क्यों?"

"मैं समझा नहीं।" अंजान बनते हुए नरेश कपूर ने कहा।

"मतलब तो साफ है। जब खर्च में मैं बराबर का पार्टनर हूं, तो आमदनी में भी मेरा बराबर का हिस्सा होना चाहिए।"

"तो तुम्हारा कहना है कि मैं आमदनी में हेराफेरी करता हूं।" नरेश कपूर ने सुभाषचंद की बात को पूरा होने से पहले ही सवाल किया।

"हां, मुझे तो ऐसी ही सूचना मिली है।" सुभाषचंद ने साफ कहा।

"अपने चमचों, केवल और राजा की बातों में आकर तुम ऐसा कह रहे हो।" नरेश कपूर ने सुभाष से कहा।

"बात केवल और राजा की नहीं है।" सुभाषचंद ने समझाया।

"केवल और राजा की बातों पर तुम्हें विश्वास है, मुझ पर नहीं?" नरेश कपूर ने फिर सवाल किया।

"जब तक तुम ठीक थे, मैंने कभी कुछ कहा है क्या? पर जब तुम गलत कर रहे हो, तो मुझे बोलना पड़ा।" सुभाषचंद ने फिर कहा।

"ठीक है, अब अपना हिसाब तुम अपने पास रखो।" नरेश कपूर ने बनावटी गुस्सा दिखाते हुए कहा।

"मेरा ऐसा कोई विचार नहीं है। अगर तुम ठीक समझो, तो मुझे हिसाब रखने में कोई दिक्कत नहीं है।"

सुभाषचंद को नरेश कपूर ने हिसाब तो सौंप दिया, पर वह सुभाषचंद की इस बात से चिढ़ गया। उसने केवल और राजा को अपनी ओर करने की नीयत से उन्हें अपने मायाजाल में फंसा लिया और अमित "पाईप फैक्ट्री" की जमीन पर कब्जा करने की योजना बना ली। जिस जमीन पर फैक्ट्री थी, वह वक्फ बोर्ड की थी, जो 99 साल की लीज पर सुभाषचंद के नाम थी। नरेश कपूर ने एक गुप्त योजना के अधीन सुभाषचंद को रास्ते से हटाकर जमीन पर कब्जा कर लिया।

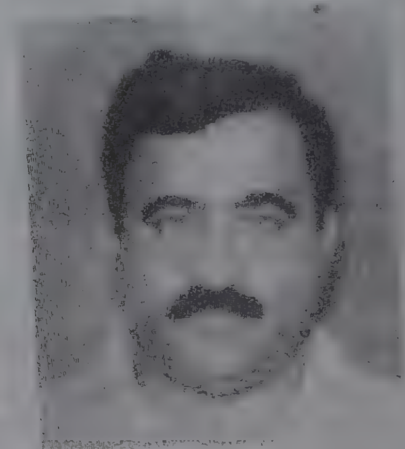
23 मई, 1989 को सुभाषचंद की पत्नी वीना रानी ने अपने पति के लापता होने का मामला दर्ज



अभियुक्ता नीरू कपूर



मुख्य अभियुक्त नरेश कपूर



अभियुक्त भूपेश कुमार जॉली



अभियुक्ता रेखा सूर

कराया। अगले ही दिन सुभाष की मोटर साइकिल नंबर पी.आई.जी. 9253 कपूरथला रोड पर सड़क के किनारे पड़ी मिली। वहीं पास ही झाड़ियों में सुभाषचंद का शव भी मिला। पुलिस ने एफ.आई.आर. नंबर 88/1989 धारा 302, 34 आई.पी.सी. के अधीन केस दर्ज किया। पुलिस ने जांच के दौरान केवल और राजा को सुभाषचंद की हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। किंतु पुलिस ने पूछताछ के बाद उन दोनों को छोड़ दिया और नरेश कपूर को हत्या के अपराध में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। किन्तु सन्, 1991 में अदालत ने गवाहों और साक्ष्यों के अभाव में संदेह का लाभ देते हुए नरेश कपूर को बरी कर दिया।



पुलिस गिरफ्त में जे.के. नंद

नरेश कपूर को पुलिस जांच के दौरान जुडिशियल रिमांड में लगभग दो-तीन महीने जेल में रहना पड़ा था। जेल में अपराधियों की संगत में नरेश कपूर जालसाजी की अनेक कलाओं के गुर सीखकर बाहर आया था। किंतु इस हत्या के मामले में नरेश कपूर पुलिस और कोर्ट-कचहरी के चक्करों में पूरी तरह कंगाल हो गया था। इसी कारण उसका कारोबार भी चौपट हो गया था। नरेश कपूर गर्दिश के इन दिनों में गुर्दे की बीमारी से भी पीड़ित हो गया। बीमारी और मुकदमे दोनों ने उसे निढाल कर दिया।

नरेश कपूर की कंगाली में उसके परिवार में कलह रहने लगी। पारिवारिक विवाद के कारण उसकी पत्नी नीरू कपूर ने नरेश कपूर से स्पष्ट शब्दों में कहा, "अगर तुमने जल्दी कोई इंतजाम नहीं किया, तो तुम्हें बहुत पछताना पड़ेगा।"

"नीरू, तुम जानती हो कि मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है, फिर भी ऐसी बातें करती हो।" नरेश कपूर ने अपनी पत्नी से विनम्र स्वर में कहा।

"मैं सब कुछ जानती हूं। तुम सारी दुनिया को उल्लू बना सकते हो, तो मुझे क्यों नहीं?" आवेश में नीरू कपूर की आवाज भी भर्रा गई।

"नीरू।" नरेश कपूर ने डांट-सा दिया अपनी पत्नी को। कुछ रुककर नरेश कपूर ने अपनी आवाज पर नियंत्रण किया और फिर अनुरोधभरे स्वर में कहा, "तुम्हें मालूम है न, मैं तुमसे कभी भी झूठ नहीं बोलता। इतना ही नहीं, मैं तुमसे कितना प्यार करता हूं, यह भी तुम भलीभांति जानती हो। मैं जल्दी ही कोई-न-कोई जुगाड़ कर लूंगा।"

"भाड़ में गया तुम्हारा जुगाड़। कितने महीने बीत गये हैं इस मुफलिसी में जीते हुए। अब मैं कंगाली नहीं सहन कर सकती।" नीरू कपूर का क्रोध और आवेश से चेहरा लाल हो चुका था।

"प्लीज, मेरी खातिर कुछ और समय दो मुझे। मैं वादा करता हूं, हम लोग जल्दी ही इस समस्या से निबट लेंगे।"

"ठीक है, जब तुम इस समस्या से निबट लेना, तो मुझे बुला लेना। मैं तो अपने मायके बटाला जा रही हूं।" नीरू कपूर ने अपना फैसला सुना दिया।

"नीरू, अगर तुम मुझे अकेला छोड़ गयी, तो मैं कुछ भी नहीं कर पाऊंगा। तुम्हारे बटाला चले जाने के बाद मेरा क्या होगा?" प्रार्थना के अंदाज में नरेश कपूर ने नीरू कपूर को समझाया।

नीरू कपूर मोहल्ला सोनिया, चौराहा बाजार, बटाला (जिला गुरदासपुर) निवासी सत्यानंद खुल्लर की बेटी थी। सत्यानंद खुल्लर अपने दामाद के काले कारनामों से पहले ही खफा थे।

सत्यानंद ने कई बार नीरू से नरेश कपूर का साथ छोड़ने को कहा था। किंतु नीरू ने कभी अपने पिता की बात पर ध्यान नहीं दिया था। नीरू कपूर ने जी-जान से अपने पति का साथ दिया था। नरेश कपूर जब सुभाष हत्याकांड में पकड़ा गया था, उस समय नीरू ने ही दौड़-धूप करके उसकी जमानत करायी थी। साथ ही कोर्ट-कचहरी के बहुत-से काम बेझिझक किये थे। पर गरीबी की काली छाया ने उसे भी बेजार कर दिया था। पारिवारिक कलह के कारण नीरू ने चाहे क्रोध में कुछ भी कह दिया हो, पर वह नरेश कपूर को बेहद चाहती थी। नरेश कपूर ने परिवार की इस परेशानी से निजात पाने की ठान ली और वह किसी काम की खोज में जुट गया। किंतु शहर में उसकी रेपुटेशन ऐसी हो चुकी थी कि कोई उसे नौकरी पर रखने को तैयार नहीं था। शनि की महादशा की तरह मुश्किलें लगातार उसका पीछा करती रहीं। अंत में उसने जालंधर में ही एक ट्रैवल एजेंसी खोल ली। नरेश कपूर ने सुभाष हत्याकांड में जो जेलयात्रा की थी, उस जेलयात्रा के दौरान जेल में उसे कुछ ऐसे अपराधी गुर्गे मिले थे, जो अपराध करने और अपराध से बच निकलने के कई अचूक मंत्र जानते थे। उन अपराधियों के पद-चिह्नों पर चलते हुए नरेश कपूर ने सबसे पहले ट्रैवलिंग एजेंसी के काम में उन गुरों को आजमाया। उसे मालूम हो गया था कि ठगने के बाद ठगी के शिकार पर निगाह रखना जरूरी है, ताकि मालूम हो सके कि ठगे जाने के बाद वह क्या कार्रवाई कर रहा है। इसके साथ-साथ जो अधिकारी जांच कर रहा है, वह कितने में खरीदा जा सकता है।

नरेश कपूर पहले ही शैतानियत की खान था। जेल से आने के बाद उसे ऐसे-ऐसे गुर हासिल हो चुके थे, जिनका कोई तोड़ नहीं था। ट्रैवलिंग एजेंसी में उसे इन गुरों का बहुत ही लाभ मिला। ट्रैवलिंग एजेंसी के इस गोरखधंधे में उसने पूरी सावधानी बरती। इस धंधे में वह जिन लोगों को ठग चुका था, उन पर गुप्त रूप से नजर रखे रहा। इसी करामात के कारण वह माल्टा कांड (जिसमें सैकड़ों भारतीय समुद्र में जहाज के साथ डूब गये थे और जालंधर के कई ट्रैवलिंग एजेंट इस कांड में गिरफ्तार हो चुके थे।) की धर-पकड़ से पहले ही फरार हो गया। बाद में माल्टा कांड के जांच-अधिकारियों की सेवा कर नरेश कपूर साफ बच गया। पर नरेश कपूर को इस गोरखधंधे में कमाई कम और रिस्क अधिक उठाना पड़ा।

अवगुणों के धनी नरेश कपूर धन की लालसा में रात-दिन बेचैन था। एक बार फिर उसने अपना पुराना कारोबार शुरू कर दिया। जमीन-जायदाद की दलाली में वह अधिकतर भोले-भाले लोगों को सस्ती जायदाद का सपना दिखाकर फांस लेता था। खरीद-फरोख्त में झंझट पड़ जाने पर मामला पुलिस तक जाने से पूर्व ही सुलझ जाता था। राजीनामा होने की सूरत में भी सौदा की गई रकम का कुछ हिस्सा नरेश कपूर को मिल ही जाता था। मीठापुर रोड (जालंधर) के किशोरीलाल की जायदाद का जब नरेश कपूर ने सौदा करवाया, तो सौदे की रकम में से उसने दो लाख रुपया अपने पास रख लिया। किशोरीलाल ने जब पूछा कि यह दो लाख रुपया कब मिलेगा, तो नरेश कपूर बोला, "चाचा, क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है?" नरेश रुका और फिर बोला, "तुम्हें अगर मुझ पर भरोसा नहीं है, तो मैं सौदा कैंसिल कर देता हूं। तुम्हें तुम्हारी जमीन वापस करा देता हूं।"

"नहीं-नहीं, ऐसी जल्दबाजी ठीक नहीं है।" किशोरीलाल ने घबराकर कहा। उसके चेहरे पर गहरी मायूसी छा गई। वह बोले, "कोई बात नहीं, हमें अमेरिका जाना है, इसके पहले हमें पैसे मिल जाने चाहिए।"

"चाचा जी, आप फिक्र मत करें। मैं आपके अमेरिका जाने से पूर्व ही आपका रुपया पार्टी से दिला दूंगा।" नरेश कपूर ने किशोरीलाल की जिस जमीन का सौदा करवाया था, उस जमीन को बेचकर और रकम लेकर उन्हें अमेरिका अपने बेटे के पास जाना था। नरेश कपूर ने चालाकी से किशोरीलाल से अमेरिका जाने की तारीख मालूम कर ली थी। दरअसल, नरेश कपूर ने जमीन खरीदनेवालों से सारी रकम ले ली थी, पर दो लाख रुपया नरेश कपूर ने अपने पास रख लिया था। क्योंकि वह जानता था कि किशोरीलाल को तो निश्चित तारीख पर अमेरिका चले ही जाना है।

और हुआ भी यही। नरेश कपूर ने आज-कल, अज-कल करके दो



स.इं. दर्शन सिंह, गुरनाम सिंह एवं रमेश कुमार

महीने निकाल दिये। किशोरीलाल किसी तरह की कानूनी कार्रवाई भी नहीं कर पाये और अंत में बुझे मन से अमेरिका चले गये।

20 फरवरी, 1994 को नरेश कपूर किशोरीलालवाले मामले में पुलिस के फंदे से बचने के लिए अपने मामा राजेश कुमार के यहां पटना पहुंच गया। पटना में रहते हुए नरेश कपूर ने जालंधर पुलिस पर भी पूरी निगरानी रखी। उसे जब पक्का यकीन हो गया कि किशोरीलालवाले मामले में पुलिस को कोई जानकारी नहीं है। तब उसने वहीं अपनी करामात दिखाने की योजना बनायी। पर नरेश कपूर अपने मामा की बदनामी के कारण पटना में कुछ न करके, किसी दूसरे शहर में अपना शिकार तलाशने लगा। इस बार उसने एक नया रास्ता अख्तियार किया। कानपुर के शेयर दलाल कन्हैयालाल के माध्यम से वह गीता रानी से मिला।

"गीताजी, मुझे अगर बीमारी से परेशानी नहीं होती, तो मैं यह शेयर नहीं बेचता।" रोनी सूरत बनाकर नरेश कपूर ने गीता से कहा।

"मैं भी आपकी मदद करने की गरज से ही यह शेयर खरीद रही हूं।" गीता रानी ने सांत्वनाभरे स्वर में कहा।

"मैंने यह शेयर बड़ी मुश्किल से खरीदे थे। आप जानती हैं, नहीं तो दस लाख के शेयर दो लाख में कौन देता है।" नरेश कपूर ने अभिनेता की तरह अभिनय किया।

"हम लोग तो यहां इनकी बीमारी का इलाज कराने आये थे। यहां के डाक्टरों ने आपरेशन बता दिया।" इस बार नीरू कपूर ने गीता रानी को अपना मकसद बताया।

गीता रानी ने नरेश कपूर से शेयर लेकर रख लिये और अगले दिन रुपयों का भुगतान करने को कह दिया। इसी बहाने गीता ने अगले दिन अपने परिचित एजेंट को वह शेयर जांच करने के लिए दे दिये। शेयर दलाल ने जांच-परख के बाद उन्हें सही बताया। गीता रानी ने नरेश कपूर पर विश्वास कर दस लाख के शेयर दो लाख में खरीद लिये। किंतु गीता रानी ने उन शेयरों को जब संबंधित कंपनी को भेजा, तो कंपनी ने उन्हें नकली बताते हुए शेयर वापस गीता रानी को भेज दिये। गीता रानी ठगे जाने पर अपना सिर पीट कर बैठ गयी। थाना ग्वाल टोली में 23 जून, 1994 को एफ.आई.आर. नम्बर 76 आई.पी.सी. की धारा 420, 467, 468 के अधीन मामला दर्ज किया गया। पुलिस ने वहां के शेयर दलाल कन्हैयालाल से पूछताछ की, तो पुलिस को मालूम हुआ कि शेयर दलाल ने जो जांच की थी, वह सही थी। नरेश कपूर ने शेयरों पर जिन मोहरों का प्रयोग किया था, वह बिलकुल असली जैसी ही थीं। उन्हें देखकर कोई भी शंका नहीं कर सकता था कि स्टैम्प नकली हैं। कानपुर की पुलिस नरेश कपूर को कई महीनों तक तलाश करती रही, लेकिन नरेश कपूर तो कहीं दूर निकल चुका था। यह नरेश कपूर की फितरत में था कि वह ठगी करने के बाद कहीं दूर निकल जाता था।

नरेश कपूर दो-ढाई साल तक भूमिगत रहा। सितम्बर, 1997 में फिर वह चर्चा में आया। वह मोहाली में रहते हुए गैर सरकारी मानव अधिकार संगठन का चीफ बनकर गुरनाम सिंह के बेटों को फर्जी वीजा बनाकर दिया। वीजा लेकर गुरपाल सिंह और सतनाम सिंह दिल्ली पहुंचे। अमेरिका जाने के लिए जब वहां प्रमाण पत्रों की जांच हुई, तो असलियत उजागर हुई। तब गुरनाम सिंह ने थाना मोहाली में 23 दिसंबर, 1997 को नरेश कपूर के विरुद्ध प्रार्थना पत्र दिया। एफ.आई.आर. नम्बर 142/97 आई.पी.सी. की धारा 420, 467, 468, 411 के अधीन केस दर्ज किया गया। अन्य मामलों की तरह इस मामले में भी मोहाली पुलिस को नरेश कपूर का कोई सुराग नहीं मिला।

पटना में अपने मामा राजेश कुमार के बेटों से नरेश कपूर की अच्छी घनिष्ठता हो गई थी। मनोज कुमार उर्फ बली, गुलशन कुमार और बलदेव राज इसके ठाठ-बाट और रहन-सहन से बड़े प्रभावित हुए। धीरे-धीरे नरेश कपूर ने इन तीनों भाइयों को भी अपना राजदार बना लिया। नरेश कपूर ने उत्तर प्रदेश में भी कई और ठगी की और अपनी फितरत के अनुसार वह पंजाब आ गया।

पंजाब में आने के बाद पहले उसने पुलिस को भलीभांति टटोला। पुलिस भी इस समय शांत थी। जनवरी, 1998 के आरंभ में ही नरेश कपूर के जीवन में एक नया मोड़ आया। इस मोड़ पर उसे लक्ष्मी मां की ऐसी कृपा हुई कि उसके यहां धन की बरसात होने लगी। नरेश कपूर ने करोड़ों रुपया इकट्ठा कर लिया। इस घटना के बाद नरेश कपूर को ठगी करने के लिए शिकार ढूंढने की भी जरूरत नहीं रही। नरेश कपूर के हाथ ऐसी कौस्तुक मणि लगी थी कि चुटकी बजाते ही उसे लाखों रुपया मिल जाता।

20 फरवरी, 1998 को पटना के रेलवे स्टेशन के चौकी इंचार्ज

(आर.पी.एफ.) लक्ष्मण दीक्षित को रेलवे यार्ड इंचार्ज ने सूचना दी कि यार्ड में खड़ी मालगाड़ी की बोगी नंबर सी.आर. 64037 की सील टूटी है और बोगी से सामान चोरी हुआ लगता है। लक्ष्मण दीक्षित ने मौके पर पहुंचकर घटना की जांच की, तो पता लगा कि मालगाड़ी की बोगी नंबर सी.आर. 64037 में डिप्टी कन्ट्रोलर ऑफ स्टैंप डिपो, नासिक (महाराष्ट्र) से गोहाटी के लिए कई करोड़ के इंदिरा विकास पत्र और किसान विकास पत्र भेजे जा रहे थे। जांच अधिकारी लक्ष्मण दीक्षित ने उस बोगी की बिल्टी की जांच की, तो उनके होश उड़ गये। क्योंकि उस बोगी से 600 करोड़ रुपए से अधिक के इंदिरा विकास पत्र और किसान विकास पत्र चोरी हो चुके थे। लक्ष्मण दीक्षित ने चोरी हुए सामानों का विवरण तैयार किया। एफ.आई.आर. 29/24 फरवरी '98 को आई.पी.सी. की धारा 468, 409, 120बी. के अधीन केस दर्ज किया गया। बिहार पुलिस ने जांच की और शहर के कुख्यात चोरों को थाने बुलाकर पूछताछ की गयी। कड़ी मेहनत के बाद गांधी मैदान पुलिस थाने में एफ.आई.आर. नम्बर 25/98 को पकड़े गये अपराधियों ने इस चोरी का सूत्र बताया। पटना की पुलिस ने दलीप कुमार, अशोक और विजय सिंह को गिरफ्तार किया। पहले यह तीनों अपने आप को निर्दोष बताते रहे, किंतु पुलिस की कड़ी पूछताछ के आगे यह लोग अधिक देर नहीं टिक पाये। इन तीनों ने पुलिस को जो कुछ बताया, उससे पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया।

बलविंद्र सिंह पुत्र नत्था सिंह, जो डी-117 फतेहनगर, जेल रोड, नई दिल्ली का रहनेवाला था, उसने इंदिरा विकास पत्रों को चोरी करने की योजना बनायी थी। बलविंद्र सिंह ने नासिक जाकर स्टैंप डिपो से निकलने वाले इंदिरा विकास पत्रों की खोजबीन की। उसने मालगाड़ी से भेजे जानेवाले इंदिरा विकास पत्रों की बोगी को पटना यार्ड में लापरवाही से खड़े रखने के दौरान



गुरचरण सिंह, बलजीत सिंह एवं ए.एस.आई. एंटीफ्राड, हुस्नलाल

इस काम को अंजाम देने का फैसला किया। बलविंद्र सिंह ने इस काम में पटना के एक योग्य व्यक्ति की तलाश शुरू की। उसे इस दिशा में जल्दी ही सफलता मिली। रमन कुमार उर्फ बॉबी पुत्र रमेश कुमार (गंडागली, नमकमंडी, अमृतसर निवासी) बलविंद्र सिंह के पास दिल्ली आया-जाया करता था। रमन कुमार की ससुराल पटना में थी। दलीप की जान-पहचान रमन कुमार के पटना निवास के दौरान हुई थी। बलविंद्र सिंह ने अपनी योजना रमन कुमार को बतायी, तो रमन कुमार जल्दी ही राजी हो गया। क्योंकि उन दिनों रमन कुमार को रुपए की सख्त जरूरत थी। रमन कुमार ने दलीप कुमार से बात की, तो दलीप कुमार ने एक लाख रुपए में सौदा तय कर लिया। बलविंद्र सिंह इस काम के लिए रमन कुमार को पांच लाख रुपया पहले ही दे चुका था। इस तरह दलीप कुमार, अशोक कुमार और विजय सिंह ने अपने काम को अंजाम दे दिया।

लगभग 600 करोड़ के इंदिरा विकास पत्र बलविंद्र सिंह को सौंपने के बजाय 300 करोड़ के (6 लाख के लगभग) इंदिरा विकास पत्र ही बलविंद्र सिंह को दिये। बाकी अपने पास रख लिया। रमन कुमार जानता था कि बलविंद्र सिंह जैसा शातिर दिमाग जिन विकास पत्रों के लिए पांच लाख रुपया दे गया है, उन विकास पत्रों में कोई न कोई खूबी जरूर है। बिहार पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए यह केस कोलकाता की सी.आई.डी. ब्रांच को सौंप दिया। कोलकाता की सी.आई.डी. ब्रांच ने कई अन्य अपराधियों को गिरफ्तार किया, किंतु बलविंद्र सिंह को कोलकाता की सी.आई.डी. ब्रांच भी गिरफ्तार नहीं कर पायी।

इधर रमन कुमार को इंदिरा विकास पत्रों की सच्चाई जानने की उत्सुकता रात-दिन बेचैन किये हुए थी। उसने अपने साथी अरुण कुमार कपूर से इंदिरा विकास पत्रों का सारा घटनाक्रम बता दिया।

"यार अरुण, अब तू ही बता, मुझे क्या करना चाहिए?" रात की महफिल में रोज की तरह शराब का सुरूर हो जाने पर शराब की चुस्कियां लेते हुए पूछा रमन ने।

"मैं जल्द ही कोई न कोई रास्ता निकालूंगा।" अरुण कुमार ने आश्वासन दिया।

किंतु कई दिनों बाद भी अरुण कुमार कपूर को कोई उपाय नहीं सूझा। उधर रमन कुमार बार-बार अरुण पर विकास पत्रों का रहस्य जानने का दबाव डाल रहा था। इस बीच अचानक रमन की मुलाकात नरेश कपूर से हो गयी। रमन कुमार दूर के रिश्ते में नरेश कपूर का साला लगता था। तब रमन कुमार ने नरेश कपूर को इंदिरा विकास पत्रोंवाली कहानी सुना दी। नरेश कपूर की शैतानी खोपड़ी में इंदिरा विकास पत्रों से धन प्रकट करने की अजीब योजना ने जन्म लिया। नरेश कपूर ने इंदिरा विकास पत्रों का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया। इस काम को पूरा करने के लिए वह दिल्ली पहुंचा। नई दिल्ली में नरेश कपूर का पूर्व परिचित था दिनेश सूर। नरेश कपूर ने इंदिरा विकास पत्र दिखाकर दिनेश से सवाल किया, "यह इंदिरा विकास पत्र कैसे उपयोग में लाये जा सकते हैं?"

नरेश कपूर का सवाल सुनकर दिनेश कुछ बोलने के बजाय गंभीरता से सोचने लगा। दिनेश सूर नई दिल्ली में ट्रैवल एजेंट था। दिनेश सूर का एक अन्य साथी अश्विनी कुमार भी इसी कारोबार में था।

"मैं अश्विनी को बुलाता हूं। वही हमें कोई रास्ता बतायेगा।" दिनेश सूर ने सोचने के बाद नरेश कपूर की बात का जवाब दिया।

"तुम अश्विनी को बुलाओ, तब तक मेरे दिमाग में एक योजना है। मैं उसे पूरा करता हूं।"

दिनेश, अश्विनी को बुलाने गया और नरेश कपूर नई दिल्ली के जी.पी.ओ. पहुंचा। वहां से वह पांच हजार रुपये में एक इंदिरा विकास

पत्र अपने नाम से खरीद लाया। तब तक अश्विनी भी आ गया था। तब नरेश कपूर के कहने पर अश्विनी, दिनेश और रेखा सूर (दिनेश सूर की पत्नी) ने मिलकर नई दिल्ली जी.पी.ओ. की मोहरें बनवायीं। खाली (ब्लैंक) इंदिरा विकास पत्र और किसान विकास पत्रों को भरकर यू.पी. बॉर्डर की स्टेट बैंक ऑफ पटियाला में कार्यरत मुन्ना से संपर्क किया। मुन्ना ने जो रास्ता दिखाया, उससे इन लोगों की बाछें खिल गयीं। मुन्ना ने बताया कि किसी भी बैंक में इंदिरा विकास पत्र और किसान विकास पत्र जमाकर उनकी रकम के बराबर किसी भी बैंक से लोन लिया जा सकता है। नरेश कपूर को सपने में भी गुमान नहीं था कि सोना देनेवाली लालमणि यों उसके हाथ लग जायेगी।

नरेश कपूर ने पहला प्रयोग करने के उद्देश्य से अमृतसर पहुंचकर रमन कुमार को सारी बात बतायी। नरेश कपूर की बात सुनकर रमन कुमार खुशी से फूला नहीं समाया। अमृतसर में रमन कुमार के सहयोग से पोस्ट आफिस की नकली मोहरें बनाकर सबसे पहले इन लोगों ने बीस लाख रुपए के इंदिरा विकास पत्र और किसान विकास पत्र भरे और दिल्ली पहुंचे। गाजियाबाद के एक बैंक से रेखा सूर के नाम से दस लाख के लोन के लिए आवेदन किया गया।

बैंक ने इंदिरा विकास पत्र और किसान विकास पत्र रखकर दस लाख रुपये का लोन सात-आठ दिन में ही रेखा सूर को दे दिया। उसी बैंक में रेखा सूर का खाता खोलवाकर दो-चार दिन बाद ही सारा रुपया निकलवा लिया गया। सबने मिलकर बैंक से निकाला गया रुपया आपस में बांट लिया। फिर तो नरेश कपूर ने रमन कुमार के साथ मिलकर बैंकों में तूफान-सा ला दिया। इस काम में रमन कुमार ने जॉली ब्रदर्स के मालिक और अपने दोस्त भूपेश कुमार को भी अपने साथ मिला लिया।

बैंकों से ठगी करने का नरेश कपूर ने इतना नायाब तरीका



महिला हेडकांस्टेबल सुगंध्या एवं मलकीत कौर

निकाला कि बैंक का कोई भी अधिकारी इस तरीके पर शक तक नहीं कर सकता था। क्योंकि नरेश कपूर ने गाजियाबाद के जिस बैंक से दस लाख का लोन लिया था, उस समय नरेश कपूर ने उस बैंक में 575 इंदिरा विकास पत्र और किसान विकास पत्र (जिनका मूल धन 28 लाख, 75 हजार रुपया बनता था) बैंक के पास गिरवी रख दिये थे। बैंक मैनेजर दोगुनी रकम के इंदिरा विकास पत्रों के एवज में दस लाख का लोन देकर निश्चिंत हो गया कि लोन के एवज में उसके पास दोगुनी रकम के विकास पत्र तो जमा है ही। इसके साथ-साथ नरेश कपूर जिस बैंक को अपना शिकार बनाता था, उस बैंक मैनेजर को भी 20-25 हजार रुपए कमीशन के तौर पर दे दिया करता था। इसी कारण बैंक मैनेजर कई दिनों का काम कुछ ही घंटों में पूरा करके नरेश कपूर को लोन दिला देते थे।

नरेश कपूर ने इस जालसाजी में अपनी पत्नी नीरू कपूर और अपनी युवा बेटी सीमा कपूर का भी सहयोग लिया। परिवार के साथ होने के कारण उस पर कोई शक भी नहीं करता था।

नरेश कपूर ने सोना उगलनेवाले इंदिरा विकास पत्रों की लालमणि से जालंधर और आसपास के बैंकों से एक डेढ़ महीने में ही दो करोड़ अट्ठाईस लाख रुपया जालसाजी करके निकाल लिया। जालसाजी की इन करामतों में नीरू कपूर, सीमा कपूर के साथ-साथ 31, शंकर गार्डन, जालंधर के राधेश्याम का पुत्र भूपेश कुमार जॉली और रमन कुमार के अतिरिक्त चंदननगर कालोनी, लुधियाना का अरुण कुमार, अमृतसर का सुनील धानुक, इस्लामाबाद, अमृतसर का राज कुमार पंडित, जालंधर के ही जे. के. नंद और नागिंद्र खुल्लर उर्फ बिट्टू तथा जसबीर सिंह उर्फ भोला (ज्योतिनगर) और गुरदासपुर का गुरनाम सिंह शामिल थे।

इंदिरा विकास पत्र और किसान विकास पत्रों की जालसाजी से पूर्व जालंधर पुलिस पांच केसों में नरेश कपूर को पहले से ही तलाश कर रही थी। यह पांच केस थाना डिवीजन नंबर 4 एफ.आई.आर. नंबर 5/1998 आई.पी.सी. की धारा 379, 411, 414, 420, 465, 467, 468, 471, 120बी. के अधीन दर्ज थे। थाना सदर जालंधर में एफ.आई.आर. नंबर 14, 16 जनवरी 1998, एफ.आई.आर. नंबर 16, 17 जनवरी 1998, इसी दिन थाना डिवीजन नंबर 3 एफ. आई.आर. नंबर 19, 30 जनवरी 1998 सभी केसों में एक जैसी ही धाराएं थीं। जालंधर पुलिस की रात-दिन की नींद हराम करनेवाला यह अपराधी इतने केस दर्ज होने के बाद भी चैन से वंशी बजा रहा था। नरेश कपूर को पुलिस तलाश कर रही थी। पर चोर-पुलिस के इस खेल में पुलिस को कोई सफलता नहीं मिल रही थी। इसका मुख्य कारण यह था कि अब नरेश कपूर ने बड़ी आसानी से पुलिस से बचना सीख लिया था। जिन पांच बैंकों ने नरेश कपूर के विरुद्ध केस दर्ज कराये थे, उन्हीं बैंकों में से कई बैंकों ने अपनी मूल धनराशि लेकर नरेश कपूर से समझौता कर लिया था।

नरेश कपूर इधर बैंकों से समझौता कर रहा था, उधर कोलकाता की सी.आई.डी. जांच करती हुई रमन कुमार तक आ पहुंची। रमन कुमार अपने गुरु नरेश कपूर की शिक्षा का अनुसरण करते हुए कोलकाता पुलिस की जांच की भनक पड़ते ही भूमिगत हो गया। कोलकाता पुलिस की सूचना ने जालंधर पुलिस को हैरान तो कर दिया, पर पुलिस को कोई सूत्र न मिलने के कारण कोई कामयाबी नहीं मिली।

एस.एस.पी. श्री गौरव यादव ने अपने अधीन एस.पी., डी.एस.पी. के अतिरिक्त जालंधर के सभी थानाप्रभारियों के साथ बैठक की और आगे की रणनीति तैयार कर विशेष दिशा निर्देश दिये। नरेश कपूर को पुलिस ने अपने चक्रव्यूह में फंसाने के लिए अपने मुखबिरों को कसा। इकोनॉमिक ओफेन्स विंग के इंसपेक्टर मनोहर सिंह और ए.एस.आई. हुस्नलाल ने नरेश कपूर को गिरफ्तार करने के लिए अपने मुखबिरों को नीरू कपूर पर नजर रखने की हिदायत दी, क्योंकि

नीरू कपूर ही बैंक मैनेजरों से सारे मामलों को निबटाने के लिए भागदौड़ कर रही थी। ऐसे में नीरू कपूर का पीछा करते हुए नरेश कपूर तक पहुंचा जा सकता था। हुआ भी ऐसा ही। मनोहर सिंह ने उच्चाधिकारियों की अनुमति से नीरू कपूर को संदेश दिया कि पुलिस सारे मामले वापस लेने को तैयार है। किंतु पुलिस की कुछ मामूली-सी शर्तें हैं। पुलिस का यह संदेश पाकर नीरू कपूर ने नरेश कपूर से विचार-विमर्श कर पुलिस को एक मोटी रकम देकर पुलिस से समझौता करने का प्रयास किया।

लेकिन पुलिस नरेश कपूर तक नहीं पहुंच पायी। पुलिस ने नरेश कपूर को गिरफ्तार करने के लिए जिस नाटक की भूमिका बनायी थी, उसके अनुसार, हुस्नलाल को बैंक कर्मचारी का रोल दिया गया था। तब नीरू कपूर से हुस्नलाल ने बैंक अधिकारी बनकर मुलाकात की, "मैडम, पुलिस का मामला तो आप खुद ही सुलझा लें। मैं तो बैंकों के मामलों में आपकी मदद करने आया हूं।" बड़े भोले भाव से हुस्नलाल ने नीरू कपूर को समझाया।

नीरू हुस्नलाल की हमदर्दी पाकर भावुक होकर बोली, "आप तो जानते ही हैं, पुलिस हमें नाजायज तंग कर रही है। हम बैंकों का रुपया देने को तैयार हैं।" नीरू कपूर ने बड़ी अदा से मधुर मुस्कान के साथ हुस्नलाल पर अपने रूप का जादू बिखेरते हुए कहा। सीमा कपूर भी वहां बैठी मां की हां में हां मिला रही थी।

"पुलिस के बारे में मैं क्या कह सकता हूं? अगर आप मुझे कहें, तो मैं पुलिस से भी इस बारे में बात करूं।"

"हम आपको हर तरह से सहयोग करने को तैयार हैं।" इतना कहते हुए नीरू कपूर ने सीमा को इशारा किया। सीमा ने अगले ही पल अपने बैग से नोटों की पांच-छह गड्डियां निकालकर हुस्नलाल की ओर बढ़ायी।

"नहीं-नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं। आप पहले इन कागजों पर नरेश कपूर के हस्ताक्षर करवा



दीजिए। उसके बाद आप जैसा कहेंगी, मैं करने को तैयार हूं।" हुस्नलाल ने कागज दिखाते हुए कहा।

"वह तो अभी आपको नहीं मिल सकते।" कातिल मुस्कान के साथ नीरू ने कहा।

"कोई बात नहीं, मुझे कोई जल्दी नहीं है।" हुस्नलाल कुछ देर रुका और सोचने का अभिनय करते हुए बोला, "मैडम, आप अच्छी तरह जान लें कि मैं बैंकों के झंझट से आप लोगों को तभी बचा सकता हूं, जब आप इन पर नरेश कपूर के साइन करा दें। यह बहुत जरूरी है।"

"अगर यह कागजात आप हमें दे जाएं, तो हम पापा के...।"

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। जाने दो, मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है।" हुस्नलाल ने एकदम मुकरने की एक्टिंग कर डाली।

"नहीं...नहीं, ऐसी बात नहीं। मेरे कहने का मतलब यह था कि पापा बाहर गये हुए हैं। उन्हें आने में एक-दो दिन लग सकते हैं।" सीमा कपूर ने मधुर और मीठे शब्दों की बौछार कर दी।

"अगर आप हर किसी को पुलिस का आदमी समझेंगी, तो आप खुद ही मुश्किलों में पड़ जाएंगी। फिर उसका परिणाम क्या होगा, यह आप अच्छी तरह जानती हैं।" इतना कहकर हुस्नलाल रौब से उठे और यह कहते हुए चल दिये, "अच्छा, मैं चलता हूं। लगता है, आप इस मामले में बिलकुल गंभीर नहीं हैं। मैं तो सोच रहा था कि आपकी मदद हो जाएगी और मेरा भी कुछ भला हो जाएगा, लेकिन...।"

"अच्छा, आप बैठिए तो सही, आप ख्वाहमख्वाह नाराज हो गये।" नीरू कपूर ने बैठने का इशारा करते हुए अनुरोध-सा किया।

इतना कहकर वह अंदर चली गयी। हुस्नलाल ने अंदाजा लगाया कि नीरू कपूर किसी को फोन करने के लिए गयी है।

सीमा कपूर तब तक तीन कप चाय बनाकर ले आई थी। नीरू कपूर कमरे से बाहर आयी, तो पहले उसने मकान के बाहर जाकर बड़ी चतुराई से चारों ओर नजर दौड़ाई। फिर अंदर आकर बोली, "आप कल आ जायें, तो अच्छा रहेगा। मैं कोशिश करती हूं कि कपूर साहब से आपकी मुलाकात हो जाए।" इतना कहते हुए नीरू ने गौर से हुस्नलाल को पहचानने का प्रयास किया। शायद वह अब तक निश्चिंत हो गयी थी कि हुस्नलाल पुलिस का आदमी नहीं है।

"ठीक है, यह मेरे बैंक का फोन नंबर है। जब आपको विश्वास हो जाए कि मैं बैंक का झमेला निबटा दूंगा, तो मुझे बुला लेना।" इतना कहकर वह उठकर चल दिये।

"हमें विश्वास हो गया है कि आप हमारा काम करा देंगे। हम भी आपको निराश नहीं करेंगे। जितना भी हो सकेगा, हम आपकी सेवा जरूर करेंगे।" साथ-साथ चलते हुए नीरू ने कहा। तब तक तीनों मकान के बाहर आ चुके थे। पुलिस की योजना के अनुसार आज के दिन इतना ही काफी था।

अगले दिन नरेश कपूर ने अपने वकील से सलाह-मशविरा किया। नीरू कपूर ने नरेश कपूर को पूरा विश्वास दिलाया कि हुस्नलाल बैंक का ही एक अधिकारी है, जो टेलीफोन नंबर हुस्नलाल ने दिया था, वह भी बैंक का ही था। सारी बातों की तसल्ली हो जाने पर नीरू कपूर ने एक निश्चित स्थान पर हुस्नलाल को नरेश कपूर से मिलने के लिए बुलाया। यहां कई घंटे इंतजार करने के बाद हुस्नलाल वापस आ गया। नरेश कपूर वहां नहीं आया। वैसे पुलिस भी जानती थी कि नरेश कपूर इतनी आसानी से पुलिस के जाल में फंसनेवाला नहीं था। उसने जहां हुस्नलाल को नीरू कपूर द्वारा बुलाया था, वहां उसने छिपकर देखा होगा कि यहां पुलिस तो नहीं पहुंची है और जब नरेश कपूर को पूरा विश्वास हो गया कि हुस्नलाल बैंक का ही कोई अधिकारी है, तो नरेश कपूर ने तीसरे दिन हुस्नलाल को नीरू कपूर से फोन करवाकर बुलाया। हुस्नलाल नीरू कपूर के बताये स्थान पर पहुंचे। नरेश कपूर एक काले शीशेवाली कार में बैठा था।

हुस्नलाल को ड्राइवर बुला लाया। हुस्नलाल को कार के अंदर बैठाकर नरेश कपूर कुछ कहता, उससे पहले ही उसने नोटों की कई गड्डियां हुस्नलाल को थमाने का प्रयास किया। किंतु हुस्नलाल ने पहले ही मनोहर सिंह को इशारा कर दिया था। सादे लिबास में पास ही खड़े ट्रक में बैठे मनोहर सिंह अपनी पुलिस पार्टी के साथ नीचे उतर आये और कार को चारों ओर से घेर लिया।

इस तरह जालंधर पुलिस पंजाब के नटवरलाल को गिरफ्तार करने में सफल हो गयी। नरेश कपूर को कोर्ट में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया। पुलिस एक बार फिर नरेश कपूर की जालसाजी की कहानी सुन कर हैरान रह गयी। क्योंकि पुलिस को पटना से 600 करोड़ के इंदिरा विकास पत्रों वाली कहानी तो पता ही नहीं थी, वह यह भी नहीं जानती थी कि उन इंदिरा विकास पत्रों का उपयोग कहां किया गया था। नरेश कपूर की गिरफ्तारी से गौतम चीमा को बड़ी राहत मिली, क्योंकि यह सारी जांच उनके ही नेतृत्व में चल रही थी।

जालंधर पुलिस ने नई दिल्ली के जी.पी.ओ. के चीफ पोस्ट मास्टर देवतोरू चटर्जी को नरेश कपूर से बरामद इंदिरा विकास पत्र व किसान विकास पत्र दिखाये, तो चटर्जी ने बताया कि विकास पत्रों पर उनके हस्ताक्षर के साथ-साथ उस पर लगी सभी मोहरें भी नकली हैं। तब पुलिस को नरेश कपूर की असलियत का पता चला।

असलियत यह थी कि नरेश कपूर ने जालंधर के ग्यारह बैंकों से दो करोड़ अट्ठाईस लाख की जालसाजी की थी। इसके अतिरिक्त सुसरोपुर, जालंधर के नरिन्द्र कुमार को 5 लाख, 95 हजार के इंदिरा विकास पत्र देकर तीन लाख रुपए ठगने का भी अपराध किया था। दस दिन की गहन पूछताछ के बाद पुलिस ने जालंधर के बैंकों को सूचित किया। जब जालंधर के बैंक अधिकारियों को नरेश कपूर की करतूत का पता चला, तो बैंकों में हड़कंप मच गया।



राकेश अग्रवाल
ए.एस.पी. (सिटी) जालंधर

इधर नरेश कपूर का स्वास्थ्य अचानक बिगड़ गया। क्योंकि नरेश कपूर को बचपन से ही सिर्फ एक ही गुर्दा था और गुर्दे का इलाज जालंधर के किसी अस्पताल में नहीं हो सकता था। इसलिए जालंधर पुलिस ने नरेश कपूर को अमृतसर के गुरुनानक अस्पताल में दाखिल करा दिया। यहां भी नरेश कपूर अपनी शैतानी खोपड़ी की करामात के कारण 26 मार्च, 1998 को पुलिस को चकमा देकर भागने में सफल हो गया। थाना सिविल लाइन, अमृतसर में एफ.आई. आर. नंबर 52/1998 आई.पी.सी. धारा 223, 224 के अधीन केस दर्ज किया गया। नरेश कपूर तो भाग गया, पर जालंधर पुलिस ने इस सारे प्रकरण की जांच जारी रखी।

जालंधर के जिन बैंकों ने इंदिरा विकास पत्र और किसान विकास पत्रों को संबंधित डाकघरों को भेजा था, उन डाकघरों ने अपनी-अपनी रिपोर्ट में इन विकास पत्रों को फर्जी बताया था। तब बैंक अधिकारियों ने थाना डिवीजन नं. 6 में एफ.आई.आर. नंबर 52, 10 अप्रैल, 1998, एफ.आई.आर. नंबर 56, 20 अप्रैल, 1998, एफ.आई.आर. नंबर 63 और 64, 2 मई, 1998 को धारा 25 आर्म्स एक्ट, 255, 465, 467, 471, 420 और 411 आई.पी.सी. धारा 24 इमीग्रेशन के अधीन केस दर्ज कराये, परंतु पुलिस के अथक प्रयास के बाद भी नरेश कपूर का कहीं पता नहीं चल पाया। पुलिस ने इसके अन्य साथियों को 3 मार्च, 1999 से 16 जुलाई, 1999 तक अलग-अलग स्थानों से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

नरेश कपूर के फरार हो जाने या कुछ अपराधियों के गिरफ्तार हो जाने से जालसाजियां समाप्त नहीं हुईं। जालंधर पुलिस को बार-बार बैंकों से जालसाजियां होने की खबरें मिलती रहीं। जालंधर के एस.एस. पी. श्री गौरव यादव ने इस जालसाज गिरोह के प्रति बड़ी गंभीरता से जांच जारी रखी और नरेश कपूर को गिरफ्तार करने का प्रयास जारी रखा। इन प्रयासों में श्री गौरव यादव ने जालंधर के एस. पी. (ट्रैफिक) श्री एल.के. यादव, ए.एस.पी. (सिटी) श्री राकेश अग्रवाल के नेतृत्व में सब इंसपेक्टर गुरमुख सिंह (इं. डब्ल्यू.ओ.), सब इंसपेक्टर दर्शन सिंह, हेड कांस्टेबल जगजीवन सिंह, हेड कांस्टेबल गुरचरन सिंह, कांस्टेबल रमेश कुमार, हेड कांस्टेबल बलजीत सिंह, ए.एस.आई. हुस्नलाल के अतिरिक्त महिला हेड कांस्टेबल मलकीत कौर तथा कांस्टेबल सुगंध्या को सम्मिलित कर एक विशेष पुलिस पार्टी का गठन किया। नरेश कपूर को गिरफ्तार करने की रणनीति बनाकर एस.पी. (ट्रैफिक) एल.के. यादव और ए.एस.पी. (सिटी) श्री राकेश अग्रवाल ने अपने दिशा निर्देश के साथ मुखबिरों से अब तक की सारी जानकारियां हासिल कीं और नई जानकारी जुटाने का आदेश दिया।

5 जनवरी, 2002 की बात है। श्री एल.के यादव को नरेश कपूर के बारे में एक गुप्त सूचना मिली। श्री राकेश अग्रवाल अपनी पुलिस पार्टी के साथ देहरादून (उत्तरांचल की राजधानी) पहुंचे। देहरादून के एस.पी. को अपने आने का उद्देश्य बताने के बाद महाठग की तलाश में जुट गये। श्री राकेश अग्रवाल ने कीर्तिलाल प्रापर्टी डीलर से वहां जायदाद और मकान लेने की बात की, तो कीर्ति ने अपना दुखड़ा सुना डाला, "राकेश जी, मैं तो पहले ही एम.एल. आहूजा का मकान किराये पर दिलवाकर पछता रहा हूं।"

"क्यों क्या हुआ?" श्री अग्रवाल ने कीर्ति को बीच में ही टोक दिया।

"यहां एक सतीश शर्मा पंजाब से आया था। उसने भी आपकी तरह मकान दिलाने को कहा था।"

"फिर?" श्री अग्रवाल ने हैरानी से पूछा।

"फिर क्या? आज तक सतीश ने मकान नहीं छोड़ा। एम.एल. आहूजा आज तक मुझे भला-बुरा कह कर कोसता है।" मायूसी से बुझे स्वर में कीर्ति ने कहा।

"पर हर आदमी सतीश जैसा नहीं होता। सतीश की कोई मजबूरी भी हो सकती है।"

"उसकी कोई मजबूरी नहीं है।" इस बार कीर्ति ने श्री अग्रवाल की बात को बीच में काटकर कहा। गुस्सा और नफरत कीर्ति के मुखमंडल पर साफ झलक रहा था। कुछ रुककर कीर्ति फिर बोला, "सतीश शर्मा गलत आदमी है। वह कई लोगों के साथ जालसाजी कर चुका है।" कीर्ति ने सतीश शर्मा की पोल खोलते हुए कहा।

"तो पुलिस में किसी ने शिकायत क्यों नहीं की?" श्री अग्रवाल की बात अभी पूरी नहीं हुई थी।

"वह बड़ा ही शातिर दिमाग इंसान है। पुलिस में मामला जाने से पहले ही समझौता कर लेता है। फिर भी लाखों रुपया ठग चुका है।" इस बार कीर्ति खुलकर सतीश शर्मा की निंदा कर रहा था।

श्री राकेश अग्रवाल को ऐसे ही व्यक्ति की तलाश थी, जो नरेश कपूर से बैर-भाव रखता है और उसका निंदक हो।

तब श्री राकेश अग्रवाल ने कीर्ति को नरेश कपूर का फोटो दिखाया और पूछा, "क्या यही सतीश शर्मा है?"

"हां, यही है सतीश शर्मा। पर यह फोटो तो पुराना लगता है?" हैरानी से कीर्ति का मुंह खुला रह गया।

"ठीक है, हम फिर मिलते हैं।" श्री अग्रवाल इतना कहकर चल दिये, क्योंकि उन्हें मालूम हो चुका था कि नरेश कपूर यहां भी अपनी जालसाजियों का गोरखधंधा बदस्तूर चालू रखे हुए था।

इधर श्री राकेश अग्रवाल भागदौड़

में जुटे थे। उधर दूसरी ओर हुस्नलाल (ए.एस.आई.) रणजीत नगर, गली नम्बर 11 के मकान नंबर 307/117 पर अपनी पुलिस पार्टी के साथ सतीश शर्मा यानी नरेश कपूर की गतिविधियों पर गुप्त नजर रखे हुए थे। सभी पुलिस अधिकारी सादे लिबास में थे। श्री राकेश अग्रवाल को जो सूचना मिली थी, उसके अनुसार नरेश कपूर अभी मकान में ही था। वह इलाज के लिए कहीं गया था। घर में नीरू कपूर, सीमा कपूर, अमित कपूर और शम्मी कपूर (पत्नी, बेटी तथा दोनों बेटे) घर पर थे। कुछ इंतजार के बाद श्री राकेश अग्रवाल को सूचना मिली कि नरेश कपूर घर पहुंच गया है। तब श्री राकेश अग्रवाल ने वहां के थानाप्रभारी नगेश बोनियाल को सारी जानकारी देने के बाद उन्हें अपने साथ लिया और नरेश कपूर के निवास पर छापा मार दिया। पुलिस की रेड पड़ते ही सीमा कपूर पिछले दरवाजे से एक अटैची लेकर भागने का असफल प्रयास कर बैठी। पर गिरफ्तार कर ली गयी। पुलिस ने अटैची खोलकर देखा, तो उसमें दर्जनों नकली मोहरें, फर्जी लेटर पैड आदि मिले। इन लेटर पैडों में 'दैनिक उत्तरांचल गूंज' के नाम से एक लेटर हैड भी मिला। इस लैटर पैड में नरेश कपूर का नाम सतीश शर्मा ही था। इस नाम का आज तक देहरादून में कोई समाचार पत्र नहीं छपा। पुलिस को यहां और कई फर्जी दस्तावेज मिले। वहां की कानूनी कार्रवाई पूरी कर पुलिस दल नरेश कपूर, नीरू कपूर और सीमा कपूर को देहरादून की कोर्ट में पेश कर वारंट पर जालंधर लेकर पहुंचा। अगले दिन 10 जनवरी,



लेखक
वेद शर्मा "नीर"

2002 को उन्हें जालंधर की कोर्ट में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया।

पुलिस ने ठगी करने में प्रयोग की गयी अन्य सामग्री के साथ-साथ कई हजार विकास पत्र भी बरामद किये। अमृतसर के गुरुनानक अस्पताल से फरार होने के बारे में नरेश कपूर उर्फ सतीश शर्मा ने बताया कि वह वहां तैनात पुलिस कर्मचारियों की हमदर्दी पाने के बाद उन्हें सेवा का मेवा देकर भागा था। मोबाइल फोन से वह घरवालों के संपर्क में था ही, अस्पताल से नरेश कपूर ट्रांसपोर्टनगर पहुंचा और वहां से ड्राइवर के भेष में दिल्ली और दिल्ली से सहारनपुर होते हुए देहरादून पहुंच गया। वहां कई महीने अकेला रहा, फिर पुलिस की खोज-खबर लेने के बाद अपने परिवार को वहां बुलाया। पुलिस की नजरों से बचने के लिए गैर सरकारी मानव अधिकार संगठन का गठन किया और एक दैनिक अखबार का फर्जी प्रमाण पत्र बना लिया। फिर धीरे-धीरे प्रापर्टी डीलर का काम करते हुए हरिद्वार में 55 लाख की जमीन को 5 लाख में लेकर 15 लाख में किसी राजनीतिक नेता के हवाले कर दी। उस नेता ने अपने बलबूते पर उस जमीन पर कब्जा कर लिया। उसने देहरादून में और बहुत-सी जालसाजी की, जो पुलिस की पकड़ में नहीं आयी।

पुलिस रिमांड की समाप्ति पर तीनों (पत्नी, बेटी और स्वयं नरेश कपूर) को कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट के आदेश पर तीनों को जेल भेज दिया गया। बाद में पुलिस ने इनके एक अन्य साथी जे.के. नंद को गिरफ्तार किया। पुलिस अन्य अभियुक्तों की तलाश में जुटी है।

1 फरवरी, 2002 को नरेश कपूर की जिला कारागार में हृदय गति रुक जाने से मौत हो गई। वहीं उसका पोस्टमार्टम हुआ और वहीं उसका अंतिम संस्कार कर दिया गया। जिस नरेश कपूर ने करोड़ों की ठगी और जालसाजी की, वह सब कुछ यहीं छोड़कर खाली हाथ संसार से चला गया। करोड़ों रुपए उसे मिले या नहीं, पर बदनामी जरूर मिली, जो नरेश कपूर के परिवार का सदियों तक पीछा करेगी। ●

(कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित)

ये अनोखी पुजारिनें

सामान्य रूप से मंदिर में पुजारिनें नहीं होतीं। संपूर्ण भारत में मात्र केरल के दक्षिणी भाग में मन्नारसाल में अद्भुत सर्प-मंदिर है। वहां पुजारिनें होती हैं। सारे धार्मिक कृत्य वही करती हैं। उन्हें बहुत संयम से रहना पड़ता है। वहां हजारों की संख्या में 'नागकल' या पत्थर की सर्प-प्रतिमाएं मिलती हैं। पांच या सात फनों वाली वे मूर्तियां अलग-अलग विचित्र रूप की हैं। संतानहीन दम्पति यहां 'उरुलिकम जथाल' नामक संस्कार करते हैं। इसमें वे एक 'उरूली' या 'धातु की घंटी' चढ़ाते हैं। बाद में पुजारिनें उन घंटियों को अलग स्थान पर रख देती हैं।

मध्य केरल में पम्बुमेकट्टु में भी एक और सर्प-मंदिर है। वहां के येल्लम या मंदिर में यद्यपि मुख्य पुजारी नम्बूदरी ब्राह्मण होता है, पर यहां भी सारे संस्कार उसके परिवार की एक महिला ही कराती है। वह एक तेल-पात्र में देखकर बताती है कि किस कारण नाग देवता रुष्ट हैं।

चंद्रघुट्टी के मंदिर में भी महिलाएं ही पूजा कर सकती हैं। वहां 7 मार्च से 12 मार्च तक होने वाले समारोह में दूर-दूर से महिलाएं कामनापूर्ति के लिये आती हैं। वे पहले दूर नदी में मुंह अंधेरे ही स्नान करती हैं। फिर निर्वस्त्र दौड़कर, सूर्योदय से पहले ही मंदिर में पहुंचकर, पूजा करती हैं। यद्यपि इस समारोह पर प्रतिबंध लग गया है, पर यह अभी तक चल रहा है।

रोम में एक चूल्हे की देवी भी होती थीं। 'वेस्ता' नामक उस देवी का मंदिर गोलाकार रहता था। देवालय में वर्ष भर अग्नि प्रज्ज्वलित रखी जाती थी। उसे जलाये रखने का भार कुमारिकाओं पर था। वह अग्नि वर्ष भर जलती थी। बस 1 मार्च को वह हर साल बुझाई जाती थी।

1 मार्च से रोमवासियों का नव वर्ष प्रारंभ होता है। छह पुजारिन कुमारियों का चुनाव कुलीन परिवार की छह से दस साल तक की लड़कियों में से होता था। उन्हें तीस वर्षों तक यह सेवा करनी पड़ती थी। फिर यदि वे विवाह करना चाहतीं, तो अनुमति दे दी जाती थी।

इन पुजारिनों के लिए कठोर अनुशासन तथा नियम थे। सामान्य अपराध के लिए कोड़े लगते थे। पर ब्रह्मचर्य भंग करने पर शहर के फाटक के पास के टीले के नीचे बने तहखाने में कैदकर, उनका मुंह बंद कर देते थे। भीतर एक लैम्प, खाट तथा कुछ खाना रखा रहता। निश्चित था, वे भूख से मर जाती थीं। पर कभी-कभी कोई परिवार वाला या प्रेमी चुपके से उन्हें मुक्त भी करा लेता था।

— डा. शिवनंदन कपूर

लघु कथा

अतींद्रिय शक्तिवाले जासूस

अमेरिका की एफ.बी.आई. या ब्रिटेन की स्कॉटलैंड यार्ड पुलिस भले ही अपनी कार्य कुशलता के बारे में अनेक दावे करे, लेकिन अपराधों की कई जटिल गुत्थियों को सुलझाने के लिए उनको पेशेवर अतींद्रिय शक्तिवाले जासूसों की सहायता की आवश्यकता अक्सर ही पड़ती रहती है। ऐसे अतींद्रिय शक्तिवाले जासूसों की सहायता लेने में शर्म महसूस नहीं करती यह दोनों संस्थाएं।

वास्तव में अपराध की खोजबीन की एक सीमा होती है, जब उस सीमा तक जाने के उपरांत भी किसी अपराध की जटिल गुत्थी नहीं सुलझती तो पुलिस क्या करे। ऐसे में अतींद्रिय शक्ति सम्पन्न जासूस ही उनका एकमात्र सहारा रह जाते हैं।

ऐसा ही एक अतींद्रिय शक्तिवाला जासूस है, न्यूयार्क का रहनेवाला फिलिप जॉर्डन। फिलिप जॉर्डन अब तक जटिल अपराधों की गुत्थी सुलझाने में कई बार न्यूयार्क पुलिस और एफ.बी.आई. की मदद कर चुका है। फिलिप जॉर्डन की सहायता से पुलिस ने अनेक अपराधियों को ही नहीं पकडा, बल्कि बहुत से गुमशुदा लोगों का पता भी लगाया था।

फिलिप जॉर्डन का नाम सुर्खियों में लापता टामी कैनेडी के मामले में आया था। पांच वर्षीय टामी अपने स्कूल के दूसरे बच्चों के साथ पिकनिक मनाने एम्पायर लेक के पास गया था और वहीं से रहस्यमयी परिस्थितियों में लापता हो गया था।

न्यूयार्क की पुलिस ने टामी की तालाश करने में जमीन-आसमान एक कर दिया था। न्यूयार्क पुलिस के एक सौ से अधिक जवानों को इस काम पर लगाया गया था। लेकिन उनको अपने काम में सफलता नहीं मिली थी।

निराश होकर पुलिस ने टामी की तलाश के लिए फिलिप जॉर्डन की मदद ली थी। फिलिप जॉर्डन को लापता टामी के घर में लाया गया और उसको लापता टामी की एक कमीज दी गई। फिलिप जॉर्डन ने टामी की कमीज को सूंघा और फिर अपनी आंखें बंद कर लीं। कुछ देर वह इसी अवस्था में रहा और फिर आंखें खोलते हुए बोला, "मैंने देख लिया है। वह लड़का कहां है? मैं इस समय उसको एक पेड़ के नीचे पड़ा देख रहा हूं। लगता है, जैसे वह गहरी नींद में है।"

इसके पश्चात् फिलिप जॉर्डन ने एक पेंसिल से उस जगह की तस्वीर बनाई, जहां अपनी अतींद्रिय शक्ति से उसने लापता टामी को देखा था। अपनी तस्वीर में फिलिप जॉर्डन ने पानी में तैरती हुई एक नौका, उसके पास ही बने हुए एक मकान और कुछ पेड़ों को दिखाया था।

इस तस्वीर की सहायता से पुलिस ने नए सिरे से लापता टामी की खोज शुरू कर दी थी। आश्चर्यजनक रूप से लापता टामी ठीक वैसी जगह से ही सोई हुई अवस्था में मिला, जैसी जगह की तस्वीर फिलिप जॉर्डन ने बनाई थ

वास्तव में स्कूल के दूसरे बच्चों बिछुड़कर टामी गलत दिशा में चला गया और घने जंगल के अंदर काफी गहरे त भटक गया था। पूरा दिन भटकने के उपरां थकान से निढाल होकर टामी जंगल में गहरी नींद सो गया था। टामी शायद जंग में भटकते हुए मर जाता या किसी हिंस्र प की खुराक बन जाता, अगर फिलिप जॉर्ड अपनी अतींद्रिय शक्ति से उसकी तालाश न कर लेता।

— सुरेन्द्र कुमा

—दिल्ली से नेपाल —

(पृष्ठ 6 का शेष)

शाम के सात बजे थे। तभी दरवाजे पर खट्-खट् की आवाज हुई। कांति देवी वर्मा असमंजस में पड़ गयीं। लगातार दो महीने से वह जिस मानसिक परेशानी को झेलती आ रही थीं, ऐसे में उनके घर पर किसी का आना नामुमकिन था। इन दो महीनों में उनके बहुत सारे अपने लोगों ने उनकी विपत्ति में साथ छोड़ दिया था। जबसे उनके पति लालाराम वर्मा नेपाल पुलिस की गिरफ्त में आये थे, उनका सुख-चैन सब हराम हो गया था।

वैसे, लालाराम नेपाल पुलिस की गिरफ्त में थे या अपने ही आदमियों द्वारा अपहृत होकर नेपाल में कैद थे, सच्चाई उन्हें अब तक ज्ञात नहीं थी। हर समय हंसी-खुशी रहनेवाले परिवार में अब हर समय श्मशान जैसा सन्नाटा छाया रहता था।

दरवाजे पर जब दोबारा खट्-खट् की आवाज हुई, तो कांति देवी वर्मा ने उदासी से दरवाजा खोला और यह देखने की कोशिश की कि इस समय उनके पास कौन आगंतुक आ सकता है। लेकिन जब दरवाजा खोलकर आनेवाले व्यक्ति की ओर देखा, तो सहसा उनकी अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उनका सारा शरीर एकबारगी लरज कर रह गया।

दरवाजे पर आनेवाले खुद उनके पति लालाराम वर्मा थे। चेहरे पर बढ़ी हुई दाढ़ी, कपड़ा अस्त-व्यस्त और उदास-उदास चेहरा। पूरे दो महीने बाद अचानक अपने सामने अपने पति को पाकर कांति देवी भौंचक्का रह गयीं।

लगातार दो महीने से भीषण मानसिक तनाव झेल रही कांति देवी इतनी खुश हुईं कि आगे बढ़ते ही होश गंवा बैठीं। अगर लालाराम वर्मा ने उन्हें बढ़कर थाम नहीं लिया होता, तो वह वहीं दरवाजे पर गिर जातीं।

दरवाजे पर खटखटाहट की आवाज परिवार के अन्य सदस्यों ने भी सुनी थी। उत्सुकतावश यह जानने के लिए कि कौन आया है, सभी दरवाजे के पास आ गये थे। वहां अचानक लालाराम वर्मा को देखकर सब खुशी से चीख पड़े। उनके बेटे और बेटी पापा-पापा करते अपने बिछुड़े पापा से लिपट गये। देखते-देखते घर भर में खुशियों का माहौल छा गया। अपने परिवार से मिलकर लालाराम को भी आत्मिक शांति मिली। दरअसल इसी शांति के लिए तो वह अब तक दिन-रात तड़पते रहे थे।

परिवार के लोगों ने एक होशियारी जरूर की कि आते ही उनसे घर से जाने के बाद वह दो महीने कहां रहे, इसके बारे में कुछ नहीं पूछा। उनकी मानसिक यंत्रणा की भंयकरता को सब अच्छी तरह समझ रहे थे।

मूलतः सोरों, एटा निवासी लालराम वर्मा पी-2/381-382, सुल्तानपुरी में रहते थे और दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) में सुपरवाइजर के पद पर कार्यरत थे। उनके परिवार में उनकी पत्नी श्रीमती कांति देवी वर्मा के अलावा एक बेटी रीता वर्मा तथा तीन बेटे, हेमंत, हरीश और दिनेश हैं। कांति देवी पश्चिमी दिल्ली के ही सागरपुर इलाके में 'रीता पब्लिक स्कूल' चलाती थीं। खाली समय में लालाराम भी स्कूल प्रबंधन का काम देख लेते थे।

सुल्तानपुरी में जहां यह परिवार रहता था, वहां उनकी मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा थी। कुल मिलाकर लालाराम का एक सुखी-संपन्न परिवार था। भगवान की कृपा से उनके घर में किसी चीज की कमी न थी।

एक पब्लिक स्कूल चलाने के कारण अक्सर आसपास के लोग अपने बच्चों की शिक्षा संबंधी समस्याएं लेकर लालाराम के पास आया करते थे। लालाराम भी एडमीशन आदि समस्याओं का समाधान कर दिया करते थे।

कुछ ही समय पहले की बात है। लालाराम की बेटी रीता वर्मा रोहिणी स्थित मदर डिवाइन स्कूल में नौवीं कक्षा में पढ़ती थी। उसकी एक परिचित थी पूजा, जो अपनी कक्षा में फेल हो गयी थी और जिसकी वजह से उसे स्कूल से निष्कासित कर दिया गया था।



अभियुक्त संजीव चोपड़ाः अनेक रूप

गत वर्ष एक दिन एक व्यक्ति लालाराम वर्मा से मिलने आया। उसने अपना नाम जयभगवान बताया और यह भी बताया कि उसकी बेटी पूजा को स्कूल से निकाल दिया गया है और अन्यत्र कहीं उसका दाखिला नहीं हो रहा है। आप इस दिशा में हमारी मदद कर दीजिए। उसने अपनी बेटी के बारे में बताया कि वह आपकी बेटी रीता की अच्छी परिचित है।

आप चाहें तो रीता से पूछ सकते हैं। लालाराम ने उसी समय अपनी बेटी पूजा से इस बारे में पूछा, तो उसने इस बात की पुष्टि कर दी।

जयभगवान एक सज्जन आदमी प्रतीत हुआ और लालाराम के लिए यह काम बेहद मामूली था। उन्होंने दूसरे ही दिन रोहिणी सेक्टर-7 स्थित मेरी इंटरनेशनल स्कूल में जगभगवान की बेटी पूजा का दाखिला करवा दिया।

लालाराम के इस एहसान का जयभगवान ने बहुत-बहुत आभार माना और यह भी कहा कि मेरे लायक कोई सेवा हो, तो बेहिचक बताएं। आपके काम आकर हमें बहुत खुशी होगी। यही नहीं, जयभगवान उनके घर भी आने-जाने लगा। कुछ ही दिनों में दोनों में अच्छी-खासी दोस्ती भी हो गयी। इस दोस्ती को मजबूत करने के लिए जयभगवान कई बार अपनी पत्नी चंद्रावती के साथ भी लालाराम के घर आया और उनका अतिथ्य स्वीकार किया। दोनों उनके स्कूल पर भी पहुंचने लगे।

आने-जाने और मिलने-जुलने के क्रम में दोनों में विभिन्न विषयों पर बातें भी होने लगीं। इसी दौरान एक दिन लालाराम वर्मा से जयभगवान बोला, "भाई साहब, आपका स्कूल तो चल ही रहा है। नौकरी भी आपकी है ही, फिर आप किसी दूसरे बिजनेस में क्यों नहीं कुछ इन्वेस्ट करते? आपके ऊपर भगवान की कृपा है ही, लक्ष्मी की भी कृपा हो जायेगी।"

"लेकिन मुझे किसी दूसरे बिजनेस में पैसा फंसाने की क्या जरुरत है? लालाराम ने सीधे कहा, "यही बिजनेस हमसे संभल नहीं पा रहा। आगे की क्या सोचें?"

"बात दरअसल यह है कि मेरे दोस्त हैं संजीव चोपड़ा और प्रिंस चोपड़ा। उनका काठमांडू, नेपाल में प्रिंस होटल है। वह होटल खूब फल-फूल रहा है। आप उसका कुछ शेयर ले लीजिए। भगवान की दया से हर महीने पच्चीस-तीस हजार की आमदनी तो हो ही जायेगी और विशेष कुछ करना भी नहीं पड़ेगा।"

"मगर मेरे पास ऐसे कामों के लिए पैसा नहीं है और न मुझे होटल बिजनेस में ज्यादा रूचि है।" लालाराम वर्मा ने स्पष्ट इनकार कर दिया। लेकिन जयभगवान ने तो जैसे कुछ करने को ठान ही लिया था। वह बड़ी चतुराई से बोला, "आप रकम की चिंता क्यों करते हैं? उसका प्रबंध भी हो जायेगा। आपको अपने घर

से एक पैसा लगाने की भी जरुरत नहीं है।"

"अच्छा! वह कैसे?" लालाराम ने उत्सुकता से पूछा।

जयभगवान ने निहायत ही विनम्रता के साथ कहा, "यह तो बहुत आसान-सी बात है, भाई साहब। आप अपने मकान के कागजात संजीव को पकड़ा दीजिए। इन्हीं कागजों पर वह कहीं से रकम उठा लेगा। बाद में शेयरों की आमदनी से यह रकम चुकाई जा सकती है। न हींग लगे, न फिटकरी और रंग भी चोखा होय।"

जयभगवान ने अपनी बातों का ऐसा जादू चलाया कि उसका वार खाली नहीं गया। उसने यह भी कहा कि अगर विश्वास न हो, तो नेपाल चलकर होटल और उसकी आमदनी के बारे में जानकारी कर लें। सीधे-सादे लालाराम नेपाल के होटल में रकम लगाने को तैयार हो गये।

लेकिन उन्होंने शर्त रखी कि पहले वह काठमांडू चलकर उस होटल को देखेंगे, उसके बाद ही कुछ फैसला करेंगे कि इस व्यवसाय में पैसा लगायेंगे या नहीं। उनकी शर्तें जानकर भगवान ने जल्दी ही उनकी मुलाकात संजीव चोपड़ा से करवा दी। संजीव चोपड़ा से मिलकर लालाराम इतने प्रभावित हुए कि नेपाल रवाना होने से पहले ही उन्होंने अपने मकान के कागजात संजीव चोपड़ा को सौंप दिये। उस मकान की पावर ऑफ एटर्नी भी उन्होंने संजीव के नाम कर दिया।

फिर लालाराम के साथ संजीव और उसके भाई प्रिंस चोपड़ा नई सैंट्रो कार नंबर डीएल 4सी एम 5567 द्वारा नेपाल के लिए रवाना हो गये। जयभगवान दिल्ली में ही रह गया। यह बात मई, 2001 के आखिरी सप्ताह की है।

लालाराम अपने इन तथाकथित दोस्तों के साथ एक नये बिजनेस का सपना लिए नेपाल की सीमा पर पहुंच गये। योजना बनी कि बिहार के रास्ते काठमांडू पहुंचा जाये। रास्ते में संजीव ने नेपाल का ऐसा खाका खींचा कि लालाराम एक तरफ तो हर्षित हो उठे, मगर दूसरी तरफ नेपाल के कानून और व्यवस्था को जानकार सिहर उठे, क्योंकि उन्हें बताया गया कि नेपाल में बहुत सख्त कानून हैं। अगर किसी अपराध में कोई भारतीय पकड़ा जाता है, तो उसे या तो आजीवन कैद की सजा भुगतनी पड़ती है या फिर उसे गोली मारकर मौत दे दी जाती है।

नेपाल की सीमा में प्रवेश के पहले संजीव चोपड़ा ने लालाराम से कहा, "भाई साहब, आपके पास जो भी भारतीय करेंसी है, वह सब मुझे सौंप दीजिए, क्योंकि पुलिस अगर पकड़ लेगी, तो मुसीबत खड़ी हो जायेगी। चूंकि मेरी नेपाल पुलिस में अच्छी धाक है, इसलिए मुझे कुछ नहीं होगा। नेपाल में एक आदमी अपने पास सिर्फ पांच हजार रुपया ही रख सकता है।"

लालाराम ने संजीव चोपड़ा की बात मानकर अपने पास रखे पंद्रह हजार रुपए संजीव को सौंप दिये। थोड़ी ही देर बाद सबने सोनौली होते हुए नेपाल में प्रवेश किया और सीमा से तीन किलोमीटर दूर भैरवा कस्बे में आ गये। यहां पहुंचने के बाद यह योजना बनी कि थोड़ी देर यहीं ठहरकर रात के समय काठमांडू के लिए प्रस्थान किया जायेगा।

यह सोचकर सब स्थानीय 'मूनलाइट' होटल में ठहर गये। वे जिस कमरे में ठहरे थे, उसमें तीन बेड लगे थे। कमरे में ही नाश्ता-पानी करने के बाद प्रिंस वहां से एक घंटे में लौटकर आने को कह कर कहीं चला गया। थोड़ी देर बाद 'मैं जरा बाहर से घूम कर आता हूं' कहकर संजीव चोपड़ा भी कमरे से बाहर निकल गया। लालाराम कमरे में अकेले रह गये।

लगभग तीन घंटे बाद संजीव चोपड़ा और प्रिंस चोपड़ा होटल में लौटे। वे सब झटपट चलने की तैयारी कर ही रहे थे कि अचानक कुछ पुलिसवाले वहां आ गये और सबकी तलाशी लेनी शुरू कर दी। सबसे पहले लालाराम की तलाशी ली गयी। उनके पास से कुछ नहीं निकला। फिर संजीव की तलाशी ली गयी। उसके पास से भी कुछ नहीं निकला। अंत में प्रिंस चोपड़ा की तलाशी ली गयी, तो पुलिस वाले चौंक पड़े। उसके बेड से पुलिसवालों को दो किलोग्राम सफेद पाउडर का एक पॉलिथिन पाउच मिला।

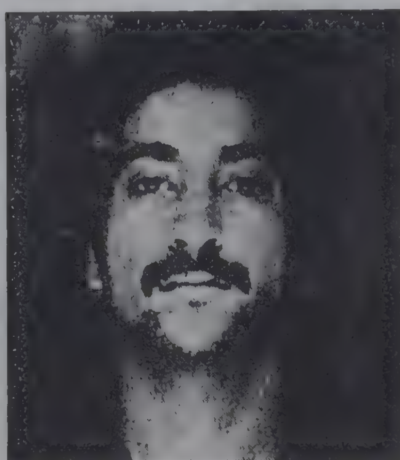
पुलिसवालों की पूछताछ के दौरान जब प्रिंस ने स्वीकार किया कि उस पैकेट में स्मैक है, जिसे वह काठमांडू ले जाना चाह रहा था। संजीव ने लेन-देन की बात शुरू की, तो पुलिसवालों ने 45 लाख रुपए लेकर तीनों को छोड़ने की शर्त रखी। रकम न चुकाने की स्थिति में नेपाली कानून का जो ब्यौरा दिया गया, उसे सुनकर लालाराम का चेहरा सफेद पड़ गया।

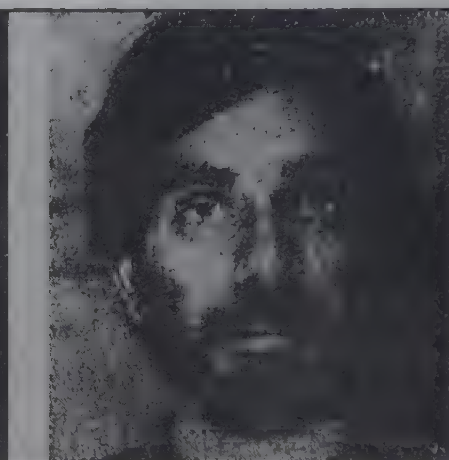
संजीव ने लालाराम को एक कोने में ले जाकर समझाया कि वह तुरंत पच्चीस लाख रुपये का प्रबंध करे, वरना वह तीनों लोगों को सालों तक नेपाल की जेलों में सड़ना पड़ेगा।

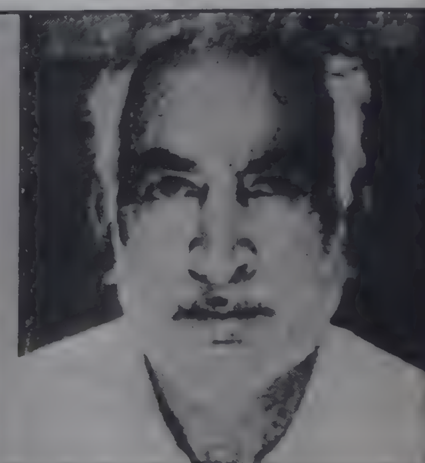
लेकिन लालाराम ने इतनी बड़ी रकम एक साथ चुकाने से साफ मना कर दिया। तब संजीव ने एक अन्य रास्ते की बात समझाकर लालाराम से सैंट्रो कार की चाबी ले ली और सुबह तक कोई व्यवस्था करके वापस लौट आने का आश्वासन दिया। लेकिन जब संजीव कार लेकर गया, तो दो-तीन दिन तक वापस नहीं आया।

इधर नेपाल पुलिस के उन कर्मचारियों ने इन दोनों को भैरवा थाने ले जाने के बजाय होटल के उसी कमरे में नजरबंद रखा और खुद भी उसी कमरे में जमे रहे। संजीव चोपड़ा का कहीं पता न था। लालाराम वर्मा दिल्ली अपनी पत्नी को फोन करना चाहते थे और सारे हांलात से अवगत कराना चाहते थे। लेकिन फोन करने के लिए उनके पास एक भी पैसा बचा न था। जब उन्होंने प्रिंस से कुछ पैसा मांगा, तो प्रिंस चोपड़ा ने साफ मना कर दिया। उसने बताया कि सारी रकम संजीव अपने साथ ले गया है। इस बात से लालाराम अपना आपा खो बैठे और गुस्से में प्रिंस की अच्छी-खासी पिटाई कर दी। मार खाने के बाद प्रिंस को पुलिसवालों ने उस कमरे से निकलकर अलग व्यवस्था कर दी थी।

लालाराम अब तक समझ चुके थे कि वह एक बड़े षड्यंत्र के शिकार हो गये हैं। कमरे में चार पुलिसवालों की मुस्तैदी, लॉक अप में बंद न किया जाना और प्रिंस की राजसी ठाठ-बाट देखकर उन्हें यह बात समझते देर नहीं लगी थी। स्मैक के आरोप में लालाराम का


अभियुक्त प्रिंस चोपड़ा


अभियुक्त राजीव चोपड़ा


संजीव के पिता जगन्नाथ चोपड़ा

चेहरा फक पड़ा हुआ था, जबकि प्रिंस के चेहरे पर किसी तरह के भाव नहीं थे। वह मजे से समय काट रहा था। वह जो भी इच्छा प्रकट करता, उसकी पूर्ति तुरंत हो जाती थी। लालाराम ने उन अजीबोगरीब पुलिसवालों से लगभग रोकर कहा था, "और कितने समय तक आप लोगों की कैद में रहना पड़ेगा?" पुलिसवालों ने टका-सा जवाब दिया, "जब तक हमारी रकम हमें नहीं मिल जायेगी।" उन्हें लालाराम की बेचारगी और उनकी व्यथा से कोई वास्ता न था। एक बार उन्हें रोते देखकर एक मुस्टंडे ने कहा, "रोता क्यों है लाले? हम लोगों ने सोच लिया है, तुझे अब ज्यादा दिन इंतजार नहीं करवायेंगे।

अगर एक सप्ताह के अंदर हमारी रकम नहीं मिली, तो हम तुझे जेल भेज देंगे। ड्रग्स का मामला है। साल-छह महीने मुकदमा चलेगा और फिर हमारी सरकार तुझे फांसी दे देगी। फिर तुझे हमसे भी मुक्ति मिल जाएगी और इस बेमतलब के संसार से भी।"

लालाराम ने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया और आंसुओं के बीच सारी बातें सिर झुका कर सुन लीं। इस षडयंत्र को उन्होंने कर्म का फल माना और चुपचाप उनके चंगुल से निकल भागने की कल्पना करने लगे।

उन्हें वहां खाने-पीने की कमी तो नहीं थी, मगर कैद तो आखिर कैद होती है। वह चुपचाप उस कमरे में पड़े भगवान से मुक्ति की प्रार्थना करने लगे। वह रोज वहां से भाग निकलने की फिराक में रहते।

यह संयोग ही था कि दो महीने बाद उन्हें मौका मिल ही गया। उस रात उन चार मुस्टंडों में से दो पहले ही कहीं चले गये थे और जो दो शेष बचे थे, उन्होंने कमरे में जमकर शराब पी ली थी। वे शराब पीते जाते थे और वर्माजी को गालियां भी देते थे। यही उनकी दिनचर्या भी थी। दरअसल, वर्माजी की तरफ से रकम न मिलने के कारण और इतना लम्बा समय बीत जाने के कारण वे वर्माजी पर बुरी तरह कुपित हो गये थे। वर्माजी के कारण ही उन चारों को भी लगातार एक ही कमरे में रात-दिन ड्युटी देनी पड़ रही थी। उस रात उन दोनों ने जमकर शराब पी और खाना खाया। खाना खाने के बाद उन दोनों ने दरवाजे में भीतर से ताला लगा दिया और अलग-अलग बेड पर पसर गये। थोड़ी देर बाद दोनों खर्राटे लेने लगे।

लालाराम सोये नहीं थे। उनकी आंखों में नींद कहां थी। उन्हें तो अपनी पत्नी-बच्चों की याद सता रही थी। वह जागते हुए, उनके सोने का इंतजार कर रहे थे। जब



संजीव की पत्नी अनीता चोपड़ा: हम किसी से कम नहीं

दोनों बेसुध होकर सो गये, तो लालाराम धीरे से उठे और एक की जेब से चाबी निकाल ली। फिर उसी से ताला खोलकर कमरे से बाहर निकल आये और बाहर से दरवाजा बंदकर, उसमें बाहर से ताला जड़ दिया।

पूरे दो महीने बाद जब बाहर आकर आजादी की सांस ली, तो उनका दिल धड़क उठा। वह जल्दी से जल्दी दिल्ली पहुंचकर अपने परिवारवालों से मिल लेना चाहते थे। पता नहीं, इस बीच उनकी क्या हालत हुई होगी। उनसे किसी तरह का संपर्क भी नहीं हो पाया था और न कोई बात मालूम हुई थी। कमरे से निकल तो आये, पर उनकी जेब में एक पैसा भी नहीं था, ताकि वह भैरवा से दिल्ली पहुंच सके। लेकिन एक ट्रकवाले की मेहरबानी से वह दिल्ली की ओर चल ही पड़े।

इधर दो महीने पहले ही, लालाराम को नेपाल पुलिस के चंगुल में फंसाकर संजीव चोपड़ा उनकी सैंट्रो कार लेकर सीधे दिल्ली चला आया था।

दरअसल, उसका असली काम अब शुरू हो रहा था। संजीव जयभगवान को साथ लेकर श्रीमती कांति देवी वर्मा के घर पहुंचा। उसे अकेले आया देखकर कांति देवी ने उससे अपने पति के बारे में पूछा। उनका सवाल सुनकर संजीव चोपड़ा ने अपना मुंह लटका लिया। वह बोला, "भाभीजी, भाई साहब को नेपाल पुलिस ने स्मैक रखने के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया है। मैंने अपनी ओर से उन्हें छुड़ाने की पूरी कोशिश की, लेकिन नाकाम रहा।"

"उन्हें छुड़ाने के लिए क्या करना होगा?"

"संजीव ने नेपाल पुलिस से बात कर ली है। वे 45 लाख रुपए लेकर मामला रफा-दाफा करने को तैयार हैं। आप इस रकम की व्यवस्था कर दें, तो भाई साहब जल्दी से जल्दी छूट जायेंगे।" जयभगवान ने समझाया, तो कांति देवी बोलीं, "मेरे पति को इन लोगों ने नेपाल ले जाकर फंसाया है। अब उन्हें छुड़ाने की व्यवस्था भी यही लोग करेंगे। मैं इतनी बड़ी रकम कहां से लाऊं।"

"देखिए भाभीजी, पति वह आपके हैं, मेरे नहीं। उन्हें छुड़ाना है, तो इस रकम की व्यवस्था आपको करनी पड़ेगी। नहीं तो एक हफ्ता इंतजार करने के बाद नेपाल पुलिस उन्हें गोली मार देगी।" संजीव बोला।

कांति देवी के होश उड़ गये। वह गश खाकर गिर पड़ीं। उस दिन बात आगे नहीं बढ़ सकी। जयभगवान और संजीव अपने घर लौट गये। अगले दिन कांति देवी के मोबाइल पर फोन आया। फोन करनेवाले ने कहा कि वह नेपाल से बोल रहा है। उसने बताया कि लालाराम वर्मा पुलिस कस्टडी में भैरवा में बंद है। यदि वह अपने पति को छुड़ाना चाहती है, तो जल्दी से तीस लाख रुपए की व्यवस्था कर लें।

फोन नेपाल से आया था या कहीं और से, यह तो पता नहीं चल सका। अलबत्ता, कांति देवी का साहस जवाब दे गया। अगली शाम जब जयभगवान उनसे मिलने आया, तो टूटे स्वर में उन्होंने पूछा, "भाई साहब, मैं क्या करूं? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है। मैं इतनी बड़ी रकम का इंतजाम कहां से करूं?"

"जमीन-जायदाद किस दिन काम आती है भाभीजी। भाई साहब आ जायेंगे, तो यह जायदाद फिर से बन जायेगी। आप ऐसा करो, सुल्तानपुरी वाला यह मकान बेच दो। जो भी रकम मिलेगी, उसे नेपाल पहुंचाकर वर्मा जी की जीवन रक्षा तो करें।" जयभगवान ने बातों का जाल कुछ इस तरह बुना कि कांति देवी इनकार न कर सकीं।

अगले दिन संजीव उनके बच्चों के रहने के लिए फ्लैट नंबर 156, पाकेट-7 सेक्टर-21 रोहिणी में किराये पर लेकर उन्हें शिफ्ट करवा दिया। लालाराम वर्मा का सुल्तानपुरी वाला मकान सैनिक विहार, पीतमपुरा, निवासी डेसू कर्मचारी विनोद शर्मा उर्फ वी.के. शर्मा को बेच दिया। दरअसल, वी.के शर्मा संजीव चोपड़ा का ही साथी था। इसलिए मकान को उसने बेचने की औपचारिकता निभायी थी। अलबत्ता अगले दिन इस मकान को विधिवत् रूप से भगवानदास कोयलेवाले ने 14 लाख रुपए में खरीद लिया। हालांकि वास्तविकता यह है कि इस मकान की कीमत 26 लाख रुपए थी। लेकिन चूंकि मकान आनन-फानन में बेचा गया था। इसलिए वह आधी कीमत में ही बिका था।

मकान बिक चुका था। परिवार किराये के मकान में शिफ्ट हो चुका था। चंद दिनों में ही यह क्या और कैसे हो गया? कांति देवी समझ ही न सकीं। औने-पौने दामों में मकान बेचने के बाद भी उन्हें पति की कोई सूचना नहीं मिल पा रही थी। कांति देवी से नहीं रहा गया, तो उन्होंने जयभगवान से सम्पर्क

किया। उसने उन्हें बताया कि मकान की बिक्री से मिले 14 लाख रुपए से बात नहीं बनी। नेपाल पुलिस और अधिक रकम की मांग कर रही है।

"लेकिन घर-द्वार बेचने के बाद अब मैं और क्या बेचूं?" कांति देवी रो पड़ीं। उनकी कमजोरी को शुभलक्षण मानकर चारा फेंकते हुए जयभगवान बोला, "भाभीजी, मैंने पहले भी आपसे कहा था कि जमीन-जायदाद बुरे समय में ही काम आती है। आप ऐसा करो कि रीता पब्लिक स्कूल की फाइल मुझे दे दो। मैं उसी फाइल पर बाजार से कर्ज उठा लूंगा।"

कांति देवी को झटका लगा। दरअसल सुल्तानपुरी स्थित उनके मकान के बिकने की भूमिका इसी किस्म की बातों से बनी थी। इसलिए वह बोलीं, "मैं फाइल तो दे दूंगी। लेकिन मेरी शर्त यह है कि पहले मैं नेपाल जाकर अपने पति से बात करूंगी।"

उनकी इस शर्त पर सहमति जताते हुए जयभगवान बोला, "ठीक है भाभीजी, आप चलने की तैयारी कीजिए। संजीव आपको नेपाल ले जायेगा।"

दो-एक दिन में आवश्यक तैयारियां पूरी हो गयीं, तो कांति देवी अपने भाई राजेन्द्र और बेटे हेमंत को लेकर संजीव के साथ नेपाल के लिए रवाना हो गयीं। लेकिन दुर्भाग्यवश उन्हीं दिनों नेपाल के राजा वीरेन्द्र वीर विक्रम और उनके परिजनों को उन्हीं के पुत्र दीपेन्द्र ने मार डाला था। जिसकी वजह से समूचे नेपाल में अराजकता फैल गयी थी। भारत-नेपाल सीमा भी सील कर दी गयी थी।

सीमा बंद होने के कारण कांति देवी नेपाल नहीं जा सकीं। अलबत्ता, उन्होंने सीमा पर रुककर इस बात की तस्दीक कर ली कि उनके पति नेपाल पुलिस के कब्जे में भैरवा में थे और उन्हें होटल 'मूनलाइट' में रखा गया था।

यह स्थिति ऐसी थी कि कांति देवी का साहस बिलकुल जवाब दे गया। उन्होंने दिल्ली लौटकर अपने 'रीता पब्लिक स्कूल' के दस्तावेज जयभगवान और संजीव कुमार के हवाले कर दिये। संजीव ने उनसे कुछ कोरे कागजों पर हस्ताक्षर भी कराये। इसके बाद भी कुछ दिन और बीत गये।

कांति देवी कभी जयभगवान से मिलतीं, तो कभी संजीव से। लेकिन दोनों में से कोई भी उन्हें संतोषजनक जवाब नहीं दे रहा था। इस बीच एक दिन शाम को उन्हें सूचना मिली कि कुछ लोग उनके रीता पब्लिक स्कूल पर कब्जा करने पहुंचे हैं। कांति देवी तुरंत सागरपुर की ओर भागीं।

दरअसल, सागरपुर में लालाराम वर्मा के अपने पडोसियों से बेहद अच्छे संबंध थे। उन्हें लालाराम के साथ हुए हादसे और धोखाधड़ी की जानकारी भी थी। इसलिए जब वे लोग स्कूल पर कब्जा करने पहुंचे, तो पड़ोसियों ने उन्हें घेर लिया। हालात अपने खिलाफ देखकर वे लोग वहां से भाग खड़े हुए। बाद में पता चला कि उन लोगों की अगुवाई संजीव चोपड़ा कर रहा था। इस हादसे से कांति देवी बुरी तरह डर गयी थीं। उन्होंने मामले की रिपोर्ट पुलिस में दर्ज करानी चाही, तो जयभगवान आड़े आ गया। उसने कांति देवी को समझा दिया कि यदि उन्होंने मामले की रिपोर्ट दर्ज करवायी, तो उनके पति के प्राणों को खतरा हो सकता है। यह सीधे-सीधे धमकी थी। इसके बाद तो उन्हें धमकियां मिलने का सिलसिला शुरू हो गया। धमकियां उनके मोबाइल फोन पर दी जाती थीं। धमकी देनेवाले उनके पति के साथ-साथ बेटों को मरवाने और बेटी को उठा लेने की धमकी देते थे।

आखिरकार परेशान होकर कांति देवी ने प्रधान मंत्री, गृह मंत्री, उप राज्यपाल, दिल्ली की मुख्य मंत्री शीला दीक्षित और पुलिस आयुक्त अजय राज शर्मा को पत्र लिखकर मदद की गुहार की। लेकिन कहीं पर भी उनकी सुनवाई नहीं हुई।

लालाराम वर्मा को घर से गये दो माह बात चुके थे। इस बीच कांति देवी हर रोज कितनी ही मौत मरी थीं। वह टूट चुकी थीं। पति के बारे में सोचतीं, तो डरतीं। अपने बच्चों के भविष्य के बारे में सोचतीं, तो डरतीं। उन्हें कोई भी ऐसी राह नहीं सूझ रही थी, जिस पर चलकर वह अपने पति को वापस हासिल कर पातीं।

तभी उस दिन अचानक लालाराम वर्मा घर आ गये। उनके घर पहुंचते ही सबके मुरझाये चेहरे खिल उठे थे। घर में खुशियों का माहौल पनप उठा। दीवाली मनने लगी। उनके उजड़े चमन में फिर से बहार आ गयी।

कुछ दिनों तक तो लालाराम अपने बिछुड़े परिवार के साथ खुशियां मनाते रहे, फिर उन्होंने अपनी मानसिक यंत्रणा भूलकर अपनी दीन-दुनिया की खबर ली। जो कुछ उन्होंने अपनी पत्नी से सुना, उसे सुनकर उनके पांवों तले की जमीन खिसक गयी।

यह यकीन तो उन्हें नेपाल में ही हो गया था कि वह एक बहुत बड़े षड्यंत्र के शिकार हो गये हैं और जिसका सूत्रधार जयभगवान नामक वह शैतान है। इसलिए जब उनकी दिमागी हालत ठीक हुई, तो वह थाना मंगोलपुरी पहुंचे और जयभगवान के खिलाफ धोखाधड़ी की रिपोर्ट लिखानी चाही। लेकिन थानाध्यक्ष मनोहरलाल ने उनकी रिपोर्ट दर्ज करने से इनकार कर दिया।

इससे जरा भी वह परेशान नहीं हुए और आगे की कार्रवाई के लिए गंभीरता से विचार करने लगे। सावधानी के तौर पर उन्होंने रोहिणी स्थित किराये के मकान को छोड़कर सपरिवार अपने स्कूल भवन में ही रहने चले आये। यहीं से अपनी गतिविधियां आगे बढ़ानी शुरू कीं।

जब उन्होंने जयभगवान के बारे में विस्तृत जानकारी की, तो पता चला कि दिल्ली में जयभगवान के षड्यंत्र के शिकार वह अकेले नहीं थे। उनके जैसे अनेक लोगों को उसने अपना शिकार बनाया था और उनसे लाखों रुपए की ठगी की थी। इनमें जयभगवान के चचेरे भाई राजबीर (निवासी गांव कुतुबगढ़), ज्वालापुरी निवासी किशनलाल परेवा और अवंतिका, रोहिणी निवासी किशनलाल बतरा के नाम प्रमुख थे। लालाराम इन लोगों से व्यक्तिगत रूप से भी मिले।

तब उन्हें पता चला कि जयभगवान अपने शिकारों को ठगने में लगभग एक ही तरीका अपनाता था और बाद में उन्हें लखपति से फुटपाथ पर ला खड़ा करता था। किशनलाल परेवा को तो इस तरह लूटा था कि उस बेचारे का मानसिक संतुलन ही गड़बड़ा गया था।

जयभगवान मूलतः गांव कुतुबगढ़, दिल्ली का ही निवासी था। वह दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) में चालक था, लेकिन उसके हाथों एक एक्सीडेंट में एक राहगीर की मौत हो गयी थी, इसलिए उसे नौकरी से निकाल दिया गया था।

शुरू से ही खुराफाती और जालसाज दिमाग का आदमी जयभगवान जब बेकार हो गया, तो उसने दो नंबर के रास्ते से एक लम्बा हाथ मारने की ठानी। इस सिलसिले में वह अपने एक परिचित चालक संजीव चोपड़ा से मिला, जो भोले-भाले लोगों को ठगकर लाखों रुपए कमा रहा था। उसने जयभगवान की बेकारी की कहानी सुनी, तो उसे भी अपनी टीम में शामिल कर लिया। शुरू-शुरू में जयभगवान चालीस-पचास हजार के छोटे-मोटे ग्राहक लाता था, लेकिन उससे उसका काम नहीं चल पा रहा था। बाद में चालाक जयभगवान ने ठगी के कई गुर सीख लिये और खुद ही कुछ बड़ा करने की सोची।

ठगी के लिए लोगों को विश्वास में लेना सबसे पहली शर्त है। लेकिन नौकरी छूट जाने के कारण उसकी रेपुटेशन पर असर पड़ा था और कोई उसे उधार देने से भी कतराता था। इसलिए जयभगवान ने अपने किसी पड़ोसी या निकटस्थ व्यक्ति की तलाश शुरू कर दी,

जिस पर वह अपना हाथ आजमा सके।

इसके लिए उसे एक उपयुक्त व्यक्ति मिल भी गया। वह था उसका अपना चचेरा भाई राजबीर। दरअसल, जयभगवान के एक चाचा फौज में थे, जिनका नाम चंद्र सिंह था। उनके तीन बेटे और एक बेटी थी। राजबीर उन्हीं का बड़ा लड़का था। वह गांव में ही रहकर एक किराना की दुकान चलाता था, जिससे उसकी अच्छी आमदनी हो जाती थी। उसके पास पारिवारिक संपत्ति भी काफी थी और नगदी रकम भी।

फौज से रिटायर होने के बाद चंद्र सिंह भी गांव आ गये थे और अपनी जमा-पूंजी से प्लाट खरीदने और बेचने का काम शुरू कर दिया था। राजबीर ने अपने पिता के कारोबार में भी कुछ पूंजी लगा दी और इस तरह दोनों बाप-बेटे मिलकर दिल्ली के नजफगढ़, कुतुबगढ़, हिरनकुंदना आदि कई गांवों में अनेक प्लाट बेचे और खरीदे।

उनसे निकटता बनाने के लिए जयभगवान ने भी कुछ प्लाट बिकवाये और जिनसे उसे अच्छा कमीशन भी मिला। इस तरह राजबीर के साथ-साथ अपने चाचा चंद्र सिंह के दिल में अपने लिए जगह बना ली। चंद्र सिंह कारोबार में जयभगवान से भी विचार-विमर्श करने लगे।

एक दिन जयभगवान अपने दो साथियों के साथ चंद्र सिंह के पास पहुंचा और उनके कान के पास फुसफुसाते हुए कहा, "चाचाजी, ये मेरे दोस्त संजीव और प्रिंस हैं। इनकी करोलबाग में इलेक्ट्रॉनिक की बहुत बड़ी दुकान है। इनका नेपाल से करोड़ों रुपए का इलेक्ट्रॉनिक सामान आता है, जिससे यह लाखों मुनाफा कमाते हैं। अभी नेपाल से एक बड़ी खेप आनेवाली है, जिसके लिए इन्हें एक मुश्त पंद्रह लाख रुपए की जरूरत है। आप इन्हें दे दें, तो ठीक पंद्रहवें दिन पंद्रह लाख के साथ एक लाख रुपया अलग से देंगे। वैसे तो मैं ही इसमें मीडिएटर हूं, परंतु अगर गारंटी चाहिए तो पीतमपुरा में इनकी बंद पड़ी कोठी है, जिसकी कीमत पचास-साठ लाख रुपए से कम न होगी। अगर आप चाहेंगे, तो कोठी के कागजात आपके पास गिरवी रख देंगे।"

चंद्र सिंह को यह सौदा अच्छा लगा। उसने इस काम के लिए अपने बेटे राजबीर को भी बुला लिया और उससे मंत्रणा की, तो उसने भी स्वीकृति दे दी। बात दरअसल यह थी कि जयभगवान उनके घर का आदमी था, जिस पर अविश्वास करने का प्रश्न ही नहीं उठता था। इसलिए तय हुआ कि कल के बजाय आज ही वह कोठी देख ली जाये। तब जयभगवान संजीव और प्रिंस के साथ चंद्र सिंह और राजबीर को लेकर पीतमपुरा आ गया और तथाकथित वह कोठी दिखा दी। कोठी देखकर चंद्र सिंह और राजबीर की बांछें खिल गयीं। वाकई वह कोठी काफी शानदार थी और पचास-साठ लाख से कम की न थी।

संजीव चोपड़ा ने उसी दिन कोठी का कागज चंद्र सिंह को सौंप दिया। चूंकि चंद्र सिंह खुद प्रोपर्टी डीलर थे, इसलिए रात भर कागज का अध्ययन करने के बाद दूसरे दिन उन्होंने राजबीर से बैंक से साढ़े चार लाख रुपए निकलवाये। दस लाख रुपए स्वयं दिये। इस तरह साढ़े चौदह लाख रुपए दूसरे ही दिन दोपहर उन दोनों ने संजीव को सौंप दिये। पचास हजार कम की बात जब उठी, तो राजबीर ने अपनी कार बेच देने की बात की। इस पर जयभगवान ने बताया कि यह काम संजीव आसानी से कर देगा।

अतएव साढ़े चौदह लाख रुपए नगद और एक मारुति कार नंबर डीएल 2 सी ए 8110 लेकर जयभगवान, संजीव और प्रिंस कुतुबगढ़ से निकले, तो फिर कभी पलटकर वापस नहीं आये। जय भगवान की शायद यह पहली बड़ी ठगी थी। इस तरह जब बीस-पच्चीस दिन बीत गये, तो चंद्र सिंह और राजबीर को अपनी रकम की चिंता हुई।

तब उन दोनों ने संजीव चोपड़ा के निवास सेक्टर-2 स्थित फ्लैट पर पहुंचे, तो वहां संजीव चोपड़ा की पत्नी अनीता चोपड़ा ने बताया, "आप लोग यहां क्यों आये? आप तुरंत यहां से चले जाइये। हमारे पीछे सीबीआई लगी हुई है।"



लालाराम वर्मा एवं कांति देवी वर्माः ठगी के शिकार

"लेकिन सीबीआई लगी है, तो हमें क्या? हमें तो अपनी रकम चाहिए।" इस पर संजीव चोपड़ा की पत्नी बोली, "बात दरअसल यह है कि संजीव को नेपाल पुलिस ने पकड़ लिया है और अब उसके साथियों की तलाश कर रही है।"

अभी संजीव चोपड़ा की पत्नी अनीता आगे कुछ बोलने ही जा रही थी कि तभी वहां अचानक जयभगवान प्रकट हो गया और दोनों को देखकर घबराते हुए बोला, "चाचाजी, मेरी बात मानिए और तुरंत यहां से चले जाइये। यहां पर एक पल भी रुकना खतरे से खाली नहीं है। संजीव नेपाल पुलिस की गिरफ्त में है। उसने मार के डर से आप दोनों का नाम भी लिखा दिया है। पुलिस वहां से चल चुकी है और अब किसी भी समय आप दोनों को गिरफ्तार कर सकती है। पुलिस ने पूछा था कि इतना पैसा कहां से लाया, तो उसने सीधे आप दोनों का नाम-पता लिखा दिया। और नेपाल का कानून दुनिया में सबसे सख्त कानून है। अगर पुलिस एक बार आप दोनों को गिरफ्तार कर ले गयी, तो वहां ऐसे अपराध की सजाएं हैं आजीवन कारावास या गोली मार कर मौत।"

नेपाल की सजाओं के बारे में सुनकर चंद्र सिंह और राजबीर के होश उड़ गये। चंद्र सिंह ने घबराये स्वर में कहा, "अब क्या होगा? तुम्हीं कोई रास्ता बताओ।" तब जयभगवान ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा, "ठीक है, आप किसी तरह नेपाल पुलिस की गिरफ्त से संजीव को छुड़ाने की चेष्टा कीजिए। मैंने संजीव से बात कर ली है। उसका कहना है कि पांच लाख रुपया लेकर नेपाल पुलिस उसे छोड़ देगी और जब वह छूट जायेगा, तो आप लोगों पर भी कोई आंच नहीं आयेगी और तुम्हारी रकम भी मिल जायेगी।"

अपने साढ़े चौदह लाख नगद और एक कार पाने के चक्कर में दोनों बाप-बेटे भागे-भागे घर आये और रातोंरात अपने दोस्त-रिश्तेदारों से किसी भी तरह पांच लाख रुपया इकट्ठा कर लिया। सुबह ही जब जयभगवान उनके यहां पहुंचा, तो दोनों ने जल्दी से उसे पांच लाख रुपया सौंप दिया और मिन्नतें करते हुए कहा, "तुम यह रकम जल्दी से जल्दी नेपाल ले जाकर संजीव को छुड़ा लाओ।"

"आप मुझपर भरोसा रखें, चाचाजी।" जयभगवान ने गंभीरता से कहा, "अगर मुझ पर भरोसा नहीं है, तो राजबीर को मेरे साथ नेपाल भेज दीजिए। इससे दो फायदे होंगे। एक तो यह अपनी आंखों से नेपाल पुलिस के साथ लेन-देन देख लेगा, दूसरे पुलिस के सहयोग से यह कुछ इलेक्ट्रॉनिक सामान भी वहां से ले आएगा, जिससे आपके घाटे की कुछ भरपाई हो जायेगी।"

चंद्र सिंह को यह बात जम गयी और उन्होंने राजबीर को कुछ और पैसे देकर जयभगवान के साथ उसे नेपाल भेज दिया। वैसे राजबीर के साथ जयभगवान खुद न जाकर उसके साथ प्रिंस को भेज दिया।

और फिर राजबीर के साथ वही नाटक मंचित किया गया, जैसा नाटक लालाराम के साथ किया गया था। यह अलग बात थी कि लालाराम के पहले राजबीरवाली घटना घट चुकी थी। यानी यह बात जनवरी, 1998 की है। परंतु वही होटल और वैसे ही पुलिसवाले इस बार भी थे।

राजबीर के साथ गये प्रिंस ने नेपाल सीमा में प्रवेश के पूर्व ही राजबीर से 25 हजार रुपये, जो उसने इलेक्ट्रॉनिक सामान खरीदकर लाने के लिए रखे थे, ले लिया। जब वे भैरवा के मूनलाइट होटल में पहुंचे, तो उन्हें पुलिस हिरासत में संजीव मिल गया। कुछ देर बाद प्रिंस और राजबीर एक मारुति कार में होटल से बाहर निकले, तो रास्ते में पुलिस ने उनकी तलाशी ले डाली। तलाशी में उन्हें कार से सफेद रंग के पाउडर का पॉलिथीन पैक मिला। जिसे स्मैक बताकर पुलिस ने राजबीर को गिरफ्तार कर लिया। उसे फिर होटल मूनलाइट में लाया गया। पुलिस के साथ सौदेबाजी हुई और डेढ़ लाख रुपए लेकर राजबीर को छोड़ने की बात तय हुई। विवश होकर राजबीर ने फोन पर अपने पिता से संपर्क किया। उस समय चंद्र सिंह के पास पैसे नहीं थे। लाखों रुपया उन पर कर्ज चढ़ गया था। दूसरा कोई रास्ता न देखकर अपने बेटे को छुड़ाने के लिए चंद्र सिंह ने अपना मकान एक लाख रुपए में गिरवी रख दिया। यह रकम भी उन्होंने दिल्ली में जयभगवान को सौंप दिया।

राजबीर छूटकर वापस दिल्ली तो आ गया, लेकिन बीस लाख रुपए से अधिक नगद और एक मारुति कार गंवा कर चंद्र सिंह और राजबीर के सामने दुनिया अंधेरी हो उठी। राजबीर ने नेपाल में घटी घटनाओं और बातचीत का जो ब्यौरा दिया। उससे चंद्र सिंह के सामने स्पष्ट हो गया कि वह जरूर धोखाधड़ी के शिकार हो गये हैं। उन्होंने तुरंत जयभगवान से संपर्क करना चाहा, लेकिन वह तो पहले ही किनारा कर चुका था। तब चंद्र सिंह और राजबीर गांव के कुछ प्रमुख लोगों को लेकर पीतमपुरा स्थित उस कोठी पर पहुंचे, जिसे कुछ दिन पहले उन्हें दिखाया गया था और जिसका मालिकाना कागज उनके पास गिरवी था। लेकिन जब वह उस कोठी पर पहुंचे, तो उन्हें पता चला कि वह कोठी राणा नामक किसी अन्य व्यक्ति की थी। संजीव चोपड़ा से उस कोठी का कोई लेना-देना नहीं था। कोठी के कागजात नकली थे।

तब सब तुरंत रोहिणी स्थित संजीव चोपड़ा के फ्लैट पर पहुंचे, मगर वह फ्लैट खाली किया जा चुका था। चंद्र सिंह और राजबीर अपनी किस्मत को रोते हुए संजीव चोपड़ा की तलाश में जुटे रहे। इस बीच जयभगवान के जीजा गोपाल ने उनसे पचहत्तर हजार रुपए लेकर संजीव का पता बताने की पेशकश की, लेकिन यह प्रस्ताव दोनों ने ठुकरा दिया। दरअसल, अब वे किसी को एक पैसा भी देने की स्थिति में नहीं थे।

आखिर राजबीर के एक पूर्व कार चालक सूरज ने, जो गांव पंजाब खोड़ का निवासी था, राजबीर को संजीव का नया पता दिया। दोनों बाप-बेटे तुरंत उस नए पते रोहिणी के स्थित सेक्टर-3 के बी-2 में पहुंचे। वहां संजीव मिल गया। जब गरमागरम झड़पें हुईं, तो संजीव के पिता जगन्नाथ चोपड़ा ने चिकनी-चुपड़ी बातें कर मामले को रफा-दफा करने का प्रयास किया। इस बीच संजीव चोपड़ा की पत्नी अनीता चोपड़ा ने फोन करके जयभगवान को भी वहीं बुलवा लिया।

जयभगवान को देखते ही चंद्र सिंह आग बबूला हो उठे। लेकिन जयभगवान ने उन्हें समझाया कि संजीव का सामान अब भी नेपाल पुलिस के कब्जे में है। अगर बीस हजार रुपया देकर माल छुड़ा लिया



सब-इंसपेक्टर लोकेश शर्मा

जाये, तो सारा घाटा एक साथ पूरा हो सकता है। पता नहीं, जयभगवान की बातों में ऐसा क्या जादू था कि राजबीर एक बार फिर बीस हजार रुपए लेकर संजीव और प्रिंस को देने के लिए तैयार हो गया।

इस तरह जयभगवान ने अपने ही खानदान के एक परिवार को बरबाद कर दिया।

ज्वालापुरी, नांगलोई, दिल्ली निवासी किशनलाल परेवा की ज्वालापुरी में बर्तनों की दुकान थी। जमा-जमाया काम था उनका। लेकिन इंसान की धनतृष्णा कभी शांत नहीं होती। किशनलाल भी अपने काम का विस्तार करना चाहते थे। जिसके लिए उसे 50 हजार रुपए की जरूरत थी। किशनलाल ने अपने एक मित्र अशोक कुमार से इस बारे में चर्चा की, तो उसने उन्हें जयभगवान से 5 प्रतिशत मासिक ब्याज पर यह रकम उधार दिलवा दिया। उन दिनों जयभगवान नजफगढ़ में रहता था। कुछ समय बाद किशनलाल ने जयभगवान की रकम लौटा दी। लेकिन जयभगवान के किशनलाल से पारिवारिक संबंध बन चुके थे। इसी दौरान जयभगवान ने नई दिल्ली स्थित बिड़ला मंदिर में अपनी बेटी की शादी की, तो किशनलाल को भी आमंत्रित किया। यहीं पर जयभगवान ने उन्हें संजीव चोपड़ा से मिलवाया।

किशनलाल का बर्तनों का काम तो चल ही रहा था। साथ ही उन्होंने गांव मुंडवा में प्लास्टिक दाने की आढ़त खोल ली थी। उसी दौरान जयभगवान ने किशनलाल को सलाह दी कि वह संजीव चोपड़ा के काठमांडू स्थित प्रिंस होटल में तीन लाख रुपए की हिस्सेदारी कर लें, तो उन्हें प्रतिमाह 30 हजार रुपए की आमदनी होती रहेगी। किशनलाल को बात जमी नहीं। इसलिए उन्होंने इस काम को करने से मना कर दिया। बात आयी-गयी हो गयी।

मई, 1998 में जयभगवान ने अपना नजफगढ़ स्थित मकान बेच दिया। वह रोहिणी में फ्लैट लेना चाहता था। लेकिन उस समय तत्काल कोई फ्लैट न मिल पाने के कारण किशनलाल ने अपने किरायेदार से मकान खाली करा कर जयभगवान को किराये पर रख लिया। दिन-रात का साथ हो जाने पर जयभगवान ने किशनलाल का ब्रेनवाश करना शुरू कर दिया। अंततः उसने वह उन्हें संजीव के व्यवसाय में भागीदारी के लिए राजी कर ही लिया। लेकिन समस्या धन की थी।

किशनलाल की टैंक रोड करोलबाग में दुकान थी। इस दुकान का नंबर था 792। जयभगवान ने किशनलाल को सलाह दी कि वह दुकान की पॉवर आफ अटार्नी संजीव के नाम कर दे, जिसके आधर पर वह मार्केट से पैसा उठा लेगा। किशनलाल पूरी दुकान की बजाय इस दुकान के बेसमेंट को मोरगेज (गिरवी) रखना चाहते थे। इसी बात पर संजीव राजी हो गया। जून, 1998 में उन्होंने संजीव के नाम बेसमेंट की पॉवर ऑफ अटार्नी कर दी। इसी दौरान जयभगवान ने सेक्टर-3, रोहिणी में किराये पर एक फ्लैट ले लिया और परिवार सहित वहां रहने चला आया।

जयभगवान के जाने के कुछ दिन बाद किशनलाल को पता चला कि उनकी दुकान के बेसमेंट के आधार पर संजीव ने किसी से 10 लाख रुपये लिए हैं। किशनलाल ने उससे रकम मांगी, तो वह बहाना बनाकर टाल गया। कुछ

दिन बाद जयभगवान और संजीव चोपड़ा ने किशनलाल को समझाया कि बेसमेंट की एवज में मिले दस लाख रुपए बहुत कम हैं। बाकी रकम के इंतजाम के लिए उन्होंने किशनलाल के ज्वालापुरी स्थित मकान की पॉवर ऑफ अटार्नी संजीव के जीजा अनिल धवन के नाम करवा दी। साथ ही किशनलाल को रोहिणी में किराये पर फ्लैट दिलवा दिया। किशनलाल सपरिवार इस फ्लैट में रहने चले गये। बाद में पता चला कि संजीव चोपड़ा ने किशनलाल परेवा के उक्त मकान को अवंतिका रोहिणी निवासी किशनलाल बतरा को गिरवी रखा था। यह अलग बात है कि ठगराजों के इस गिरोह का अगला शिकार बतरा ही था। लेकिन बतरा की मार्मिक हालात का वर्णन जरा बाद में।

किशनलाल परेवा के रोहिणी आने के बाद जयभगवान और संजीव चोपड़ा ने उनकी पत्नी के सोने के 15 तोले जेवर और मारुति कार नंबर 2885 भी हड़प ली। इसके कुछ दिन बाद तीन-चार सरदार परेवा के घर पहुंचे और उससे कहा कि संजीव ने उनके काम के लिए उनसे जो रकम ली है, वह उन्हें लौटा दो, नहीं तो उन्हें जान से मार देंगे। लेकिन परेवा ने उन्हें बताया कि संजीव ने किससे कितनी रकम ली है, यह उन्हें कभी नहीं बताया। बात यही पर खत्म हो जाती, तो भी गनीमत थी। दो-तीन दिन बाद जयभगवान उन तीनों सरदारों के साथ घर आ गया। जयभगवान ने किशनलाल परेवा को समझाया कि संजीव ने सरदारों से जो रकम ली थी, वह उन्हीं के काम के लिए थी। इसलिए उन्हें यह रकम तो लौटानी ही पड़ेगी।

परेवा जाल में बुरी तरह फंस चुके थे। अंततः उन्हें वही करना पड़ा, जो जयभगवान ने कहा। उन्हें अपनी करोलबाग स्थित दुकान की पक्की रजिस्ट्री संजीव के नाम करनी पड़ी। रजिस्ट्री करवा लेने के बाद उन लोगों ने धमकी दी कि किशनलाल इस बात की चर्चा



सब इंसपेक्टर धर्मेन्द्र कुमार

किसी से भी न करे, वरना अंजाम घातक भी हो सकता है। परेवा के मनो-मस्तिष्क पर इस बरबादी की दहशत पूरी तरह हावी हो चुकी थी।

जिसका लाभ उठाकर वे लोग उनकी फैक्ट्री से मशीनें भी उठा लाये। डर के मारे परेवा इस बात की शिकायत पुलिस में भी नहीं कर सके। अगस्त '98 में संजीव चोपड़ा, प्रिंस चोपड़ा और जयभगवान एक बस लेकर किशनलाल परेवा के घर आए और उससे बोले कि बस द्वारा नेपाल चलना है, ताकि नेपाल से इलेक्ट्रॉनिक का कुछ सामान लाकर घाटा पूरा किया जा सके। किशनलाल जाना नहीं चाहते थे, लेकिन उन लोगों के डर के मारे जाने के लिए तैयार हो गये। बाद में उन लोगों ने फतेहपुरी से भी कुछ सवारियां बस में बैठायीं। अगले दिन यह बस गोरखपुर पहुंची। सवारियों का उन लोगों ने गोरखपुर में उतार दिया और बस को भैरवा ले गये। भैरवा में पुलिस ने बस को रोककर तलाशी ली। तलाशी के दौरान संजीव के सामान से सफेद रंग के पाउडर का पॉलिथीन बैग मिला। पुलिस ने पूछताछ की, तो संजीव ने स्वीकार कर लिया कि उस बैग में स्मैक है। पुलिस ने प्रिंस चोपड़ा और परेवा को तो वहीं उतार दिया और संजीव को बस में लेकर चली गयी। बस में जाने के बाद कुछ देर बाद प्रिंस परेवा को वहीं छोड़कर संजीव की खोज में चला गया। करीब एक घंटे बाद लौटकर आया और परेवा को बताया कि नेपाल पुलिस संजीव चोपड़ा को छोड़ने की एवज में 25 लाख रुपए मांग रही है। यदि इस रकम का प्रबंध न हुआ, तो पुलिस हम दोनों को भी पकड़ लेगी। परेवा ने विरोध करते हुए कहा कि स्मैक तुम्हारे भाई के कब्जे से बरामद हुई है, तो इस मामले में मैं अपराधी कैसे हो सकता हूं।

परेवा की बात सुनते ही पल भर में प्रिंस ने रंग बदला और बोला, "परेवा साहब, यह नेपाल पुलिस है, उसकी मार के डर से संजीव ने हम दोनों का नाम भी लिखवा दिया है और यह भी जान लो कि यहां इस अपराध की सजा या तो मौत है या फिर जीवन भर की जेल। हमारे पास तो धन है नहीं, अब यह आपको तय करना है कि नेपाल में सड़कर मरना है या नेपाल पुलिस को 25 लाख रुपए देने हैं।"

कुछ तो दहशत थी और कुछ प्रिंस की बातों का जाल। परेवा वैसा ही करने के लिए तैयार हो गया। जैसा कि प्रिंस चाहता था। उन्होंने दिल्ली फोन कर जयभगवान से कहा कि वह उनके ज्वालापुरी स्थित मकान को गिरवी रखकर उसकी रकम लेकर नेपाल आ जाए।

अगले दिन जयभगवान नेपाल आ गया। उसने परेवा से बताया कि पुलिस को रकम दे दी गयी है। इसके बाद वे लोग दिल्ली लौट आये। दिल्ली लौटकर परेवा ने करोलबाग स्थित एक अन्य मकान बेचकर ज्वालापुरी स्थित अपने मकान को वापस पाने के लिए 9 लाख रुपए जयभगवान को दे दिये।

किशनलाल परेवा की समस्त संपत्ति, मारुति कार, धन और व्यवसाय यह गिरोह हड़प चुका था। परेवा और उनका परिवार सड़क पर आ खड़ा हुआ था। कभी वह जयभगवान के घर के चक्कर लगाते और कभी संजीव चोपड़ा के। लेकिन उन्हें न कुछ हासिल होना था, न हुआ। उनकी हस्ती को पूरी तरह मिट्टी में मिलाने के बाद यह गिरोह नये मिशन पर काम शुरू कर चुका था।

जयभगवान की ठगी का एक प्रमुख शिकार किशनलाल बतरा भी हुए। किशनलाल बतरा का रोहिणी के ही पास अवन्तिका में 'बतरा क्लाथ हाउस' नामक एक कपड़ों का शानदार शो-रूम था। काफी अच्छी आमदनी थी।

जयभगवान और संजीव चोपड़ा अक्सर उनकी दुकान पर जाया करते थे और वक्त-बेवक्त सोना तथा अन्य संपत्ति उनके पास गिरवी रखकर रकम लेकर काम चलाते थे। वैसे सच्चाई यह थी कि सोना या संपत्ति उनकी अपनी नहीं होती थी। परंतु सोना आदि गिरवी रखकर किशनलाल के सामने अपने आपको काफी धनाढ्य साबित कर चुके थे।

जयभगवान और संजीव चोपड़ा की नजर अब किशनलाल बतरा के ऊपर ही थी। एक बार जयभगवान ने किशनलाल बतरा को अपने घर खाने पर बुलाया और खाने पर ही सरसरी तौर पर व्यवसाय आदि की बातें हुईं। जयभगवान ने बताया कि संजीव चोपड़ा नेपाल से आयातित मोटर पार्ट्स का व्यवसाय शुरू करने जा रहे हैं। अगर आप इस व्यवसाय में पैसा लगाना चाहते हैं, तो संजीव के साथ नेपाल चले जाइये। इस व्यवसाय में बहुत अच्छी आमदनी है।

नये व्यवसाय करने के लालच में किशनलाल जयभगवान की चिकनी-चुपड़ी बातों में फंस गये। तय हुआ कि संजीव, राजीव और प्रिंस के साथ किशनलाल भी नेपाल जायेंगे। यह अप्रैल '99 की बात है।

नेपाल तक किशनलाल की कार से ही जाना तय हुआ। और जब नेपाल का कार्यक्रम बना, तो एक बार फिर वही सारा नाटक मंचित हुआ। वे चारों भैरवा के उसी मूनलाइट होटल में जा ठहरे। रात हो गयी थी, इसलिए दूसरे दिन सुबह संजीव और प्रिंस किशनलाल को कार में घुमाने के

लिए निकले। रास्ते में तीन-चार लोगों ने घेर लिया और कार में स्मैक मिलने का आरोप लगाकर संजीव को थाने ले गये, जबकि किशनलाल और प्रिंस होटल आ गये। किशनलाल यह सब देखकर बुरी तरह घबरा गये थे। उन्हें सांत्वना देते हुए राजीव ने प्रिंस को संजीव का पता लगाने के लिए भेजा।

कुछ देर बाद प्रिंस घबराया हुआ लौटा और किशनलाल को बताया कि पुलिस ने संजीव के पास से एक क्विंटल स्मैक बरामद की है और पुलिस उसे छोड़ने के लिए पच्चीस लाख रुपए मांग रही है, वरना संजीव के साथ-साथ हम चारों को पुलिस गिरफ्तार कर लेगी और जैसा कि आपको बताया गया है, अगर हम फंस गये, तो नेपाल में हमें आजीवन कारावास की सजा भुगतनी होगी या हमें गोली मार दी जायेगी।

प्रिंस ने किशनलाल को यह भी बताया कि आपके जो पांच लाख रुपए कार की डिक्की में रखे गये थे, वह सब पुलिस को दे दिया गया है, मगर पुलिस फिर भी 20 लाख रुपए की मांग कर रही है। उसने किशनलाल को इस बात पर जोर देकर कहा कि किशनलालजी, आप किसी तरह अपनी पत्नी को फोन कर दिल्ली से 20 लाख रुपए मंगवा लीजिए, वरना हमारे साथ-साथ आपकी भी जिंदगी नरक में चली जायेगी। वहां आपकी पत्नी जयभगवान को रुपया दे देगी, तो जयभगवान हवाला से रुपया हमारे पास भेज देगा।

नेपाल में जाकर किशनलाल इतना घबरा गये थे कि उनकी आंखों के आगे अंधेरा-सा छाने लगा। उन्होंने प्रिंस और राजीव की बात मानकर तुरंत दिल्ली अपनी पत्नी को फोन किया और वहां की सारी बात बताते हुए जल्दी से जल्दी 20 लाख रुपए मांगकर जयभगवान को दे देने को कहा, ताकि वह हवाला द्वारा तुरंत नेपाल भेज दे।

अपने पति की बात सुनकर श्रीमती बतरा के भी होश उड़ गये। अपने पति को फांसी के फंदे से बचाने के लिए उसने अपनी सारी ताकत जुटाकर बीस लाख रुपए का बंदोबस्त कर लिया और दूसरे ही दिन उसने जयभगवान के हाथ में सौंप दिया। जयभगवान ने श्रीमती बतरा को आश्वस्त किया कि वह हवाला के जरिये तत्काल सारा रुपया नेपाल पहुंचा देगा और वहां रकम पहुंचते ही किशनलाल जी व संजीव सकुशल दिल्ली लौट आयेंगे।

उधर अगले दिन नेपाल में किशनलाल बतरा को प्रिंस ने बताया कि आपकी पत्नी ने वहां रुपया दे दिया है, जो हवाला के जरिए नेपाल पहुंच चुका है। इसके बाद किशनलाल बतरा और राजीव दिल्ली आ गये। संजीव और प्रिंस नेपाल में ही रह गये।

लगभग एक सप्ताह बाद जयभगवान किशनलाल के पास आया और बताया कि नेपालवाली चर्चा वह किसी से न करें, वरना अपराध शाखा वाले पकड़ लेंगे। उस समय तक संजीव और प्रिंस भी नेपाल से आ चुके थे।

किशनलाल अपनी किस्मत का लेखा मानकर चुप रह गये और पहले की तरह अपने व्यवसाय में लग गये। वह तब तक नहीं समझ पाये थे कि वह ठगों द्वारा ठगे गये हैं।

बात तब खुली जब जयभगवान के ही एक शिकार ज्वालापुरी निवासी किशनलाल परेवा की पत्नी की कुछ जेवरात उनके पास गिरवी रखने के लिए आयी और जब उसकी कहानी सुनी, तब किशनलाल बतरा का माथा ठनका। किशनलाल परेवा की तो दिमागी हालत इतनी खराब हो चुकी थी कि वह लगभग पागल ही हो गये थे। किशनलाल बतरा को समझते देर नहीं लगी कि वह जयभगवान और उसके साथियों द्वारा ठगे गये हैं।

अब तक वह जयभगवान का एहसान ही मान रहे थे कि उसने भागदौड़ करके उनका नेपाल पुलिस से पीछा छोड़वाया है। इसी बात का फायदा उठाकर जयभगवान अपनी पत्नी के साथ उनकी दुकान पर भी आया और 'भात भरने' वाली रस्म के नाम पर 80 हजार रुपए का कपड़ा उधार खरीद कर ले गया, जिसकी कीमत फिर कभी चुकाई नहीं गयी।

जब किशनलाल बतरा को यह विश्वास हो गया कि वह सचमुच ठगी के शिकार हुए हैं, तो सबसे पहले वह अपने मार्केट के कुछ प्रभावी लोगों के साथ किशनलाल परेवा से मिले। परेवा और राजबीर आपस में पहले ही मिल चुके थे और वह कई बार पुलिस थाने के चक्कर काट चुके थे। परेवा तो मानसिक संतुलन खो बैठे थे, मगर राजबीर की बात पुलिस मानने को तैयार नहीं थी। तब लालाराम वर्मा अतिरिक्त पुलिस आयुक्त अजय चड्ढा से मिले और उनसे अपना सारा दुख-दर्द बताया। उन्हीं के निर्देश पर 22 सितम्बर, 2001 को सुल्तानपुरी थाने में एफ.आई. आर. नंबर 1145/2001 पर रिपोर्ट दर्ज की गयी। उसी दिन रोहिणी थाने में अपराध क्रमांक 682/2001 तथा 683/2001 पर किशनलाल परेवा और किशनलाल बतरा की रिपोर्ट भी दर्ज हुई। दूसरे दिन राजबीर की रिपोर्ट भी कंझावला पुलिस स्टेशन में एफ.आई.आर. 233/2001 पर दर्ज हो गयी। मामला भारतीय दंड विधान की धारा 406, 420, 384 और 120बी के अंतर्गत दर्ज किया गया और जयभगवान के साथ-साथ संजीव चोपड़ा, राजीव चोपड़ा और प्रिंस चोपड़ा को भी इसमें अभियुक्त बनाया गया।

किंतु ताज्जुब की बात यह रही कि रिपोर्ट दर्ज हो जाने के बावजूद स्थानीय पुलिस ने इस दिशा में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई और इस तरह फिर काफी दिन बीत गये। पुलिस की ओर से उदासीनता बरतते देखकर लालाराम वर्मा एक बार फिर अतिरिक्त पुलिस आयुक्त अजय चड्ढा से मिले और अपना दुखड़ा सुनाया।

अजय चड्ढा ने इस बात को गंभीरता से लिया और इस केस का भार उत्तर पश्चिम दिल्ली जिला पुलिस के ऑपरेशन सेल के इंसपेक्टर सुखविंदर सिंह को सौंप दिया। इंसपेक्टर सुखविंदर सिंह ने युवा और साहसी सब-इंसपेक्टर लोकेश शर्मा, सब-इंसपेक्टर धर्मेंद्र कुमार, हवलदार सतीश कुमार, हेड कांस्टेबल मीर सिंह, कांस्टेबल अशोक की एक टीम बनायी और लोकेश शर्मा के जिम्मे यह कार्य सौंप दिया कि किसी भी तरह जयभगवान और उसके साथियों को गिरफ्त में लेना है।

विवेचनाधिकारी लोकेश शर्मा ने बड़ी तत्परता दिखाई और केस हाथ में आते ही उन्होंने अपने मुखबिरों का जाल-सा बिछा दिया। सबसे पहले लोकेश शर्मा ने जयभगवान और संजीव चोपड़ा की गिरफ्तारी के लिए उनके घरों पर छापा मारा और भी कई जगह दबिश दी। लेकिन आरोपी इतने चतुर थे कि हफ्तों तक पुलिस के हाथ नहीं आये। इधर से उधर छिपते रहे।

तभी 15 फरवरी, 2002 को मुखबिर ने सूचना दी कि जयभगवान गिरफ्तारी से बचने के लिए अग्रिम जमानत हेतु तीस हजारी अदालत के पास पहुंचने वाला है। फिर क्या था? इस सूचना के आधार पर लोकेश शर्मा और धर्मेंद्र कुमार तुरंत अपनी टीम के साथ तीस हजारी जा पहुंचे और इंसपेक्टर सुखविंदर सिंह के निर्देश पर जयभगवान को गिरफ्तार कर लिया।

जयभगवान से जब पुलिसिया पूछताछ की गई, तो उसने राजीव चोपड़ा का भी पता बता दिया। तब पुलिस ने राजीव चोपड़ा को भी गिरफ्तार कर लिया। राजीव चोपड़ा के भाई संजीव चोपड़ा की कहानी तो और भी दुर्घष है। उसका रिकार्ड पहले से ही खराब रहा है। पता चला है कि उसने अपनी मौजमस्ती और ऐय्याशी प्रवृत्ति के कारण चार शादियां की हैं।

कथा लिखे जाने तक गिरोह के अन्य सदस्य संजीव चोपड़ा, प्रिंस चोपड़ा और उसकी पत्नी अनीता चोपड़ा फरार थे। ●

(कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित)


दिन भर चुस्ती रात भर मस्ती
Mohäbbat™
तेल
कैप्सूल
Mohäbbat
CAPSULES
Mohäbbat
OIL
Available at all Medical Stores

तेरा यह कैसा प्यार

(पृष्ठ 9 का शेष)

"मुझे क्या मालूम? यदि मैं जानता होता, तो उसे पकड़कर ले नहीं आता। हो सकता है, वह अपने किसी पूर्व प्रेमी के साथ कहीं भाग गयी हो?" राजेश ने लापरवाही से कह दिया।

"राजेश...?" उसकी बात सुनकर बी.डी. सक्सेना को गुस्सा आ गया, "तुम्हें शर्म नहीं आती, अपनी पत्नी के बारे में इस तरह कहते हुए। मीनाक्षी ने सिर्फ तुमसे प्यार किया था। उसने तुमसे विवाह करने के लिए ऊंच-नीच और जाति-पांत के सारे बंधन तोड़ दिये थे। फिर भी तुम उसके चरित्र पर लांछन लगा रहे हो।"

"लांछन न लगाऊं तो और क्या करूं? जो औरत अपने पति और आठ महीने के दुधमुंहे बच्चे को छोड़कर चली गयी, उसके बारे में और क्या कहा जा सकता है!"

"लेकिन राजेश....।"

"देखिये, इस मामले को लेकर मैं खुद ही बहुत परेशान हूं। पूरे मोहल्ले में मेरी बदनामी हो रही है। मुझे आप क्षमा करें और खुद ही मीनाक्षी को ढूंढें। मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता।" कहकर राजेश उठा और कमरे से बाहर निकल गया।

करीब एक-डेढ़ वर्ष पहले, जब राजेश जयपुर के सवाई मान सिंह कालेज में एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई कर रहा था, तभी मीनाक्षी से उसकी मुलाकात हुई थी। राजेश कुछ रसिक स्वभाव का था। खूबसूरत लड़कियों का पीछा करना, उनसे छेड़छाड़ करना, उसकी आदत-सी बन गई थी। उसके कालेज की अधिकतर लड़कियां उसके इस स्वभाव से परिचित थीं। इसलिए कोई उसके झांसे में नहीं आती थी। लेकिन भोली-भाली मीनाक्षी उसकी लच्छेदार बातों में आकर उसे अपना दिल दे बैठी थी।

एक दिन मीनाक्षी की एक सहेली ने उसे राजेश के साथ बातें करते हुए और घूमते-फिरते देखा, तो उसने मीनाक्षी से पूछा, "मीनाक्षी, तुम राजेश को कब से जानती हो?"

"पिछले कुछ ही दिनों से।" मीनाक्षी राजदाराना मुस्कान के साथ बोली।

"कहीं तुम्हें उससे प्यार तो नहीं हो गया?" मीनाक्षी की सहेली ने लापरवाही से पूछ लिया।

"क्यों, इसमें तुम्हें कोई एतराज है क्या?" मीनाक्षी गंभीर होकर बोली।

"लगता है, तुम्हें राजेश के बारे में कोई जानकारी नहीं है।"

"आखिर तुम कहना क्या चाहती हो?" मीनाक्षी ने भी सवाल कर दिया।

"राजेश एक नंबर का मक्कार और जालसाज लड़का है। वह कालेज की कई लड़कियों को अपने प्रेमजाल में फंसाकर उनकी इज्जत से खिलवाड़ कर चुका है। आये दिन नयी-नयी लड़कियों को पटाना उसकी आदत में शुमार है। बेहतर यही होगा कि तुम उसका साथ छोड़ दो, वरना तुम भी अन्य लड़कियों की तरह पछताओगी।"

"यह तुम क्या कह रही हो? राजेश एक शिक्षित और अच्छे घराने का लड़का है। उसके पिता और भाई सभी पढ़े-लिखे और प्रतिष्ठित ओहदों पर हैं। फिर वह इतना बुरा कैसे हो सकता है?" मीनाक्षी एकदम गंभीर हो गयी।

"तुम बहुत भोली हो मीनाक्षी। अब मैं तुम्हें एक ऐसी घटना के बारे में बताती हूं, जिसे सुनकर तुम्हें समझ में आ जायेगा कि राजेश कैसा लड़का है। आओ, चलकर कुछ देर पार्क में बैठकर बातें करते हैं।" मीनाक्षी की सहेली ने कहा, तो मीनाक्षी उत्सुकतावश उसके साथ चलकर पार्क में आ गयी। दोनों बैठकर बातें करने लगीं। मीनाक्षी की सहेली ने कहा, "तुमने सीमा शर्मा का किस्सा नहीं सुना क्या?"

"नहीं तो, कौन सीमा शर्मा?" मीनाक्षी ने हैरानी से पूछा।

"सीमा शर्मा एक ट्रेनी नर्स थी। वैसे तो सीमा शर्मा विवाहित थी, लेकिन पति से किसी बात पर झगड़ा हो जाने के कारण वह अपने पति से अलग हो गयी थी। पति से अलग होने के बाद उसने नर्सिंग की ट्रेनिंग के लिए कालेज में दाखिला ले लिया था। राजेश ने जब सुना कि सीमा तलाकशुदा है, तो वह उसके पीछे लग गया था। सीमा शर्मा उससे प्रभावित हो गयी, तो दोनों एक साथ घूमने-फिरने लगे। कालेज में उनके प्यार के चर्चे आम हो गये। सीमा ने खुलकर कहना शुरू कर दिया कि वह और राजेश एक-दूसरे से प्रेम करते हैं और शीघ्र ही विवाह करनेवाले हैं। कोई चार-पांच महीने तक तो राजेश की और उसकी अंतरंगता बनी रही। लेकिन धीरे-धीरे राजेश उससे कटने लगा। एक दिन मैंने देखा कि सीमा शर्मा पार्क में बैठी रो रही थी। उस समय सभी लड़के-लड़कियां जा चुके थे। सीमा को इस तरह तनहा बैठी देखकर मैं उसके पास गयी, तो उसका आंसुओं से भीगा चेहरा देखकर मैं चौंक पड़ी। मैंने उससे



मीनाक्षी के माता-पिता बी.डी. सक्सेना और शरबती देवी

पूछा, "क्या बात है सीमा, तुम रो क्यों रही हो?"

"मेरा सब कुछ लुट गया। राजेश ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा।"

"आखिर हुआ क्या?"

"राजेश ने मुझसे शादी करने से इनकार कर दिया है।"

"तो इसमें क्या हुआ? तुम्हें कोई अन्य लड़का मिल जायेगा। छोड़ो राजेश को।"

"लेकिन वह तो मेरा सब कुछ लूट चुका है। मैं उसके बच्चे की मां बननेवाली हूं।" सीमा ने रोते हुए कहा।

"अब क्या कहता है वह?"

"उसका कहना है कि एबॉर्शन करवा लो। मैं अभी शादी नहीं कर सकता।"

"तुम चिंता मत करो, मैं राजेश से बात करूंगी।" फिर मैंने राजेश से इस विषय पर बात की, तो उसने मुझे यह कहकर टाल दिया कि तुम इस मामले में न बोलो, तो अच्छा रहेगा। मैं खामोश हो गयी। इस बातों से स्पष्ट था कि सीमा एबॉर्शन करवाकर उसकी प्रेमिका बनी रहे।

"फिर क्या हुआ?" मीनाक्षी ने घबराकर पूछा।

"होना क्या था? जब सीमा उसके शिकंजे से निकलने लगी, तो एक दिन उसने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर उसका अपहरण कर लिया। जब लड़के सीमा को उठाकर हवा सड़क की ओर ले जा रहे थे, तो मैंने देख लिया और शोर मचा दिया। लोग इकट्ठे हो गये, तो राजेश और उसके दोस्त सीमा को छोड़कर भाग गये। उनमें से दो लड़के पकड़े भी गये थे। लेकिन सब बड़े घरों के थे।

सीमा के पिता एक मामूली कम्पाउंडर थे। गरीब पिता कोई कानूनी कार्रवाई नहीं कर सके और उन्होंने उल्टा सीमा को ही भला-बुरा कहा। फिर एक दिन निराश और हताश सीमा ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। देखो मीनाक्षी, मैं जो कह रही हूं, वह तुम्हारे भले के लिए कह रही हूं। अब भी वक्त है, संभल सकती



माननीय न्यायाधीश
श्री ओ.पी. अग्रवाल

हो, तो संभल जाओ, वरना राजेश तुम्हें भी बरबाद कर देगा।"

सहेली की बात सुनकर मीनाक्षी बुरी तरह परेशान हो गयी थी। वह कभी सोच भी नहीं सकती थी कि भोली-भाली सूरतवाला, शरीफ माता-पिता का बेटा राजेश ऐसा भी होगा। वह अगले दिन राजेश से मिली और सहेली द्वारा बतायी गयी बातें उससे बता दीं।

"तुम्हारी सहेली ने एक मनगढ़ंत कहानी सुनाई है और तुमने उस पर विश्वास भी कर लिया?"

"तो क्या वह झूठ कह रही थी, सीमा शर्मा से तुम्हारा कोई संबंध नहीं था?" मीनाक्षी ने आश्चर्य से पूछा।

"यह तो मैं नहीं कह सकता कि सीमा से मेरा कोई संबंध नहीं था। सीमा से मेरी दोस्ती थी। लेकिन तुम स्वयं सोचो मीनाक्षी, जिस लड़की ने अपने पति को सिर्फ इसलिए छोड़ दिया कि वह गरीब था, उसकी आमदनी कम थी। वह लड़की भला अच्छी कैसे हो सकती है। सीमा का चरित्र अच्छा नहीं था। अपने पति को छोड़कर, वह मेरे पीछे पड़ गयी थी। जो बच्चा पहले से ही उसके पेट में था, उसे मेरा बच्चा बताकर, मुझसे विवाह करने की जिद करने लगी। भला मैं क्यों किसी तलाकशुदा लड़की से विवाह करता।" राजेश ने अपनी सफाई दी।

"फिर तुमने उसका अपहरण क्यों करवाया था?"

"यह झूठ है। मैंने उसका अपहरण नहीं किया था। कालेज के कुछ लड़के उसे उठा ले गये थे। उसने इल्जाम मुझ पर लगा दिया। मीनाक्षी सचमुच तुम बहुत भोली हो। लोग हमारे प्यार से जलते हैं। कालेज की कई लड़कियों ने मुझसे प्रेम करना चाहा, मैंने किसी को घास नहीं डाली, तो उन्होंने मुझे बदनाम करना शुरू कर दिया।"

"तो क्या मेरी सहेली ने जो बताया है, वह झूठ है?"

"जो सच था, वह मैंने तुम्हें बता दिया। मेरे ख्याल से बाकी सब अफवाह है।"

"लेकिन मैं कैसे यह मान लूं कि सब झूठ है।" मीनाक्षी ने भोलेपन से कहा।

"क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है? शायद तुम यही समझती हो कि लड़कियों के साथ इश्क का नाटक करके उन्हें फ्लर्ट करना मेरी आदत है। मैं इस बात को झूठा सिद्ध कर दूंगा, मीनाक्षी। मैं तुमसे अभी, इसी वक्त शादी करने के लिए तैयार हूं। बोलो, क्या इसके लिए तुम तैयार हो?" राजेश ने चैलेंज करते हुए कहा।

उसकी बातें सुनकर मीनाक्षी का दिल पिघल गया। वास्तव में उसके हृदय में राजेश इतनी गहराई तक उतर चुका था कि उसकी सहेली ने राजेश के बारे में जो कुछ कहा था, वह अगर सच भी होता, तो मीनाक्षी उसे सच मानने को तैयार नहीं हुई। उसने सहेली द्वारा बतायी गयी बातों को कुछ सच और कुछ झूठ समझकर, एक सामान्य घटना मानकर टाल दिया। फिर राजेश उससे विवाह करने के लिए तैयार था। राजेश एम.बी.बी.एस. अंतिम वर्ष का छात्र था। उसने सोचा, कुछ दिन पश्चात् वह डाक्टर बन जायेगा और उसके साथ उसका जीवन मजे से गुजरेगा। लेकिन मीनाक्षी ने राजेश पंवार से विवाह की बात जब अपने घरवालों के सामने रखी, तो मीनाक्षी के पिता बी.डी. सक्सेना व मम्मी शरबती देवी ने यह कहकर साफ इनकार कर दिया कि राजेश किसी अन्य जाति का लड़का है। इसलिए किसी भी कीमत पर वे राजेश को अपना दामाद नहीं बना सकते। मीनाक्षी ने यह समस्या राजेश के सामने रखी, तो दोनों ने मिलकर एक अलग निर्णय ले लिया।

एक दिन बी.डी. सक्सेना को एक रजिस्टर्ड पत्र मिला। पत्र खोलकर उन्होंने देखा, तो उसमें से कुछ फोटोग्राफ्स और एक पत्र निकला। उन्होंने पत्र पढ़ा, तो परेशान हो गये। उनके चेहरे पर छायी परेशानी को देखकर उनकी पत्नी ने पूछा, "किसका पत्र है, क्या लिखा है? पत्र पढ़कर इस तरह उदास क्यों हो रहे हो?"

सक्सेना से कुछ कहते न बन सका। वह यों ठगे से बैठे थे, जैसे अकस्मात मिली किसी अप्रत्याशित घटना की खबर से उनके हृदय पर गहरा आघात लगा हो। उन्होंने चुपचाप पत्र पत्नी की ओर बढ़ा दिया। शरबती देवी ने पत्र पढ़ा, तो उनका चेहरा उतर गया। पत्र पढ़कर स्वयं को बड़ी कठिनाई से संभालते हुए उन्होंने कहा, "हो सकता है, किसी ने यों ही मजाक किया हो या फिर हमारी बेटी को बदनाम करने की कोशिश की हो?"

पत्नी की बात सुनकर सक्सेना ने पत्र के साथ आये फोटोग्राफ्स भी उनकी ओर बढ़ा दिये। वे रंगीन फोटोग्राफ्स पत्र में लिखी बात की सच्चाई के प्रमाण थे।

"हे भगवान, यह कैसे हो गया!" फोटो देखकर शरबती देवी की आंखें आश्चर्य से फैल गयीं। वह दौड़ी दौड़ी मीनाक्षी के कमरे में गयीं। मीनाक्षी अभी-अभी बाहर से लौटी थी और कपड़े बदल रही थी।

"यह सब क्या है मीनाक्षी?" शरबती देवी ने पत्र और फोटोग्राफ्स उसके सामने रखते हुए पूछा।

मीनाक्षी फोटोग्राफ्स और पत्र देखकर बिलकुल ही नहीं चौंकी, जैसे उसे सब कुछ पहले से ही पता था। वह आइने में अपना चेहरा निहारते हुए बोली, "यह सच है मम्मी। मैंने राजेश से विवाह कर लिया है। यह फोटोग्राफ्स हमारे विवाह के हैं।"

तभी सक्सेनाजी भी उसकी बात सुनते हुए वहां आ गये। जो

कुछ मीनाक्षी ने कहा था, उसे सुनकर पति-पत्नी दोनों ही भौंचक्के रह गये। बी.डी. सक्सेना अपना सिर थामकर वहीं जमीन पर बैठ गये और दुखी मन से बोले, "यह तुमने क्या किया मीनाक्षी? यह सब करने से पहले तुमने यह भी नहीं सोचा कि तुम्हारे पापा की जो प्रतिष्ठा और सम्मान है, उसका क्या होगा? तुमने बुढ़ापे में हमें किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ा। अगर अपनी मर्जी से ही तुम्हें कोर्ट मैरिज करना था, तो कम से कम अपनी बिरादरी के किसी लड़के से करती। जानती हो, राजेश किस जाति का लड़का है?"

"जानती हूं पापा, लेकिन प्रेम जाति-पांत के बंधनों को नहीं मानता। हम दोनों ने एक-दूसरे से प्रेम किया है। इसलिए हमने विवाह कर लिया।" मीनाक्षी ने एकदम सपाट शब्दों में कह दिया। जैसे उसे अपने किये पर कोई पछतावा नहीं था।

"तुमने अच्छा नहीं किया बेटी। मैंने तुम्हारे लिए न जाने क्या-क्या सपने देखे थे। मैं तुम्हें किसी उच्च पद पर देखना चाहता था। तेरे भाई तेरे लिए अच्छा रिश्ता खोज रहे हैं।"

"राजेश भी एक डाक्टर है, पापा। उसने एम.बी.बी.एस. कर लिया है। शीघ्र ही उसे किसी सरकारी अस्पताल में नौकरी मिल जाएगी। फिर मैं उसके साथ आराम से रहूंगी। अब वह मुझे लेने आएगा। आप मुझे रोकने की कोशिश मत कीजिएगा।" मीनाक्षी अपने मुंह से विवाह की बात नहीं कह सकी थी, इसीलिए राजेश ने रजिस्टर्ड पत्र द्वारा यह रहस्योदघाटन किया था।

फिर शीघ्र ही पत्र में लिखी तारीख के दिन राजेश मीनाक्षी को लेने आ पहुंचा। उसने सक्सेना और उनकी पत्नी के पैर छूए। फिर बोला, "मेरा पत्र आपको मिल गया होगा। दरअसल, कालेज के छात्र और छात्राएं हमें बदनाम करने की कोशिश कर रहे थे। हमारी दोस्ती पर उंगलियां उठायी जा रही थीं। उनको मुंहतोड़ जवाब देने के लिए हमें शादी करनी पड़ी।

"मैंने एम.बी.बी.एस. कर लिया है। शीघ्र ही मुझे नौकरी मिल जायेगी। नहीं भी मिली, तो अपना क्लीनिक खोलकर कहीं भी बैठ जाऊंगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मीनाक्षी को कभी कोई तकलीफ नहीं होने दूंगा। उसे जीवन में हर सुख-सुविधा देने की कोशिश करूंगा।" सक्सेना दम्पति को उदास और खामोश देखकर राजेश बोला।

मीनाक्षी को राजेश के साथ भेजने के अलावा सक्सेना दम्पति के सामने दूसरा कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि कानूनी तौर से मीनाक्षी उसकी पत्नी बन चुकी थी। अतः बेटी की खुशी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने उसे आशीर्वाद देकर राजेश के साथ विदा कर दिया।

राजेश मीनाक्षी को लेकर गंगापोल चला गया। वहां उसने किराये का मकान ले लिया। कुछ दिन किराये के मकान में रहकर वह शास्त्रीनगर स्थित अपने मकान में आकर रहने लगा। दोनों की शादी के डेढ़ वर्ष बीत गये। इस दौरान मीनाक्षी अपने घर भी आती-जाती रही। मीनाक्षी ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चे का नाम रखा गया पुनीत।

पुनीत तब आठ महीने का हो गया था। मीनाक्षी काफी दिन से अपने मायके नहीं जा सकी थी। एक दिन जब उसका भाई मीनाक्षी की खैर-खबर लेने उसके घर पहुंचा, तो मीनाक्षी उसे वहां नहीं मिली। उसने जब राजेश से मीनाक्षी के बारे में पूछा, तो राजेश ने बताया कि उसकी पिलानी कस्बे में नौकरी लग गई है और वह वहीं रह रही है।

काफी समय तक मीनाक्षी के माता-पिता को उसकी कोई खैर-खबर नहीं मिली, तो उन्होंने पुनः राजेश से संपर्क किया। राजेश ने उनसे भी यही कहा कि मीनाक्षी पिलानी से अभी वापस नहीं आयी है। मीनाक्षी का भाई पिलानी गया, तो वहां भी उसका कुछ पता नहीं चला। उसने जब दोबारा राजेश से इस विषय में पूछताछ की, तो



सरकारी वकील
श्री मेहन्द्रकुमार शर्मा

राजेश ने किसी अन्य शहर में उसके होने की बात कही।

इस प्रकार मीनाक्षी की कहीं से कोई खोज-खबर नहीं मिली, तो उन्होंने राजेश से कड़ाई के साथ पूछताछ शुरू की। पहले तो वह विभिन्न शहरों में उसकी नौकरी की बात कहकर उन्हें टलता रहा। परंतु जब उस पर जोर डाला गया, तो उसने बताया कि मीनाक्षी घर छोड़कर कहीं चली गयी है। वह कहां और क्यों चली गयी है, इस विषय में वह कुछ नहीं जानता।

अब सक्सेना दम्पति के सामने सब्र करने के अलावा कोई रास्ता नहीं था, मगर जब पूरे पांच वर्षों तक मीनाक्षी का कोई पता नहीं चला, तो उन्हें संदेह होने लगा कि कहीं मीनाक्षी के साथ कोई हादसा तो नहीं हो गया। तब बी.डी. सक्सेना ने अपने परिजनों से विचार-विमर्श कर मीनाक्षी की खोज के लिए पुलिस का सहारा लिया। वह थाना माणकचौक पहुंचे और वहां मीनाक्षी के लापता होने की रिपोर्ट दर्ज करवा दी।

थानाधिकारी इंसपेक्टर शंकरलाल ओझा ने मीनाक्षी के परिजनों से जानकारी प्राप्त कर उसकी खोज शुरू कर दी। इंसपेक्टर ओझा ने इधर-उधर से पता किया, तो राजेश से संबंधित कई अपराधिक प्रकरण उनके सामने आये। राजेश द्वारा कालेज के दिनों में कई लड़कियों को अपने प्रेमजाल में फंसाकर उनका शारीरिक शोषण करने की जानकारी उन्हें मिली। इतना ही नहीं, राजेश के खिलाफ नगर के कई स्थानों में जा[illegible] सर्टिफिकेट जारी करने और मो[illegible] साइकिल चुराने जैसे कई अपराधि[illegible] प्रकरण भी दर्ज हुए पाये गये

ग्यारह अगस्त' 97 [illegible] शंकरलाल ओझा ने प्रधान आरक्ष[illegible] रामबाबू व रमनलाल को भेजक[illegible] राजेश पंवार को थाने बुल[illegible] लिया।

कार्यालय में घुसते ही था[illegible] प्रभारी ओझा ने उससे सवा[illegible] किया, "मिस्टर राजेश, तुम्हा[illegible] और मीनाक्षी की जाति अलग-अल[illegible] थी, फिर भी तुम दोनों ने विवा[illegible] कर लिया?"

"हम दोनों कालेज के समय [illegible] ही प्रेम करते थे और प्रेम जाति-पां[illegible] के बंधनों को नहीं मानता। इसलि[illegible] हमने प्रेम विवाह कर लिया था।"

"क्या तुम्हें पूरा विश्वास था [illegible] मीनाक्षी तुमसे प्रेम करती है?"

"जी हां, बिल्कुल तभी त[illegible] उसने घरवालों की मर्जी के खिला[illegible] मुझसे विवाह किया था।"

"डाक्टर साहब, जैसा कि आप[illegible] कहा कि मीनाक्षी और आप दोन[illegible] एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते थे[illegible] आप दोनों का प्यार तब से [illegible] जब आप दोनों पढ़ते थे। फि[illegible] अचानक शादी के बाद ऐसी क्य[illegible] बात हो गई कि मीनाक्षी आप[illegible] बिना कुछ बताये ही आपक[illegible] अचानक छोड़कर चली गयी?"

"इस बारे में मैं भला क्या क[illegible] सकता हूं। यह तो मीनाक्षी ही बत[illegible] सकती है।" राजेश कुछ असमंजस[illegible] में बोला।

"जैसा कि आपने अप[illegible] सास-ससुर के सामने संदेह व्यक्त[illegible] किया था कि मीनाक्षी शायद अप[illegible] किसी पूर्व प्रेमी के साथ भाग गयी[illegible] है। उससे ऐसा लगता है कि आपके[illegible] अलावा भी मीनाक्षी के किसी अन्[illegible] व्यक्ति से संबंध थे। वह व्यक्ति[illegible] कौन था, क्या इस बारे में आप को[illegible] जानकारी दे सकते हैं?"

"मैं ऐसे किसी भी व्यक्ति क[illegible] नहीं जानता।"

"...तो फिर आपने ऐसा संदे[illegible] क्यों व्यक्त किया था?"

"जब कोई औरत अपने प[illegible] और बच्चे को छोड़कर अचानक [illegible]

से गायब हो जाये, तो उसके बारे में और क्या कहा जा सकता है!"

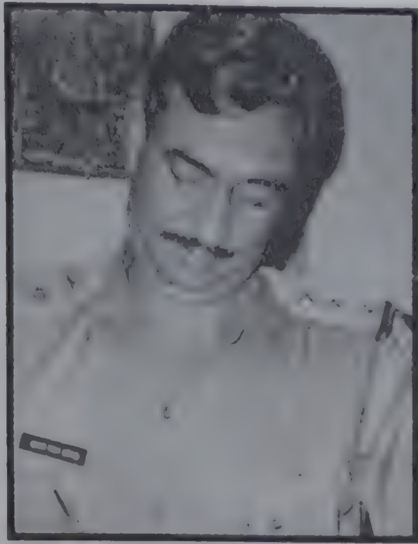
"एक ओर तो आप मानते हैं कि मीनाक्षी आपसे बेहद प्रेम करती थी, आपके प्रेम में वह ऐसी दीवानी थी कि जाति-पांत के बंधन तोड़कर अपने माता-पिता की मर्जी के खिलाफ उसने आपसे शादी कर ली थी, दूसरी ओर आप उसके किसी अन्य व्यक्ति से संबंध होने का संदेह व्यक्त कर रहे हैं। यह बात मेरी कुछ समझ में नहीं आयी।" थानाप्रभारी ओझा ने राजेश की आंखों में झांकते हुए व्यंग्य से कहा।

इतना सुनकर राजेश सकपका गया और खीझकर बोला, "मैंने सिर्फ संदेह व्यक्त किया है। औरत का दिमाग खराब होते देर थोड़े ही लगती है।"

"दिमाग मीनाक्षी का नहीं, तुम्हारा खराब हो गया था डा. राजेश।" थानाप्रभारी का स्वर अचानक कठोर हो गया। उन्होंने राजेश को घूरते हुए कहा, "तुम्हारी पत्नी घर से गायब हो गयी और तुम यह सोचकर चुपचाप घर में बैठे रहे कि वह किसी के साथ भाग गयी होगी, उसके परिजनों के पूछने पर तुमने उन्हें यह बताकर धोखे में रखा कि मीनाक्षी पिलानी में नौकरी कर रही है।

"इन सब बातों से कानून की दृष्टि में तुम संदिग्ध हो। इसलिए शीघ्रातिशीघ्र सब कुछ सच-सच बता दो। मैं नहीं चाहता कि एक एम.बी.बी.एस. डाक्टर के साथ सख्ती करनी पड़े।"

थाना प्रभारी ओझा की बात सुनकर राजेश का चेहरा एकदम से जर्द पड़ गया। कुछ देर उसने आनाकानी की, परंतु जब ओझा उसकी कोई बात मानने को तैयार नहीं हुए और उस पर सख्ती की, तो वह टूट गया। उसने मीनाक्षी की गुमशुदगी के बारे में थाना प्रभारी ओझा को सब कुछ बता दिया। राजेश के अनुसार, मीनाक्षी की गुमशुदगी की जो सनसनीखेज कथा खुलकर सामने आयी, उसने सख्त दिल पुलिसवालों के दिल को भी दहला दिया।



जांच अधिकारी
शंकरलाल ओझा

विवाह के बाद राजेश और मीनाक्षी का दाम्पत्य जीवन कुछ समय तक तो ठीक-ठाक चलता रहा। लेकिन जब राजेश की नौकरी न लग सकी, तो उसने अपना क्लीनिक खोलने का विचार बनाया और यहीं से मीनाक्षी और उसके संबंध में दरार आने लगी। राजेश ने मीनाक्षी से कहा कि उसे क्लीनिक खोलने के लिए पैसों की जरूरत है, वह अपने घर से पैसे ले आये।

मीनाक्षी अपने घर आयी और पिता से सब बातें बतायीं। मीनाक्षी के पिता ने उसके नाम से बैंक में जमा पैसा निकालकर दे दिया। मीनाक्षी ने यह रकम राजेश को दे दी। राजेश ने क्लीनिक खोलने के बजाय, सारा पैसा यों ही खर्च कर दिया। उसके बाद उसने मीनाक्षी से पुनः पैसा लाने के लिए कहा। मीनाक्षी ने और पैसा लाने में असमर्थता व्यक्त की, तो राजेश उससे नाराज हो गया।

पैसा लाने से इनकार करने के बाद पति-पत्नी में मनमुटाव रहने लगा। राजेश ने मीनाक्षी से बातचीत करना कम कर दिया। मीनाक्षी के ससुरालवाले भी उसकी उपेक्षा करने लगे। जब मीनाक्षी ने बच्चे को जन्म दिया, तो उसके माता-पिता ने ही अस्पताल में उसकी देखभाल की थी। उसकी ससुराल का कोई भी सदस्य उसके हाल-चाल लेने नहीं आया था।

मीनाक्षी सब कुछ चुपचाप सहन करती रही। जब मीनाक्षी अस्पताल से घर पहुंची, तब भी राजेश के रवैये में कोई अंतर नहीं आया था। वह बराबर उस पर रुपए लाने के लिए दबाव डालता रहा। फिर उसने उसे छोड़ देने की धमकियां देनी शुरू कर दीं।

राजेश की धमकियों से तंग आकर एक दिन मीनाक्षी ने उससे स्पष्ट कह दिया, "तुम कुछ भी करो राजेश, मैं अब घरवालों से एक पैसा मांगकर नहीं ला सकती। मेरे नाम से जितने भी रुपए उन्होंने जमा किये थे, सब लाकर दे चुकी हूं। अगर तुमने मुझे ज्यादा परेशान किया, तो मैं अब अदालत का सहारा लूंगी।"

वैसे भी राजेश का मन मीनाक्षी से भर चुका था और वह अब कहीं और जाल फेंकने की तैयारी कर रहा था। उसे अब मीनाक्षी से पैसा मिलने की भी उम्मीद खत्म हो चुकी थी। इसलिए उसने मीनाक्षी से पीछा छुड़ाने की बात मन में सोच ली।

उन्हीं दिनों राजेश के घर में टायलेट के लिए सेप्टिक टैंक बनाया जा रहा था। राजेश ने घर के बाहर दरवाजे के सामने मजदूरों को बुलाकर बीस फुट गड्ढा खोदवाकर मजदूरों की छुट्टी कर दी।

उसी रात राजेश ने मीनाक्षी से कहा, "आज अंतिम बार पूछ रहा हूं कि तुम क्लीनिक खोलने के लिए मायके से पैसा लाकर दोगी या नहीं?"

"मैं कह चुकी हूं कि अब मैं एक पैसा मायके से नहीं ला सकती।"

मीनाक्षी की बात सुनकर राजेश का चेहरा अचानक क्रूर हो उठा। उसकी आंखों से हैवानियत झांकने लगी। उसने किसी दरिंदे की भांति अपने हाथों को मीनाक्षी की गर्दन की ओर बढ़ाते हुए कहा, "तो फिर अब तुम मेरे किसी काम की नहीं रही। आज मैं तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगा। जब तक तुम रहोगी, कोई दूसरी लड़की फंस भी नहीं सकती। इसलिए मैं तुम्हारा काम तमाम कर रहा हूं।"

"राजेश..." मीनाक्षी की आंखें हैरानी से फटी की फटी रह गयीं। तभी राजेश के दोनों हाथ किसी शिकंजे की भांति उसकी गरदन पर कसते चले गये। कुछ देर तक मीनाक्षी उसके हाथों में छटपटाती रही, फिर शांत हो गयी।

मीनाक्षी की लाश को एक ओर डालकर राजेश अपनी सांसें दुरुस्त करने लगा। फिर थोड़ी देर बाद उसने बाहर आकर आसपास का जायजा लिया। अंधेरी रात थी। बाहर कोई नजर नहीं आया। राजेश अंदर गया और मीनाक्षी की लाश घसीटकर बाहर लाया। फिर उसने उसे बीस फुट गहरे गड्ढे में डालकर उस गड्ढे को मिट्टी से भरकर समतल कर दिया और कमरे में जाकर सो गया।

राजेश का बयान सुनकर थाना प्रभारी शंकरलाल ओझा ने पांच वर्ष पूर्व हुई इस हत्या का पता लगने की सूचना अपने उच्चाधिकारियों को दे दी।

मामले की सूचना पाते ही डी. आई.जी. अरविंद कुमार जैन सहित अन्य अधिकारी थाना माणकचौक पहुंच गये। डी.आई.जी. के समक्ष डा. राजेश ने मीनाक्षी की हत्या करके लाश घर के समाने टैंक के लिए खोदवाये गड्ढे में दफन करने की बात स्वीकार कर ली।

डी.आई.जी. अरविंद कुमार जैन ने थानाप्रभारी शंकरलाल ओझा को शास्त्रीनगर, नेहरूनगर के शिवपथ स्थित राजेश के मकान पर पहुंचकर उक्त गड्ढे को खोदवाने का आदेश दिया।

जब पुलिस ने राजेश के घर के सामने उक्त गड्ढा खोदवाया, तो वहां काफी भीड़ जमा हो गयी। पांच वर्ष पूर्व हुए हत्या का रहस्य खुलने की खबर ने सभी को हैरानी में डाल दिया था। लोग उत्सुकतावश वहां एकत्र हो गये थे। अंततः बीस फुट गड्ढा खुदने के बाद कंकाल बनी मीनाक्षी की लाश मिल गयी। कंकाल को परीक्षण के लिए एस. एम.एस. चिकित्सालय भेज दिया गया।

मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार, लाश महिला की थी और करीब पांच-साढे पांच वर्ष पूर्व उसकी हत्या की गयी थी।



डा. राजेश और मीनाक्षीः साथ निभाने का वादा

रिमांड समाप्ति के बाद पुलिस ने पत्नी के हत्यारे डा. राजेश पंवार को न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।

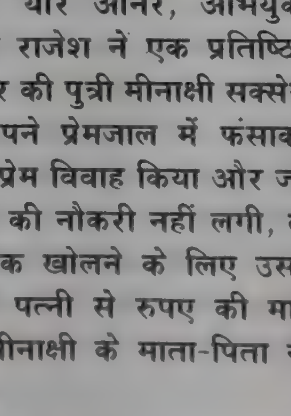
पुलिस ने संपूर्ण विवेचना पूरी करके न्यायालय में आरोपपत्र दाखिल कर दिया।

न्यायिक मजिस्ट्रेट ने इस मामले को जिला के सत्र न्यायाधीश के सुपुर्द कर दिया। सत्र न्यायालय से यह मामला अपर सत्र न्यायाधीश (फास्ट ट्रेक) संख्या दो के न्यायालय में स्थानांतरित कर दिया गया।

फास्ट ट्रेक के न्यायाधीश माननीय श्री ओ.पी. अग्रवाल ने अभियुक्त डा. राजेश पर चार्ज लगाकर मामले की कार्यवाही शुरू कर दी।

इस मामले में सरकार की ओर से अपर लोक अभियोजक महेन्द्र कुमार शर्मा एवं बचाव पक्ष के अधिवक्ता सज्जन राज सुराणा पैरवी कर रहे थे।

गवाहों के बयानों के बाद बहस आरम्भ हुई। सरकारी वकील महेन्द्र कुमार शर्मा ने अदालत से कहा,. "योर ऑनर, अभियुक्त डाक्टर राजेश नें एक प्रतिष्ठित परिवार की पुत्री मीनाक्षी सक्सेना को अपने प्रेमजाल में फंसाकर उससे प्रेम विवाह किया और जब राजेश की नौकरी नहीं लगी, तो क्लीनिक खोलने के लिए उसने अपनी पत्नी से रुपए की मांग की। मीनाक्षी के माता-पिता ने,



लेखक

राम स्वरूप टाक

जो रुपया बेटी के नाम पर जमा किये थे, सब उसके हवाले कर दिया। लेकिन इसके बाद भी वह लगातार मीनाक्षी पर पिता से रुपए लाने के लिए दबाव डालता रहा और जब उसने पैसा लाने से इनकार कर दिया, तो षड्यंत्र रचकर उसने उसकी हत्या कर दी। फिर लाश को बीस फुट गहरे गड्ढे में दबा दिया। इसके अलावा, मीनाक्षी की हत्या करने के बाद लगातार वह मीनाक्षी के माता-पिता को गुमराह भी करता रहा। हुजूर, डाक्टर तो जीवनदान देने के लिए होता है। लेकिन राजेश एक डाक्टर होते हुए भी उसने अपनी ही पत्नी का जीवन समाप्त कर दिया।

"अतएव श्रीमानजी से मेरा अनुरोध है कि पत्नी की हत्या के आरोपी इस डाक्टर को कठोर से कठोर सजा दी जाए, ताकि कोई भी व्यक्ति इस तरह का अपराध करने की हिम्मत न कर सके।"

"यह सब सरासर झूठ है योर ऑनर! मेरा मुवक्किल निर्दोष है और इसे झूठमूठ में फंसाया गया है। हत्या का कोई चश्मदीद गवाह भी नहीं है। मेरा अनुरोध है कि इसे दोषमुक्त किया जाये।" बचावपक्ष के अधिवक्ता ने अपील की।

दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद माननीय विद्वान न्यायाधीश श्री ओ.पी. अग्रवाल ने निर्णय की तारीख 18 जनवरी, 2002, दिन शुक्रवार मुकर्रर कर दी।

उस दिन जयपुर की फास्ट ट्रेक न्यायालय में काफी भीड़ थी। अभियुक्त डाक्टर राजेश पंवार के केस का आज फैसला सुनाया जाना था। फैसला सुनने के लिए भारी संख्या में डाक्टर, पत्रकार, वकील एवं अन्य लोग अदालत में मौजूद थे। माननीय विद्वान न्यायाधीश श्री ओ.पी. अग्रवाल ने एक नजर अदालत में खड़ी भीड़ पर डाली और फैसले के पन्ने पलटने लगे। माननीय न्यायाधीश श्री अग्रवाल ने अभियुक्त डा. राजेश को दोषी करार दे दिया।

बचाव पक्ष के अधिवक्ता ने निवेदन किया, "श्रीमानजी से मेरा निवेदन है कि मेरे मुवक्किल के साथ नरमी का रुख अपनाया जाय।"

माननीय न्यायाधीश श्री ओ.पी. अग्रवाल ने फैसले के पृष्ठों को पढ़ना आरम्भ किया। भीड़ चुपचाप खड़ी सब सुन रही थी। भीड़ को माननीय न्यायाधीश श्री अग्रवाल के अंतिम आदेश की उत्सुकता से प्रतीक्षा थी और वह घड़ी भी आ गयी।

माननीय विद्वान न्यायाधीश श्री ओ.पी. अग्रवाल ने मीनाक्षी की हत्या के आरोपी डा. राजेश पंवार को 'आजीवन कारावास' की सजा सुना दी। उच्च न्यायालय से जमानत पर रिहा डा. राजेश पंवार को हिरासत में लेकर जेल भेज दिया गया। ●

(डा. राजेश एवं मीनाक्षी प्रतिष्ठित परिवार से हैं, इसलिए उनका विस्तृत पारिवारिक परिचय नहीं दिया जा सका।)

(कथा पुलिस जांच एवं अदालती कार्यवाही पर आधारित)

वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में नकली नोटों का कारोबार

लखनऊ के पॉश इलाके में स्थित इस रेस्टोरेंट में शाम का समय होने के कारण काफी गहमा-गहमी थी। यह रेस्टोरेंट लखनऊ के नामचीन रेस्त्राओं की श्रेणी में गिना जाता है। इसकी शोहरत के साथ इसके बारे में कहा जाता है कि शाम होते ही इसकी हर टेबल पर पीने-पिलानेवालों के जाम टकराने लगते हैं। रेस्त्रां मालिक के पास बार का भी लाइसेंस है, इसलिए पुलिस की दखल का भी यहां कोई भय नहीं है। शायद इसी लिए यहां आनेवाले बेफिक्र होकर अपनी रौ में रहते हैं।

सितम्बर माह की उतरती वर्षा ऋतु की यह एक सुहानी रात थी। रेस्त्रां के अंदर एक टेबल पर दो व्यक्ति बैठे किसी खास मुद्दे पर गुफ्तगू कर रहे थे। उनके सामने टेबल पर मैकडावल की आधी भरी बोतल रखी थी। दो गिलासों में भरे जाम उनकी मुलाकात में रुक-रुककर हमराह थे, यानी जाम के साथ-साथ वे किसी खास मुद्दे पर बात कर रहे थे।

उनकी यह गुफ्तगू उनके अपने हिसाब से काफी सतर्कता और चौकसी के साथ हो रही थी। लेकिन उसके बावजूद उनके ठीक

(शेष पृष्ठ 78 पर)



राजेश उर्फ अजीत: मुख्य अभियुक्त

बड़ा आदमी बनने के लिए राजेश ने जो कदम उठाया, वह उसके लिए तो खतरनाक था ही, साथ ही देश के लिए भी खतरनाक था



राजेश के घर से बरामद नकली नोट और छापने के अन्य उपकरण

खुराफाती दिमाग

– संजय सिंह

लघु उपन्यास

राजमहल

- रंजीत भट्टाचार्य



मुझे पुरानी यादों पर गुस्सा आ रहा था, जिसने आज तक मेरा बहुत वक्त बरबाद किया था। आज मेरे पास सब कुछ है, लेकिन वक्त नहीं है...मैं और ऊंचा जाना चाहता हू... और ऊंचा



आज जब मैं अपने विगत जीवन पर नजर दौड़ाता हूं, तो आश्चर्य होता है कि सिर्फ एक साल में मैं कहां से कहां पहुंच गया! एक खड़खड़िया साइकिल से चमचमाती कार तक। संकरी गंदी खोली से खूबसूरत बंगले तक। अखबार के प्रशिक्षु संवाददाता से रंगीन पत्रिका के संपादक तक। काफी हंगामेखेज रही है मेरी पिछले एक साल की जिंदगी। अनेक नाटकीय घटनाक्रम, भाग्य का उतार-चढ़ाव, सफलता-असफलता के बीच झूलता रहा हूं मैं। लेकिन अब सब कुछ शांत है। लगता है, जैसे मेरी दुनिया से दुख नामक कठोर चेहरेवाला मेहमान हमेशा-हमेशा के लिए दूर चला गया है। आज ठंड से सिरसिराती हुई सुबह में मैं अपने छोटे-से खूबसूरत बंगले के बरामदे में शाल ओढ़े इजीचेयर पर बड़े इत्मीनान से पसरा हुआ हूं। मेरे हाथ में गरम चाय का मग है, होंठों पर जलती हुई सिगरेट है और आंखों में हैं कुछ झिलमिलाती हुई यादें...।

...वह भी एक ठंड से कांपती हुई सुबह थी। शहर के बीच बसी हुई उस झोपड़पट्टी में अभी सड़कें सूनी थीं। एक कमरे की गंदी खोली के सामने कमर में तौलिया लपेटे एक नौजवान ब्रश कर रहा था। नाम–राजीव। उम्र पच्चीस साल। लम्बाई पांच फुट ग्यारह इंच। वजन बहत्तर किलोग्राम। गोरे-चिट्टे खूसबूरत इस नौजवान के शरीर पर हर तरफ मजबूत मांसपेशियां थीं। वास्तव में यह युवक और कोई नहीं, मैं स्वयं था। मैं दिखने में भले ही एक खूबसूरत नौजवान था, लेकिन मेरी आर्थिक स्थिति बहुत ही बदसूरत थी। मैं उन दिनों दैनिक 'हेलो इंडिया' में प्रशिक्षु संवाददाता था। पिछले कई महीनों से अखबार से जुड़ा होने के बावजूद, मैं इस शहर के इतिहास और भूगोल से अच्छी तरह परिचित नहीं था। कारण, एक नहीं, कई थे। एक तो मेरे पास मोटर साइकिल नहीं थी। दूसरे, मैं ग्रामीण पृष्ठभूमि में पैदा हुआ सीधा-सादा नौजवान था, जो अपनी किस्मत चमकाने के लिए शहर चला आया था। तीसरे, मैं अखबार में प्रशिक्षण के नाम पर इस टेबल से उस टेबल तक उप संपादकों और पत्रकारों की बेगारी कर रहा था। और चौथा, मैं एक आत्मकेंद्रित युवक था।

मेरे गांव का नाम था नैनपुर। इस शहर के दक्षिण-पश्चिम में करीब 25 किलोमीटर भीतर था वह गांव। जिसके करीब से होकर लाल नदी बहती थी। गांव में मेरे वृद्ध माता-पिता थे। भैया-भाभी थे। कुंवारी छोटी

(शेष पृष्ठ 109 पर)

नितिश कटारा हत्या कांड:

एक विवाह समारोह के दौरान नितिश कटारा को विकास यादव और विशाल यादव बुलाकर अपने साथ ले गये थे। उसी के बाद से नितिश वापस नहीं आया। खुर्जा में मिले अधजले शव को उसकी मां नीलम कटारा ने नितिश के रूप में पहचान की, तो उसके बाद...



शिवानी की शादी के अवसर पर
नितिश (बायें) और भारती (दायें)



नितिश और भारती

गोरे-चिट्टे और बे
स्मार्ट उस युवक
अपने साथी के सा
डायमंड हाल में प्रवेश किया,
दर्जनों जोड़ी आंखें उनकी अ
उठ गयीं। उत्सुकता का भाव उ
सभी आंखों में था। आजू-बा
हटकर खड़े कुछ लोगों के मुंह
निकला भी, "विकास औ
विशाल... यहां पर?"

मेजबान और मेहमान, दोन
ही पक्षों के लोग विकास को
जानते थे और विशाल को भी
इसलिए कई लोग उनके स्वाग
के लिए लपके। विकास के चेह
पर मंजे हुए नेताओं की तर
बनावटी मुस्कान थी। जबकि
विशाल अपने भावों को छिपा नह
पा रहा था। तनाव की उद्दं
रेखाएं रोकने के बावजूद उसक
चेहरे पर छिटक ही आयी थीं।

लोगों से मिलते और उनक
अभिवादन लेते विकास औ
विशाल बैंक्वेट हाल के उस कोन
की ओर बढ़ रहे थे, जहां नृत्
और संगीत के लिए डी.जे. क
व्यवस्था थी। बैंक्वेट हाल म
सबसे ज्यादा भीड़ इसी कोने म
थी। दरअसल, गाजियाबाद क
प्रसिद्ध उद्योगपति की बेट
शिवानी की शादी थी। शिवान
गाजियाबाद स्थित प्रतिष्ठित
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट
की छात्रा थी। शादी में शामिल
ज्यादातर लोग उच्च वर्ग के थे
जिनमें शिवानी के मित्र भी थे
उसके होने वाले पति के भी और
उसके पिता के भी। बात उच्च
वर्ग की थी। इसलिए वहां का
माहौल भी कुछ खुला ही था। यही
वजह थी कि डी.जे. वाले कोने में
युवक-युवतियों और बच्चों का

विवादों के घेरे में विकास या

- संजय

त का दूसरा पहर, समूचे राजमहल में सन्नाटा छाया था। गेट पर तैनात नींद को परे धकेलने ोशिश कर रहे थे। झोंके से उनकी ीं। रानी सूही दुनियावी ी थीं।

अधिपत्य था। डी.जे. की ा धुनों और तेज आवाज पर रकनेवालों में कुछ जोड़े भी

विकास और विशाल ने उस ने में झांककर देखा, तो उन्हें चेहरा नजर आ गया, जिसकी ई तलाश थी। भारती और तिश अपनी ही मस्ती में झूम थे, दीन-दुनिया से बेखबर। कास और विशाल दोनों की हरें एक साथ ही उन दोनों पर ीं। पल भर बाद ही भारती की गाहों ने भी उन दोनों को देखा र नितिश की निगाहों ने भी। टका-सा लगा उन दोनों को। नों के कदम जहां के तहां ठक गये। भारती की हालत तो ह थी कि न केवल उसकी आंखें टी की फटी रह गयीं, बल्कि सका चेहरा भी सफेद पड़ गया। सके पैरों के नीचे न जमीन बची और न ही सिर के ऊपर ासमान। पल भर पहले जो दम हवा की परवाज पर थिरक े थे, वही अब मन-मन भर के गये थे। मन की घबराहट को ाकर, चेहरे को सामान्य बनाने ा प्रयास करते हुए बोझिल दमों को घसीटती हुई, जैसे-तैसे ह बाहर आयी और विकास के स पहुंचकर दबे-सहमे स्वर में ली, "भैया आप.. यहां?"

"हां भारती, हम यहां? और ह भी सिर्फ तुम्हारी वजह से।" क-एक शब्द को चबाते हुए कास के मुंह से गुर्राहट-सी कली। वह कह रहा था, "मैं हीं जानता था कि हमारी बहन चन देकर मुकरना भी जानती।"

नितिश भी भारती के साथ ही



पुलिस गिरफ्त में विकास यादव



विकास यादव (नीले घेरे में) और विशाल यादव (लाल घेरे में)

नृत्य खत्म कर घेरे से ुनी निकल आया था। लेकिन उससे एक कदम पीछे। जब तक वह पास आया, तब तक विकास और भारती के बीच यह बातचीत हो चुकी थी। नजदीक आकर नितिश ने विकास से भी हाथ मिलाया और विशाल से भी। कहीं न कहीं अपराध बोध-सा था उसके मन में। इसलिए बात को सामान्य बनाने का प्रयास करते हुए वह बोला, "कैसा चल रहा है आपका चुनाव प्रचार?"

"बहुत अच्छा...।" चेहरे पर मुस्कान लाते हुए विकास बोला, "दुश्मनों की बद्दुआएं साथ रहीं, तो जीत भी जाऊंगा।" विकास के लहजे में व्यंग्य भी था और कांटों की चुभन भी। नितिश विकास के व्यवहार को बहुत अच्छी तरह जानता था। विकास क्रोध में था। यह बात भी नितिश समझ चुका था। उसे सामान्य किया जाना बेहद जरूरी था और यह काम बातों से ही हो सकता था। बातों के सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए नितिश बोला, "आपसे भला कौन दुश्मनी कर सकता है भाई साहब?"

"सच कह रहे हो, बाहर का कोई आदमी तो वाकई दुश्मनी नहीं कर सकता। करेगा भी तो, उससे निबटना हमें आता है। लेकिन उन लोगों का क्या करें, जो हमारे अपने होते हुए भी दुश्मनों में जा बैठे हैं।" विकास ने कहा, तो नितिश समझ गया कि विकास ने यह बात उसे और भारती को लक्ष्य बनाकर कही है। लेकिन उस वक्त विषय बदलना बेहद जरूरी था। इसलिए वह

(शेष पृष्ठ 56 पर)

कृपाशंकर ने कोट के भीतर की जेब से एक हरे रंग के लिफाफे से कुछ तस्वीरें निकालकर मेज पर रख दिया और कहा कि यह तो सिर्फ आपको विश्वास दिलाने के लिए एक नमूना है

ब्लैकमेल

– चक्रपाणि



'होटल रैन बसेरा' उस हिल-स्टेशन का एक प्रमुख होटल था। पर्यटक लोग उसके नाम पर ही झूम जाते। संपन्न, ऊंचे दर्जे के लोग वहीं ठहरना पसंद करते थे। होटल में सवा सौ के लगभग कमरे थे, किंतु रख-रखाव, सफाई और सर्विस बहुत उत्तम थी। उस चार मालोंवाले होटल की देखभाल के लिए अच्छा स्टाफ था। किन्तु उसकी प्रसिद्धि और उत्तम व्यवस्था का श्रेय उसकी मालकिन प्रभा देवी को जाता था, जो खुद होटल की निचली मंजिल के पिछले कोनेवाले रूम में रहती थीं।

(शेष पृष्ठ 65 पर)



रानी सूही के बलिदानस्थल पर बना मंदिर

रात का दूसरा पहर, समूचे राजमहल में सन्नाटा छाया था। गेट पर तैनात संतरी भी नींद को परे धकेलने की पुरजोर कोशिश कर रहे थे। फिर भी नींद के झोंके से उनकी पलकें मुंदी जा रही थीं। रानी सूही अपने पति की बांहों में, दुनियावी चिंताओं से बेखबर सो रही थीं। अचानक न जाने क्या हुआ, रानी सूही चीखते हुए उठ बैठीं। पास सोये राजा सकते में आ गए। रानी को क्या हो गया?उनकी कुछ समझ में नहीं आया। उन्होंने रानी के चेहरे को देखा, जो लंबी-लंबी सांसें लेती हुई स्वयं को संयत करने की कोशिश कर रही थीं।

"कोई बुरा सपना देखा है क्या?" राजा ने पूछा।

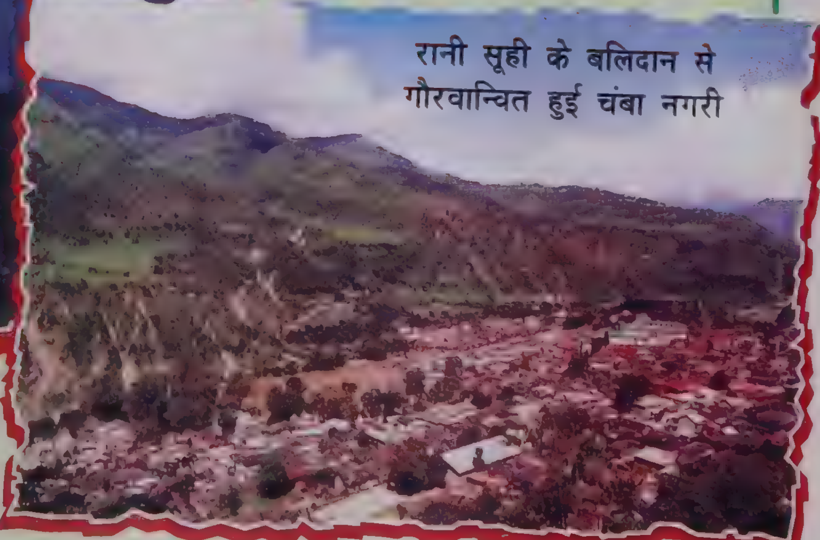
"हां महाराज।" रानी सूही ने अब काफी हद तक स्वयं को संयत कर लिया था।

"क्या देखा सपने में?" राजा ने व्यग्रता से पूछा।

"छोड़िये महाराज। क्षमा चाहती हूं। मैंने आपकी नींद यों ही खराब कर दी।" रानी सूही ने अपना सिर अपने पतिदेव के कंधे पर टिका दिया।

राजा ने उसे ज्यादा कुरेदना

(शेष पृष्ठ 60 पर)



रानी सूही के बलिदान से गौरवान्वित हुई चंबा नगरी

एक रानी का बलिदान

– गुरमीत बेदी

अपनी रानी सूही के प्रेम मोह में राजा पूरी तरह पागल थे, लेकिन रानी सूही के सामने प्रजा का सुख सर्वोपरि था। प्रजा के सुख के लिए रानी ने बलिदान दे ही दिया

एक औरत का अहंका

– वेद शर्मा 'नीर



बलविंदर कौर ने अहंकार में आकर अपने पड़ोसी तरसेम सिंह का परिवार तो बरबाद किया ही, साथ ही अपने भी परिवार को बरबाद कर डाला

मृतक परमजीत सिंह उर्फ पम्मा
एक औरत के अहंकार ने ली जान

कपूरथला के मोहल्ले संतपुरा (प्रीतनगर) निवासी आई.आर. तरसेम सिंह का सोलह वर्षीय परमजीत सिंह उर्फ पम्मा अपनी साइकिल निका हुए बोला, "मम्मी, मैं कंप्यूटर क्लास के लिए जा रहा हूं।"

"ठीक है, जल्दी लौट आना।" गुरमीत कौर इतना कह अपने नित्य के कामों में लग गयीं।

तरसेम सिंह और गुरदेव सिंह भी वहीं आंगन में बैठे दोप के बाद की चाय पी रहे थे। दोनों की पुरानी मित्रता है व्यापार भी दोनों साथ-साथ करते हैं। अमेरिका के पिस्ट पिनस्वैनियां सिटी में पीपल रेस्टोरेंट चलाते हैं। 5 दिसम् 2001 को ही दोनों एक साथ कपूरथला अपने घर आये संतपुरा में दोनों परिवार आसपास ही अपने मकानों में र हैं।

8 जनवरी, 2002 की घटना है। रात को आठ बजे त परमजीत सिंह उर्फ पम्मा जब घर वापस नहीं लौटा, गुरमीत कौर ने कंप्यूटर सेंटर (जहां पम्मा क्लास करने ज था) पर फोन करके पता किया, तो वहां से जवाब मिला पम्मा तो यहां से उसी समय चला गया था, क्योंकि उस स बिजली नहीं थी।



गुरदेव सिंह और उसकी पत्नी सुखवीर कौर

"जरा आप पता करो, पम्मा कहां गया है?" फोन करने के बाद तरसेम सिंह से गुरमीत कौर ने कहा।

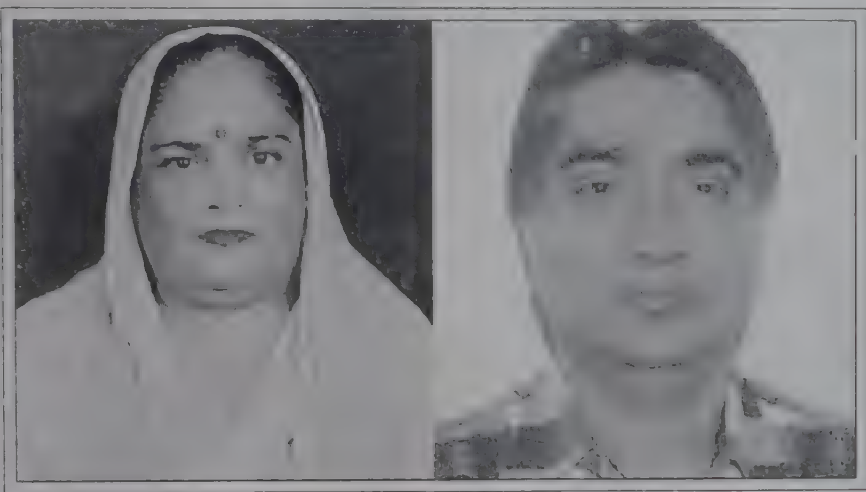
"ठीक है, मैं पता करता हूं।" कहते हुए तरसेम सिंह अपने बेटे की तलाश में निकल पड़े।

रात ग्यारह बजे तक तरसेम सिंह और गुरदेव सिंह के परिवारवालों ने कपूरथला शहर का चप्पा-चप्पा छान मारा। किंतु पम्मा का कहीं कोई पता नहीं चला। इस खोज-बीन में तरसेम सिंह को इतना जरूर पता चला कि पम्मा कंप्यूटर सेंटर से निकलकर ड्राइविंग स्कूल गया था। वह कार चलाना भी सीख रहा था। पर लाख कोशिशों के बावजूद पम्मा का कोई पता नहीं चला। गुरमीत कौर बेटे के वापस लौटने की राह में सारी रात दरवाजे पर नजरें गड़ाये बैठी रहीं। बेटे के इंतजार में उसकी हालत खराब हो चुकी थी। पम्मा की तलाश में गया कोई भी व्यक्ति लौटकर घर आता, तो गुरमीत कौर बार-बार यही पूछने लगतीं, "पम्मा का कोई पता चला. .. अरे कोई तो बताओ, मेरा लाल कहां है?"

तरसेम सिंह पुत्र की गुमशुदगी के गम के साथ-साथ परिवार की परेशानी देखकर बहुत विचलित हो गये थे। किसी की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये। अंत में जब कोई रास्ता न सूझा, तो 9 जनवरी को तरसेम सिंह ने सिटी थाना के इंचार्ज इंसपेक्टर बरिन्दर सिंह को एक प्रार्थना पत्र दिया। यह प्रार्थना पत्र गुरमीत कौर की ओर से लिखा गया था और इस प्रार्थना पत्र में संतपुरा के ही पलविंदर सिंह, पुत्र मनजीत सिंह पर अपना शक जाहिर किया था। क्योंकि पम्मा की तलाश के दौरान यह पता चला था कि पम्मा को आखिरी बार पलविंदर सिंह के साथ देखा गया था।

9 जनवरी, 2002 को ही सुबह 10 बजे एक फोन आया। परिवार के सभी व्यक्ति पम्मा की तलाश में घर से बाहर थे। इसलिए फोन तरसेम सिंह की साली गुरजिंदर कौर ने उठाया, "हैलो।"

दूसरी ओर से आवाज आयी, "तुम्हारा लड़का पम्मा हमारे पास है। अगर उसकी खैर चाहते हो, तो 20 लाख रुपए तैयार रखो। हम तुम्हें फिर फोन करके बतायेंगे कि रुपया शिमला में कहां पहुंचाना है। हम तुम्हारे लड़के को शिमला ले आये हैं। अगर इसकी सूचना पुलिस को दी, तो बेटे की जान से हाथ धो बैठोगे। इस बात का खास ध्यान रखना।"



पम्मा की मां गुरमीत कौर और पिता तरसेम सिंह

"हैलो... हैलो...।" गुरजिंदर कौर कुछ कह नहीं पायी कि फोन कट गया था।

20 लाख की फिरौती की बात सुनकर सारा परिवार कांप गया था। इससे सभी को पता चल गया कि पम्मा का अपहरण हो चुका है। बेटे के अपहरण की बात सुनकर तरसेम सिंह और गुरमीत कौर के तो होश ही उड़ गये।

10 जनवरी, 2002 को संतपुरा (प्रीत नगर) के सैकड़ों लोगों के साथ तरसेम सिंह एस.एस.पी. सुश्री गुरप्रीत दियो से मिले। तरसेम सिंह ने अपनी व्यथा एस.एस.पी. महोदया को सुनायी। सुश्री गुरप्रीत दियो ने मामले की गम्भीरता को देखते हुए डी.एस.पी. पुष्कर संदल को पम्मा अपहरण कांड को एक चुनौती के रूप में सौंपा और अभियुक्तों को शीघ्र गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

थाना सिटी में एफ.आई.आर. नंबर 6 पर भारतीय दंड संहिता की धारा 364, 148, 149 के अधीन मामला दर्ज किया गया। श्री पुष्कर संदल ने थाना सिटी के थानाप्रभारी बरिन्दर सिंह, थाना सदर के एस. एच.ओ. लखविंदर सिंह और थाना कोतवाली के प्रभारी इंसपेक्टर दलजीत सिंह खाख को लेकर एक विशेष पुलिस टीम का गठन किया। पुलिस ने सबसे पहले गुरदेव कौर के कंप्यूटर सेंटर से जांच प्रारंभ की। क्योंकि कंप्यूटर सेंटर से चले जाने के बाद ही पम्मा लापता हुआ था। पुलिस ने अपने मुखबिरों को पम्मा के अपहरण का सूत्र शीघ्र तलाशने का आदेश दिया।

पुष्कर संदल ने मामले की तह तक जाने से पूर्व पुलिस के जाल को चौमुखी दिशा दी। तत्पश्चात् पम्मा के अपहरण के मूल कारण को जानने के लिए गुप्त जांच भी प्रारंभ कर दी। पुलिस को पता था कि अपहर्ता तरसेम सिंह से फिरौती के लिए फोन पर फिर संपर्क करेंगे। इसलिए पुलिस ने एक्सचेंज में आई.डी. कोलर लगवा दिया। पुलिस ने जब 9 जनवरी को 10 बजे तरसेम सिंह के यहां आये फोन की जांच की, तो पता चला कि फोन शिमला से नहीं, कपूरथला से ही किया गया था। इससे पुलिस इतना तो जान ही गयी कि अपराधी यहीं कहीं आसपास छिपे हैं।

थाना सिटी प्रभारी बरिंदर सिंह को अपहरण के इस मामले की तह तक पहुंचने के लिए पलविंदर सिंह उर्फ पाली की तलाश थी। किंतु वह घर पर नहीं मिला। जब तक पाली नहीं मिल रहा था, तब तक पुलिस ने अन्य संभावनाओं पर खोज जारी रखी। कपूरथला की एस.एस.पी. सुश्री गुरप्रीत दियो को यह मामला उस समय और भी संदिग्ध लगा, जब पम्मा के अपहरण में एक पुलिस सब इंसपेक्टर चन्नन सिंह के पुत्र अमृतपाल सिंह उर्फ सोनू का नाम जुड़ गया।

अमृतपाल सिंह उर्फ सोनू तरसेम सिंह के परिवार से रंजिश रखता था और चन्नन सिंह ने पुलिस विभाग में होते हुए भी कपूरथला पुलिस पर मानव अधिकार आयोग में इस्तगासा दायर किया था।

कपूरथला पुलिस पर मामला दायर करने का क्या कारण था? और सोनू तरसेम सिंह के परिवार का दुश्मन क्यों बन गया था? यह सब जानने के लिए पहले हमें कुछ पीछे मुड़कर देखना पड़ेगा।

यह उन दिनों बात है, जब चन्नन सिंह की पोस्टिंग (1995-96) कपूरथला में ही थी। तरसेम सिंह के साथ गुरदेव सिंह की पुरानी जान-पहचान के साथ अच्छी दोस्ती थी। क्योंकि दोनों की ससुराल एक ही गांव में थी। यही दोनों की दोस्ती का मुख्य कारण था। तरसेम सिंह ने अमेरिका पहुंचने के बाद गुरदेव सिंह को भी अपने पास बुलाने के लिए वहां से जो प्रमाण-पत्र जांच के लिए भेजे थे, उनकी जांच करके रिपोर्ट लगाने के लिए सब इंसपेक्टर चन्नन सिंह को प्रमाण-पत्र सौंपे गए। यहीं से गुरदेव सिंह और चन्नन सिंह की जान-पहचान शुरू हुई। चन्नन सिंह ने गुरदेव सिंह का काम तो कर दिया, पर अपनी दान-दक्षिणा लेना वह नहीं भूला।

चन्नन सिंह की इस करतूत की शिकायत, उससे ईर्ष्या रखनेवाले किसी कर्मचारी ने उच्चाधिकारी से कर दी। उच्चाधिकारी ने चन्नन सिंह की इस मामले में काफी खिंचाई कर दी। चन्नन सिंह को गुरदेव सिंह पर शक हो गया कि शिकायत शायद गुरदेव सिंह ने ही की है। इसी के बाद चन्नन सिंह गुरदेव सिंह से अंदर ही अंदर खुंदक रखने लगा। मित्रता के समय चन्नन सिंह और गुरदेव सिंह ने एक ही गली में आमने-सामने मकान बनवाने के लिए प्लाट खरीदे थे।

गुरदेव सिंह के अमेरिका चले जाने के बाद चन्नन सिंह की पत्नी ने गुरदेव सिह की पत्नी सुखवीर कौर को परेशान करना शुरू कर

दिया। चन्नन सिंह की पत्नी बलविंदर कौर को इस बात का भारी घमंड था कि वह एक थानेदार की पत्नी है। इसी तैश में आकर उसने सुखवीर कौर को चैलेंज कर दिया, "तुझे अगर जेल न भेजवा दिया तो मेरा भी नाम बलविंदर कौर नहीं।"

बलविंदर कौर और सुखवीर कौर के बीच अक्सर लड़ाई होती रहती। गुरमीत कौर दोनों को समझातीं, "पड़ोस में रहकर लड़ाई नहीं करते।" इस पर बलविंदर उससे भी दुश्मनी मानने लगी।

बलविंदर कौर की घिनौनी करतूतों के कारण उसकी किसी से नहीं बनती थी। शिष्टाचार के नाम पर उसमें जो कमी थी, उसे वह अपने पति चन्नन सिंह के थानेदार होने के घमंड के कारण किसी की कोई परवाह नहीं करती थी। यही नहीं, अपने पुत्र अमृतपाल उर्फ सोनू की गलत हरकतों पर पीठ ठोंकती रहती थी। इस वजह से सोनू की दोस्ती भी आवारा लड़कों से हो गयी थी, जो पहले से ही गलत रास्ते पर चल रहे थे। बलविंदर कौर ने घमंड के कारण कभी भी किसी के साथ अच्छा सुलूक नहीं किया। बेटे के साथ-साथ पति को भी गलत सलाह देकर आस-पड़ोसवालों के लिए परेशानियां खड़ी करती रही।



गिरफ्तार अभियुक्तों के साथ पुलिस अधिकारी व पुलिस दल

इसका परिणाम यह हुआ कि चन्नन सिंह ने कोर्ट में सुखबीर कौर, अवतार सिंह (गुरदेव सिंह के चाचा का लड़का) पुत्र उजागर सिंह और बलवीर सिंह उर्फ बीरा (गुरदेव सिंह का नौकर) पर अमृतपाल सिंह उर्फ सोनू के अपहरण का आरोप लगाया। कोर्ट ने चन्नन सिंह के इस्तगासे की सुनवाई के दौरान कपूरथला की पुलिस को अपहरण का मामला दर्ज करने का आदेश दिया। 30 अक्तूबर, 2001 को पुलिस ने एफ.आई.आर. दर्ज कर भा.दं.वि. की धारा 452, 365, 34 के तहत जांच आरम्भ की।

जांच में पुलिस ने पाया कि चन्नन सिंह ने अपने पुत्र सोनू के अपहरण का झूठा नाटक किया था। जबकि असलियत यह थी कि सोनू परमजीत सिंह के फार्म हाउस में छिपा था, जो थाना व्यास के अंतर्गत जिला अमृतसर में पड़ता है। परमजीत सिंह चन्नन सिंह का मित्र था। इस कारण उसने चन्नन सिंह का साथ दिया था। किंतु पुलिस ने अपनी जांच से सच्चाई उजागर कर, कोर्ट में अपनी रिपोर्ट पेश कर दी। पुलिस रिपोर्ट को देखते हुए कोर्ट ने चन्नन सिंह के इस्तगासे को झूठा मानकर मामला खारिज कर दिया। पुलिस ने 30 दिसम्बर, 2001 को एफ. आई.आर. भी निरस्त कर दिया।

चन्नन सिंह, बलविंदर कौर और सोनू को यह बात बहुत ही नागवार लगी। बलविंदर कौर इस हार के कारण तिलमिला गयी। क्रोध में उसने इस हार का बदला लेने के लिए भयानक योजना बना डाली।

अमृतपाल सिंह उर्फ सोनू ने अपनी मित्र मंडली को इस योजना में शामिल कर लिया। सोनू ने गुरदेव सिंह के अपहरण की योजना को सफल बनाने के लिए 31 दिसम्बर, 2001 की रात 11 बजे अपने साथियों को संतपुरा, गली नंबर 9 मोड़ पर मारुति कार नंबर पी.सी.जे. 576 लेकर खड़ा कर दिया। क्योंकि गुरदेव सिंह 31 दिसम्बर को जालंधर से लौटने वाला था। दोपहर को अमृतपाल सिंह उर्फ सोनू अपने साथियों के साथ गुरदेव सिंह का पीछा करते हुए जालंधर तक गया था। किंतु रोड पर वाहनों के अधिक आने-जाने के कारण उसे मौका नहीं मिला। तब सोनू ने रात में प्रयास किया। किंतु गुरदेव सिंह 31 दिसम्बर को जालंधर में ही रुक गया, जिस कारण सोनू को अपना इरादा बदलना पड़ा।

बलविंदर कौर सोनू की इस असफलता पर जली-भुनी बैठी थी। सोनू के घर लौटते ही उसने सोनू को खरी-खोटी सुनाते हुए कहा, "हरामखोर, तुम एकदम ही निकम्मे हो। मुझे तुम्हारे ऊपर बड़ा भरोसा था, पर तुमने मेरी सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया।"

"ओहो मां, तुम तो यों ही जल्दबाजी करती हो। गुरदेव सिंह कौन-सा विदेश वापस चला गया है।"

"नहीं चला गया, तो चला जायेगा।" बलविंदर कौर ने नाक फुलाकर सोनू की बात को काट दिया।

"मां, तुम तो इस तरह बातें कर रही हो, जैसे मुझे इस काम से अशोक चक्र मिलने वाला है।" सोनू ने तिरस्कार से सिर झटका।

"मैं उसे (सुखवीर कौर) सारी उम्र रोते-बिलखते देखना चाहती हूं। और मेरे लिए यह काम अशोक चक्र से कम नहीं है।" बलविंदर कौर आगे कुछ और कहती, उसके पहले सोनू ने अपनी मां को झिड़क दिया, "बस, अब रहने दो मां, तुम कौन-सा अच्छे काम के लिए भेज रही थी। लोगों की मांएं देश की रक्षा के लिए मोर्चे पर भेजती हैं और एक तुम हो, जो...।"

"अच्छा, अब बस करो। ज्यादा साधु बनने की कोशिश मत करो। अगर मन में देश-भक्ति का ऐसा ही जज्बा है, तो फौज में क्यों नहीं भर्ती हो जाता? सारा दिन तो आवारा लड़कों के साथ घूमता रहता है, तब शर्म नहीं आती है।" तुनककर बलविंदर कौर ने कहा।

"यह मां का काम है कि औलाद को अच्छी शिक्षा दे।" सोनू ने मां को उपदेश देने की कोशिश की।

"आहा, तुम भला अच्छे काम करोगे!"

"क्यों, मैं कोई अच्छा काम नहीं कर सकता।"

सोनू परिवार में दो बहनों पर अकेला भाई होने के कारण शुरू से ही जिद्दी और क्रोधी स्वाभाव का था। माता-पिता का लाड़ला होने के कारण, उसके ख्वाब भी ऊंचे थे। इसी स्वाभाव के कारण उसकी दोस्ती भी ऐसे लड़कों से हो गयी थी।

इसी तरह का उसका एक दोस्त रक्षपाल सिंह उर्फ साबी था। साबी

हरी के पत्तन का मूल निवासी था, किंतु इन दिनों वह प्रीतनगर के अंतिम छोर, जहां इक्का-दुक्का कोठियां थीं, वहीं अपने जीजा बलजीत सिंह, जो पुलिस में थे और थाना बिलगा, जिला लुधियाना में तैनात थे, की कोठी का निर्माण कार्य देख रहा था। निर्माणाधीन इसी कोठी में सोनू के और बहुत-से दोस्त शाम को महफिल जमाया करते थे। इस महफिल में कोई ऐसा अनैतिक कार्य बाकी नहीं था, जो यहां हर शाम न होता रहा हो। पडोस में रहनेवालों ने बलजीत सिंह से कई बार शिकायत भी की थी, किंतु उसने अपने साले साबी से कुछ कहना ठीक नहीं समझा था।

गुरदेव सिंह के अपहरण में असफल सोनू को गुरदेव सिंह तथा तरसेम सिंह के परिवार पर रह-रहकर क्रोध आ रहा था। सोनू ने कई दिन तक गुरदेव सिंह के अपहरण की कोशिश की, पर वह सफल नहीं हो सका। गुरदेव सिंह को शायद इस बात की शंका हो गयी थी। सोनू अभी गुरदेव सिंह के अपहरण की योजना में उलझा ही हुआ था कि अचानक सोनू की मां का तरसेम सिंह की बहन से झगड़ा हो गया। तरसेम सिंह का इस झगड़े में पड़ना स्वाभाविक था।

बलविंदर कौर पहले से ही तरसेम सिंह से जली-भुनी बैठी थी।


बेटे के खोने से बेहाल मां और गम में डूबे पड़ोसी

उसने तरसेम सिंह का गुस्सा सोनू पर उतारा। बलविंदर कौर ने सोनू को फिर खरी-खोटी सुनाई, "अच्छा होता, हमारे तीनों लड़कियां ही पैदा होतीं। हमें तब कोई अफसोस तो नहीं होता। तुम जाकर चूड़ियां पहन लो। हम संतोष कर लेंगे। सोच लेंगे कि हमारे यहां बेटा पैदा ही नहीं हुआ।" इतना कहकर नौटंकी करते हुए बलविंदर कौर दहाड़े मारकर अपनी छाती पीटने लगी।

"पर मां..."

"मत कह मुझे मां, आज से मेरा-तेरा कोई रिश्ता नहीं रहा। जाओ, दफा हो जाओ, मेरे घर से।" सोनू को धक्का मारते हुए बलविंदर कौर ने कहा।

"मां, संभालो अपने-आपको। इस तरह की छोटी-मोटी बातों पर क्यों मरने-मारने की अशुभ बातें करने लगती हो।" सोनू की बहन किरण ने कहा।

"सोनू, तुम अपने कमरे में जाओ, मैं मम्मी को समझाती हूं।" किरण ने अपने भाई से कहा।

सोनू अपमान का घूंट पीकर अपने कमरे में चला गया। मां को दिलासा देते हुए किरण ने फिर समझाया, "मम्मी, जहां रोज क्लेश रहता है, वहां कोई न कोई अनहोनी होकर रहती है। अब जो हो गया, उसे भूल जाओ।"

"कैसे भूल जाऊं?" बलविंदर कौर ने चीखकर अपनी छाती पीटते हुए कहा, "मैं गुरमीत कौर का बेड़ा गर्क करके ही रहूंगी। सारी उम्र के लिए रुला दूंगी उसे।"

किरण हैरानी से अपनी मां का मुंह ताकती रह गयी। किरण के दिमाग में विचारों का बवंडर घूम गया। उसने सोचा, क्या हो गया है मां को, जो इस तरह की बहकी-बहकी बातें कर रही है। सोनू को अच्छा रास्ता दिखाने के बजाय उसे गुमराह कर रही है। कहीं ऐसा न हो कि सोनू कोई गलत काम कर बैठे। किरण ने मां को समझाने का बहुत प्रयास किया, किंतु बलविंदर कौर पर तो जैसे शैतान सवार था। सोनू को वह बार-बार ताने देती रही। सोनू अपनी मां के ताने सुन-सुनकर अंदर ही अंदर घुटता रहा और अंत में तनाव, ईर्ष्या और क्रोध में उसने वह सब कर डाला, जो उसे नहीं करना चाहिए था।


पम्मा की छोटी बहन करमजीत कौर और भाई हरमिन्दर सिंह

उधर 11 जनवरी, 2002 को सिटी थाना के प्रभारी बरिन्दर सिंह को पम्मा के अपहरण का एक सूत्र मिल ही गया। पुलिस को पम्मा का साइकिल मार्कफैड के गोदामों की पीछे खेतों में पड़ी मिल गयी। पुलिस ने बड़ी सूक्ष्मता से छानबीन की, तो पता चला कि इस साइकिल को एक नीली टी-शर्ट वाला युवक यहां फेंक गया था। नीली टी-शर्ट वाले युवक का लोगों ने जो हुलिया बताया, वह साबी के हुलिए से मेल खाता था। डी.एस.पी. पुष्कर संदल ने पुलिस जांच की एक-एक कड़ी को जोड़ा, तो पलविंदर सिंह उर्फ पाली पुलिस के संदेह के घेरे में आ गया। पाली के घर पर पुलिस पहले ही गुप्त रूप से नजर रखे हुए थी। उसी दिन शाम को बरिन्दर सिंह को सूचना मिली कि पाली अपने माता-पिता से मिलने के लिए प्रीतनगर में घूम रहा है। देर किये बिना बरिन्दर सिंह ने पाली के घर के आसपास तथा अंदर सादी वर्दी में पुलिस के जवानों को तैनात कर दिया। कुछ देर बाद ही पाली चौकन्नी निगाहों से इधर-उधर देखता हुआ घर में घुसा। अंदर बैठे पुलिस कर्मचारियों ने झट पाली को दबोच लिया। पाली ने भागने का असफल प्रयास भी किया, पर वह भाग नहीं पाया।

सिटी थाने लाकर पाली से जब पूछा कि वह 8 जनवरी को कहां था, तो वह कोई सही जवाब नहीं दे पाया। पाली ने पुलिस को गुमराह करने के लिए बार-बार बयान बदला। पुलिस को दिये गये बयान में पाली ने 8 जनवरी, 2002 को जिन लोगों के पास होने का जिक्र किया था। उन लोगों ने साथ होने से साफ इनकार कर दिया। तब पुलिस को अहसास हो गया कि सीधी उंगली से घी नहीं निकलने वाला है।

पुलिस ने उंगली टेढ़ी करने से पहले ही पम्मा के मोबाइल फोन नंबर 9814324119 की काल को ट्रेस कर लिया। पम्मा जब घर से गया था, यह मोबाइल फोन उसके पास था। अमृतपाल सिंह उर्फ सोनू

इस फोन का तीन हजार में सौदा भी कर चुका था। सोनू फोन देने ही जा रहा था कि पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने सोनू के अन्य चार साथियों अमृतपाल सिंह, नरेंद्रपाल उर्फ निंदर, रक्षपाल सिंह उर्फ साबी और सुखदेव सिंह उर्फ सुखा को शक के आधार पर गिरफ्तार कर लिया।

सभी छहों युवकों को 12 जनवरी, 2002 को कोर्ट ने पेश किया गया। पुलिस के पक्के सुबूतों और तथ्यों के आधार पर कोर्ट में 21 जनवरी, 2002 तक के लिए सभी युवकों को पुलिस रिमांड पर भेज दिया। पुलिस ने सभी अभियुक्तों से अलग-अलग पूछताछ शुरू की, किंतु सबने अपने आपको निर्दोष बताया। पर 8 जनवरी, 2002 को वह सब कहां थे, वह सही नहीं बता पाये।

ए.एस.आई. सरदार कुलवंत सिंह ने पाली पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाया। उस पर सहानुभूति जताते हुए उसे अपने विश्वास में लिया। पाली जहां बैठा था, कुलवंत सिंह ने ठीक उसके सामने कुछ फासले पर अमृतपाल सिंह उर्फ सोनू को बुलाकर बैठा लिया। अंधेरे में तीर मारने के विचार से कुलवंत सिंह ने पाली को बरिन्दर सिंह के पास बैठा छोड़कर, सोनू से जाकर बातें करने लगे और सोनू से पूछताछ का अभिनय करते हुए पाली को बार-बार घूर-घूरकर देखने लगे। कुलवंत सिंह को यों घूरता देखकर कड़ाके की ठंड के होते हुए भी पाली को पसीना आ गया।

कुलवंत सिंह सोनू के पास से उठे और बरिन्दर सिंह से कहा, "सर, सोनू ने सब कुछ बता दिया है।"

"गुड, वेरी गुड... क्या बताया सोनू ने?" बरिन्दर सिंह ने तिरछी नगर से पाली की ओर देखते हुए कहा।

"सर, सोनू ने बताया है कि सारा किया कराया पाली का है। इसी ने पम्मा के अपहरण की सारी योजना बनायी थी और इसी के कहने पर ही पम्मा की हत्या...?"



नई दानामंडी के पीछे सीवरेज टैंक, जहां पम्मा का शव मिला था

"नहीं, सोनू झूठ बोल रहा है।" कुलवंत सिंह की बात पूरी होने से पहले ही पाली घिघियाने लगा।

"चुप, जब तुझसे पूछ रहा था, तो तूने कुछ बताया नहीं। अब सारा राज खुल गया है, तो चालाकी दिखा रहा है।" बरिन्दर सिंह ने पाली को डांटा।

"सर, पाली तो अब नहीं बच पायेगा। सोनू ने सारा दोष इसी पर डाल दिया है।" कुलवंत सिंह ने बरिन्दर सिंह की योजना को सफल होता देखकर प्रसन्न होकर कहा।

"सर, मुझे बचा लो, मैंने कुछ नहीं किया है। मुझे तो सोनू ने फंसाया है।" रोता-गिड़गिड़ाता हुआ पाली बरिन्दर सिंह के पैरों पर गिर पड़ा।

"अगर तुम सारी बातें सच-सच बता दो, तो हम तुम्हारे बारे में विचार करेंगे।"

"मैं आपको सब कुछ बताने के लिए तैयार हूं। सर, मुझे बचा



चन्ननसिंह और अभियुक्त अमृतपाल सिंह का मकान, जहां स्थानीय निवासियों ने पंजाबी में लिख दिया है-कुत्ती खूनी की कोठी

लीजिए।" पाली गिड़गिड़ाकर बोला।

"झूठ मत बोलना, वरना...।" कड़कती आवाज में बरिन्दर सिंह ने कहा।

और फिर पाली ने जो कुछ बताया, उसकी पुष्टि सोनू सहित सभी अभियुक्तों ने कर दी। उसे सुनकर बरिन्दर सिंह सहित सभी पुलिसवाले सुनकर हैरान रह गये। इन हैवानों ने मासूम पम्मा की जिस बेरहमी से हत्या की थी, वह बड़ी ही घिनौनी दास्तान है।

8 जनवरी, 2002 को पम्मा कंम्प्यूटर क्लास के लिये घर से निकला था। पर बिजली न होने के कारण वह 'करन ड्राइविंग स्कूल' में ड्राइविंग सीखने चला गया था। वहां एक घंटा कार ड्राइविंग सीखने के बाद वह अपनी साइकिल से घर लौट रहा था। तभी पाली ने रास्ते में उसे रोककर कहा, "पम्मा कहां जा रहा है?"

"घर जा रहा हूं। आज बहुत देर हो गई है।" साइकिल रोककर पम्मा ने कहा।

"आज हम लोगों ने साबी की कोठी पर स्पेशल प्रोग्राम रखा है।" पाली ने पम्मा के कंधे को ठोंकते हुए कुटिल मुस्कान के साथ कहा।

"नहीं, आज नहीं, फिर कभी। डैडी घर पर इंतजार कर रहे होंगे।"

"छोड़ यार। डैडी को तुमसे ऐसा कौन-सा काम है। वह तो वैसे ही बाहर से ढेर सारा रुपया कमाकर लाये हैं। वह रुपया तुझे ही गिनना है क्या?" पाली इतना कहकर ठहाका मारकर हंस पड़ा।

"नहीं यार। अच्छा रुको, मैं फोन से मम्मी को बता दूं।" इतना कहकर पम्मा ने मोबाइल ऑन किया।

"अरे पागल हुआ है क्या?" पाली ने पम्मा के हाथ से मोबाइल लेकर आफ कर दिया और फिर कहा, "तेरी मम्मी को पता चल गया, तो वह साबी की कोठी पर पहुंचकर हंगामा खड़ा कर देगी।"

"जाने दो यार। फिर कभी सही।" पाली की बात पम्मा ने काटते हुए लापरवाही से अपना फोन वापस ले लिया।

"यार पम्मा, तू समझता क्यों नहीं, आज तुझे ऐसी फिल्म दिखाऊंगा कि तू सारी उम्र याद रखेगा।" पाली ने आंख दबाकर कहा। पाली की बात सुनकर पम्मा कुछ सोचने लगा। पम्मा कुछ निर्णय कर पाता, उसके पूर्व ही पाली ने उसका हाथ पकड़ा और कहा, "चल पहले सी.डी. ले आते हैं।"

"यह साइकिल?" पम्मा ने साइकिल की ओर इशारा किया।

"चलो, पहले इसे साबी के पास रख देते हैं।"

दोनों साबी के घर की ओर चल पड़े।

बस्ती का बाहरी इलाका होने के कारण दूर-दूर तक अंधेरा था। कहीं-कहीं मोमबत्तियां टिमटिमा रही थीं। साबी की कोठी पर पहुंचकर पाली ने बिजली आने के बाद बाजार चलने की बात कहकर पम्मा को वहीं रुकने के लिए कहा। पाली के साथ पम्मा को वहां रुकने में कोई एतराज नहीं हुआ। क्योंकि पाली से उसकी अच्छी दोस्ती थी। हालांकि साबी की कोठी पर कुछ देर के बाद सोनू, अमित, सुखा और निन्दर भी आ पहुंचे थे।

सोनू ने पुलिस को आगे बताया कि पम्मा के डैडी अमेरिका से लाखों रुपये लेकर आये हैं, उसी रुपए को पाने के लालच में मैंने अपने साथियों को अपनी योजना में शामिल कर लिया था। सोनू अपनी मां द्वारा रोजाना मिलनेवाली लानत और गालियों से वैसे ही खार खाये बैठा था। तभी पम्मा की बुआ से झगड़ा हो गया। तब सोनू ने गुरदेव सिंह के अपहरण का इरादा छोड़कर पम्मा का अपहरण करके फिरौती

में मोटी रकम वसूल करने की योजना बनायी। वैसे भी पम्मा 30-40 हजार रुपए का सोना हर समय पहने रहता था।

सोनू की योजना में व्यवधान तब पैदा हुआ, जब पम्मा रात अधिक हो जाने पर घर जाने की जिद करने लगा। अपनी योजना विफल होते देखकर सोनू ने पम्मा को रस्सी से बांधने के लिए कहा। उसके साथियों ने पम्मा को सोनू के कहने पर रस्सी से जकड़ दिया। उसने शोर मचाना चाहा, तो सबने मिलकर उसके मुंह में शराब की बोतल उड़ेल दी। शराब का नशा होते ही पम्मा कुछ ढीला पड़ गया। पर उसने उन लोगों को पुलिस में फंसाने की धमकी देनी शुरू कर दी। सोनू कुछ देर तो अपने साथियों के मना करने पर मान गया। पर अपनी मां के शब्दों को याद करते ही उस पर जैसे शैतान सवार हो गया। नशे में धुत होकर वह पम्मा के सामने जा खड़ा हुआ और लाल-लाल आंखें तरेर कर गुर्राया, "तू मुझे पुलिस से डराता है। तू जानता नहीं है, मेरा बाप खुद थानेदार है। पुलिस क्या करेगी मेरा?"

"तू मुझे जाने दे, वरना अंजाम अच्छा नहीं होगा।" चेतावनी देते हुए पम्मा ने कहा।

"अब तो पुतरा, तू तभी जा सकेगा, जब तेरा बाप रोकड़ा लेकर आएगा।" सोनू के इतना कहते ही वहां खड़े सभी साथियों ने ठहाका लगाया।

"ओए लोकों, कोई मैनूं बचा लो, ये मैनूं मार देनगें।" पम्मा पूरा जोर लगा कर चिल्लाया।

"इस हरामजादे को पकड़ो। इसे मैं बताता हूं।" इतना कहकर सोनू आगे बढ़ा, तभी पम्मा ने उसको लात मार दिया।

लात पड़ते ही सोनू तिलमिला गया और बोला, "कुत्ते, तुझे अभी बताता हूं।" सोनू गालियां बकता हुआ वहीं पास पड़ी हुई रस्सी उठा लाया।

यमदूत की तरह सोनू ने रस्सी का फंदा पम्मा के गले में डाल दिया। रस्सी का फंदा पड़ते ही पम्मा इधर-उधर भागने की चेष्टा करने



एस.एस.पी. सुश्री गुरप्रीत दियो, कपूरथला

लगा। पम्मा के दोनों हाथ पीछे बंधे थे। कोई रास्ता न मिलने पर पम्मा ने सोनू को टक्कर मारा। टक्कर लगते ही सोनू नीचे गिर गया। हाथ में पकड़ी रस्सी के साथ ही पम्मा भी सोनू के साथ गिर गया। इतने में वहां खड़े सोनू के दूतों को मौका मिल गया। सब उस पर टूट पड़े।

पम्मा का मुकद्दर यहीं साथ छोड़ गया। सुखा ने पम्मा के पैरों को जकड़ लिया। सोनू की धमकी के कारण अमित ने पम्मा का दूसरा पैर पकड़ लिया। पाली को अपनी ओर आते देखकर पम्मा ने उसका मुंह नोंच लिया। निन्दर और सावी ने लपककर पम्मा के दोनों हाथ पकड़ लिये। पम्मा ने सोच लिया कि अब अंत समय आ गया, तो उसने चीखना ही चाहा था कि सोनू और पाली ने पम्मा के गले में पड़ी रस्सी का फंदा कस दिया। मासूम जान तड़पकर वहीं शांत हो गया।

पम्मा को जब इन लोगों ने हिला-डुलाकर देखा, तो वह निष्प्राण हो चुका था। उसके बाद सोनू ने पम्मा के मृत शरीर से गले की चेन, हाथ से सोने का कड़ा और उंगलियों से दो सोने की अंगूठियां उतार लीं। आगे की योजना को अमली जामा पहनाने के लिए इन सब ने मिलकर पम्मा की लाश को ठिकाने लगाने के स्थान का चुनाव किया। तब एक मारुति वैन नम्बर पी.बी. 08एल 9750 रंग सफेद और मारुति कार नंबर पी.सी.जे. 576 लाल रंग में पम्मा की लाश को ले जाकर नई दानामंडी के पीछे अंडर



ए.एस.आई. सरदार कुलवंत सिंह

ग्राउंड सीवर टैंक में डाल दिया। दो-तीन लोग सुबह होते ही अपने घर चले गये और तीन लोग पुलिस की जांच पर निगाह जमाये रहे। पर 11 जनवरी को पम्मा को साइकिल मिलने के बाद यह सभी फरार होने की जुगाड़ में लग गये थे। किंतु एस.एस.पी. सुश्री गुरप्रीत दियो ने शहर से बाहर जानेवाले सभी रास्तों को 9 जनवरी को ही सील कर दिया था। पुलिस ने अभियुक्तों द्वारा पम्मा की हत्या किये जाने की बात स्वीकार करने के बाद अभियुक्तों को साथ लिया और दानामंडी की ओर चल दिये। इसके साथ ही पुलिस ने शव बरामदगी के समय सरकारी गवाह के तौर पर कपूरथला के नायब तहसीलदार श्री मनधीर सिंह ढिल्लों को भी बुला लिया। श्री ढिल्लों की मौजूदगी में अंडर ग्राउंड टैंक (सीवर) का ढक्कन खोला गया। ट्रैंक में पम्मा की लाश पानी के ऊपर तैर रही थी। पुलिस ने पंचनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल भेज दिया। पम्मा की मुट्ठी में अभियुक्त सोनू के बाल भी मिले।

किसी ने दौड़कर पम्मा के घर उसके शव मिलने की सूचना दी। सुनते ही गुरमीत कौर दहाड़ें मारकर गिर पड़ीं। सारे परिवार में कोहराम मच गया। घटनास्थल पर भीड़ लग गयी। पम्मा की हत्या के विरोध में सारा बाजार भी बंद हो गया। पम्मा की हत्या से इतना तो साफ हो ही गया था कि थानेदार के पुत्र ने अपनी मां के अहंकार के वशीभूत होकर एक मासूम की हत्या कर दी थी।

पुलिस ने अभियुक्तों द्वारा प्रयोग में लायी गयी कार और वैन भी बरामद कर ली थी। एफ.आई.आर. में 302, 120 बी को भी शामिल कर लिया गया। पम्मा के सोने के गहने बलविंदर कौर लेकर फरार है। पुलिस उसकी तलाश कर रही है। 23 जनवरी को सभी अभियुक्तों को कोर्ट में पेश करके न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। कथा लिखे जाने तक सभी जेल में थे। ●

(कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित)

एक आदर्श लड़का था पम्मा

संतपुरा (प्रीतनगर) के निवासियों ने बताया कि परमजीत सिंह उर्फ पम्मा एक मेधावी छात्र था। तरसेम सिंह उसकी प्रतिभा को देखकर ही उसे अपने साथ अमेरिका ले जाने का मन बना चुके थे। इसी कारण पम्मा दो साल से कंप्यूटर सीख रहा था और कार की ड्राइविंग भी वह इसी लिए सीख रहा था। संतपुरा के लोग पम्मा से विशेष स्नेह रखते थे। उसकी किसी से दुश्मनी नहीं थी, बल्कि उसने तो सोनू से भी अच्छे रास्ते पर चलने के लिए कई बार कहा था। वह चाहता था कि परिवार में क्या, मोहल्ले में भी किसी से लड़ाई-झगड़ा न हो। हर मन प्यारा पम्मा, अपने स्कूल और अपने क्लास के दोस्तों की आर्थिक मदद भी किया करता था। हत्या से पूर्व पम्मा ने अपने मित्रों के साथ संतपुरा में लोहड़ी पर एक विशेष कार्यक्रम करने की तैयारी की थी। वह लोहड़ीवाले उत्सव को एक नया आयाम देने चाहता था। वह लोहड़ीवाली रात बैर-भाव, ईर्ष्या मिटाने के लिए पूरे मोहल्ले को संयुक्त रूप से इकट्ठा करना चाहता था। पम्मा का अरमान था कि पूरे शहर में ऐसी ही नुक्कड़ सभाएं करके कपूरथला से शत्रुता खत्म कर दी जाए। किंतु इससे पूर्व ही पम्मा के अरमानों के साथ-साथ समाज के दुश्मनों ने उसका ही गला दबा दिया। दूसरों की राहों में फूल बिछानेवाला ही नहीं रहा। जो औरों के लिए जीना चाहता था, दुश्मनों ने उसी की जान ले ली।

नितिश कटारा हत्याकांड

(पृष्ठ 47 का शेष)

बोला, "यू.पी. में सरकार किसकी बन रही है भाई साहब?"

"यू.पी. में सरकार हमारी बनेगी या फिर किसी की भी नहीं बनेगी।" कॉफी काउंटर की ओर कदम बढ़ाते हुए विकास बोला, "कॉफी नहीं पिलाओगे नितिश?"

"कैसी बातें कर रहे हैं आप? आइये न।" आगे बढ़ते हुए नितिश बोला। इतना ही नहीं, तेजी से आगे बढ़कर नितिश कॉफी काउंटर से कॉफी के तीन मग ले आया। उसके हाथ से कॉफी का मग थामते हुए विकास बोला, "आओ, बाहर चलकर कॉफी पीते हैं। यहां बहुत शोर है।" हाथों में अपने-अपने मग थामे तीनों बैंक्वेट हाल से बाहर आ गये। दूर कहीं एक कोने में खड़ी भारती यह सब देख रही थी। वह अपने भाई की रग-रग से वाकिफ थी। वह नहीं चाहती थी कि नितिश उन लोगों के साथ बाहर जाये। वह उसे रोकना भी चाहती थी। लेकिन चाहकर भी वह ऐसा नहीं कर सकी। बेबस-सी खड़ी उन लोगों को बाहर जाते देखती रही। फेरों का समय हो रहा था। शिवानी और उसका दूल्हा मंडप में आ चुके थे। इसलिए न चाहते हुए भी भारती को भी वहां जाकर बैठना पड़ा। लेकिन उसकी निगाहें बैंक्वेट हाल के दरवाजे की ओर ही लगी हुई थीं।

उस रात भारती करीब डेढ़ बजे तक अपनी सहेली शिवानी की शादी में रही। लेकिन न तो नितिश लौटकर आया और न विकास और विशाल।

नितिश को विकास और विशाल यादव के साथ जाते समय उसके दो दोस्तों, भरत और गौरव ने भी देखा था। रात करीब डेढ़ बजे तक नितिश वापस नहीं लौटा, तो उन दोनों ने उसके मोबाइल पर फोन किया। लेकिन उसके मोबाइल का स्विच बंद मिला। कोई और रास्ता न देख, उन दोनों ने नितिश की मां नीलम कटारा को फोन करके सारी बात बतायी। नीलम कटारा बेटे के प्रेम संबंध से वाकिफ थीं। वह नितिश और भारती के प्रेम संबंधों के पक्ष में जरा भी नहीं थीं। कारण था भारती के पिता सांसद डीपी यादव और उनके बेटे विकास यादव की पारिवारिक पृष्ठभूमि। भारती और नितिश के प्रेम संबंधों के चलते नीलम कटारा भले ही डीपी यादव और उनके परिवार के बारे में ज्यादा न जानती हों, पर इस बात से तो वाकिफ ही थीं कि वह पश्चिमी उत्तर प्रदेश का माफिया परिवार है। जबकि उनका परिवार सभ्य और संभ्रांत था।

श्रीमती नीलम कटारा की संभ्रांत पृष्ठभूमि का अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि उनके



श्रीमती नीलम कटारा

आईएएस पति निशीथ कटारा जहाजरानी मंत्रालय में संयुक्त सचिव हैं। नितिश के नाना ए.एन. कौल उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक रह चुके हैं। देखा जाये तो दोनों परिवारों में चोर-पुलिस का समीकरण है। लेकिन यह समीकरण उस समय ढह गया, जब नितिश ने गाजियाबाद स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट में दाखिला लिया और उसकी मित्रता डीपी यादव की पुत्री भारती यादव से हुई थी। अध्ययन के दौरान भले यह संबंध मित्रता के दायरे तक रहे हों। लेकिन पढ़ाई पूरी करने के बाद जब नितिश रिलायंस ग्रुप में प्रबंधक हो गया, तो यह संबंध मित्रता का दायरा लांघकर प्रेम की दहलीज तक जा पहुंचा। बेटा उच्च शिक्षित था। स्वावलम्बी भी था। इसलिए नीलम कटारा उसके निजी मामलों में ज्यादा दखल नहीं दे सकीं। अलबत्ता, जितनी दुनियादारी उन्होंने देखी थी, उसके दायरे में उन्होंने बेटे को यह आत्मघाती कदम उठाने से रोकने का प्रयास अवश्य किया था।

बहरहाल, 16 फरवरी 2002 की रात जब गौरव और भरत का फोन आया, तो श्रीमती नीलम कटारा का मन किसी अनहोनी की आशंका से कांप उठा। डीपी यादव का मोबाइल फोन नंबर उनके पास था। उन्होंने अविलम्ब उन्हें फोन किया और सारी बातें बताते हुए उनसे बेटे को छोड़ देने की विनती की। डीपी यादव ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह विकास से बात कर नितिश को छुड़वा देंगे। नीलम ने विकास की मां को फोन करके भी यह विनती की।

एक ओर नीलम कटारा अपनी ओर से प्रयास कर रही थीं, तो दूसरी ओर घर पहुंचने के बाद भारती अपने कमरे में बंद हो गयी। बंद कमरे से ही उसने भाई को फोन किया और विनती की कि वह नितिश को छोड़ दे। उसने वचन दिया कि वह जीवन में नितिश से दोबारा कभी नहीं मिलेगी। लेकिन विकास ने पूरी बात सुने बिना ही उसका फोन काट दिया। उसी रात भारती ने श्रीमती नीलम कटारा को फोन भी किया और ई-मेल भी। उसने उन्हें आश्वासन दिया कि जैसे भी संभव होगा, वह नितिश को छुड़ाकर रहेगी। लेकिन कुछ नहीं हुआ। न नीलम कटारा की गुहार सुनी गयी और न भारती की विनती।

17 फरवरी की सुबह तक नितिश न तो घर लौटा और न उसके बारे में कोई सूचना मिली, तो श्रीमती नीलम कटारा थाना कविनगर पहुंची और विकास और विशाल को नामजद करते हुए बेटे के अपहरण की रिपोर्ट दर्ज करा दी।

मामला जहाजरानी मंत्रालय के संयुक्त सचिव के बेटे का था। इसलिए रिपोर्ट दर्ज होते ही पुलिस हरकत में आ गयी। पुलिस ने अपनी कार्रवाई की शुरुआत कई स्तर पर की। पुलिस के कुछ दलों ने गाजियाबाद क्षेत्र की नहरों की खाक छानी, तो एक पुलिस दल विकास और विशाल की तलाश में जुट गया। विकास सिसौली विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लड़ रहा था उसके वहां होने की प्रबल संभावना थी। इसलिए उसकी तलाश में एक पुलिस दल सिसौली भेजा गया लेकिन उन दोनों का कहीं पता न चला।

इस बीच श्रीमती नीलम कटारा लगातार डीपी यादव को फोन कर रही थीं। मामला मीडिया की सुर्खियों में था। इस बात से खफा होकर डीपी यादव ने शिकायत भी की कि उनकी वजह से उनके चुनाव पर असर पड़ रहा है। इस बीच भारती ने भी श्रीमती नीलम कटारा को कई फोन किए। हर फोन पर वह कहती थी कि आप पता लगाओ कि नितिश कहां है? हमारे परिवार वाले अच्छे लोग नहीं हैं। नीलम कटारा उनकी बात का भला क्या जवाब देतीं। बाद में उसने उन्हें यह भी बताया कि उसके मोबाइल का कैश कार्ड खत्म हो रहा है और उसके परिवार वाले उसे नया कार्ड लेकर नहीं दे रहे हैं, इसलिए वह उन्हें फोन नहीं कर पायेगी। अलबत्ता, बाद में भी वह उन्हें ई-मेल पर संदेश भेजती रही थी। वैसे उसने कुल छह ई-मेल उन्हें भेजा था। इस बीच डीपी यादव ने संवाददाताओं का सहारा लेकर मामले को राजनैतिक मोड़ देने का प्रयास किया। लेकिन बात सीमा से कहीं आगे बढ़ चुकी थी।

19 फरवरी को बुलंदशहर के खुर्जा थाना क्षेत्र में एक व्यक्ति का जली अवस्था में नग्न शव बरामद हुआ। मृतक का चेहरा कुचलकर उसकी पहचान मिटाने का प्रयास किया गया था। लेकिन खुर्जा पुलिस लापरवाह निकली। उसने पोस्टमार्टम या मृतक की शिनाख्त का प्रयास किए बिना ही शव को दफना दिया। बाद में उच्चाधिकारियों को इस बात की सूचना मिली, तो उन्होंने शव को निकलवा कर उसका पोस्टमार्टम कराया और उसकी शिनाख्त के लिए गाजियाबाद पुलिस से संपर्क किया। इस सूचना के आधार पर गाजियाबाद पुलिस नितिश की मां को लेकर खुर्जा पहुंची। हालांकि

मृतक का शव काफी जला हुआ था। चेहरे-मोहरे के आधार पर उसकी शिनाख्त संभव नहीं थी। लेकिन नीलम कटारा एक मां थी। वह अपने बेटे के उस पैर को पहचान गयीं, जो शायद कीचड़ में गीला हो जाने के कारण जलने से बच गया था। श्रीमती कटारा ने देखा कि मृतक का पैर ठीक वैसा ही था, जैसा उनके ससुर का था। वैसे भी मां का हृदय शव के एक-एक कण की शिनाख्त कर रहा था। श्रीमती कटारा ने पूरे विश्वास के साथ बेटे के शव की शिनाख्त कर ली। इसके अलावा मृतक का एक हाथ भी जलने से बच गया था। पुलिस ने इस हाथ की छाप का मिलान गाजियाबाद ड्राइविंग लाइसेंस विभाग में मौजूद नितिश के फिंगर प्रिंट से किया गया, तो वे भी मिल गये। इसके बावजूद इस मामले में पुलिस कोई रिस्क नहीं लेना चाहती थी। इसलिए डीएनए टेस्ट कराने के लिए मृतक के शव के कुछ अंश हैदराबाद स्थित प्रयोगशाला भेज दिए गये। साथ ही शव को सुरक्षित भी रख दिया गया।

विकास और उसके चचेरे भाई विशाल की तलाश में गाजियाबाद पुलिस ने जमीन आसमान एक कर रखा था। पटियाला हाउस कोर्ट, दिल्ली में जेसिका लाल हत्याकांड सुनवाई पर विकास को पहुंचना था। यही सोचकर पुलिस ने अपना जाल भी फैलाया। लेकिन विकास उस तारीख पर कोर्ट में उपस्थित नहीं हुआ। आत्मसमर्पण की आशंका के मद्देनजर पुलिस ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में भी जाल बिछाया। लेकिन वे वहां भी नहीं पहुंचे।

22 फरवरी को वे प्रकट हुए ग्वालियर के निकट स्थित डबरा नामक छोटे से कस्बे में। उन्हें अवैध हथियार रखने के आरोप में शस्त्र अधिनियम के तहत गिरफ्तार किया गया था। इस सिलसिले में डबरा पुलिस ने जो कहानी बनायी, उसके मुताबिक बकरीद के मौके पर शहर में सुरक्षा के कड़े प्रबंध थे। उसी दौरान विकास और विशाल डबरा रेवले स्टेशन पर उतरे। शक के आधार पर पुलिस ने उनकी तलाशी ली, तो उनके पास कारतूस व आग्नेयास्त्र बरामद हुई। बाद में उनकी पहचान विकास यादव और विशाल यादव के रूप में हुई। कितनी आसान और सीधी सच्ची कहानी बनायी पुलिस ने। देखा जाये तो यह गिरफ्तारी नहीं, बल्कि उन दोनों का आत्मसमर्पण था।

बहरहाल, 24 फरवरी को गाजियाबाद पुलिस विकास और विशाल को गाजियाबाद ले आयी। शुरुआती दौर में तो उन दोनों ने कुछ नहीं बताया। लेकिन अगले दिन पुलिस ने उन दोनों को रिमांड पर लेकर पूछताछ की। विकास और विशाल के बयान, श्रीमती नीलम कटारा के आरोपों और उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर जो कहानी सामने आयी, वह इस प्रकार थी :



नितिश कटारा

कभी मुलायम सिंह यादव के दायें हाथ के रूप में चर्चित उत्तर प्रदेश के पूर्व पंचायत राज्य मंत्री और वर्तमान में राष्ट्रीय परिवर्तन दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा राज्य सभा सांसद डीपी यादव उर्फ धर्मपाल यादव की पृष्ठभूमि में झांकना शुरू करें, तो यह एक अलग दास्तान बन जायेगी। मोटे शब्दों में कहें तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश में डीपी यादव की छवि शराब माफिया की है। उनकी दहशत और प्रभाव का आलम यह है कि इस क्षेत्र में उनके खिलाफ आवाज उठाने का साहस कम ही लोग कर पाते हैं। विकास यादव उन्हीं के बेटे का नाम है। माफिया पिता का पुत्र होने के कारण ऐंठ, अकड़ और दादागीरी तो विकास को विरासत में मिली है।

विकास यादव की प्रवृति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि 18 साल की उम्र में उसने अपने सहपाठी देवेन्द्र की हत्या कर डाली थी। इस वारदात को आज 11 साल हो चुके हैं। देवेन्द्र के पिता इंद्रपाल इंसाफ की तलाश में आज भी अदालतों के चक्कर लगा रहे हैं। इस बीच विकास का नाम छोटे-छोटे मामलों में तो कई बार सामने आया। लेकिन सबसे चर्चित रहा जेसिका लाल प्रकरण, जिसमें विकास को सह अभियुक्त बनाया गया था। इस मामले में विकास की जमानत भी हाल ही में हुई थी। अपनी राजनीतिक विरासत पुत्र को सौंपने के इरादे से डीपी यादव ने इस बार उसे सिसौली विधान सभा क्षेत्र से चुनाव में उतारा था। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि पूरे उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय परिवर्तन दल खाता तक नहीं खोल सका।

विकास यादव के तेवरों को हवा देने में डीपी यादव ने कभी कमी नहीं की। यही वजह थी कि उसके परिवार वाले उसके सामने जुबान नहीं खोलते थे। भारती तो विकास की उपस्थिति में थर-थर कांपती थी।

भारती पैसे और प्रभाव वाले बाप की संतान भले ही थी, लेकिन सच यह था कि पुरातनपंथी परिवारों की तरह उस पर पर्याप्त अंकुश थे। यही वजह थी कि जब विकास को पता चला कि उसकी बहन मैनेजमेंट की पढ़ाई के साथ-साथ प्यार का पाठ भी पढ़ रही है, तो उसने उसकी खूब लानत-मलामत की। यहां तक कि नितिश को जान से मारने की धमकी भी उसने दी। भारती हर बार भाई को वचन तो दे देती, लेकिन अपने दिल पर काबू नहीं रख पाती थी।

नितिश भारती से अपने संबंधों को लेकर बहुत गंभीर था। भारती भी नितिश को चाहती थी। एक बार वह अपनी बहन के जन्मदिन का निमंत्रण पत्र देने के बहाने श्रीमती नीलम कटारा से मिल भी चुकी थी। उसके निमंत्रण पर श्रीमती कटारा एशियाड विलेज गयी थीं। लौटकर उन्होंने नितिश से कहा था, "वे सब अच्छे लोग नहीं हैं। या तो तुम लोग शादी कर लो, या फिर यह सब खत्म कर दो।"

नितिश ने यह बात भारती को भी बतायी। तब भारती ने कहा कि चुनाव का परिणाम आने दो। उसके बाद जिस दिन भी पापा अच्छे मूड में होंगे, मैं उनसे बात कर लूंगी। लेकिन वह अच्छा दिन कभी नहीं आया।

16 फरवरी को शिवानी की शादी थी। शिवानी भारती और नितिश की सहपाठी थी। उसकी शादी में शामिल होने के लिए उनके अन्य सहपाठी पहुंचे थे। भारती को सपने में भी अनुमान नहीं था कि विकास सिसौली से लौट आयेगा। इसलिए वह निश्चिंत होकर नितिश के साथ थिरक रही थी।

दूसरी ओर अनुमान के विपरीत वह सिसौली से लौट आया। उसने घर में भारती के बारे में पूछा, तो पता चला कि वह शिवानी की शादी में गयी है। विकास को पूरा अनुमान था कि नितिश भी वहां आया होगा। इसलिए वह विशाल को साथ लेकर उल्टे पैर ही लौट गया और डायमंड बैंक्वेट हाल पहुंच गया। जहां भारती और नितिश को डांस करते देख उसका खून खौल उठा। विकास ने उस समय तो अपने चेहरे से कुछ भी स्पष्ट नहीं होने दिया। अलबत्ता, वह कॉफी के बहाने नितिश को बाहर ले गया, जहां उसके कुछ और आदमी भी मौजूद थे। बताया जाता है कि उन लोगों ने नितिश के साथ मारपीट कर कार में डाल दिया और उसे लेकर वहां से चले गये।

पुलिस को दिये अपने बयान में विकास ने बताया कि उसने नितिश को अपनी शराब की दुकान के एक कर्मचारी सुखदेव सिंह पहलवान के हवाले कर दिया था। उधर पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पता चला कि नितिश के सिर पर हथौड़े का प्रहार किया गया था। यह भी पता चला कि नितिश के शरीर पर बेहोशी की हालत में पेट्रोल डालकर जला दिया गया था।

विकास और विशाल को पूछताछ के बाद 6 मार्च को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। इस बीच

28 फरवरी को भारती पांच मिनट के लिए पत्रकारों के समक्ष उपस्थित हुई। उसके पिता डीपी यादव भी उस समय मौजूद थे। भारती ने पत्रकारों को बताया कि उसकी नितिश से दोस्ती तो थी, लेकिन उससे प्रेम संबंध जैसा कुछ नहीं था। उसने श्रीमती नीलम कटारा को ई-मेल करने की बात से भी इनकार कर दिया। यहां तक कि उसने श्रीमती कटारा से मुलाकात की बात का भी खंडन किया। इसी मौके पर डीपी यादव ने आरोप लगाया कि नितिश कांड में उनके



विकास यादव

परिवार को फंसाने का राजनैतिक षड्यंत्र समाजवादी पार्टी ने बुना है।

इस बीच मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए दिल्ली पुलिस ने कटारा परिवार की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत कर दी है। उनके 7, चेम्सफोर्ड रोड, नई दिल्ली स्थित आवास पर पहरा भी बैठा दिया गया है। इस मामले की संवेदनशीलता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि अब भी इस मामले की प्रगति रिपोर्ट प्रतिदिन प्रधानमंत्री कार्यालय को भेजी जा रही है। कथा लिखे जाने तक पुलिस सुखदेव सिंह को गिरफ्तार नहीं कर पायी। उसे पकड़ने के लिए पुलिस अदालत से उसके घर की कुर्की आदेश प्राप्त कर लिया है। अ तक पुलिस को नितिश की डीए रिपोर्ट भी प्राप्त नहीं हुई है। जिस वजह से अभी तक उसके शव सुरक्षित रखा गया है। उध गाजियाबाद पुलिस एक बार फि विकास और विशाल यादव रिमांड पर लेने के लिए अदाल से प्रार्थना की, तो तीन दिन रिमांड मिल गया है।

(कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित)

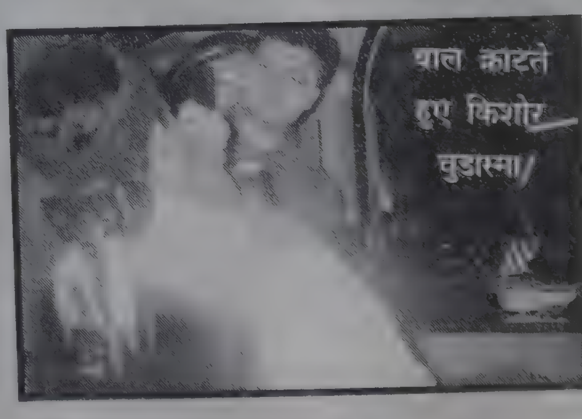
लघु कथा

सबसे बड़ी कैंची से बाल काटनेवाला किशोर

इंसान को जब भी किसी काम का जुनून सवार होता है, तो वह कुछ भी कर गुजरने से नहीं हिचकता। वह भले ही कितना भी जोखिमभरा काम क्यों न हो? ऐसा ही जुनूनी है मुलुंड (पश्चिम) मुम्बई का एक सैलून चलानेवाला किशोर चुडास्मा।

किशोर ने कभी सोचा भी नहीं था कि उसका नाम अखबारों और पत्रिकाओं में उसके फोटो के साथ छपेगा। वह अपना काम, अपने मन में कुछ नया करने की ठान कर, चुपचाप किये जा रहा था। आम आदमी की सोच से यह बात काफी दूर है कि बाल काटनेवाला भला क्या कर सकता है, लेकिन जब किशोर चुडास्मा के कारनामें लोगों तक पहुंचे, तो उन्हें इस बात पर पहले तो विश्वास नहीं हुआ कि किशोर बाल काटने की आम कैंची और कंघी के बजाय कई गुना बड़ी कैंची और कंघी से लोगों के बाल काट सकता है। बाल काटने के लिए आमतौर पर सात इंच की कैंची और कंघी का उपयोग किया जाता है। लेकिन किशोर ने इस क्षेत्र में नया करते हुए 18 इंच की कैंची और 18 इंच की कंघी से बाल काटने और उसे संवारने का रिकार्ड स्थापित किया है। अभी तक विश्व में किशोर एक मात्र ऐसा हेयर ड्रेसर है, जिसने आम औजार से अलग नये तरीके के औजारों के साथ बाल काटने और संवारने का रिकार्ड स्थापित किया है। जल्दी ही उसका नाम 'लिमका बुक ऑफ रिकार्ड्स' और 'गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड' में भी शामिल कर लिया जाएगा।

किशोर चुडास्मा ने बताया कि पारिवारिक स्थितियों के चलते जब वह मात्र सातवीं कक्षा में पढ़ रहा था, तभी से उसने कैंची और कंघी को हाथ में उठा लिया था। इस काम में उसे अपने बड़े भाइयों हंसमुख और मुकेश का साथ मिलने के अलावा नयी तकनीक भी सीखने को मिली। बाल काटने के इस काम ने इतना जुनूनी बना दिया कि पहले तो उसने केवल एक ब्लेड की सहायता से ही लोगों के बाल काटना शुरू कर दिया। लेकिन ब्लेड से उनकी अंगुलियां और अंगूठे में इतने घाव होने लगे कि उन्हें हर दिन टिटनेस के इंजेक्शन लेने की जरूरत पड़ने लगी। इस कारण से उसे डाक्टर ने सलाह दी कि वह ब्लेड का उपयोग बंद कर दे।



बाल काटते हुए किशोर चुडास्मा

इसके बाद किशोर ने कैंची और कंघी का कमाल करने की सोची। काफी सोचने के बाद उन्होंने फैसला किया कि वह आम कैंची और कंघी से अलग कुछ नए तरह की कैंची और कंघी से लोगों के बाल काटने की कोशिश शुरू करेगा। अपनी इस योजना को सफल बनाने के लिए उसने एक ऐसे व्यक्ति की तलाश करनी शुरू की, जो इस तरह के विशेष औजार बनाने में उसकी सहायता करे। आखिर उसकी मेहनत रंग लाई और लगभग चार महीने पहले उसकी मुलाकात भिवंडी के रमेश शर्मा से हुई। रमेश शर्मा ने किशोर को एक महीने की मेहनत के बाद 18 इंच की विशेष कैंची बनाकर दी। साथ ही 18 इंच की स्टील की कंघी भी दी।

किशोर को जब दोनों औजार तैयार होकर मिल गये, तो उसे अपने काम के अलावा रात को इस औजार से अपने काम को अंजाम देने का प्रयास शुरू किया और जब वह इस बात से पूरी तरह संतुष्ट हो गया कि अब वह लोगों के बाल इस विशेष औजार से काट सकता है, तो उसने लोगों के बाल काटने शुरू किये।

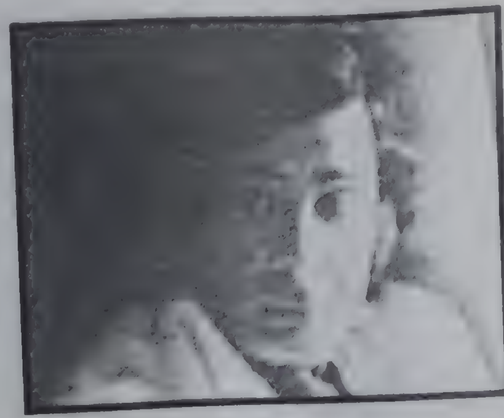
इस काम में किशोर को सफलता तो मिली, लेकिन उसके इस जुनून ने उसके हाथों को घायल कर दिया। डाक्टर की सलाह से उसे अपने दाहिने हाथ के पंजे पर विशेष पट्टा बांधना पड़ा और डाक्टर ने सलाह दी कि वह विशेष अवसरों पर इन औजारों का उपयोग बाल काटने के लिए करे। किशोर चुडास्मा के इन विशेष औजारों का वजन लगभग 500 ग्राम है। इनमें केवल कैंची का ही वजन 450 ग्राम है। इतने वजन को लगातार दो उंगलियों पर उठाये रहने के कारण उन्हें काफी दर्द होता है, लेकिन लोकप्रियता और विश्व रिकार्ड बनाने के जुनून में वह इस दर्द को भी पी जाता है। किशोर ने हेयर ड्रेसर के रूप में अपना कैरियर मात्र सोलह साल की उम्र में शुरू किया था और इस काम के करते हुए उसे चौदह साल हो चुके हैं। ब्रिटेन के लोकप्रिय हेयर ड्रेसर क्रिस्टो फारमैन से उसने कुछ ट्रेनिंग भी ली है और कई फैशन शो में भी हिस्सा लिया है। मुम्बई के कई मेकअपमैनों के साथ भी काम कर चुका है। आज उसके परिवार में माता-पिता, भाई-बहन सभी हैं। सभी उसके इस काम में उसे प्रोत्साहित करते हैं। उनका प्रोत्साहन पाकर ही किशोर आज विश्व रिकार्ड में अपना नाम दर्ज कराने जा रहा है। ●

के एम. श्रीवास्तव

लघु कथा

वह जो हमेशा के लिए गायब हो गए

-- रोमी शीराज मुद्राराक्षस



बुसेट्टा



ब्लैक

कुछ लोगों को यह विश्वास करना कठिन होगा कि इस दुनिया में ऐसे लोग भी हैं, जो अपना जीवन छिपकर बिता रहे हैं। इन लोगों को डर है कि कोई इनकी हत्या न कर दे। छिपकर रहनेवालों में से अधिकांश जासूस हैं। विशेषकर वह, जिन्होंने कभी अपने ही देश के खिलाफ जासूसी की थी। पर ठीक मौके पर उन्हें खबर मिल गई कि पुलिस ने उनके बारे में पता लगा लिया है और वह जिस देश के लिए जासूसी कर रहे थे, वहां निकल भागे। इस देश में भी कई भगोड़ों को छिपकर व खासी सुरक्षा में रहना पड़ता है। क्योंकि इन लोगों की हत्या के लिए हत्यारे निकल चुके होते हैं। तमाम ऐसे लोग भी छिपकर रह रहे हैं, जो कभी माफिया गिरोह के सक्रिय सदस्य हुआ करते थे। जिन्होंने तमाम हत्याएं और लूटपाट की हैं। कुछ कारणों से इन लोगों ने माफिया सदस्य के रूप में ली गई गोपनीयता की शपथ यानी 'ओमर्ता' को तोड़ दिया और पुलिस के सामने तमाम भेद उगल दिए। गुस्से से बिलबिलाये माफिया के बाकी सदस्य दुनिया के कोने-कोने में जाकर इस तरह के भेद-खोल लोगों की हत्याएं करते हैं। मशहूर रूसी जासूसी संस्था के.जी.बी. साइनाइड जैसे जहर से भरी पिस्तौलों से अपने निशाने पर रखे लोगों की हत्या करती है और माफिया को गोली से खत्म करने के अलावा जीभ तक काट डालती है।

के.जी.बी. को जिन लोगों की तलाश है, उनमें से एक है आलेग गोर्डीविस्की। आलेग के.जी.बी. के लंदन स्थित दफ्तर का प्रमुख था। पर रूसी सूचनाएं भी ब्रिटेन को देता था, यानी वह डबल एजेंट के रूप में काम कर रहा था। 1985 में के.जी.बी. को उस पर संदेश हुआ और उसे रूस बुला लिया गया। यह निश्चित था कि आलेग की हत्या कर दी जाएगी। जब ब्रिटिश जासूसी संस्था एम.आई. 6 को इसका पता चला, तो उन्होंने आलेग को चुपके से फिनलैंड बार्डर से वैन में डालकर वहां स्थित अपने दूतावास पहुंचा दिया। इसके बाद उसे लंदन लाया गया और पहले छह माह तक उसे छिपकर रहने का प्रशिक्षण दिया गया। इसके बाद उसे ऐसे इलाके में रखा गया है, जहां इन्फ्रा-रेड स्कीनिंग, खतरनाक कुत्ते और सशस्त्र पहरेदार रात-दिन उसकी चौकसी करते हैं। आलेग की तरह ही एक डबल एजेंट था लायलिन। लायलिन रूसी था और एम.आई. 6 ने उसे रूस के भेद लेने के लिए के.जी.बी. के विभाग-5 में रखवा दिया। लायलिन को भरपूर पैसे मिलते थे और वह दूतावास में एक लड़की इरीनी के इश्क में भी फंसा था। 1971 में शराब पीकर कार चलाने के आरोप में उसे लंदन में गिरफ्तार किया गया। लायलिन डर गया कि उसकी पोल खुलनेवाली है। इसलिए उसने लंदन में इरीना के साथ राजनीतिक शरण मांगी। इसके बाद उसे कहां रखा गया, कोई नहीं जानता। रूसी व अन्य जासूसी संस्थाओं का संपर्क ऐसे प्लास्टिक सर्जनों से भी होता है, जो छिपनेवाले व्यक्ति का चेहरा तो बदल ही देते हैं, जन्मजात चिह्नों को भी मिटा देते हैं।

ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आई.आर.ए. यानी आइरिश रिपब्लिकन आर्मी ने आजादी की मुहिम छेड़ रखी है। पर आई.आर.ए. के भी कई लोग इस आतंकवादी संगठन के विरुद्ध हुए हैं। ऐसा ही एक व्यक्ति था, क्रिस्टोफर ब्लैक। ब्लैक कई सालों तक आई.आर.ए. के साथ काम करता रहा। फिर उसने आई.आर.ए. की तमाम बातें ब्रिटिश पुलिस को बता दीं। इसी गवाही की वजह से 38 लोग (आई.आए.ए. से संबंधित) पकड़े गए। आज ब्रिटिश सरकार ने उसे छिपाकर कहीं रखा हुआ है। पर आई.आर.ए. के निशानेबाज उसे आज भी ढूंढ़ रहे हैं। ब्लैक जैसा ही एक और आई.आर.ए. भेदिया था, केविन मैक्ग्रेडी। 1982 में केविन ने ब्रिटिश पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण तो किया ही, आई.आर.ए. के तमाम भेद भी बता दिए। जिसकी वजह से तमाम आयरिश लोग पकड़े गए व उन्हें लंबी सजाएं हुईं। केविन को काफी हल्की सजा हुई और जेल में उसे आयरिश कैदियों से दूर रखा गया। आज केविन कहां है, कोई नहीं जानता।

आतंकवादी संगठनों के अलावा माफिया संगठनों में भी समय-समय पर भेदिए भेद खोलते रहते हैं। ब्राजील में माफिया हेरोइन व्यापार का मुखिया था, बुसेट्टा। जब विरोधी माफिया संगठन ने उसके दो बेटों, एक भाई और तीन चचेरे भाइयों को गोलियों से भून दिया, तो उसने माफिया के भेद खोलने की सोच ली। न्यूयार्क गैंगस्टर के खिलाफ चले मशहूर पिज्जा मुकदमे में उसने गवाही दी और 350 सरगना पकड़े गए। आज बुसेट्टा को अमेरिका की सैन्य छावनी में छिपाकर रखा गया है और उसे मुकदमे के बाद किसी ने भी नहीं देखा। बुसेट्टा की तरह ही ओपिओला नाम के एक कार विक्रेता ने मई, 1984 में ऐसे डकैतों के खिलाफ गवाही दी थी, जिन्होंने 60 लाख पाउंड चुराए थे। इस डकैती में ओपिओला भी शामिल था। पर सरकारी गवाह बन जाने के कारण उसे सिर्फ तीन साल, तीन महीने की सजा मिली। बाकी बैंक डकैत आज भी उसके पीछे पड़े हैं और ओपिओला छिपकर रह रहा है।

ज्यादातर इस तरह छिपकर रहनेवालों को हमेशा मौत का डर सताया करता है और यह लोग 'जिंदा लाश' भी कहे जाते हैं। एक रूसी भेदिए या माफिया भेदिए की सारी जिंदगी यही सोचते हुए बीत जाती है कि क्या वह कल का दिन देख पाएगा? सेसिल किर्बी नाम के एक माफिया भेदिए ने एक बार लिखा था कि वह एक ऐसा गड्ढा खोज रहा है, जिसमें वह रेंगकर घुस जाए और बच जाए। उसके इन्हीं शब्दों से इन गायब हो जाने वालों की पीड़ा समझी जा सकती है। ●

एक रानी का बलिदान

(पृष्ठ 49 का शेष)

मुनासिब नहीं समझा और पलंग पर लेटकर दोबारा सोने की कोशिश करने लगे। शयनकक्ष में फिर सन्नाटा छा गया। रानी सूही अपने पति के और करीब सिमट गई थी। नींद उनकी आंखों से कोसों दूर थी। उन्हें रह-रहकर वह डरावना सपना याद आ रहा था, जिसे उन्होंने कुछ ही क्षण पहले देखा था।

सुबह जब राजा उठे, तो उन्होंने देखा, रानी सूही का चेहरा उतरा हुआ था और उनके हाव-भाव भी बहुत विचलित कर देनेवाले थे। रानी की यह मनोदशा देखकर राजा किसी अनिष्ट की आशंका से भयभीत हो उठे थे। उन्होंने राज दरबार लगते ही फौरन राजज्योतिषी को बुलवा लिया। राजदरबारी विस्मित हो उठे।

महाराज राजदरबारी को तभी न्यौता भेजवाते थे, जब राज्य की सुरक्षा को किसी किस्म का कोई खतरा होता था या फिर जब राजा किसी अनिष्ट की आशंका से चिंतित होते थे। राज्य की सुरक्षा को तो फिलहाल कोई खतरा नहीं नजर आ रहा था। अतः राजदरबारी यह अनुमान लगा रहे थे कि राजा अवश्य ही किसी मानसिक पीड़ा से गुजर रहे हैं। यह सभी अटकलें तब प्रश्नचिह्न में तब्दील हो गयीं, जब राजज्योतिषी ने दरबार में आकर महाराज का अभिवादन किया।

महाराज राजज्योतिषी को अपने सिंहासन के पीछे कोने में ले गये और रानी सूही की मनोदशा से अवगत कराया। राजज्योतिषी बड़े ध्यान से राजा की बातें सुनते रहे। उन्होंने महारानी से मिलने का अनुरोध किया। महाराज के आदेश पर रानी सूही को दरबार में बुलाया गया।

रानी का स्वप्न सुनते ही राजज्योतिषी का चेहरा गंभीर हो गया। राजज्योतिषी के मनोभावों को पढ़कर राजा निराश हो उठे। सभी राजदरबारी सांस थामे बैठे थे और



रानी सूही के बलिदान पर यहां से निकला था जल

सभी की निगाहें राजज्योतिषी पर टिकी थीं।

"महाराज, रानी का स्वप्न दर्शाता है कि आपको अपनी सबसे प्रिय वस्तु का बलिदान देना पड़ेगा और इस बलिदान की बदौलत शहर के सूखे सरोधा नाले में पानी बह निकलेगा।" राज ज्योतिषी ने गंभीर और नपे-तुले शब्दों में कहा।

"मैं समझा नहीं राजज्योतिषी जी, कैसी प्रिय चीज और कैसा बलिदान?" महाराज ने चिंतातुर होकर कहा।

"महाराज, अगर गुस्ताखी क्षमा करें, तो सच कहने की धृष्टता करूं?" राजज्योतिषी का गला जैसे सूख रहा था।

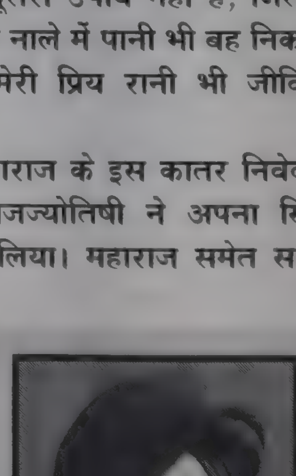
"अनुमति है।"

"महाराज, रानी सूही का स्वप्न सुखद और विषाद दो प्रसंग लिए है। सुखद प्रसंग यह है कि शहर का सूखा सरोधा नाला पानी से भर सकता है और संपूर्ण राज्य में खुशहाली के बीज अंकुरित हो सकते हैं।

लेकिन दूसरी तरफ यह खुशहाली बलिदान चाहती है और इसके लिए बलिदान इस रियासत के किसी आम नागरिक को नहीं, बल्कि स्वयं महाराज को देना होगा और वह भी अपनी सबसे प्रिय चीज का।"

राजज्योतिषी की बातें सुनकर राजा का चेहरा उतर गया। उनकी सबसे प्रिय चीज रानी सूही थीं और अपनी इस प्रिय चीज की हिफाजत के लिए वह अपनी जान तक दे सकते थे। राजा ने दयनीय नजरों से ज्योतिषी की ओर देखा और कहा, "ज्योतिषाचार्य, क्या कोई ऐसा दूसरा उपाय नहीं है, जिससे सरोधा नाले में पानी भी बह निकले और मेरी प्रिय रानी भी जीवित रहें?"

महाराज के इस कातर निवेदन पर राजज्योतिषी ने अपना सिर झुका लिया। महाराज समेत सभी



लेखक
गुरमीत बेदी

राजदरबारियों को जैसे सांप सूंघ गया।

रानी सूही, जो कि अब तक अपने ख्यालों में खोयी हुई थीं सहसा उनके चेहरे पर नई रंगत लौटने लगी। राजदरबारियों की हैरत उस समय बढ़ गई, जब उन्होंने देखा, रानी सूही अपने पति के उदास चेहरे को निहारते हुए मुस्करा रही थीं। रानी सूही की इस मुस्कराहट से महाराज को अपना दिल डूबता महसूस हो रहा था। लेकिन तभी खामोशी तोड़ते हुए रानी सूही अत्यंत आत्मविश्वास के साथ अपने पति की तरफ मुखातिब हुई, "महाराज, प्रजा तो राजा की संतान होती है। प्रजा खुश हुई, तो राजा को लंबी आयु के लिए आशीषें देती है और अगर दुखी हुई तो राजा से उनके कष्ट हरने की कामना करती है। हमारे कंधों पर इस समय राज्य के महत्वपूर्ण दायित्व हैं और हमें जनता के दुखों को दूर करना है। जनता लंबे समय से पानी की बूंद-बूंद के लिए तरस रही है। अगर मेरे छोटे-से बलिदान से संपूर्ण रियासत में खुशहाली लौट आयी, तो मैं अपना जीवन सार्थक हुआ समझूंगी।"

रानी सूही की इस बात पर

महाराज भाव-विह्वल हो उठे, "रानी, जीवन इतना सस्ता नहीं है कि उसे जान-बूझकर समाप्त कर दिया जाए।"

"महाराज, आप मुझे इतना कमजोर क्यों समझ रहे हैं? मैं क्षत्रिय वंश के प्रतापी राजा की पत्नी हूं और मेरी रगों में दौड़ता लहू आपकी ही तो प्रेरणा है। क्या आप मेरे प्रेम के मोह में अपने फर्जों के प्रति उदासीन हो जाएंगे? नहीं महाराज, मुझे यह हरगिज बर्दाश्त नहीं है। मैं यह कदापि नहीं चाहूंगी कि इस रियासत की जनता यह कहे कि हमारा राजा तो कर्तव्य और बलिदान के मार्ग से हटकर नारी-मोह में अंधा हो गया था।" रानी सूही की वाणी निरंतर ओजस्वी होती जा रही थी।

राजज्योतिषी और राजदरबारी रानी सूही के आत्मविश्वास और प्रजाप्रेम से ओतप्रोत विचारों को सुनकर भाव-विभोर हो उठे थे। जबकि महाराज की आंखों में आंसू छलक आए थे। वह अपलक रानी सूही को निहारे जा रहे थे। बड़ी मुश्किल से वह भावनाओं के आवेश को संभाले हुए थे।

एक-एक करके दिन गुजरते गए। महाराज की नींद, चैन, भूख प्यास सब कुछ गायब हो गया था। लेकिन रानी सूही तो जैसे साक्षात देवी रूप बन गई थीं। उनके स्वभाव में भी अकल्पनीय परिवर्तन आ गया था। महाराज को दुखी देखकर वह हर समय उन्हें ढाढ़स बंधाती थीं, जीवन-दर्शन की अथाह गहराइयों का परिचय देती थीं।

इसके बावजूद महाराज की उदासी बढ़ती जा रही थी। वह हरदम रानी सूही को अपनी नजरों के सामने देखना चाहते थे। राजदरबार में जाना उन्होंने काफी कम कर दिया था।

वह दिन रानी के आत्म-बलिदान का दिन था। सुबह तड़के ही रानी सूही उठ बैठी थीं। नहा-धोकर रानी ने पूजा-अर्चना की और फिर श्रृंगारकक्ष में आ गयीं। आदमकद शीशे के आगे खड़ी होकर उन्होंने स्वयं पर भरपूर दृष्टि डाली। अपने चेहरे पर नई आभा देखकर कुछ क्षणों के लिए वह विस्मित हो उठीं। उस दिन उन्होंने भरपूर श्रृंगार किया और खिड़की के पास आ खड़ी हुईं।

काफी देर तक रानी सूही बाहर चंबा घाटी के अपूर्व सौंदर्य, गुनगुनाती हवाओं और हिमाच्छादित पर्वत मालाओं की नैसर्गिक छटा का अवलोकन करती रहीं, फिर एकाएक उनकी तंद्रा टूटी। अपने कंधे पर उन्हें किसी का स्पर्श महसूस हुआ। रानी चौंककर पलटीं। महाराज आंखों में गहरी अनुभूति लिए खड़े थे। महाराज की वेदना भांपकर रानी सूही भावातिरेक में आ गयीं। महाराज के वक्ष से सिर लगाकर वह उनके दिल की धड़कनों को सुनने लगीं। रानी के अपूर्व श्रृंगार को देखकर महाराज को शादी का दिन याद आ गया था और वह कई मधुर स्मृतियों में डूबने-उतराने लगे थे।

महल के बाहर चौगान में जन समूह उमड़ता जा रहा था। रानी सूही की जय-जयकार हो रही थी। महाराज को अपनी जीवनसंगिनी पर फख्र भी हो रहा था और अपनी प्रिय चीज को खोने का दुख भी था। किसी तरह स्वयं पर काबू रखते हुए महाराजा रानी सूही का हाथ थामे महल की सीढ़ियां उतरने लगे।

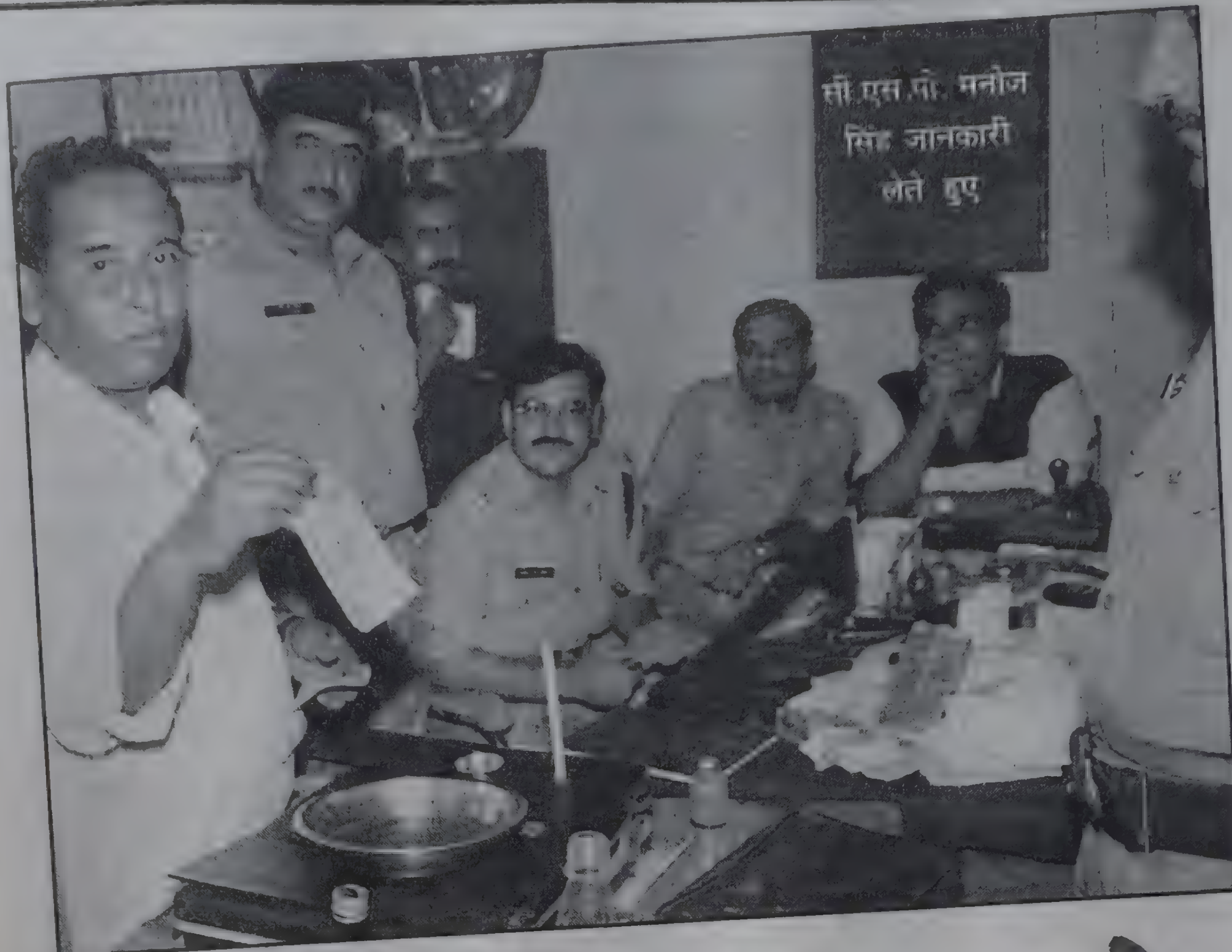
महल के प्रांगण में पहुंचते ही पंडित लोग वेद मंत्रों का उच्चारण करने लगे और कहार डोली उठाने के लिए मुस्तैद हो गए। महाराज के आदेश पर जैसे ही कहारों ने पालकी उठाई, जनता ने जुलूस का रूप ले लिया। काफी लंबा सफर तय करके यह जुलूस सरोधा नाले पर पहुंचा।

सरोधा नाले पर पहुंचते ही कहारों ने डोली को आहिस्ता से नीचे रख दिया। मंत्रोच्चार का दौर फिर चला। रानी सूही जब पूजा से निवृत्त हुईं, तो उनका चेहरा और कांतिमान हो उठा। धीरे-धीरे डग भरती हुई वह उस गड्ढे के पास आकर खड़ी हो गयीं, जहां उन्हें समाधि लेनी थी। बड़ा ही दुखद दृश्य था। महाराजा की आंखों से आंसू बरस रहे थे और रानी सूही धैर्य और सौम्यता की प्रतिमूर्ति बनी थीं। रानी सूही के इस अमर त्याग के आगे सारी जनता नतमस्तक खड़ी थी। तभी जनता ने देखा, रानी सूही महाराजा से कुछ बातें कर रही थीं। पास खड़े राज ज्योतिषी के कान चौकन्ने हो गए। उन्होंने जो कुछ सुना, उनकी उम्मीद से परे था। रानी सूही महाराज से वचन मांग रही थीं, "मेरी खातिर अपनी दुनिया को बर्बाद न करना, अन्यथा मुझे बहुत दुख होगा।"

महाराजा अपने होंठों को काटते हुए किसी तरह अपनी रुलाई रोकने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने रानी सूही के हाथ को पकड़कर दबा दिया, मानो उन्हें आश्वस्त कर रहे हों।

मंत्रोच्चार तेज होता गया। राज ज्योतिषी के इशारे पर रानी सूही गड्ढे में उतर गईं। मिस्त्रियों ने अपना काम शुरू कर दिया। दीवारें चुनी जाने लगीं। जब दीवार रानी सूही की आंखों तक पहुंची, तो सभी ने देखा कि वह अत्यंत स्नेह से महाराजा समेत सभी को निहार रही थीं, मानो इन आखिरी पलों को आत्मसात कर लेना चाहती हों। ज्यों ही रानी सूही के सिर तक दीवार की चिनाई पूरी हुई, सहसा एक चमत्कार-सा हुआ। जनता ने देखा उस स्थल से पानी का एक तीव्र स्रोत फूट पड़ा था। धीरे-धीरे शुष्क, बंजर, सरोधा नाला पानी से भरने लगा।

महाराज ने एक सर्द आह भरी। पश्चिम में सूरज पहाड़ियों की ओट में छिप चुका था। सिर्फ आसमान पर लालिमा ही शेष थी। रानी सूही चंबा रियासत के लोगों के लिए एक चिरस्मरणीय याद छोड़ गयी थीं। महाराजा ने रानी सूही की यादगार में एक मंदिर बनवाया। आज भी हर वर्ष यहां रानी सूही की याद में मेला लगता है। हिमाचल के लोकगीतों में भी रानी सूही के बलिदान का जिक्र मिलता है। ●



सी.एस.पी. मनोज सिंह जानकारी लेते हुए

नोट दोगुने करने का चमत्कार

– चैतन्य भट्ट

फोन पर ओमती थाने के सब-इंसपेक्टर राजकुमार सराफ ने जो कुछ भी सुना था, पहले उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ कि फोन करनेवाला सच कह रहा है। उन्होंने पूछा, "खबर एकदम पक्की है न?"

"आपको कभी गलत खबर दी है क्या मैंने?" फोन करनेवाले ने उत्तर दिया।

"वह लोग कौन हैं और कहां रुके हुए हैं?"

"शायद बंगाल से आए हैं और साहनी होटल में रुके हुए हैं। मैंने अपनी आंखों से उनका चमत्कार देखा है। यदि आप देखना चाहें, तो जाकर खुद देख लें।" फोन पर दूसरी ओर से आवाज आई।

"ठीक है, हम तहकीकात करते हैं।" कहकर राजकुमार सराफ ने फोन रख दिया और सामने बने थानाप्रभारी सत्यव्रत पांडेय के कक्ष में जा पहुंचे।

"क्या बात है राजकुमार? कोई खास सूचना है क्या तुम्हारे पास? तुम्हारे चेहरे से लग रहा है कि तुम्हें कोई विशेष जानकारी मिली है।"

"जी सर, अपने ही इलाके के साहनी होटल में तीन व्यक्ति नोट दोगुने कर रहे हैं।"

"अच्छा," सत्यव्रत पांडेय ने कहा, "तुम ऐसा करो, वहां चले जाओ और पता लगाओ कि मामला क्या है?"

"जी।" कहकर सब-इंसपेक्टर सराफ कमरे से बाहर निकलने ही वाले थे कि थानाप्रभारी पांडेय ने कहा, "रुको, पहले सी.एस.पी. साहब को मामले की सूचना दे देते हैं। फिर वह जैसा कहेंगे, वैसा करेंगे।" थानाप्रभारी पांडेय ने ओमती संभाग के सी.एस.पी. मनोज सिंह को इस बात की सूचना दी।

सी.एस.पी. मनोज सिंह ने कहा, "आप लोग रुको, मैं तुरंत आ रहा हूं।" और कुछ ही देर में उनकी जीप ओमती पुलिस थाने पहुंच गई।

सी.एस.पी. मनोज सिंह को जब उनके कनिष्ठ अफसरों ने नोट दोगुना करने की सूचना दी, तो उन्होंने कहा, "पहले इस मामले की तस्दीक करना जरूरी है कि वे सचमुच ही ऐसा कर रहे हैं या नहीं। आप लोग अपने दो लोगों को साहनी होटल उनके पास भेजो, साथ में सौ सौ के कुछ नोट भी दो। जिन्हें दोगुना करवाना है। यदि वे सचमुच ही इस काम में लगे होंगे, तो नोट रख लेंगे। उसके बाद हम अपनी कार्रवाई शुरू करेंगे।"

"हां, यह तरीका ठीक रहेगा," थानाप्रभारी पांडेय ने कहा।

सब-इंसपेक्टर राजकुमार सराफ ने तत्काल रविशंकर तिवारी तथ मोहम्मद अकरम, जो ओमती पुलि थाने के इलाके में ही रहते बुलाया तथा उन्हें सौ-सौ रुपये दस नोट दिए। इन नोटों प राजकुमार सराफ ने कोने में अप हस्ताक्षर कर दिए। सी.एस.पी मनोज सिंह ने उन्हें समझाते हु कहा, "तुम लोग साहनी होटल जाओ। वहां तीन लोग रुके हु हैं, जो नोट दोगुने कर रहे हैं। तु लोग उन्हें यह नोट दोगुने कर के लिए दे देना। पर उन्हें यह पत नहीं लगना चाहिए कि तुम लोग को पुलिस ने भेजा है। इस बात की पूरी सावधानी बरतना।"

रविशंकर ने कहा, "ठीक सर, उन्हें शक भी नहीं होगा कि हम लोगों को पुलिस ने भेजा है।"

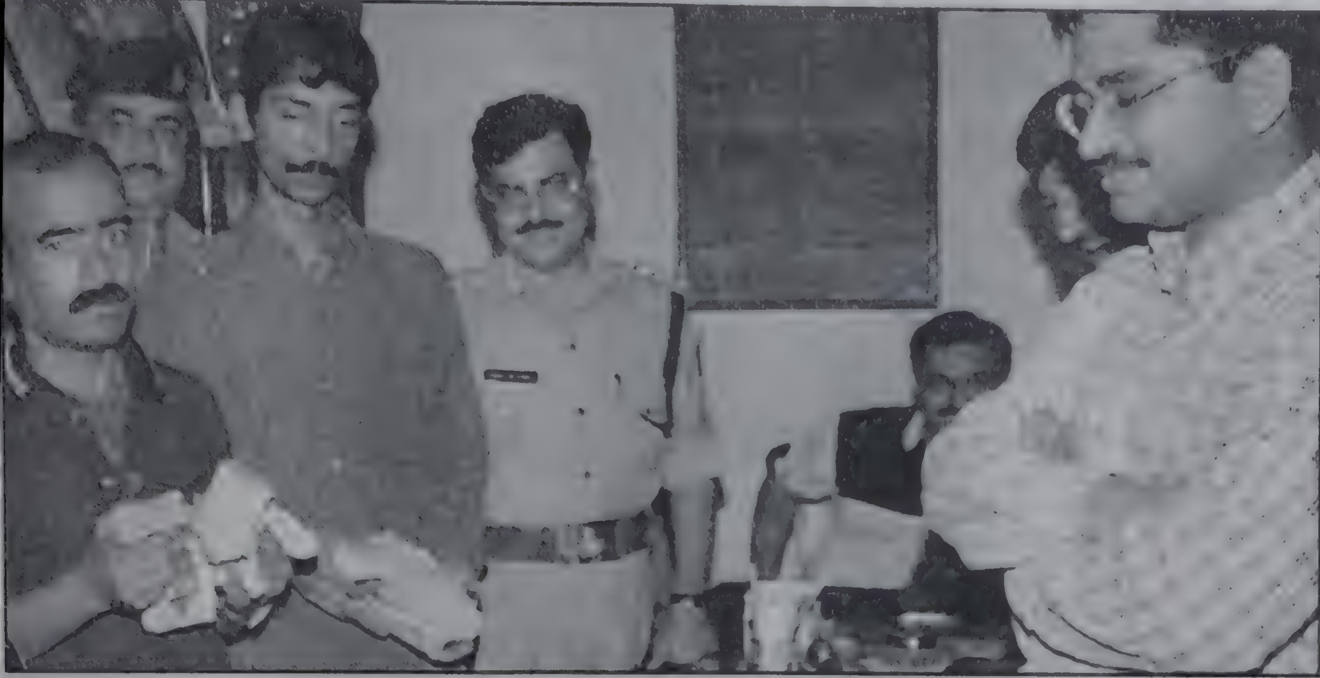
कुछ ही देर में रविशंकर तिवारी और मोहम्मद अकरम ओमती थान से लगभग आधा किलोमीटर दू स्थित साहनी होटल पहुंच गए उन्होंने होटल के मैनेजर लखनलाल व्यास से कहा, "हमें उन लोगों से मिलना है, जो बंगाल से आए हैं।"

होटल के मैनेजर लखनलाल ने कहा, "कुछ बंगाली कमरा नंबर 105 में ठहरे हैं।"

रविशंकर तिवारी और मोहम्मद अकरम ने कमरा नंबर 105 के सामने पहुंचकर घंटी बजाई। कुछ देर बाद एक युवक ने कमरे का दरवाजा खोला। सामने खड़े अपरिचित चेहरों को देखकर उसने पूछा, "कहिए, आपको क्या काम है? किससे मिलना है?"

"पहले आप हमें अंदर तो आने दीजिए, फिर हम बताएंगे कि क्या काम है।" रविशंकर ने कहा।

वह युवक दरवाजे से हट गया और वह दोनों कमरे के अंदर पहुंच गए। कमरे में तीन व्यक्ति थे। एक वही युवक था, जिसने दरवाजा खोला था। दूसरा व्यक्ति पचास-पचपन साल का था और तीसरे की उम्र लगभग चालीस साल के आसपास रही होगी।



पुलिस के समक्ष अभियुक्त

मनोज सिंह समझ गए कि इन दोनों को भी उन लोगों ने अपने जाल में फांस लिया है। उन्होंने सब-इंसपेक्टर राजकुमार सराफ से कहा, "आप जाइए और उन्हें पकड़कर थाने ले आइए, साथ में स्टाफ भी ले जाइए। वह लोग काफी पहुंचे हुए लगते हैं।"

"जी सर," सब-इंसपेक्टर राजकुमार ने कहा।

कुछ ही क्षणों बाद ओमती थाने की एक पुलिस जीप रवाना होकर नौदरा पुल के समीप स्थित साहनी होटल जा पहुंची। सब-इंसपेक्टर सराफ और पुलिसदल को आया देखकर होटल मैनेजर लखनलाल समझ गए कि मामला अवश्य कुछ गड़बड़ है।

"कमरा नम्बर 105 किधर है?"

"सीधा ऊपर दाएं हाथ पर।" मैनेजर ने कहा।

पुलिसदल तत्काल कमरा नम्बर 105 के सामने पहुंच गया। राजकुमार सराफ ने दरवाजे को धक्का दिया, तो दरवाजा खुल गया। कमरे में वह तीनों बैठे हुए बातचीत कर रहे थे। एकाएक पुलिस को आया देखकर घबरा गए। पर कुछ संभलने के बाद उस युवक ने पूछा, "क्या बात है, साहब?"

"आप लोग नोट दोगुने करते हैं न?" सराफ ने पूछा।

"जी नहीं, हम तो कपड़े के व्यापारी हैं और आर्डर बुक कराने यहां आए हैं। आपको जरूर कोई गलतफहमी हुई है, साहब।"

"मैं बताता हूं कि हमें क्या गलतफहमी हुई है।" कहते हुए राजकुमार सराफ ने तीनों लोगों की तलाशी लेना शुरू किया। युवक की जेब से वे सौ-सौ के नौ नोट बरामद हुए, जिस पर सराफ ने अपने हस्ताक्षर किए थे।

"यह नोट तुम लोगों के पास कैसे आए?" उन्होंने पूछा।

"कुछ देर पहले दो लोग आए थे और कपड़े का आर्डर देने के साथ-साथ यह रुपया बतौर एडवांस दे गए थे।" युवक ने बताया।

"यह ऐसे नहीं मानेंगे, इन्हें

दोनों पलंग पर बैठे हुए थे।

"हां, अब बताइए क्या काम है आप लोगों को?" उस युवक ने उन दोनों से पूछा।

"हमें यह नोट दोगुने करवाने हैं," कहकर रविशंकर तिवारी ने सौ-सौ के दस नोट निकालकर उस युवक के सामने रख दिए। नोटों को देखते ही वे दोनों, जो पलंग पर बैठे हुए थे, उठकर उस युवक के पास आ गए।

"पर आप लोगों को कैसे पता चला कि हम लोग नोट दोगुने करते हैं?" पलंग पर बैठे दोनों में से एक ने पूछा।

"बस पता चल गया। हम दोनों कई दिनों से आपकी तलाश कर रहे थे। किसी ने हमें बताया था कि आप लोग नोट दोगुने कर देते हैं।"

"ठीक बताया था आपको। पर इतने कम रुपए दोगुना करवाकर क्या फायदा होगा। यदि करवाना ही है, तो दस-बीस हजार रुपए लेकर आओ। एक ही बार में वारा-न्यारा हो जाएगा।"

"हम लोग पैसों का इंतजाम कर रहे हैं। दो-तीन दिन में हमें पचास हजार रुपए मिलनेवाले हैं। जैसे ही हमें रुपए मिलेंगे, हम आपके पास ले आएंगे। फिलहाल तो आप इतने ही कर दीजिए।"

"ठीक है, आप लोग शाम को आ जाएं। क्योंकि इसमें वक्त लगेगा।"

"पर एकाध नोट तो आप दोगुना करके दिखा ही दीजिए। ताकि हमें तसल्ली हो जाए कि आप लोग किसी तरह की कोई धोखाधड़ी तो नहीं कर रहे हैं।"

"ठीक है, निकालो एक नोट।" उस युवक ने कहा।

रविशंकर तिवारी ने उन्हीं रुपयों में से एक नोट निकला, जिन्हें सी. एस.पी. मनोज सिंह ने दिया था। उस युवक को दे दिया। जिसने दरवाजा खोला था।

वह नोट उस युवक ने अपने साथी को दिया और खुद सामने रखी एक अटैची ले आया। उसमें काफी सारी शीशियां, कई तरह के केमिकल और बहुत-सा सामान रखा हुआ था। युवक के साथ खड़े उस पचास-पचपन साल की उम्रवाले व्यक्ति ने दो काले कांच के बीच में वह नोट रखा और उसके ही आकार का एक सफेद कागज उस पर रख दिया। उसके बाद उसने उस पर एक केमिकल डाला, जिससे वह सफेद कागज भूरा हो गया। उस भूरे कागज के भीतर सौ का नोट लपेटकर उसने सामने रखी अटैची के पास रख दिया और फिर माचिस की चार तीलियां जलाकर कमरे के चारों ओर फेंक दी। फिर कुछ देर बाद अटैची के पास रखे उस भूरे कागज को उठाया और एक सिरिंज में भरे एक केमिकल को उस कागज पर छिड़क दिया। दो मिनट बाद जब उसने वह भूरा कागज हटाया, तो उसके भीतर एक और सौ का नोट दिखाई दिया। रविशंकर और मोहम्मद अकरम की आंखें फटी की फटी रह गईं। उन्हें लगा, सचमुच ही यह एक चमत्कार है। उन्होंने यह कमाल अपनी खुली आंखों से देखा था। उन्हें लगा कि यह लोग धोखाधड़ी नहीं कर रहे है, बल्कि उनके पास कोई सिद्धि है और उसी के बल पर यह चमत्कार दिखा रहे हैं।

"हमें आप पर भरोसा हो गया है। हम यह बाकी नोट आपके पास छोड़े जा रहे हैं। आप शाम तक इन्हें दोगुने कर देना। शाम को आकर हम यह रुपए ले जाएंगे।" रविशंकर तिवारी ने कहा।

"ठीक है, आप शाम को आ जाना, पर जो हमने कहा है। उसका ध्यान रखना। एक ही बार में अधिक से अधिक रुपए दोगुने करवा लो, वरना फिर हम यहां से चले जाएंगे।" उस युवक ने कहा।

रविशंकर और मोहम्मद अकरम वहां से वापस थाने लौट आए, जहां पुलिस अधिकारी बेसब्री से उनका इंतजार कर रहे थे।

"क्या हुआ," उनके थाने में घुसते ही सी.एस.पी. मनोज सिंह ने पूछा।

"साहब, वह तो सचमुच के जादूगर हैं। हमारी आंखों के सामने ही उन्होंने एक नोट को दो नोट बनाकर दिखा दिया।"

थाने ले चलो। यह सब खुद-ब-खुद सारी सच्चाई उगल देंगे।" सराफ ने अपने साथ आए सिपाहियों से कहा।

पुलिसदल उन्हें जीप में बैठाकर थाने ले आया। उनके साथ कमरे में रखा उनका सारा सामान भी पुलिस ने अपने कब्जे में कर लिया।

पुलिस थाने में पहले तो वह इनकार करते रहे। पर जब पुलिस ने रविशंकर तिवारी और मोहम्मद अकरम को उनके सामने खड़ा किया, तब वह टूट गए। उन्होंने बताया कि वह नोट दोगुने करने का काम करते हैं। दिल्ली, नोएडा तथा कुछ और शहरों में वह इस तरह की धोखाधड़ी कर चुके हैं।

सी.एस.पी. मनोज सिंह ने तत्काल इस बात की सूचना एडीशनल एस.पी. मकरंद देउस्कर तथा एस.पी. सुरेन्द्र पांडेय को दे दी।

लगभग आधे घंटे बाद एस.पी, एडीशनल एस.पी. थाने पहुंच गए और फिर शुरू हुई तीनों जादूगरों की धोखाधड़ी की कहानी।

उन तीनों में सबसे ज्यादा बुजुर्ग था माणिक दत्ता। जिसकी उम्र लगभग बावन साल की थी। दूसरा था दीपक भट्टाचार्य, जो करीब चालीस साल का था तथा तीसरा था सम्भलदास, जो युवक था। उसकी उम्र थी करीब चौबीस साल। माणिक दत्ता हुगली जिले (पश्चिम बंगाल) के चिंसुरा गांव के धीरेन्द्रनाथ, जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, उन्हीं का इकलौता बेटा था। इसका विवाह हावड़ा जिले के शिवपुर गांव के प्रभात भट्टाचार्य की बेटी भवानी दत्ता से करीब पैंतीस साल पहले हुआ था। जिससे उसे तीन संतानें थीं– लड़की मीनाक्षी दत्ता और दो लड़के सिद्धार्थ और पार्थो दत्ता। माणिक दत्ता पहले चावल का व्यापार करता था। पर करीब तीन साल पहले उसके गांव में यासीन मलिक, गयासुद्दीन शेख, नजरूल शेख तथा अशोक सेन आए थे। एक दिन वह लोग माणिक दत्ता की दुकान पर पहुंचे और बातों ही बातों में उन्होंने कहा, "सेठ, इस धंधे में आखिर तुम कितना कमा लेते होगे?"

"बस, दाल-रोटी चल जाती है।" माणिक दत्ता ने कहा।

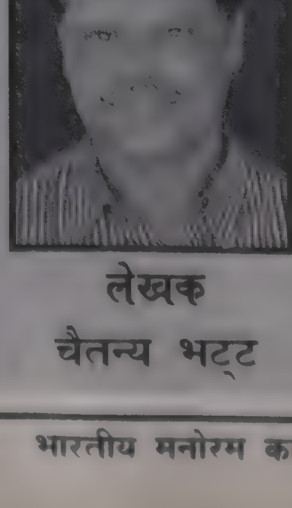
"यदि हम तुम्हारे नोट दोगुने कर दें, तो कैसा रहेगा?" उन लोगों ने कहा।

"नोट दोगुने हो सकते हैं क्या?" माणिक दत्ता ने आश्चर्य से पूछा।

"हां, क्यों नहीं? लाओ एक नोट दो, हम उसे दो करके दिखाते हैं। और सचमुच उन्होंने देखते ही देखते माणिक दत्ता का वह एक नोट दो नोटों में तब्दील कर दिया। यह चमत्कार देखकर माणिक दत्ता भौंचक्का रह गया। उसने अपने पास रखी सारी जमापूंजी, जो लगभग एक लाख रुपये थी, उन लोगों को सौंप दिया, और उनके दोगुने होने का इंतजार करने लगा। पर काफी दिन बीत जाने के बाद भी जब वह रुपए दोगुने नहीं हुए, तब माणिक दत्ता ने उन लोगों से अपने रुपये मांगे।"

एक दिन वह लोग उसे गांव के बाहर ले गए। वहां उसे बुरी तरह मारा-पीटा और बोले, "हमारे साथ धंधे में शामिल हो जाओ, तभी पैसा वापस होगा।"

माणिक लालच में आ गया। उसने उन लोगों से वे सारी तरकीबें सीख लीं, जिससे वह लोगों को नोट दोगुने करने के नाम पर बेवकूफ बना सकता था। माणिक दत्ता ने सबसे पहले मिदनापुर जिले के



लेखक
चैतन्य भट्ट

तुमलुक, दियाघेरा और हावड़ा जिले के सैंकबई, अब्दुलमुडी जैसे गांवों में अपना यह चमत्कार दिखाया। एक ही झटके में उसके हाथ चालीस हजार रुपये आ गए। अब तो माणिक दत्ता को इस काम में मजा आने लगा। माणिक दत्ता की मुलाकात दिलीप भट्टाचार्य से हुई। चिंसुरा के पास के गांव रुक्मनी का रहनेवाला था। उसके पिता शांति भट्टाचार्य जे.के. स्टील्स में सहायक वेलफेयर आफिसर थे। दिलीप के दो भाई और थे–कपिल और सौरेन। ये दोनों टेक्सटाइल का काम करते हैं। दिलीप की शादी कल्पना से हुई थी, जिससे उसे दो संतानें थीं। दिलीप अपनी ससुराल में ही रहकर कपड़े का धंधा करता था।

दिलीप की बीवी माधव घोष नामक एक व्यक्ति से परिचित थी और उसका दिलीप के घर आना-जाना था। एक दिन माधव ने दिलीप से कहा, "यदि माल कमाना चाहते हो, तो बताओ मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूं, जो नोट दोगुने करने का मास्टर है। यदि तुम चाहो, तो उसके साथ शामिल हो जाओ। कुछ ही दिनों में मालामाल हो जाओगे।"

"ठीक है, उससे मुझे मिला दो।" दिलीप ने कहा।

माधव ने उसकी मुलाकात माणिक दत्ता से करवा दी, जो अब अकेले ही नोट दोगुने करने का चमत्कार दिखाने लगा था। अब माणिक दत्ता और दिलीप दोनों मिलकर यह काम करने लगे।

वे दोनों आसपास के गांवों के इलाकों में जाते थे। इसी बीच उनकी मुलाकात सम्भलदास से हो गई, जो कोलकाता से साड़ियां लाकर उन्हें घूम-घूमकर बेचता था। माणिक और दिलीप ने उसे भी सब्जबाग दिखाए। उसे भी अपने साथ शामिल कर लिया। सम्भलदास जवान था और उसे पैसा कमाने की ललक थी। यह जानते हुए भी कि यह शुद्ध रूप से धोखाधड़ीवाला काम है। पैसों की लालच में उनके साथ हो लिया।

तीनों देश के अलग-अलग क्षेत्रों में जाकर अनपढ़ तथा लालची लोगों को नोट दोगुने करने का लालच दिखाकर, अपने हाथों क जादूगरी से उन्हें बेवकूफ बना लगे। वह लोगों को इतना विश्वा दिला देते थे कि लोग समझ लगते थे कि सचमुच उनमें नोट को दोगुना करने की शक्ति है। प जबलपुर में उनका यह जादू च पाता, उसके पहले ही वे पुलि के हत्थे चढ़ गए।

ओमती थाने में जब पुलिस उनकी अटैची की तलाशी ली, त उसमें उन्हें सोलह खाकी रंग क कागज, काले रंग के दो कांच, ए चाकू, पालीथिन के कई छो टुकड़े, एक छोटी कैंची, ए प्लेटनुमा स्टील का कटोरा, द डिस्पोजेबल सिरिंज, पतली छोट मोमबत्तियों का पैकेट, सौ के नो की साइज के सफेद कागज, फोट एनलार्जमेंट के काम में आनेवाल हाईपो केमिकल, एक शीशी पान और एक अन्य शीशी में नीले घोल के अलावा हल्के महावर का घोल और रुई के कई फाहे मिले।

पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र कुमा पांडेय ने उनसे कहा, "तुम लोग नोट दोगुना करने का, जो चमत्का दिखाते हो, उसमें इन वस्तुओं क क्या जरूरत पड़ती है।"

"कुछ नहीं साहब, यह सब त आदमी को भ्रम में डालकर फंसान के लिए हम लोग रखते हैं। इन सबका न तो कोई उपयोग है औ न ही इनसे कुछ होता है। जो कुछ भी है, हमारे हाथों की सफाई है हम पहले उसके द्वारा दिए ग नोट को दोगुना करने के लिए अपनी ओर से एक और नोट दे देते हैं। जब वह ज्यादा रुपय लेकर आता है, तब हम वह रुपय लेकर फरार हो जाते हैं। पर हां हमारी हाथ की सफाई को पकड़न आसान नहीं है।"

इनके बयान के आधार पर पुलिस ने दिनांक 3 अक्तूबर 2001 को अपराध क्रमांक 438/01 भारतीय दंड संहिता की धार 420/34 के तहत मामला काय करके उन्हें गिरफ्तार कर लिय और न्यायालय में पेश किया, जह से उन्हें जेल भेज दिया गया।●

(कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित)

— ब्लैकमेल —

(पृष्ठ 48 का शेष)

होटल रैन बसेरा उत्तम होने के साथ कुछ महंगा भी माना जाता था और साधारण लोग वहां ठहरने का साहस नहीं करते थे।

उस दिन शाम को काउंटर क्लर्क मसऊद और रिसेप्शन काउंटर की खूबसूरत स्मार्ट रिसेप्शनिस्ट मिस नीरा, दोनों परेशान नजर आ रहे थे। क्योंकि, रिसेप्शन लाउंज में बैठा युवक, जो अभी आया था, वह ऐसी जगह के लिए अनुपयुक्त लगता था। जैसे मखमल में टाट का पैवंद। वह लंबा-चौड़ा बलिष्ठ युवक लगभग तीस वर्ष का रहा होगा। चेहरा साधारणतः आकर्षक था। बाल उलझे हुए रुखे थे। कपड़े देखकर ऐसा लगता था, जैसे कई दिनों से नहीं बदले गए हों। कमीज के कॉलर में मैल साफ झलक रही थी। टाई ढीली थी, सूट इस्त्री बिना और जूते धूल से भरे हुए थे। आंखों से लगता था, जैसे कई दिन से सोया न हो।

मसऊद के संकेत से मुख्य वेटर, गोआनीज ईसाई फर्नांडीज ने उसके पास जाकर जरा झुकते हुए पूछा, "सर, आप यहां किसी से मिलने आए हैं?"

युवक ने उसकी ओर अपनी आंखें उठाईं। हेड वेटर के बेदाग उजले कोट, कॉलर पर सुनहरे धागों से कढ़े 'होटल रैन बसेरा' का मोनोग्राम, काली पतलून, चमचमाते जूते और 'बो' टाई को हिकारत की नजर से देखता हुआ कटु स्वर में बोला, "क्या मैं यहां किसी से मिलने ही आ सकता हूं? चाय-कॉफी पीने नहीं आ सकता?"

पेशेवर सौम्यता को बरकरार रखते हुए फर्नांडीज ने विनम्र स्वर में कहा, "सर, यह रेजिडेंशियल होटल है। यहां का रेस्तरां ठहरनेवालों के ही लिए है। खेद है, हम बाहरी ग्राहकों को सर्विस नहीं देते।"

तब तक इधर-उधर बैठे चाय-कॉफी पी रहे, अखबार पढ़ते लोगों में से कई की कुतूहलभरी दृष्टियां उस युवक पर पड़ने लगीं। वह अप्रतिभ हुए बिना बोला, "ठीक है, मुझे यहां की मालकिन श्रीमती प्रभा देवी से मिलना है।"

"मालकिन से?" फर्नांडीज ने जैसे गलत सुन लिया हो, "आपको मालकिन से मिलना है?"

"कहा तो," युवक खीझता हुआ बोला, "उन्हें खबर दो कि एक आदमी जरूरी काम से मिलना चाहता है।"

फर्नांडीज चकराया हुआ-सा काउंटर पर आया। मसऊद को बताया, तो उसने भौंहे सिकोड़कर कहा, "उससे पूछा नहीं कि क्या काम है? क्या वह किसी डिस्टिलरी वगैरह का एजेंट है? तब सुपरवाइजर से मिलवा दो।"

तब तक वह युवक फर्नांडीज के पीछे आ खड़ा हुआ। उसने मसऊद की बात सुन ली। बोला, "मिस्टर, मैं यहां किसी बिजनेस के सिलसिले में नहीं आया हूं। मेरा निजी काम है। उन्हें फौरन खबर दें।"

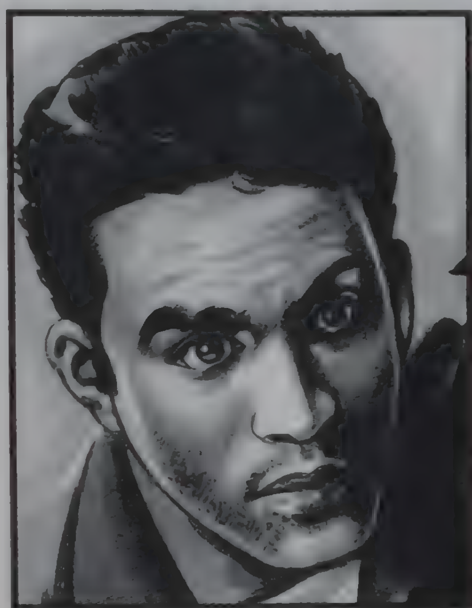
मसऊद ने खड़े होकर कहा, "काम क्या है, बता सकते हैं आप?"

युवक ने बड़े ही तल्ख स्वर में कहा, "क्या प्रभा देवी अपने निजी मामलों में भी आपकी सलाह लेती हैं? आप जानना क्या चाहते हैं?"

मसऊद सकपकाया। बोला, "अच्छा, अच्छा, आप कृपया दो मिनट बैठें। फर्नांडीज, साहब को कॉफी भेजवाओ। योर गुड नेम, सर?"

युवक ने लापरवाही से कहा, "राजदान... के.एस. राजदान।"

वह अपनी सीट पर वापस जा बैठा। मसऊद ने संकेत से एक बेयरे को बुलाकर धीरे से कुछ कहा। बेयरा चला गया। फर्नांडीज ने युवक के पास कॉफी भेजवाई और वापस अपनी जगह पर जा खड़ा हुआ। पाम के दो बड़े-बड़े गमलों की ओट में खड़े होकर वह उस युवक को ताकता रहा।



"रिसेप्शन लाउंज में बैठा युवक जो अभी आया था वह ऐसी जगह के लिए अनुपयुक्त लगता था"

साढ़े पांच बज रहे थे। प्रभा देवी रोज दोपहर और शाम को होटल का चक्कर लगाती थीं। अभी उनके आने में देर थी।

प्रभा देवी के पति धनी व्यापारी थे। वह कानपुर के रहनेवाले थे। प्रभा देवी के साथ उनका विवाह तब हुआ था, जब वह लगभग चालीस के थे और प्रभा देवी बीस-इक्कीस की। उनके पति की रुचि व्यापार में थी। धन जोड़ते रहने का व्यसन था। युवा पत्नी की अपनी भी कुछ इच्छाएं-आवश्यकताएं होंगी, इसका उन्हें ध्यान नहीं रहता था। पत्नी को सुख-वैभव में रखना ही वह काफी समझते थे। प्रभा देवी के पिता जमींदार खानदान के थे। बेटी के विवाह में उन्होंने अच्छा दहेज भी दिया था और बेटी के ही नाम से अलग बैंक में तीन लाख रुपए फिक्स्ड खाते में जमा करा दिए थे, जो सूद-दर-सूद जुड़ते हुए, पंद्रह साल में एक बड़ी धन राशि बन गई थी।

लगभग चार साल पहले प्रभा देवी के पति का निधन हो गया था। मुंबई से वह व्यापारिक दौरे से लौट रहे थे, तभी राह में प्लेन में ही यह हादसा हुआ था। प्रभा देवी अकेली बच गईं। विवाहिता पुत्री और पुत्र के साथ। उनका दामाद अमेरिका में डॉक्टरी कर रहा था और वहीं की नागरिकता ले ली थी। लड़का बेटी से छोटा था, दिल्ली में रहकर पढ़ रहा था। बेटी-दामाद दोनों सुखी थे। अक्सर उनसे फोन पर बातें होती रहती थीं।

निर्वाह की चिंता नहीं थी। पति का बैंकों में जमा और कई कंपनियों के शेयरों में लगाया रुपया ही बहुत था। प्रभा देवी अपनी अवस्था से काफी कम लगती थीं और सुंदर महिला थीं। उन्हें पति के निधन के बाद निठल्ली बैठना अच्छा नहीं लगा। पति का कारोबार उन्होंने समेट दिया और उससे जो धन मिला, उससे इस हिल स्टेशन में एक बड़ी-सी तिमंजिली कोठी खरीद ली। उसे बड़े चौमंजिले होटल के रूप में बदल दिया। नाम रखा 'होटल रैन बसेरा'। मसऊद उनके पति के पुराने मैनेजर का लड़का था, विश्वस्त और परिश्रमी। वह रिसेप्शन काउंटर से लेकर मैनेजरी, सबका कार्य देखता था।

प्रभा देवी के डर से सारे कर्मचारी हमेशा सतर्क रहते थे। जहां भी थोड़ी धूल या गंदगी होती, वह सीधे वहीं जा पहुंचती थीं। धनी-रईस वर्ग के लोगों में वह इसी कारण बहुत लोकप्रिय थीं और वह लोग होटल में सफाई, सुरुचि-सज्जा और ऐरिस्टोक्रेटिक वातावरण से प्रभावित तथा प्रसन्न रहते थे। शहर के बड़े लोगों, ऊंचे अफसरों आदि से प्रभा देवी की अच्छी जान-पहचान तथा मित्रता थी।

वह अभी 45 साल के लगभग की थीं, लेकिन उनकी शारीरिक चुस्ती बरकरार थी। दिन में दो बार वह खुद होटल का चक्कर लगाती थीं और किचन, भंडार, डाइनिंग हॉल, रेस्तरां, बाहरी रिसेप्शन, लाउंज में बने पत्रिका-पुस्तक स्टैंड, टक शॉप आदि का निरीक्षण करतीं, ग्राहकों के अभिवादनों का उत्तर मीठी मुस्कराहट के साथ नमस्कार करके देतीं। अक्सर अपने घनिष्ठ परिचितों-मित्रों को अपने रूम में ले जाकर बढ़िया व्हिस्की, शैम्पेन आदि से खातिर करतीं।

रईस, बड़े अफसर आदि उस सुंदर सुसंस्कृत महिला से मिलना, बातें करना बहुत पसंद करते थे।

मसऊद ने प्रभा देवी से इंटरकॉम पर संपर्क किया और उक्त युवक के बारे में बताया। वह कुछ चकित हुईं। युवक का नाम हुलिया आदि पूछकर बोलीं, "मुझे तो कुछ याद नहीं आता कि कभी इससे भेंट हुई हो। खैर, किसी के साथ उसे मेरे पास भेज दो।"

मसऊद ने रूमाल से उस हल्की ठंड में भी गर्दन का पसीना पोंछा और रिसीवर रख दिया। बगल में अपने काउंटर से रिसेप्शनिस्ट मिस नीरा सब देख-सुन रही थी। धीरे से पूछा, "क्या वह मिलेंगी?"

"बुलाया तो है," मसऊद ने एक वेटर को संकेत किया। उसके आने पर धीरे से कहा, "देखो कमल, वह जो आदमी बैठा है, उसे मैडम के रूम में पहुंचा दो। और हां, तुम भी कुछ देर तक बाहर खड़े रहना।"

कमल बहुत ही होशियार वेटर था। वह युवक जब कॉफी पी चुका, तो उसके पास जाकर धीरे से बोला, "सर, मेरे साथ आइए...।"

वह युवक एक हल्का-सा सूटकेस साथ रखे बैठा था। उसे लेकर वह वेटर के पीछे चल पड़ा। कई बरामदों, रविशों को पार करता हुआ, वह उसके साथ होटल की इमारत के पिछले हिस्से में आया, जिधर इमारत का कोना पड़ता था। सबसे किनारेवाले रूम का दरवाजा वेटर ने हल्के-से थपथपाया, बोला, "मैडम, गेस्ट..।"

"आने दो...." भीतर से आवाज आयी।

वेटर ने किवाड़ खोला और युवक को अंदर जाने का संकेत किया। खुद दरवाजा आहिस्ते से भिड़ाकर उसकी बगल में थोड़ा हटकर खड़ा हो गया।

बड़ा-सा कमरा, मोटा कालीन, सोफा- सेट, पलंग, कबर्ड, बुक केस, टी.वी. आदि से सज्जित। कमरे के पिछली ओर दो पतले से दरवाजे एक साथ बने हुए थे, जो बंद थे।

युवक ने सामने सोफे पर टी.वी. के आगे बैठी प्रभा देवी को देखा। मध्यम वयस की कुछ दोहरे बदन की खूबसूरत महिला थीं प्रभा देवी, जिनका यौवन मानो इस प्रौढ़ अवस्था में भी साथ नहीं छोड़ना चाहता था। बालों के किनारों में गौर करने पर कुछ रुपहले तार जरूर दिख पड़ते, किन्तु बड़ी-बड़ी पानीदार, गहराई लिए आंखें और गौर वर्ण का सुंदर चेहरा उनमें रानियोंवाली शान ला देते थे। वह एक नीली साड़ी पहने बैठी थीं। टी.वी. चल रहा था।

"बैठिए," उन्होंने सामने के सोफे की ओर संकेत किया, "आप मुझसे मिलना चाहते थे?"

युवक कुछ उत्तर दिए बिना सूटकेस नीचे रखकर बैठ गया। प्रभा देवी ने क्षणभर उत्तर की प्रतीक्षा करने के बाद कहा, "हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं? आपका परिचय?"

"सेवा तो करने मैं आया हूं, मैडम।" युवक ने स्थिर आवाज में उनके एक प्रश्न का उत्तर दिया।

प्रभा देवी की भौंहें कुछ सिकुड़ीं। आगंतुक के रंग-ढंग में कुछ विचित्र-सी गंध आ रही थी। उन्होंने शांति के साथ कहा, "कैसी सेवा? क्या आप होटल में कोई नौकरी वगैरह चाहते हैं? तब तो आपको पहले सुपरवाइजर से..."

"मैं नौकरी नहीं करता।" युवक ने अजीब-सी मुस्कराहट के साथ कहा, "मेरा मतलब है कि मैं आपको एक बड़ी परेशनी से बचाने के लिए अपनी सेवाएं प्रस्तुत करना चाहता हूं, यदि आप चाहें..."



"मध्यम वयस की खूबसूरत महिला थीं प्रभा देवी जिनका यौवन मानो इस प्रौढ़ अवस्था में भी साथ नहीं छोड़ना चाहता था"

प्रभा देवी ने क्षणभर मौन रहकर युवक को देखा, फिर बोलीं, "मेरे ख्याल से तो मैं ऐसी किसी खास कठिनाई में नहीं हूं, जिससे मुझे बचाने..."

"अभी चाहे ऐसा न हो, किन्तु कुछ बाद में, बल्कि शीघ्र ही पड़ सकती हैं परेशानी में।"

"क्या आप ज्योतिषी हैं? लेकिन मुझे तो ज्योतिष..."

युवक अजीब तरह की टेढ़ी मुस्कराहट के साथ बोला, "जी, मैं कोई ज्योतिषी नहीं हूं, लेकिन मेरा मतलब है... जरा ठहरिए, बाहर कोई सुन तो...."

"यह रूम साउंडप्रूफ है।" प्रभा देवी ने बताया, "दरवाजा भिड़ाते ही साउंडप्रूफ हो जाता है। आप अपनी बात कहें..."

"जी, मेरा मतलब है कि आपकी बेटी श्रीम नीलिमा, जो आजकल विदेश में हैं, उन परेशानी में पड़ने की आशंका है। इससे आपक भी कष्ट हो जाएगा।"

"नीलिमा?" बेटी के नाम से प्रभा देवी सत हुईं, "आपका मतलब क्या है मिस्टर...?"

"राजदान। मुझे कृपाशंकर राजदान कह हैं।"

"तो मिस्टर राजदान, आप यह पहेलिय बुझाना बंद कर कृपया यह बताएं कि मेरी बेट किस परेशानी में है या पड़ सकती है?"

"आज से बरसों पहले की बात है, मैडम।" कृपाशंकर ने गंभीरता के साथ कहा, "आपक बेटी कुछ सहेलियों के साथ घूमने-फिरने मसू गई थी।"

प्रभा देवी की भौंहें कुछ सिकुड़ीं, "हां या है मुझे, तो...?"

"तो, वहां उनका परिचय एक संपन्न औ सुंदर युवक से हुआ। उन दोनों की घनिष्ठत बहुत गहरी हो गई। नतीजा यह हुआ कि कुमारी नीलिमा ने अपनी सहेलियों से कुछ बहान बनाकर उस युवक के साथ होटल में, उसक साथ काफी समय यानी दो-तीन दिन बिताया।"

प्रभा देवी गंभीर थीं। उनकी आंखें कुछ सिकुड़ गईं।

"वह युवक अपने रख-रखाव से बड़ा आदमी लगता था। मिस नीलिमा अपनी अनुभवहीनत से उसे सच्चा प्रेमी समझ बैठी। और फिर वह सब हुआ, जो ऐसे मौकों पर होता है। शादी-ब्या के कसमें-वादे हुए, साथ फोटो खिंचाए ग ... वगैरह-वगैरह। आप तो खुद समझदार हैं समझ रही हैं न?"

प्रभा देवी ने सिर हिलाया, "समझ रही हूं।" वह खूब अच्छी तरह समझ रही थीं कि बात का रुख किस तरफ जा रहा है।

"यही नहीं," कृपाशंकर ने कहा, "लेकिन आपको यह जानकर शायद धक्का लगे कि उस प्रेमी ने होटल के अपने कमरे में नीलिमाजी के साथ बिताए कुछ सुखमय, अंतरंग क्षणों के फोटोग्राफ्स गुप्त रूप से ले लिए। इसके लिए वह रूम में एक छिपा हुआ ऑटोमेटिक कैमरा लगाए रहता था...।"

प्रभा देवी के मस्तिष्क में तूफान-सा चल रह था, किन्तु आकृति शांत थी। उनके नेत्रों के आ उस कमरे की आकृति घूम रही थी।

"यह पहले ही बता दूं कि कहीं आप ऐस न समझ लें कि वह प्रेमी युवक मैं ही था। ज नहीं, वह दूसरा ही आदमी है। बहुत दिनों तक उसके पास वे फोटोग्राफ्स पड़े रहे। संयोगवश उससे मेरी अच्छी मैत्री है और पिछले दिनों मैं कुछ आर्थिक कठिनाइयों में पड़ गया। उससे कुछ मदद मांगी, तो उसने मेरी जरूरतों क

देखते हुए मुझे वे फोटोग्राफ्स निगेटिव समेत सौंप दिए...।"

कमरे में भोंडा-सा सन्नाटा छा गया। प्रभा देवी मौन बनी खिड़की के शीशों से दूर चहारदीवारी के भीतर हल्की हवा में हिल रही पेड़ों की डालियों को देखती रहीं। कमरे में सिर्फ दीवार घड़ी की टिक-टिक जारी थी।

प्रभा देवी ने मौन तोड़ा, "तो आप वे फोटोग्राफ्स मुझे देने आए हैं?"

"आपके सामने निगेटिव समेत नष्ट करने।" कृपाशंकर ने सुधारा, "लेकिन देखिए..."

वह चुप हो गया।

"आप कितना चाहते हैं?" प्रभा देवी ने स्थिर स्वरों में पूछा।

"अब देखिए, यह मामला ऐसा है कि इस पर जरा विचार करना पड़ेगा।" कृपाशंकर ने उनकी आंखों में देखते हुए कहा, "आपके विचार से वे फोटो-निगेटिव कितनी कीमत रखते हैं?"

"उन्हें आप साथ लाए हैं?"

"वे सुरक्षित रखे हुए हैं।"

प्रभा देवी समझ रही थीं कि वह युवक वही कथित प्रेमी खुद ही होगा। ब्लैकमेलर ऐसी चीजें किसी को नहीं देते। बहुत मोटी रकम एकमुश्त मिलने पर जरूर बेच देते हैं और यों उनका शिकार दूसरे के कब्जे में आ जाता है। यह खुद तो ब्लैकमेलर है ही, बहुत धूर्त भी लगता है।

"आप क्या वे फोटो दिखा सकेंगे?"

"जरूर," कृपाशंकर मुस्कराया, "कुछ बेचने के लिए ग्राहकों को पहले नमूना दिखाना जरूरी होता है।"

कोट की भीतरी जेब से एक हरे रंग का छोटा-सा लिफाफा निकालकर उनके सामने छोटी मेज पर रखता हुआ वह बोला, "यह केवल नमूने के फोटो हैं, ये उतने खास नहीं हैं, जितने अन्य फोटोग्राफ्स हैं। लेकिन, आप इन्हें देखकर मेरी बात का यकीन कर सकती हैं कि मैंने मिस नीलिमा के बारे में जो कहा है, वह सच है। आप समझ सकती हैं कि मैं यदि ये फोटोग्राफ्स उस आदमी को लौटा दूं और वह आपके दामाद को एक पत्र में सारी बातें खोलकर बयान कर दे और साथ में ये फोटो भी भेज दे, तो? यह तो अच्छी बात न होगी। आप इन्हें खरीद कर वापस ले लेती हैं, तभी खैरियत है।"

प्रभा देवी ने लिफाफे से तीन फोटो निकाले। दो तो श्वेतश्याम, साधारण कैमरे से खिंचे हुए लगते थे और एक रंगीन था। पहाड़ी के अंचल में एक चट्टान पर बैठी उनकी पुत्री नीलिमा एक युवक के गले में बांहें डाले हंस रही थी। अन्य चित्र में वे सड़क के किनारे खड़े एक चायखाने के आगे चाय पी रहे थे। तीसरे रंगीन फोटो में बेडरूम का दृश्य दिखाई दिया, जो किसी होटल का रूम लगता था। नीलिमा पलंग के किनारे बैठी है और वह युवक उसे शीशे के गिलास में कोई रंगीन पेय पदार्थ दे रहा है।

"बाहर खिंचे फोटो को असल में अन्य टूरिस्टों से आग्रह कर खिंचवाया गया था। आप तो जानती हैं, पर्यटक लोग इस तरह आपस में एक-दूसरे की मदद करते हैं।" कृपाशंकर बोला, "और बेडरूम के फोटो छिपे हुए ऑटोमेटिक कैमरे के हैं, और भी हैं, अलग सुरक्षित रखे हैं।"

सही बात है। प्रभा देवी जानती थीं, पर्यटन स्थलों में लोग यों ही एक दूसरे की मदद करते हैं। मतलब यही है कि यह वही युवक है, इसका कोई साथी नहीं होगा।

ये तीन चित्र तो घातक नहीं हैं। लगता है, जैसे दो घनिष्ठ मित्रों के सामान्य फोटो किसी पर्यटनस्थल में लिए गए हों। किन्तु उनमें से एक तो लड़का है और एक है लड़की। और यह हिन्दुस्तान है। उनका दामाद हिन्दुस्तानी है। भले ही अमेरिका में रह रहा हो। उसके पास अगर ये तीन ही चित्र पहुंच जाएं, तो क्या उसकी कोई प्रतिक्रिया न होगी? और, यह तो कहता है कि और भी अंतरंग घनिष्ठ क्षणों के निगेटिव मौजूद हैं, जो निःसंदेह घातक सिद्ध होंगे। नीलिमा इनकार न कर सकेगी। उन दोनों का सुखद वैवाहिक जीवन नष्ट हो जाएगा। प्रभा देवी को भीषण आघात लगेगा। कुल पर कलंक भी लग जाएगा।



"पहाड़ी के अंचल में एक चट्टान पर बैठी उनकी पुत्री नीलिमा एक युवक के गले में बांहें डाले हंस रही थी"

उनके मस्तिष्क में क्षणभर में ये बातें गूंज गईं।

छिपी दृष्टि से उन्होंने सामने बैठे युवक को देखा, वही है। चित्रवाला वह प्रेमी या जो युवक हो, यही है। चेहरे में मामूली-सा ही अंतर है। चित्र में बाल सीधे पीछे को कढ़े हुए हैं। यह बीच में मांग निकाले है। चित्र में मूंछें हैं, यह सफाचट है, बस। वैसे चेहरा तो हू-ब-हू मिलता है। जानता है, गौर से देखने से लोग समझ लेंगे कि चित्र में खुद वही है, किन्तु इसे यह छिपाना नहीं चाहता। सामने सीधा बैठा है। ढीठता के साथ अपने तथाकथित प्रेम का मूल्य मांग रहा है।

"आप कितना चाहते हैं?" उन्होंने फिर पूछा।

"यही सवाल आप पहले कर चुकी हैं। मैंने कहा भी है कि किसी वस्तु का मूल्य उसके खरीदनेवाले की जरूरत पर निर्भर होता है। आपके लिए ये चित्र कितने जरूरी हैं?"

प्रभा देवी ने कुछ सोचकर कहा, "पहाड़ियों और पहाड़ी सड़क वगैरह के चित्र बड़े सजीव आए हैं, बेडरूम वाला चित्र भी कला का उत्तम नमूना है। मैं ऐसे चित्र खरीदने की शौकीन हूं। मान लें, मैं ये सुंदर चित्र निगेटिव सहित खरीद लेती हूं, लेकिन आपके कथनानुसार वह आदमी यदि अपनी मुलाकातों की झूठी-सच्ची कहानियां गढ़कर चित्रों सहित पत्र फिर भी भेज देता है, तो?"

कृपाशंकर हंसा, "वह ऐसा हरगिज नहीं करेगा, आप निश्चिंत रहें। इन चित्रों के बिना किसी की कही हुई बातों का कुछ मूल्य नहीं। मिस नीलिमा इनकार कर सकती हैं, सबके दोस्त-दुश्मन होते ही हैं। वैसे, मैं गारंटी देता हूं, ऐसा नहीं होगा।"

यह खुद ही है वह 'मित्र'। प्रभा देवी को अब संशय नहीं था। उन्होंने फिर कहा, "इन चित्रों और निगेटिवों का मूल्य आप ही बताएं...।"

कृपाशंकर कुछ हिचकिचाया, फिर बोला, "मेरे ख्याल से तो आपकी प्रतिष्ठा और इकलौती पुत्री के जीवन की सुख-शांति को देखते हुए दस लाख की रकम कुछ अधिक न होनी चाहिए।"

'दस लाख' प्रभा देवी ने लम्बी सांस ली। क्षणभर के लिए उनकी आंखों के आगे जैसे अंधकार छा गया। क्षणभर के ही लिए, और उसमें एक नंबर सेकेंड के दसवें हिस्से में कौंध गया '101'। दस लाख उनके पास नकद में नहीं। इकट्ठे तो किए जा सकते हैं, किन्तु इसके लिए उन्हें अपने बैंकों के खाते तो लगभग समाप्त करने पड़ेंगे ही, कुछ मूल्यवान पारिवारिक आभूषण भी बेचने पड़ेंगे। कुछ कर्ज भी लेना पड़ सकता है।

"क्या यह ज्यादा रकम नहीं है?" उनकी आवाज स्थिर थी, "मैं तो लाख-दो लाख की बात सोच रही थी। यदि मैं पांच कहूं, तो? यह

भी तो एक बड़ी राशि है, तत्काल मैं इतना दे सकती हूं। इससे अधिक तो मुझे जुटाना पड़ेगा।"

कृपाशंकर का चेहरा तन गया। बोला, "खैर, चलिए, मैं रियायत कर देता हूं। आठ रहेगा, और बस। इससे एक पैसा भी कम नहीं।"

यह अपनी असलियत पर आ गया है, प्रभा देवी ने सोचा। आदमी बिलकुल विश्वसनीय नहीं है। उन्हें मालूम था, ब्लैकमेलर अपने शिकार को नहीं छोड़ता। ये आठ लाख यह दो साल में उड़ा देगा और फिर आ धमकेगा।

कृपाशंकर ने शायद उनके मनोभाव पढ़ लिए। बोला, "आप निश्चिंत रहें। इसके बाद फिर कोई मांग कभी न की जाएगी। मेरे पास इन फोटोग्राफों के सिवा कोई प्रिंट और नहीं है। निगेटिव जरूर है।"

यह दूसरी बात थी। प्रभा देवी को विश्वास नहीं था कि और प्रिंट न होंगे। कुछ सोच कर बोलीं, "ठीक है, आप दो दिन प्रतीक्षा कीजिए। मैं परसों शाम तक रुपए की व्यवस्था कर लूंगी। परसों संध्या को आप रुपए ले सकते हैं। आप कहां ठहरे हैं?"

"सीधा यहीं चला आ रहा हूं। अब किसी सस्ते होटल में...."

"तो यहीं होटल में ठहर जाइए," उन्होंने घड़ी देखी, "सात बज रहे हैं। मेरा होटल का राउंड लगाने का समय बीता जा रहा है। आप अभी नाश्ता कीजिए, आपके लिए रूम की व्यवस्था भी कर देती हूं।"

उसका उत्तर सुने बिना उन्होंने इंटरकॉम पर मसऊद को कहा, "मसऊद, मुझे राउंड लगाने में कुछ देर हो गई, अभी आ रही हूं। तुम ऐसा करो, नीरा के हाथों दो व्यक्तियों के लिए नाश्ते का जरूरी सामान भेजवा दो...." और फिर धीमी आवाज में कुछ समझाया। मसऊद के 'समझ लिया मैडम' कहने पर रिसीवर रख दिया।

प्रभा देवी खड़ी होकर बोलीं, "इस वक्त मुझे ड्रिंक्स लेने की आदत है। आप भी चाहें तो कुछ लीजिए..."

कबर्ड से उन्होंने ओल्ड स्मगलर की सीलबंद बोतल निकाली और शैम्पेन की आधी बची बोतल। साथ में शीशे के दो खूबसूरत कट गिलास और सोडा। कृपाशंकर की आंखें चमकीं।

"आप क्या लेना पसंद करेंगे?"

"व्हिस्की।"

प्रभा देवी ने सधे हाथों से व्हिस्की का बड़ा-सा पैग ढाला। दूसरे गिलास में अपने लिए शैम्पेन ली। फिर पूछा, "सोडा, पानी या बर्फ?"

"पानी केवल।"

उन्होंने व्हिस्की के गिलास में पानी ढाला। अपने लिए आइस कंटेनर से आइस क्यूब्स लिए, सोडा मिलाया। तब तक दरवाजे पर दस्तक हुई।

"चली आओ।"

मिस नीरा अपनी चमकती-दमकती पोशाक में ट्रे लिए आ पहुंची। ट्रे में भुनी मछली, कबाब, अंडों के कतलों के साथ काजू और चिप्स के प्लेट थे। कृपाशंकर होंठों पर जीभ फेरने लगा।

"लीजिए।" प्रभा देवी ने कहा, और विश करके गिलास उठा लिया। कृपाशंकर ने लंबी घूंट ली। काजू और कबाब चबाने लगा।

"नीरा," प्रभा देवी ने कृपाशंकर की नजरें बचाकर संकेत से आंख दबाई और कहा, "अपने लिए गिलास ले लो कबर्ड से, और बैठो।"

प्रभा देवी ने जब तक अपना पैग खत्म किया, उस समय कृपाशंकर तीसरा पैग गटक रहा था। वह बोलीं, "मैं बस इतना ही लेती हूं, आप लीजिए। नीरा साथ देगी। मैं जरा राउंड लगाने और आपके लिए रूम का इंतजाम करने जाती हूं।"

वह नीरा की ओर अर्थपूर्ण निगाहों से देखकर धीरे से बाहर चली गईं। दरवाजा भिड़का दिया। उनका चेहरा गंभीर था। धीरे-धीरे चलती हुई वह रिसेप्शन लाउंज में आ गईं। परिचितों के अभिवादनों का मुस्कराहट सहित उत्तर देती वह काउंटर के पीछे के अपने ऑफिस चैम्बर में आईं। वहीं मसऊद को बुला लिया।

"मसऊद, ऊपरवाले दोनों गेस्ट रूम ठीक-ठाक तो हैं?"

"बिल्कुल ऑर्डर में हैं मैडम।" मसऊद तत्परता से बोला, "आप ही का हुक्म है कि रोज दो बार झाड़-पोंछ कर दुरुस्त रखा जाए।"

"ठीक है, उसकी चाबी लाना। मैं जरा देख आऊं।"

मसऊद काउंटर के की-बोर्ड से लपककर चाबी ले आया, "मैं साथ चलूं या फर्नांडीज को..."

"कोई नहीं," वह चाबी थामे उठ खड़ी हुईं, "मैं खुद जाऊंगी।"

सिर झुकाकर मसऊद बाहर चला गया। प्रभा देवी ने उसी कमरे में स्थित निजी लिफ्ट का द्वार खोला। भीतर प्रवेश कर ऊपरी चौथे माले का बटन दबा दिया, लिफ्ट सरसराती हुई चल पड़ी।

चौथे माले में भी हर माले की तरह गलियारों में कालीन बिछा था। यहां कुछ कमरे अभी खाली पड़े हुए थे। गलियारे में आते-जाते कुछ सज्जनों और महिलाओं के अभिवादनों का उत्तर बड़ी मधुर मुस्कराहट के साथ देती हुई वह कॉरिडोर के अंत तक जा पहुंचीं। जिस कमरे के आगे खड़ी हुई थीं, उसका नंबर 100 था। सबसे निचले माले का उनका अपना रूम इसके ठीक नीचे पड़ता था।

दरवाजा खोलकर उन्होंने अंदर कदम रखा। यह कमरा भी उनके कमरे जैसा ही बहुत अच्छी तरह से सजा हुआ और आरामदेह लगता था।

यहां खास मेहमान ठहराए जाते थे। पलंग
साफ बिछावन, बेड कवर लगा हुआ था। रंगी
टी.वी. यहां भी थी और आलमारी के शीशों
कई तरह की कीमती शराब की बोतलें दि
रही थीं। यहां भी निचले कमरे की तरह पिछ
दीवार में दो संकरे दरवाजे साथ बने हुए थ
उन्होंने दोनों को खोला। उनमें एक तो ड्रेसि
रूम था और दूसरा बाथरूम। ड्रेसिंग रूम
वार्डरोब, ड्रेसिंग टेबल, रैक आदि लगे हुए थ
बाथरूम साफ-सुथरा था। धुले तौलिए भी व
टंगे थे। गरम पानी के लिए गीजर लगा थ
वह रूम के बाहर आ गईं। दरवाजे में चा
लगाकर फिर उसके बगलवाला रूम खोला। व
भी उसी चाबी से खुलता था। यह रूम 10
नंबर का था। होटलों के कायदे से तो नंब
100 के बाद का 101 उसके सामने होना चाहि
था, लेकिन वह यहां बगल में ही था। ये दोन
ही रूम गेस्टरूम थे।

यहां भी साज-सज्जा और सारे सामान बग
वाले रूम जैसी ही थे। किसी चीज की कम
यहां नहीं थी। टी.वी. और शराब की बोत
यहां भी मौजूद थीं। यह कमरा होटल के बिलकु
पिछले कोने में पड़ता था। कमरे की पिछल
दीवार में यहां भी दो संकरे दरवाजे बने हु
थे, लेकिन यहां एक दरवाजे पर एक छोटी-स
लकड़ी की तख्ती कील से टंगी हुई थी
"बाथरूम।" उन्होंने सावधानी से तख्ती बंध
डोर को पकड़कर वह तख्ती उतारी और उ
बगल के दरवाजे के ऊपर टांग दिया। बाह
आकर चाबी से दरवाजों को बंदकर वह लौ
पड़ीं।

कृपाशंकर को याद नहीं रहा कि वह कित
पैग पी चुका है। मिस नीरा की उत्तेजक उपस्थि
और बार-बार पैग ढालकर पीने का आग्र
करना... वह आदी था पीने का, लेकिन आ
कुछ ज्यादा ही पैग पी गया था।

मिस नीरा ने कहा, "मि. शंकर, एक पै
और, बस.. मेरी तरफ से।"

"ल...लाओ वह भी सही..." कृपाशंकर उ
भी एक सांस में पी गया। झूमता हुआ बोल
"ह... हनी अ... अब खाना।"

"खाना यहीं मंगवाती हूं।" मिस नीरा
इंटरकॉम का रिसीवर लेते हुए कहा, "आपका
इस हालत में नीचे जाना ठीक न होगा।"

"ब...ब... बिलकुल सही कहा।" कृपाशंक
ने आंखें मूंदीं और सोफे की पीठ से गर्दन टिक
कर लंबी सांसें लेने लगा।

खाना कमल वेटर ले आया। कृपाशंकर
तो खाया बराएनाम, लेकिन मिस नीरा ने डटक
हाथ फेरा। कमल थालियां लेकर लौटा, तो
कृपाशंकर के कान में बोली, "अब आपको रू
में पहुंचा दूं।"

"च... चलो...." वह झूमता हुआ-सा खड़ा होने लगा, कदम लड़खड़ा रहे थे। मिस नीरा दाएं कंधे पर उसका बोझ संभाले हुए बाएं हाथ से सूटकेस ले चली। नीरा के सहारे वह बरामदे में निकल आया। उस समय कॉरिडोर में कोई नहीं था।

तभी मिस नीरा को ख्याल आया, मेहमान को किस रूम में ले जाना है, उसे तो पता ही नहीं। वह ठिठकी। मसऊद साहब से इंटरकॉम पर पूछ ले, तभी प्रभा देवी आ गई। नीरा को चैन मिला।

"ठीक है," कृपाशंकर को गहरी नजरों से देखती वह बोलीं, "इन्हें 100 नंबर वाले खास गेस्टरूम में ले जाओ।" उन्होंने नीरा को चाबी दी, "खाना-पीना हो गया?"

"हो गया मैडम," नीरा ने कृपाशंकर को संभालते हुए कहा और सहारा देती हुई मेहमानों के लिए बनी लिफ्ट की ओर ले चली, जो निकट ही था। कृपाशंकर के पैर सीधे नहीं पड़ रहे थे।

"नीरा," प्रभा देवी ने पीछे से कहा, "इन्हें रूम को अच्छी तरह से दिखाकर समझा देना, 100 नंबर में ही रहना है।"

नीरा चौथे माले पर गेस्टरूम 100 नंबर के द्वार खोले, कृपाशंकर को भीतर लाकर कहा, "यह स्पेशल गेस्ट लोगों के लिए है, आप यहीं आराम करेंगे। बाथरूम वह सामने है।"

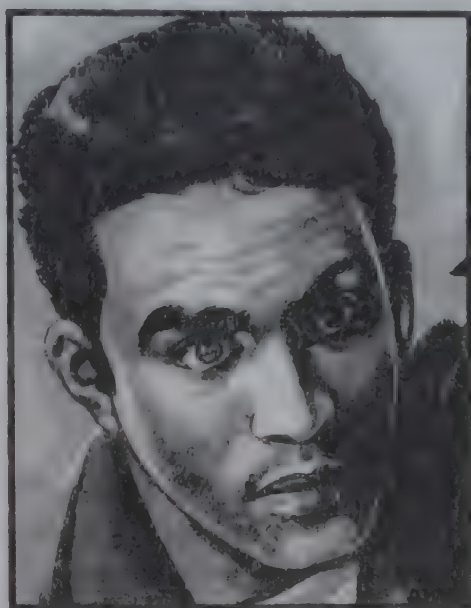
"और द...द... दूसरा?" तेज रोशनी में आंखें मिचमिचाते मुश्किल से कृपाशंकर ने देख कर पूछा।

"वह उसकी बगलवाला ड्रेसिंग रूम है।" मिस नीरा ने दोनों के द्वार खोलकर दिखा दिए। दोनों अच्छी तरह से सजे हुए, तैयार थे। बाथरूम में साफ तौलिए, तरह-तरह के तेल, शैम्पू, साबुन आदि भी रखे थे। ड्रेसिंग रूम में वार्डरोब, शीशेवाली श्रृंगारमेज, रेक आदि आवश्यक सामान मौजूद थे।

"ठीक है।" कृपाशंकर पलंग पर बैठकर जूते उतारने की कोशिश करने लगा। मिस नीरा ने मदद की। कपड़े उतरवाए। वार्डरोब से एक स्लीपिंग सूट निकालकर उसे किसी तरह पहनाया। तब तक कृपाशंकर की आंखें खुलनी मुश्किल हो गई थीं, जैसे पलकों पर मानो बोझ पड़ा हुआ हो। वह पलंग पर चित पड़ा रहा, क्रोधित सांड़ की तरह उसकी नाक फों-फों बोलने लगी। मिस नीरा ने कंबल उढ़ा दिया, तकिया ठीक किया और कमरे का नीला बल्ब रोशन कर नाक-भौंह सिकोड़ती लौट पड़ी। द्वार धीरे से भिड़का दिया। कॉरिडोर में आई, तो चैन की सांस ली। कैसी वाहियात ड्यूटी!

सवेरे-सवेरे होटल में खलबली मच गयी। एक गेस्ट होटल के पिछवाड़े की पक्की रविश पर गिरा पड़ा था। उसकी गर्दन टूट गई थी। सफाई करनेवाले मेहतर ने जब देखा, तो तत्काल होटल में खबर दी थी। मसऊद की ड्युटी रात के 12 बजे तक होती थी। उसके बाद की ड्युटीवाले काउंटर क्लर्क ने तुरंत प्रभा देवी को इंटरकॉम से सूचना दी, तो वह चली आईं। उस समय 6 बजे थे। स्टाफ के सभी लोग, संध्या से रात की ड्युटीवाले भी, जो सो रहे थे, वे भी आ पहुंचे। कुछ गेस्ट भी उधर आने लगे, लेकिन मसऊद ने नम्रता के साथ मना किया, "सर, अभी पुलिस आ रही है और घटनास्थल पर भीड़ नहीं लगानी है। बाद में आप लोग सब जान लेंगे।"

एस.पी. नए बदलकर यहां आए थे। प्रभा देवी की उनसे जान-पहचान तो थी, लेकिन डी.



"ब्लैकमेलर अपराधियों की सबसे निकृष्ट श्रेणी का जीव होता है समाज का भार"

एस.पी. श्री कौशल से उनकी अधिक घनिष्ठ मित्रता थी। उन्होंने श्री कौशल को ही फोन किया। तब मसऊद को साथ लेकर सीधे चौथे माले पर रूम नंबर 100 में गईं। रूम ऐसा लगा, जैसे रात में वहां कोई न सोया हो। बिस्तर की चादर सपाट थी। किसी का कोई सामान नहीं था। बाथरूम देखने से पता लगा, उसका रात में कुछ प्रयोग ही नहीं हो पाया था।

"यह क्या मामला है मसऊद?" प्रभा देवी ने पूछा, "मिस्टर राजदान यहां नहीं सोए?"

मसऊद सिर खुजलाने लगा, "मिस नीरा लाई थीं। मुझे नहीं पता मैडम।"

"कहीं बगलवाले रूम में न सुला दिया हो।" प्रभा देवी ने बगलवाला 101 नंबर का रूम खोलवाया। दरवाजा खोलते ही दोनों ठिठक गए। पलंग की चादर अस्त-व्यस्त थी। तकिया नीचे गिरा हुआ था। कृपाशंकर के जूते वहीं पड़े थे। एक तरफ सूटकेस रखा हुआ था और बाथरूम के बगल का दरवाजा भीतर की ओर सपाट खुला था।

"ओ...ह।" प्रभा देवी ने लंबी सांस ली, "यह तो बुरा हुआ। वह यहीं सो गया..."

संकरे दो दरवाजों में एक खुला हुआ था। उसे ड्रेसिंग रूम होना चाहिए था, किन्तु वहां न ड्रेसिंग रूम था, न कोई फर्श। न किसी प्रकार की रूकावट। वह तो बिना छड़ों की बड़ी खिड़की जैसा था, जिसके नीचे छोटा-सा छज्जा, फिर सपाट दीवार थी। कोई यदि उधर एक पग भी बढ़ाता, तो सीधा चारमंजिले से नीचे जा गिरता, जहां पिछवाड़े में सीमेंट की राहदरी बनी थी।

और विचित्र बात यह थी कि उक्त तथाकथित ड्रेसिंग रूम पर 'बाथरूम' की तख्ती लगी थी।

मिस नीरा की ड्युटी 2 बजे से 10 बजे रात तक होती थी। उसे बुलवा लिया गया, वह घर से दौड़ी आई। प्रभा देवी ने पूछा, "नीरा, तुमने उसे किस रूम में सुलाया था?"

"100 नंबर के रूम में मैडम, जहां के लिए आपने कहा था।" वह घबराई हुई थी।

"लेकिन वह तो 101 में सोया था। कहीं तुम्हें धोखा न हुआ हो रात में?"

मिस नीरा सिर खुजलाने लगी। उसे अच्छी तरह याद था कि वह 100 नंबरवाले रूम में मेहमान को लाई थी। कहीं उसे कुछ धोखा तो नहीं हुआ था? वह सोचने लगी।

प्रभा देवी ने धीरे से कहा, "शायद तुम्हें भी कुछ नशा हो गया हो। खैर, ध्यान से सुनो। मसऊद, तुम भी सुनो। पुलिस आ रही होगी। कहना, मेहमान ने इसी रूम में ठहरना चाहा, क्योंकि यह बिल्कुल किनारे का रूम है। उसे बाथरूम और ड्रेसिंग रूम के बारे में समझा दिया गया था कि ड्रेसिंग रूम वाली जगह कितनी खतरनाक है। लेकिन वह जिद करके इसी में ठहर गया। समझ लिया तुम लोगों ने?"

"जी, मैडम..." राहत की सांस लेते हुए दोनों ने कहा।

"और नीरा, सुनो। किसी को हरगिज पता न लगे कि तुमने भी उसके साथ पी थी। समझीं?"

"जी मैडम।" मिस नीरा ने चैन की सांस ली।

"ऐं?" प्रभा देवी चौंकी, "देखो, किसी की गलती से यह 'बाथरूम' का बोर्ड गलत दरवाजे पर लग गया है। मसऊद, फौरन इसे हटाकर बाथरूम के दरवाजे पर टांग दो।"

मसऊद ने कांपते हाथों से खुले दरवाजे पर टंगे बोर्ड को उतारकर बगल के बाथरूम के दरवाजे के ऊपर लगा दिया।

"और देखो तुम लोग," प्रभा देवी ने कहा, "पुलिस को यह गलती हरगिज मालूम नहीं होनी चाहिए। कर्मचारियों पर दोष लगने के साथ होटल की भी बदनामी होती है।"

पुलिस आई। डी.एस.पी. श्री कौशल के साथ हल्के के थाने का इंसपेक्टर भी था। श्री कौशल ने खुद ही अधिकतर पूछताछ की। उन्होंने प्रभा देवी आदि के साथ रूम नंबर 100 और 101 का मुआयना किया।

खेद प्रकट करते हुए प्रभा देवी ने कहा, "क्या बताऊं? मिस्टर राजदान मुझसे मिलने आए थे। बताया नहीं कि क्या काम था। कहा था कि कल इत्मीनान से बातें होंगी। वह थके थे। वह बाकायदे रजिस्टर भरकर होटल में ठहरे नहीं थे, मेरे निजी गेस्ट के तौर पर आए थे। मैंने गेस्ट की खातिर की और स्पेशल गेस्टरूम में उन्हें भेजवाया था। इसके पहले उन्होंने शायद रात में कुछ ज्यादा ही पी ली थी।

उन्होंने आगे कहा, "उन्हें ज्यादा पिए हुए देखकर मैंने रिसेप्शनिस्ट नीरा को कहा कि वह खुद उन्हें गेस्ट रूम नंबर 100 वाले में पहुंचा आए, किसी वेटर से पहुंचाने पर गड़बड़ी हो सकती थी। आपने देखा है मिस्टर कौशल, दो गेस्टरूम हैं। दोनों एक ही साथ हैं। मिस नीरा कहती है, मिस्टर राजदान ने नंबर 101 वाले में ही ठहरने की जिद की, क्योंकि वह कोने का रूम है और उसमें दो तरफ को खिड़कियां हैं। लेकिन उसका ड्रेसिंग रूम अभी बनना बाकी है। दरअसल, वह एक खुला दरवाजा है, जिसके नीचे सिर्फ एक छोटा-सा छज्जा है। अगर कोई आदमी अनजाने में उस तरफ कदम बढ़ाता है, तो उसका दूसरा कदम नीचे छज्जे पर जा पड़ेगा और आदमी अपना संतुलन बरकरार न रख पाने के कारण सीधे चार मंजिल से नीचे जा गिरेगा। उन्हें नीरा ने बताया कि वह जगह खतरनाक है, उसके ड्रेसिंग रूम के दरवाजे में जाली लगनी बाकी है, लेकिन नीरा कहती है, वह न माने। रात को पी भी तो बहुत अधिक गए थे।"

"अच्छा।" श्री कौशल ने कहा।

मिस नीरा बोलीं, "सर, उन्होंने जोर देकर कहा था कि वह होशियार रहेंगे और जिस दरवाजे के ऊपर बाथरूम की पट्टी लगी है उसी में जाएंगे, तो मैं क्या करती। गेस्ट की इच्छा के खिलाफ हम लोग ज्यादा जोर कैसे दे सकते हैं?"

मिस नीरा के भोले मासूम चेहरे से प्रभावित होकर श्री कौशल ने सिर हिलाया, "ठीक बात है। कुछ लोग जिद ठान लेते हैं, खासकर पीने के बाद।"

डी.एस.पी. कौशल ने उन सपाट खुले दरवाजों के पास खड़े होकर नीचे झांका, सहानुभूति से सिर हिलाते हुए बोले, "खैर, मिसेज प्रभा, आप चिंता न करें, मामला साफ है। इस दरवाजे में तो बाहर से ताला लगाने का भी उपाय नहीं है। आप इसे जल्द बनवा लें या फिलहाल जाली वगैरह कुछ लगवा दें। हां, अभी नहीं। अभी फिंगरप्रिंटवाले निशान वगैरह ले लें, फोटोग्राफर फोटो ले लें। हां, यह जो सूटकेस है, अभी यहीं रहेगा। फिंगरप्रिंटवाले इससे प्रिंट लेंगे। तब पुलिस की तहवील में जाएगा। आप मिस्टर राजदान का पता जानती हैं?"

"जी नहीं," प्रभा देवी ने कहा, "रात को कुछ बताया नहीं। बस आराम किया, खाना खाया, पिया, थके होने के कारण जल्द सो गए, दस के पहले। कहां से आए थे, क्या काम था? कुछ नहीं बता सके। आप लोग शायद पता लगा सकें, तो मुझसे जो बनेगा, उनकी जो इच्छा रही हो, पता लगे तो हर प्रकार से कोशिश करूंगी।"

"बेशक, बेशक।" श्री कौशल ने कहा, "आप बहुत उदार हैं, मैं जानता हूं। सूटकेस खोलने पर शायद परिचय और पता वगैरह लगे। अब चलिए, जांच होने तक इस रूम में अब कोई नहीं आएगा, ऐसा आदेश दे दें।"

वे लोग नीचे आए। पुलिस डाक्टर शव की जांच कर चुका था। बोला, "मिस्टर कौशल, नशे की ही बात सामने आती है। नशे में गिर पड़ा। वैसे, पी.एम. के बाद रिपोर्ट दूंगा।"

पुलिस फोटोग्राफर, फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट आदि रूम नंबर 101 में चले गए, तो नीचे सबके लिए कॉफी और नाश्ता प्रस्तुत किया गया। ड्युटी पर होने के कारण नाश्ते से क्षमा चाहते हुए उन लोगों ने कॉफी ले ली। तब तक ऐम्बुलेंस आ गया था। डाक्टर ने शव को ऐम्बुलेंस से भेजवा दिया।

श्री कौशल ने कॉफी पीते हुए कहा, "मिसेज प्रभा, आप यह सब जांच निबट जाने के बाद बिना देर किए ही उक्त खतरनाक दरवाजे में कुंडी लगवा कर ताला लगा दें या रेलिंग वगैरह लगवा दें। अदालती कार्रवाइयों तक तो पुलिस की सील रहेगी।"

"जरूर, जरूर।" प्रभा देवी ने वहीं मौजूद मसऊद से कहा, "मसऊद, ध्यान रखना।"

सुपरवाइजर भी वहीं था। प्रभा देवी ने कहा, "मिस्टर गुप्ता, आप इस काम का खास तौर से ख्याल रखिएगा।"

कुछ जरूरी कार्रवाइयों, फिंगरप्रिंट फोटो आदि ले लेने के बाद कर्मचारियों के बयान लेकर पुलिस लौट गई। डी.एस.पी. कौशल ने जाते समय प्रभा देवी को बार-बार तसल्ली दी कि वह निश्चिंत रहें, उनका या होटल मैनेजमेंट का इसमें कुछ दोष नहीं है। वह मामला देख लेंगे और अदालती कार्रवाई भी संक्षिप्त होगी। प्रभा देवी को गवाही आदि की झंझट में न पड़ना पड़ेगा।

प्रभा देवी ने इत्मीनान की सांस लेते हुए अपने रूम में आकर 'ओल्ड स्मगलर' का पैग बनाया। आज दोपहर में एक पैग सही।

सरलता से काम हो गया। वे फोटो और निगेटिव आदि उनके कब्जे में हैं। नशे में धुत सो रहे कृपाशंकर के हैंगर पर टंगे कोट की जेब से चाबी निकालकर रात में ही उस सूटकेस से वह सब निकाल लेने में दिक्कत नहीं पड़ी। जैसा उनका अनुमान था, सारा मसाला वह साथ में ही रखे था। सूटकेस को कम से कम छूने और फिर कपड़े से रगड़कर अपनी उंगलियों के चिह्न साफ कर देने की उन्होंने सावधानी रखी थी।

ब्लैकमेल के सारे सामान उनके कब्जे में हैं और बोलकर कुछ बताने वाला अब नहीं है। उन्हें इस बात का खेद था कि ऐसा करना पड़ा, लेकिन ब्लैकमेलर अपराधियों की सबसे निकृष्ट श्रेणी का जीव होता है, समाज का भार। वह असहायों की दुर्बलताओं से लाभ उठाता है, उन्हें जोंक की तरह चूसता है, जीवन बर्बाद कर देता है। ऐसे लोग जहरीले सर्प की तरह होते हैं, जिन पर दया करना समाज के प्रति अपराध है।

कोई नहीं जानता कि रात के डेढ़ बजे नशे में मदमस्त पड़े कृपाशंकर को उन्होंने अच्छा रूम बगलवाले रूम को बताकर खुद सहारा देते कमरा बदलवाया था, वह चुपचाप उसमें जा सोया था। इसके पहले उन्होंने फोटो आदि हथिया लेने की सावधानी बरती थी। यदि वे फोटो न मिलते उसके पास, तो रूम बदलवाने की जरूरत भी न पड़ती और तब या तो अन्य कोई उपाय खोजना होता या उसके पंजे में फंसना पड़ता।

वह सोचे हुए थीं, सामान कब्जे में लेने के बाद भी यदि भाग्य से वह उस दरवाजे को नहीं खोलता, बच जाता है, तो भी वह जहर बिना सांप जैसा होता। उसके हथियार तो उनके कब्जे में रहते। दस-बीस हजार देकर और इकरारनामा लिखाकर भगा देतीं। किन्तु ठंडे पानी से ही खुजली चली गई। उस बेचारे का भाग्य...

गलत दरवाजे पर उन्होंने जो बोर्ड टांग दिया था, उसे केवल डोरी से ही पकड़ा था। अब फिंगरप्रिंटवाले यदि उसकी भी जांच करें, तो मसऊद की ही उंगलियों के चिह्न मिलेंगे। वह तो स्टाफ है, यह काम करता ही है। चिह्न मिलने स्वाभाविक ही हैं।

"अब नीलिमा सुरक्षित है।" उन्होंने ओल्ड स्मगलर का लंबा घूंट लेते हुए सोचा। ●

(चित्रांकन चित्रकार की कल्पना से)

कीर्तन वाले ठग

(पृष्ठ 5 का शेष)

कमरा बनवा दिया था।

इस तरह पवित्र पेड़ों के बीच एक कमरा व उसके ऊपर लहराता लाल रंग का झंडा देखते ही देखते एक आश्रम बन गया था। पर बाबा की सादगी का अभी तक वही आलम था।

बाबा का कोई चेला नहीं था। ऐसा नहीं था कि बाबा के डेरे पर चेले आते नहीं थे। आये तो बहुत थे, पर सब बाबा की सादगी, उनका पूरे दिन में मांगकर केवल दो सूखी रोटियां खाने का नियम और दूसरों से भी ऐसी ही अपेक्षा रखने के कारण जो आते थे, सब के सब जल्दी ही भाग खड़े होते थे।

सादगी की प्रतिमूर्ति थे नारायण मुनि बाबाजी। जब उनकी आत्मा ने शरीर को त्याग दिया था, तो उनके अंतिम दर्शन के लिए सारा इलाका ही उमड़ पड़ा था। बाबा की मृत्यु के बाद उनका आश्रम सूना पड़ गया था।

'नारायण... नारायण' की आवाजें आनेवाले आश्रम में मौत जैसी खामोशी छा गयी, तो आसपास के लोगों से बर्दास्त नहीं हो रहा था। आखिर में उस आश्रम पर एक बैठक बुलायी गयी और फैसला किया गया कि बाबा की याद में उनके कमरे को गुरुद्वारे का स्वरूप दे दिया जाये। और उसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश करके सुबह-शाम श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पवित्र 'सर्व सांझी गुरुवाणी' का पाठ करने का इंतजाम किया जाये।

इस व्यवस्था में लोगों ने तुरंत दान देकर अच्छी-खासी धन राशि एकत्र कर ली थी। सारा प्रबंध हो जाने के बाद एक ग्रंथ सिंह पाठी रखने की बात आयी, तो फैसला हुआ कि नारायण मुनि बाबा की तरह ही एक सादा जीवन जीनेवाला ग्रंथी सिंह ढूंढ़ा जाये। लेकिन उसके परिवार के गुजारे के लिए तनख्वाह भी दी जाये। इसके लिए लोगों ने अपनी हैसियत के अनुसार, हर महीने चंदा देना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार पाठी को खाने आदि के साथ-साथ अच्छा वेतन देने का प्रबंध भी हो गया था। फिर भी समस्या बनी रहती थी। अक्सर पाठी नौकरी छोड़कर चला जाता था।



तहखाने में बाबा जसबीर सिंहः भक्ति का नाटक

बाबा नारायण मुनि के आश्रम से सौ-सवा सौ कदम की दूरी पर एक साधारण से किसान परिवार का अपने खेतों में ही मकान है। उसी परिवार का एक युवा सदस्य दर्शन सिंह सक्रिय अकाली पार्टी का कार्यकर्ता है। वह दर्शन सिंह नाईवाल के नाम से एक युवा अकाली नेता के रूप में जाना जाता है। बाबा नारायण मुनि के डेरे के प्रबंध का कार्यभार आजकल ज्यादातर उन्हीं के कंधों पर है।

जिला लुधियाना की तहसील माछीवाड़ा का एक गांव है बुंकर गुजरां। इसी गांव के एक निर्धन परिवार में पैदा हुए थे, सुखदेव सिंह व जसबीर सिंह। घर की गरीबी के चलते दोनों भाई बचपन से ही गुरुद्वारों में रहकर सेवा किया करते थे। पंजाब में धार्मिक स्थानों पर लंगर तो चलते ही रहते हैं। लंगरों के लिए अनाज व दूसरे सामान दाल-सब्जियां आदि के चढ़ावे की कभी कमी नहीं रहती है। जबकि लंगर तैयार करने तथा आयी संगत में वितरण करनेवाले सेवादारों की हमेशा जरूरत बनी रहती है। ऐसे ही कार्य करने के लिए दोनों भाई किसी न किसी डेरे में काम किया करते थे।

कहा जाता है कि मलेर कोटला के पास एक प्रसिद्ध डेरा है, जिसकी पंजाब भर में बहुत मान्यता है। वहां भी दोनों भाई काफी दिनों तक सेवा करते रहे थे। वहीं पर बड़े भाई सुखदेव सिंह ने किसी संत से थोड़ा-बहुत जड़ी-बूटियों से इलाज करने का ज्ञान हासिल कर लिया था। जबकि छोटे भाई जसबीर सिंह की दिलचस्पी कीर्तन करने तथा प्रवचन सुनने में ज्यादा थी। वहीं पर एक बार इन दोनों भाइयों में से एक ने डेरे पर आयी एक श्रद्धालु औरत से छेड़छाड़ कर दिया था, जिससे वहां से इन्हें बेइज्जत करके भगा दिया गया था। इस बात की खबर भी दूर-दूर तक फैल गयी थी। दोनों भाई पंजाब छोड़कर उत्तर प्रदेश के तराई इलाके में चले गए थे।

उत्तर प्रदेश के तराई इलाके में भी काफी बड़ी आबादी पंजाबियों की है, इसलिए वहां भी जगह-जगह गुरुद्वारे बने हुए हैं, जिन्हें पंजाब की तरह ही डेरा कहकर पुकारा जाता है। वहां पर अलग-अलग डेरों पर रहते समय छोटे भाई जसबीर सिंह ने कीर्तन करने तथा धार्मिक प्रवचन देने में काफी महारत हासिल कर ली थी। उसकी आवाज भी बहुत मधुर थी और आयु में भी छोटा था। फिर उसने बड़ा बाबा की पदवी हासिल कर ली थी।

कुछ समय पहले उत्तर प्रदेश के तराई इलाके के कुछ पंजाबी परिवार अपनी वहां की जमीन-जायदाद बेचकर बरनाला के नाईवाल गांव के आसपास आकर बस गए थे। इन लोगों को यहां यूपी वाले कहकर पुकारा जाता है। यह लोग जब स्थापित हो गए, तो इन्होंने यहां शादी-ब्याह तथा दूसरे सामाजिक व धार्मिक अनुष्ठान भी करवाने शुरू कर दिये थे। ऐसे ही एक धार्मिक अनुष्ठान पर यूपी वालों ने अपने यहां उत्तर प्रदेश में प्रसिद्धि पा चुके बाबा जसबीर सिंह व सुखदेव सिंह को कीर्तन करने के लिए बुलाने का फैसला किया था।

काफी समय गुजर जाने की वजह से अब तक पंजाब के लोग उनकी पहले की घटिया हरकतों को भूल चुके थे। अब तक उन्होंने डेरों के साधारण सेवादारों की जगह एक स्थापित संतों वाला वेश भी धारण कर लिया था। इस वजह से भी उन्हें पहचान में आने की कम ही संभावना थी।

फिर जब बाबा जसबीर सिंह ने अपने जत्थे के साथ वहां पर कीर्तन किया, तो नाईवाल ही नहीं, सारे बरनाला में इन संतों की चर्चा होने लगी थी। लोग उनके मधुर कीर्तन व उच्च कोटि की व्याख्या करने के ढंग से मंत्रमुग्ध हो उठे थे। फिर तो उन्हें बरनाला इलाके में बार-बार बुलाया जाने लगा था। यह देखकर उन्हें लगा था कि इस इलाके में उनकी अच्छी पैठ बन सकती है। इसलिए उन्होंने अपने श्रद्धालुओं से कहना भी शुरू कर दिया कि अगर वह उनके लिए एक एकड़ जमीन का बंदोबस्त कर दें, तो वह इस इलाके में ही अपना एक बढ़िया-सा डेरा स्थापित कर लें। बरनाला इलाके में किये गये कीर्तनों में उन्हें अच्छा चढ़ावा भी मिला था, जिससे

वह जमीन की कीमत भी अदा करने की बात कह रहे थे।

बाबा जब कीर्तन करने बरनाला आते थे, तो एक-दो बार युवा अकाली नेता दर्शन सिंह नाईवाल को मुख्य मेहमान के रूप में या उद्घाटन आदि करने के लिए बुलाया गया था। वहीं पर युवा नेता ने उनका कीर्तन सुना था और वह भी प्रभावित हुए थे।

युवा नेता दर्शन सिंह नाईवाल अक्सर बाबा नारायण मुनि के डेरे पर बनाए गए गुरुद्वारे के प्रबंध को लेकर चिंतित रहते थे। उन्हें जब पता चला कि यह बाबा डेरा बनाने के लिए जमीन तलाश रहे हैं, तो उन्होंने उनसे संपर्क किया था और कहा था कि आप जमीन खरीदकर डेरा बनाने की बजाय, बना बनाया डेरा क्यों नहीं संभाल लेते।

इस पर बाबाओं ने कहा था कि ठीक है, हम आपके डेरे में डेरा डाल देते हैं। पर आप इस डेरे की रजिस्ट्री हमारे नाम करवा दीजिए। सरदार नाईवाल ने उन्हें बताया था कि यह डेरा दिवंगत बाबा नारायण मुनि के नाम चला आ रहा है। बाबा नारायण मुनि की न तो कोई संतान थी और न ही कोई चेला है। सरकारी रिकार्ड में उन्हीं का नाम चला आ रहा है। इलाके के लोगों को इस आश्रम से कोई मतलब भी नहीं है। जो भी यहां रहकर पूजा पाठ व कीर्तन करेगा, उसे इस जगह से उठानेवाला कोई नहीं है। इसलिए यदि आप कीर्तन तथा पूजा-पाठ करने के लिए आना चाहते हैं, तो आपका स्वागत है।

वर्ष 1998 में मुख्य सडक पर स्थित नारायण मुनि के आश्रम पर आने के लिए बाबा जसवीर सिंह व सुखदेव सिंह तैयार हो गये थे। देखते ही देखते आयु में छोटे पर बड़े बाबा जसबीर सिंह तथा उनके बड़े भाई यानी छोटे बाबा सुखदेव सिंह, वैद्य बाबा सुखदेव सिंह के रूप में इलाके भर में प्रसिद्ध होते चले गये।

डेरा संभालते समय इलाके के लोगों ने उन्हें चेताया भी था कि इस जगह को एक बहुत ही ऊंचे और सच्चे साधु ने अपनी कर्मस्थली



पुलिस गिरफ्त में बाबा जसबीर सिंह व सुखदेव सिंह

बनाया था। इसलिए सच्ची प्रभु-भक्ति करोगे, तो आपकी महिमा दूर-दूर तक फैलती चली जायेगी। और अगर भूलकर भी कोई गलत कार्य करोगे, तो उस ऊंचे सच्चे साधु की आत्मा तुम्हें कभी भी माफ नहीं करेगी।

साधुओं को माया जाल से बचने की ताकीद की गई है। पर यह बाबा तो माया जाल में फंसते ही चले गए थे। पैसा जैसे-जैसे आने लगता हैं, इंसान उसके चक्रव्यूह में फंसता चला जता है।

डेरे पर आनेवालों की संख्या बढ़ने लगी, तो बाबाओं की मांगें भी बढ़ने लगी थीं। उन्होंने श्रद्धालुओं से डेरे पर फोन की व्यवस्था करने के लिए कहा, तो फोन लगवा दिया गया। फिर बड़े बाबा ने एकांत में पूजा-ध्यान करने के नाम पर एक तहखाना बनवाने की फरमाइश की, तो वह भी तुरंत पूरी कर दी गई।

बगल के गांव पत्ती सेखवां के लोगों ने उन्हें अपने यहां के गुरुद्वारा पर आकर कीर्तन करने का आग्रह किया, तो वह वहां भी जाने लगे थे। फिर कस्बा तपा के नजदीकी गांव मेहता में दिवंगत बाबा अकलिया के डेरे पर भी कीर्तन करने जाने लगे। कहीं अमावस को मेला लगता था, तो कहीं मकर संक्रांति पर, जबकि नारायण मुनि के आश्रम पर पूर्णिमा को मेला लगता था।

बाबा जसबीर सिंह और बाबा सुखदेव सिंह को जगह-जगह जाकर कीर्तन करना पड़ता था। उन्हें आने-जाने में परेशानी होती थी। आराम से आने-जाने के लिए गाड़ियों की जरूरत थी। बाबा ने पहले सीलो कार खरीदी थी, फिर जल्दी ही टाटा सियरा खरीद ली और गाड़ी पर वीवीआईपी की तरह लाल बत्ती भी लगवा ली थी। जब वीवीआईपी गाड़ी पर सवार होकर निकलना है, तो आगे पीछे चलने के लिए गनमैन होना जरूरी है। बाबाओं ने लायसेंसधारी गनमैन भी रख लिये।

बाबाओं की महिमा देखकर दूर-दूर से चेले आने लगे थे। उनके लिए भी किसी वाहन की जरूरत थी, इसलिए एक मिनी बस खरीद ली गई।

बाबा ने ऐशो-आराम का हर सामान खरीद लिया था। फ्रीज, टी. वी., कूलर सब कुछ उन्होंने खरीद लिया था। पर गुरुद्वारा के लिए उन्होंने कुछ भी नहीं किया था। वह करते भी क्यों? गुरुद्वारा के लिए तो उनके मन में कोई श्रद्धा ही नहीं थी। उन्होंने दूध के लिए भैंसे और झूठी शान दिखाने के लिए घोड़े भी पाल लिए थे। आसपास अपना दबदबा बनाने के लिए वह अपने डेरे पर बड़े-बड़े नेताओं को आमंत्रित करने लगे थे। उत्तरांचल के गवर्नर जिनका कि वह इलाका भी है, सरदार सुरजीत सिंह बरनाला व इलाके के सांसद सिमरनजीत सिंह मान को भी आश्रम पर बुलाकर सम्मानित किया गया था। इलाके के विधायक मलकियत सिंह कीतू तो वहां आते-जाते ही रहते थे।

बाबाओं को वहां बुलाकर लानेवाले युवा नेता दर्शन सिंह नाईवाल जल्दी ही उनकी असलियत जान गये थे। वह लोगों को दोनों बाबाओं से सावधान भी करते रहते थे। पर श्रद्धा में भटके लोग कब किसी की सुनते हैं? दूसरे लोगों की तो बात ही अलग है, खुद नेताजी के नजदीकी रिश्तेदार भी बाबा के जाल में फंस गये थे।

अकाली नेता दर्शन सिंह नाईवाल के सगे छोटे भाई के साले सरदार जागीर सिंह अमेरिका में जाकर बस गए हैं। उनके तीन लड़कियां ही हैं। जबकि वह एक लड़के के लिए बहुत इच्छुक थे। इसके लिए उन्हें शायद अमेरिका जैसे विकसित देश को विज्ञान और टेक्नालॉजी पर भरोसा नहीं था। उन दिनों वह अपने रिश्तेदारों से मिलने अमेरिका से अपने गांव आये हुए थे। उन्होंने जब बाबाओं की महिमा सुनी, तो पुत्र प्राप्ति के लिए उनके डेरे पर पहुंच गये थे। बाबाओं ने उन्हें अपने घर पर अखंड पाठ करवाने का सुझाव दिया तथा आश्वासन दिया कि भोग

के समय वह उनके घर आएंगे और पुत्र प्राप्ति के लिए विशेष कीर्तन व अरदास करेंगे। उस समय आप अपनी श्रद्धा से हमें जो दान देंगे, हम स्वीकार कर लेंगे। तब फिर गुरु की कृपा से पुत्र प्राप्ति अवश्य हो जाएगी। इसकी जानकारी जब युवा नेता नाईवाल को हुई, तो उन्होंने उनसे कहा कि आप लोग अखंड पाठ तो जरूर करवायें। प्रभु का जाप तो जरूर करना चाहिए, पर बाबा लोगों को दान के नाम पर मोटी रकम या कोई ज्यादा कीमती तोहफा मत देना। बाबा लोग पुत्र प्राप्ति के लिए कोई मंत्र नहीं फूंक सकते हैं। यह मात्र वहम है। मुझे तो बाबाओं की दैवी शक्ति पर ही नहीं, चरित्र पर भी संदेह है, जिसकी मैं छानबीन कर रहा हूं।

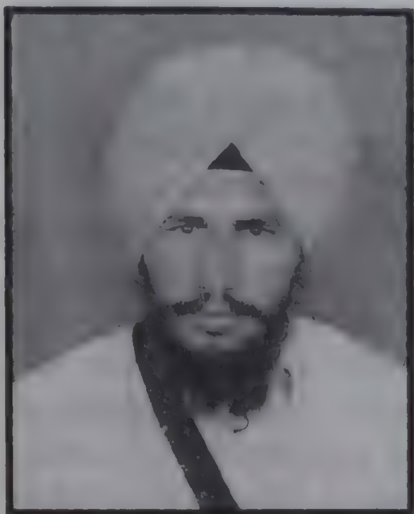
आखिर जागीर सिंह ने अपने घर पर अखंड पाठ करवाया। बाबा भी आए थे। कीर्तन व अरदास भी की थी। सरदार जागीर सिंह ने उन्हें नगद राशि के साथ-साथ कीमती सामान, कपड़े आदि भेंट किए थे, जिनकी कीमत लगभग तीस-पैंतीस हजार रुपए थी। लेकिन इससे बाबा को खुशी नहीं हुई। असल में बाबा अमेरिका में रहनेवाले भक्त से मोटी रकम की आस लगाये थे। इस पर बाबा ने सारे शिष्टाचार को दरकिनार करते हुए कहा था, "जागीर सिंह, इस तरह का दान-पुण्य तो हमारे यहां के साधारण लोग देते हैं। आप तो अमेरिका में रहते हैं। यह सब तो वहां के एक हजार डालर के बराबर भी नहीं है।"

इस पर जागीर सिंह ने तीस हजार रुपए नगद भेंट में दिए थे। बाबा लोग अभी भी संतुष्ट नहीं थे। उस समय तो वह मन मसोस कर वापस आ गए थे। पर दो-तीन दिन बाद ही उन्होंने अपना एक आदमी भेजकर जागीर सिंह को आश्रम पर बुलाया था। उनसे उन्होंने कहा कि डेरे के लिए एक मिनी बस की अत्यंत आवश्यकता है। जत्थे को कीर्तन करने के लिए जाने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इसलिए एक लाख रुपए की कमी पड़ रही है। कृपया, आप एक लाख रुपए हमें उधार दे दें। जैसे ही हमारे पास रुपए होंगे, हम वापस कर देंगे।

जागीर सिंह ने उन्हें एक लाख रुपया उधार दे दिया था। वह रुपए न तो वापस होने थे और न ही आज तक वापस हुए हैं। जबकि डेरे के लिए खरीदी गई बस को एक फायनेंस कंपनी से फायनेंस करवाया गया था।

आखिर बाबाओं को खुद बाबा नारायण मुनि के डेरे पर बुलाकर लानेवाले युवा अकाली दल नेता नाईवाल उनके विरोधी क्यों हो गए थे?

सिख धर्म के विधान के अनुसार,

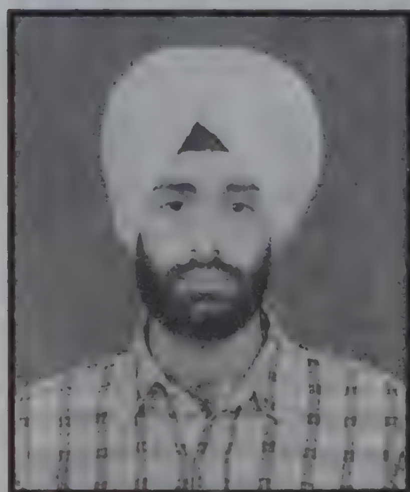


युवा अकाली नेता दर्शन सिंह नाईवाल

हर गुरुद्वारा में सुबह जल्दी उठकर ग्रंथी को नित्य कार्यों से निवृत्त होकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश करना होता है। यानी कि गुरु ग्रंथ साहिब को आलमारी से निकालकर पालकी साहिब में सुशोभित करना होता है, जिसे सुख आसन कराना कहा जाता है। उसके बाद मुख्य पांच वाणियों का पाठ किया जाता है और दिन निकलते समय तक भोग डालकर अरदास करनी होती है।

उस दिन डेरा से कुछ ही दूरी पर स्थित अकाली नेता नाईवाल के घर तक गुरुवाणी के पाठ की आवाज नहीं आ रही थी। जबकि इलाके की संगत ने एक नहीं, चार-चार स्पीकरों की व्यवस्था कर रखी थी, ताकि डेरे से चारों ओर के गांवों तक गुरुवाणी के मधुर कीर्तन की आवाज पहुंचती रहे। नाईवाल ने सोचा, शायद बिजली नहीं होगी। उन्होंने अपने घर की लाइट जलाकर देखी, लाइट थी। डेरे पर जाकर कारण जानने का फैसला किया और जब वह डेरे पर पहुंचे, तो पाठ तो क्या, गुरु ग्रंथ साहिब का सुख आसन भी अभी तक नहीं हुआ था। उन्होंने देखा कि डेरे पर बाबा सहित सभी लोग गहरी नींद में सो रहे थे। जबकि दिन पूरी तरह निकल चुका था। दर्शन सिंह नाईवाल ने सबको उठाकर डांटा-फटकारा, तो बाबा ने मांफी मांगते हुए कहा कि रात को कीर्तन करने गये थे। इसलिए आज जल्दी नींद नहीं खुली। अब ऐसी गलती कभी नहीं होगी।

जिला लुधियाना की समराला तहसील का एक गांव है मुस्काबाद। इसी गांव के एक उत्साही किसान हैं सरदार मोहन सिंह। समाज में ऊपर उठने के लिए वह खेती के अलावा भी कई तरह के हाथ-पांव मारते रहे हैं। उन्होंने बिजली के



नरिन्दरजीत सिंहः मोह में फंसे

ट्रांसफार्मर रिपेयर करने का कारखाना भी लगाया था, पर उसमें उन्हें भारी घाटा उठाने के बाद उसे बंद करना पड़ा था। परेशानी के उन्हीं दिनों में किसी ने उन्हें डेरा नारायण मुनि के संत जसबीर सिंह तथा वैद्य संत सुखदेव सिंह के बारे में बताया था। तब मोहन सिंह नायाराण मुनि नाईवाल के डेरे पर गये थे। डेरे पर उनके मन को शांति मिली थी। फिर तो वह वहां बार-बार जाने लगे थे। बाबा से उनकी अच्छी जान-पहचान हो गई थी। तब उसने उन्होंने अपने गांव में कीर्तन करवाने का फैसला किया। कीर्तन के लिए आये बाबाओं के ठहरने की व्यवस्था अपने घर पर ही की थी। जबकि कीर्तन बाहर खुले मैदान में लगे शामियाने में लगातार तीन दिन तक चलता रहा। कीर्तन सुनने के लिए दूर-दूर से लोग आये थे। इसके लिए प्रचार भी खूब किया गया था।

कीर्तन के दौरान मोहन सिंह के घर में रहते हुए बाबा को पता चल गया था कि फैक्ट्री में घाटे की वजह से वह भारी कर्ज में दबा हुआ है।

बाबा जसबीर सिंह ने मोहन सिंह से कहा, "भाई मोहन सिंह, तेरी नैया तो हमें तभी पार लगती नजर आ रही है, जब तुम कुछ समय के लिए अमेरिका या कनाडा जाकर डालरों के रूप में कमाई करके लाओ।"

साधु-महात्माओं के बोल श्रद्धालुओं के लिए ईश्वर की वाणी का स्थान रखते हैं। मोहन सिंह उसी पल से विदेश रोग से ग्रस्त हो गया था। उठते-बैठते, सोते-जागते वह अमेरिकी, कनेडियन डालरों के सपने देखने लगा था। इसी उतावलेपन में उसने पासपोर्ट भी बनवा लिया था और अमेरिका या कनाडा जाने के जुगाड़ लगाने लगा था। लेकिन जब कहीं बात बनती नजर नहीं आयी, तो वह फिर से बाबा की शरण में पहुंच गया। बाबा जसबीर सिंह ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा कि हम अमेरिका-कनाडा की संगत के बुलावे पर कीर्तन करने जाते हैं। अगले महीने तक जाने वाले हैं। इस बार तुम्हें भी अपने जत्थे का सदस्य बनाकर अपने साथ ले जायेंगे। पर इसके लिए सात लाख रुपए का खर्च आयेगा। पैसा और पासपोर्ट तुम हमें दे जाओ, ताकि हमारे साथ ही तुम्हारा भी वीजा लगवाने के लिए भेज दिया जाए। तुम्हारे नाम की कनाडा व अमेरिका से राहदारी भी मंगवानी पड़ेगी। इसलिए पैसा तथा पासपोर्ट जितनी जल्दी हो सके दे जाओ।"

"एकदम से सात लाख रुपए का इंतजाम करना तो मुश्किल होगा, बाबाजी।" मोहन सिंह ने अपने दोनों हाथ जोड़कर सिर झुकाते हुए कहा था।

"अभी कितने पैसों का इंतजाम

कर सकते हो?" बड़े बाबाजी ने पूछा।

"मैंने पांच लाख रुपए का इंतजाम किया है, महाराज जी।" इस पर बाबा जसबीर और बाबा सुखदेव ने कनखियों से एक-दूसरे को देखा और इशारों ही इशारों में कह दिया कि सौदा बुरा नहीं है, हां कह दो। तब फिर बड़े बाबा ने कहा था, "देखो भाई मोहन सिंह, तुम मेरे पुराने चेले हो। इसलिए हम तुम्हें यह रियायत दे रहे हैं। तुम पांच लाख रुपए और अपना पासपोर्ट हमें दे जाओ। बाकी दो लाख रुपए तुम्हें उस समय देने पड़ेंगे, जब तुम्हारा वीजा लगकर आ जाएगा और अमेरिका या कनाडा रवाना होने से पहले टिकटें खरीदनी होंगी।"

मोहन सिंह ने समय खराब करना मुनासिब नहीं समझा था। वहां से लौटकर अपने जिन-जिन मित्रों तथा रिश्तेदारों से उसने पहले से ही बात कर रखी थी, उनसे पैसे उधार लेकर वह तुरंत बाबा के पास पहुंच गया था। पांच लाख रुपए तथा अपना पासपोर्ट बाबा के पास जमा कर दिया था। दूसरे और बहुत से लोगों की तरह उसने भी इस बात की तहकीकात करने की जरूरत नहीं समझी थी कि बाबा लोग सचमुच अमेरिका व कनाडा जाते भी रहते हैं या यों ही कह रहे हैं।

अमेरिका या कनाडा तो उसे जाना था नहीं, जा भी नहीं पाया, पर महीनों बाबा के डेरे के चक्कर लगाने से उसे पता लग गया कि बाबा के पास पैसा व पासपोर्ट जमा करनेवाला वह अकेला नहीं है, उसकी तरह बहुत सारे लोग हैं, जो अब उसकी तरह डेरे के चक्कर लगा रहे हैं।

मोहन सिंह जब भी डेरा पर जाते, उनके चेले ही मिलते थे, जो दो टूक जवाब दे देते थे, बाबा कहीं बाहर कीर्तन करने गये हैं। आखिर में परेशान होकर मोहन सिंह ने पुलिस में शिकायत दर्ज करवाने का फैसला कर लिया। उसने 24 जुलाई, 2001 को बरनाला पुलिस को एक प्रार्थना पत्र दिया, जिसमें गाव नाईवाला रोड पर स्थित डेरा गुरुद्वारा मनीसर साहिब के बाबा जसबीर सिंह तथा बाबा सुखदेव सिंह ने उसके अलावा दूसरे तमाम लोगों को अमेरिका व कनाडा ले जाने के नाम पर पांच-पांच लाख रुपये ठग लिये हैं। प्रार्थना पत्र में विस्तृत विवरण लिख दिया था।

थाना कोतवाली बरनाला के इंचार्ज सब इंसपेक्टर पुष्पेन्द्र सिंह ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों को तुरंत सूचित करके मुकदमा एफ. आई.आर. नंबर 196/2001 पर भारतीय दंड विधान की धारा 420/34 के अंतर्गत दर्ज कर लिया था और आगे की तफ्तीश शुरू कर दी थी। लेकिन बरनाला पुलिस दोनों बाबाओं का अता-पता मालूम करने



सरदार मोहन सिंहः डॉलर के मोह में फंस ही गये

में कामयाब नहीं हो रही थी।

मुकदमा दर्ज होते ही बाबा के श्रद्धालुओं में हड़कंप मच गया था। तरह-तरह की अफवाहें फैलने लगी थीं। उस पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बरनाला ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करके बाबा के खिलाफ दर्ज हुए मुकदमें की जानकारी दी थी। समाचार पत्रों ने इस समाचार को मोटी सुर्खियों में दोनों बाबा के चित्रों के साथ प्रकाशित किया था, जिसे पढ़कर पंजाब भर से बहुत से लोग बरनाला पुलिस से संपर्क करके अपने साथ बाबा द्वारा की गयी ठगी की सूचना देने आने लगे थे। जबकि दोनों बाबा का कहीं अता-पता नहीं चल रहा था।

चंडीगढ़ के नजदीक पंजाब का एक कस्बा है कुराली, जो पंजाब के जिला रोपड़ का एक प्रमुख नगर है। कुराली से तीन किलोमीटर दूरी पर स्थित है गांव फतेहगढ़। इसी गांव में सरदार दरबारा सिंह का परिवार रहता है। इस संयुक्त परिवार में दरबारा सिंह के दो भाई व उनके परिवार भी रहते हैं। यह तीनों भाई सरकारी नौकरियों में हैं, साथ ही खेती का भी अच्छा कार्य है। संयुक्त रूप से रह रहे इस बड़े परिवार की धर्म-कर्म में पूरी आस्था है।

दरबारा सिंह का बड़ा लड़का नरिन्दरजीत सिंह भी एक पढ़ा-लिखा युवक है। उसे अभी नौकरी नहीं मिली है, इसलिए वह घर पर रहकर घर का तथा गांव की भलाई के लिए सामाजिक कार्य करता है। वह गांव की "नौजवान भलाई सभा" के वित्तीय सचिव के रूप में अनेक सामाजिक कार्य में सक्रिय रहता है।

नरिन्दरजीत सिंह के गांव के पास ही एक गांव है, माणकपुर शरीफ। माणकपुर शरीफवाले हर साल अपने गांव में कीर्तन कराते हैं। वर्ष सन् 2000 में कराये गए कीर्तन में उन लोगों ने बाबा जसबीर सिंह व सुखदेव सिंह को भी दूसरे जत्थों के साथ आमंत्रित किया था, जिनकी उस समय पंजाब भर में तूती बोलने लगी थी। धार्मिक प्रवृत्ति के परिवार में पैसा होने की वजह से नरिन्दरजीत सिंह तीनों दिन कीर्तन सुनने के लिए गया था। बाबा जसबीर सिंह के कीर्तन ने उसे बहुत ज्यादा प्रभावित किया था। अपने गांव वापस आकर उसने बाबा तथा उनके कीर्तन की काफी तारीफ की थी। इसके अलावा बाबा जसबीर सिंह का कीर्तन अपने गांव में करवाने के लिए कहा था। नरिन्दरजीत सिंह एक भला लड़का है, इसलिए उसकी बात सबने मान ली थी। इस पर वह बाबा को आमंत्रित करने के लिए नाईवाल गया था। उसके साथ उसकी नवयुवक सभा के कुछ अन्य सदस्य भी गए थे। बाबा जसबीर सिंह ने नवयुवकों के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए, उन्हें कीर्तन के लिए आने की तारीख दे दी थी।

सरदार दरबारा सिंह के परिवार के पास गांव के बीचोबीच काफी बड़ा एक पुश्तैनी मकान है। चूंकि परिवार काफी बड़ा हो गया था, इसलिए उन लोगों ने गांव के बाहर फिरनी के साथ एक नया मकान बना लिया था। लेकिन पूरा परिवार संयुक्त रूप से रहने का आदी है, इसलिए उस नए मकान में रहने के लिए कोई उत्साहित नहीं हुआ था। इस प्रकार वह मकान एक तरह से आनेवाले मेहमानों के ठहरने मात्र के काम ही आ रहा है। कीर्तन करने के लिए आये बाबाओं को भी इसी मकान में ठहराया गया था। बाबा लोग नरिन्दरजीत के परिवार से काफी प्रभावित हुए थे। हालांकि नरिन्दरजीत के पिता सरदार दरबारा सिंह को वह दोनों बाबा पसंद नहीं आए थे। उन्हें उनके रेशमी लिबास, शाही ढंग से रहना और औरतों से पैर छुआना बिलकुल नहीं पसंद आया, पर बाबा का कीर्तन सबको पसंद आया था और अंतिम दिन फैसला कर लिया गया था कि हर साल फतेहगढ़ गांव में कीर्तन करवाया जायेगा और उसमें बाबा जसबीर सिंह को जरूर बुलाया जायेगा।

अगले वर्ष 30-31 मई व पहली जून, 2001 को कीर्तन करवाने का प्रोग्राम तय हुआ था। इस साल जब नरिन्दरजीत सिंह उन्हें बुलाने गया, तो बाबा ने उससे पूछा था कि उसकी नौकरी आदि का कोई जुगाड़ बना या नहीं?

"नौकरियां तो बाबाजी आप जानते ही हैं कि अब कहां रह गयी हैं? कहीं कोई जगह निकलती ही नहीं है। अगर इक्का-दुक्का कहीं निकलती भी है, तो उसमें सिफारिश वाले ही लग जाते हैं या फिर लाखों खर्च करके नौकरी प्राप्त करो।" नरिन्दरजीत ने कहा।

नरिन्दरजीत की बात सुनकर बाबा झट से बोले, "लाखों खर्च करके नौकरी प्राप्त करने का क्या लाभ है? उससे अच्छा तो अमेरिका या कनाडा जाकर कुछ वर्षों में ही लाखों डालर कमाकर ले आना ही अच्छा है।"

"अमेरिका या कनाडा की जो बात है बाबाजी, उसके बारे में भी मैंने सोचा था। पासपोर्ट भी बनवाया था। पर वहां जाने के लिए भी तो कोई न कोई जुगाड़ होना चाहिए।"

"अगले महीने हम लोग वहां जा रहे हैं। वहां की संगत बहुत दिनों से बुलावा भेज रही है। तुम हमारे जत्थे के मेम्बर के रूप में हमारे साथ चल सकते हो। हम लोग तुम्हें साथ ले चलते हैं। वहां पर हमारे बहुत श्रद्धालु पहले ही जाकर स्थापित हो चुके हैं। वहां वह लोग तुम्हें कोई न कोई काम दिला देंगे। बस, एक बार सेट हो गए, तो डॉलरों के ढेर लगा दोगे। फिर बाकी की सारी जिंदगी ऐश करते रहोगे।"

"यदि आप इतनी कृपा कर दें बाबाजी, तो मुझ पर आपका बहुत बड़ा एहसान होगा, जिसे मैं जीवन भर नहीं भुला पाऊंगा।" नरिन्दरजीत कृतज्ञ भाव से बोला।

"ऐसी कोई बात नहीं है नरिन्दरजीत। तुम तो अपने आदमी हो। हम से जो भी हो सकेगा, वह हम तुम्हारे लिए करेंगे। पर इसके लिए वीजा व हवाई जहाज की टिकट आदि के लिए जो खर्च आएगा, वह तुम्हें देना होगा।"

"खर्च तो बाबाजी मैं दूंगा ही। वैसे इसमें कितना खर्च आएगा?"

"देखो, छह-सात लाख रुपए खर्च तो आ ही जाता है इस काम में। फिर वहां जाकर छह-सात लाख रुपए तो तुम दो-तीन महीने में ही कमा लोगे।"

"ठीक है, मैं आज ही जाकर पिताजी से बात कर लेता हूं। आप कीर्तन पर आयेंगे, तो बात फाइनल कर ली जायेगी।" नरिन्दरजीत ने खुशी से फूलकर कुप्पा होते हुए कहा। कीर्तन दरबार में बाबा को आमंत्रित करने गया नरिन्दरजीत विदेश रोग से ग्रस्त होकर वापस आ गया था।

घर आकर उसने अपने पिता तथा पूरे परिवारवालों से इस बारे में बात की। हालांकि उसके पिता का बाबाओं पर विश्वास नहीं था, पर बेटे के अमेरिका जाने के मामले में वह भी इस बात पर विचार करने के लिए तैयार हो गए थे। जवान बेरोजगार बेटे के भविष्य की चिंता के चलते ऐसा सोचना उनकी मजबूरी भी थी।

आखिर में नरिन्दरजीत के परिवार ने उसे अमेरिका भेजने के लिए



बाबा जसबीर सिंह का कीर्तन सुनती मंत्रमुग्ध लोग

बाबा से छह लाख रुपए में सौदा तय कर लिया। तीन लाख रुपए तथा पासपोर्ट उसी समय देने की बात पक्की हुई थी और तीन लाख वीजा लग जाने पर देने थे। नरिन्दरजीत के पिता दरबारा सिंह ने अपने जी.बी. फंड से एक लाख रुपए निकलवा कर पहले से ही इसी काम के लिए अलग रखे हुए थे। एक लाख रुपए नरिन्दरजीत के मामा सरदार केसर सिंह ने दिया था। इस प्रकार दो लाख रुपए व पासपोर्ट बाबा को उसी समय दे दिया गया। एक लाख रुपए एक सप्ताह के अंदर पहुंचाने की बात कही गयी थी, पर एक सप्ताह के भीतर पैसे का इंतजाम नहीं हो पाया था, तो बाबा ने बेसब्री दिखाते हुए फोन पर फोन करना शुरू कर दिया था।

बाबा द्वारा दोस्तों से पांच-पांच, दस-दस हजार रुपए उधार पैसा मांगने के लिए कहना नरिन्दरजीत के परिवार को बुरा तो बहुत लगा, लेकिन विदेश रोग से ग्रस्त होने के कारण उसके पिता ने ब्याज पर लेकर एक लाख रुपए बाबा को दे दिया। तीन लाख रुपए हाथ में आते ही बाबा जसबीर सिंह व बाबा सुखदेव सिंह ने इस परिवार से अपना संपर्क खत्म कर लिया। अब पीछे-पीछे घूमने की बारी नरिन्दरजीत व उसके परिवारवालों की थी। लेकिन बाबा न तो अपने डेरे पर मिलते थे और न ही उनका कुछ पता चल रहा था।

उन्हीं दिनों मोहन सिंह की शिकायत पर बरनाला पुलिस ने बाबाओं के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया था और समाचार पत्रों में उनके द्वारा ठगे गये लोगों की रोजाना ही खबरें आने लगी थीं।

बाबा जसबीर सिंह जब नरिन्दरजीत के गांव में कीर्तन करने आये थे, तो उनका एक रिश्तेदार, जो कि कैंसर से पीड़ित है, बाबा सुखदेव सिंह से दवा ली थी। दवा का कैसा असर हो रहा है, यह बताने के लिए उसने बाबा का मोबाइल नंबर ले लिया था। नरिन्दरजीत के पढ़े-लिखे परिवार ने चालाकी से उस नंबर पर फोन मिलाना शुरू किया। काफी कोशिश करने पर आखिर नंबर मिल ही गया। नंबर पर दवा देनेवाले बाबा सुखदेव सिंह ही बोल रहे थे। तब नरिन्दरजीत सिंह ने अपने तीन लाख रुपए का जिक्र न करते हुए कहा कि उनके द्वारा दी गई दवा का बहुत अच्छा असर हो रहा है। जबकि दवा का कोई असर नहीं हुआ था। फिर उन्होंने दवा की खुराक बढ़ाने या घटाने के बारे में पूछताछ की और कहा कि दवा का अच्छा प्रभाव देखकर और दो-चार मरीज दवा लेना चाहते हैं। इसलिए बतायें कि आपके दर्शन कहां हो सकते हैं? बाबा ने कहा कि अभी तो हम सफर पर हैं। एक-आध दिन बाद फोन कीजियेगा, तब हम आपको अपना पता बतायेंगे। फिर तुम सभी वहीं आ जाना। दवा दे दी जायेगी।

पर बाद में जब भी फोन किया गया, उन्होंने यही कहा कि एक-आध दिन बाद फोन करना।

आखिर जब इन लोगों को विश्वास हो गया कि यह बाबा लोग इस तरह अपना पता बतानेवाले नहीं हैं, तो इन्होंने उस मोबाइल फोन कंपनी से किसी बहाने से पता लगा लिया कि इस फोन नंबरवाला आदमी आजकल कहां है। फोन कंपनी से पता चला कि वह फोन आजकल मध्य प्रदेश में इंदौर व उसके आसपास के इलाके में है।

नरिन्दरजीत के गांव फतेहगढ़ के नजदीक ही एक गांव है झंडे माजरा। गांव झंडे माजरा के सरदार करनैल सिंह इंदौर में ही रहकर अपनी ट्रांसपोर्ट कंपनी चला रहे हैं। वहां उनके साथ उनके भतीजे नरिन्दर सिंह, सतनाम सिंह आदि भी उनके साथ उसी व्यवसाय में लगे हुए हैं। साथ ही सरदार करनैल सिंह इंदौर के गुरुद्वारा बंदीछोड़ के

प्रधान भी हैं।

नरिन्दरजीत व उसके परिवार वाले झंडे माजरा के नंबरदार सरदार निरंजन सिंह से मिलकर सारी वस्तुस्थिति से अवगत कराया, तो उन्होंने सुझाव दिया कि इंदौर चलकर बाबा का पता लगाते हैं। इंदौर में हमारे गांववालों की पंजाबी बिरादरी में काफी पैठ है। यदि बाबा वहां हैं, तो उनका कोई न कोई सुराग जरूर हाथ लग जायेगा।

नंबरदार निरंजन सिंह व नरिन्दरजीत के चाचा सोहन सिंह 25 दिसंबर, 2001 को इंदौर जाने की तैयारी करके चंडीगढ़ आये। चंडीगढ़ पुलिस में नरिन्दरजीत के परिवार के एक रिश्तेदार कार्यरत हैं। उन्होंने उन्हें भी साथ ले जाने का मन बना लिया था। इस प्रकार तीनों लोग 25-26 दिसंबर की रात को चंडीगढ़ से चलकर 27 दिसंबर की शाम इंदौर पहुंच गये थे। यह लोग सीधे करनैल सिंह के ट्रांसपोर्ट कंपनी के कार्यालय पहुंचे।

गांव से आये भाई-बंधुओं को देखकर करनैल सिंह खुश हो गये। पर चाय की चुस्कियों के बीच जब उन्हें पूरी बात का पता चला, तो वह चिंतापुर होते हुए बोले, "बाबा जसबीर सिंह व बाबा सुखदेव सिंह यहां आये जरूर थे। वह उनके संपर्क में भी आये थे। अपने गांव से आये महान कीर्तन जत्थे का कीर्तन इंदौर की सिख संगत भी सुन सके, इसके लिए उन्होंने दो दिन कीर्तन दरबार का आयोजन भी करवाया था।

"पहले दिन जब कीर्तन खत्म हुआ, तो बाबा सुखदेव सिंह ने धार्मिक स्टेज से ही अपनी जड़ी-बूटियों द्वारा निर्मित दवा का प्रचार करना शुरू कर दिया था। वह कीर्तन के बीच में ही कहने लगे थे कि उनके पास बवासीर, कमजोरी, बांझपन, नामर्दी व सैक्स द्वारा फैलनेवाली बीमारी एड्स का शर्तिया इलाज है। बाबा कैंसर जैसी भयानक बीमारी का इलाज करने का दावा भी करने लगे थे। उनका कहना था कि जिन लोगों के यहां बच्चा पैदा नहीं हो रहा है, वह उनके यहां बच्चा पैदा करने की शर्तिया दवा दे सकते हैं। यह बात प्रबुद्ध नागरिकों को अच्छी नहीं लगी थी। इसलिए दूसरे दिन जब वह कीर्तन करने आये, तो उन्हें सम्मानित तो कर दिया गया था, पर उनका कीर्तन नहीं करवाया गया था। माफी मांगकर वापस कर दिया गया था और तब से उन लोगों से हमारा कोई संपर्क नहीं है।"

तब करनैल सिंह के भतीजे ने फोन द्वारा बाबा का पता किया, तो पता चला कि उस दिन के बाद बाबा इंदौर में कीर्तन करने का साहस तो नहीं कर पाये हैं, पर वह अभी इंदौर में ही कहीं हैं। फिर उन्हें एक



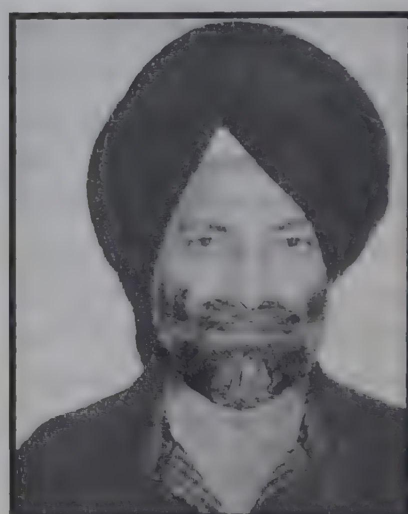
जांच अधिकारीः सरदार इकबाल सिंह

ऐसे घर का पता चल गया था, जहां बाबा दवा देने आते थे। तब उस घर से संपर्क किया गया, तो पता चला कि बाबा सुखदेव सिंह उस घर के एक मरीज का इलाज कर रहे हैं और वह थोडी ही देर बाद दवा देने आनेवाले हैं।

करनैल सिंह व उनके भतीजे पंजाब से आए मेहमानों को एक टाटा सुमो में बैठाकर उस घर की ओर रवाना हो गए थे।

उस समय शाम का अंधेरा गहरा चुका था। उन लोगों ने उस घर की गली के मोड़ पर ही अपनी गाड़ी रोक कर उसी में बैठे-बैठे बाबा का इंतजार करने का फैसला किया। थोडी देर बाद बाबा सुखदेव सिंह अपनी गाड़ी चलाता हुआ वहां पहुंच गया था। उसके साथ गाड़ी में उसका एक तेरह-चौदह साल का चेला भी था। सतर्क बैठे इन लोगों ने बाबा के वहां पहुंचते ही उसे दबोच लिया। उसे घसीटकर अपनी गाड़ी में डालकर बाबा जसबीर सिंह के बारे में पूछताछ करने लगे।

दबाव डालने पर बाबा सुखदेव सिंह हर बात के लिए अपने बड़े भाई जसबीर सिंह को जिम्मेदार ठहरा रहा था और कह रहा था कि वह आज कीर्तन करने भोपाल गये हुए हैं। सड़क पर कोई बवाल न खड़ा हो जाये, इसलिए वह लोग उसे गुरुद्वारा बंदीछोड़ ले आए। उसकी कार करनैल सिंह का एक भतीजा चलाकर ले आया था। गुरुद्वारा साहिब के एक कमरे में उसे बंद करके दोबारा से पूछताछ शुरू की गयी। उन्होंने उससे स्पष्ट रूप से कह दिया कि जब तक उनका पैसा नहीं मिल जायेगा, वह लोग उसे छोड़नेवाले नहीं हैं। इसलिए बड़े बाबा जहां भी हों, उससे टेलीफोन पर संपर्क करके, उसे बुलाने में ही उसकी भलाई है या फिर सभी को उसके पास ले



एस.एच.ओ. कुराली, सरदार प्रीतम सिंह

चले। आखिर रात ग्यारह बजे बाबा सुखदेव सिंह ने फोन से बाबा जसबीर सिंह से संपर्क किया।

इंदौर में बाबा जसबीर सिंह व सुखदेव सिंह एक टूरिस्ट लाज में डेरा जमाये हुए थे।

लगातार दबाव डालने पर बाबा सुखदेव सिंह को इन लोगों ने बड़े बाबा यानी उसके छोटे भाई जसबीर सिंह को फोन करने पर मजबूर कर दिया। उस समय वह कमरे में बैठा शराब पी रहा था। उसने अपने भाई को उन्हें टाल देने की सलाह दी थी। इस पर बाबा सुखदेव सिंह ने इन लोगों से कहा कि बड़े बाबा आपको सुबह मिलेंगे।

"ठीक है, सुबह जब तक वह यहां आ नहीं जाते, आपको इसी तरह, इन्हीं कपड़ों में नंगे फर्श पर बैठना पड़ेगा। पानी पीने तक की इजाजत नहीं दी जाएगी और न ही सोने दिया जायेगा।" नरिन्दरजीत के चंडीगढ़ के पुलिस रिश्तेदार ने पुलिसिया सख्ती से कहा, तो बाबा हिल गया। तब उसने फोन पर अपने छोटे भाई से संपर्क किया और उससे कहा कि इन लोगों से अभी मिल लेने पर ही जान छूटनेवाली है।

"बाबा जसबीर सिंह ने फोन पर कहा, "ठीक है, तुम उन्हें लेकर आओ। मैं लाज से निकल कर चौराहे पर आता हूं। वहीं पर उनसे बात करूंगा। उन्हें लाज के कमरे में किसी भी हालत में नहीं लाना।"

फोन आफ करके बाबा सुखदेव सिंह ने कहा, "चलिए, मैं आपको बड़े बाबाजी से मिला देता हूं।"

दोनों गाड़ियां आगे-पीछे चलती हुई लॉज के नजदीक पहुंचीं, तो बाबा जसबीर सिंह सड़क पर ही शराब के नशे में झूमता हुआ मिल गया। इन लोगों से बात करने के पहले ही उसने जेब से एक पुड़िया (पाउच) निकाला और उसे फाड़कर उसके अंदर का मसाला मुंह में डालकर चबाना शुरू कर दिया था। यह देखकर धार्मिक प्रवृत्ति के करनैल सिंह का खून खौल उठा था, पर बीच सडक पर वह किसी तरह का हंगामा करना नहीं चाहते थे।

जब इन लोगों ने नरिन्दरजीत से ठगे गये तीन लाख रुपए लौटाने की बात की, तो नशे में धुत बाबा ने साफ जवाब दे दिया कि रकम अब उसके पास नहीं है।

रात आधी बीत चुकी थी। इन लोगों ने बाबा को पुलिस के हवाले करने का फैसला किया। जब बाबा जसबीर सिंह को धकेलकर गाड़ी में बैठाया गया, तो उसने फिर से अपनी जेब से पाउच निकालकर मुंह में डालना चाहा, तो करनैल सिंह ने एक जोरदार चांटा उसके गाल पर जमा दिया। पुड़िया टपककर दूर गिर गई। यह बात उल्लेखनीय

है कि सिख धर्म में तंबाकू खाने या पीने की मनाही है।

फिर उन लोगों ने दोनों बाबाओं को ले जाकर इंदौर कोतवाली पुलिस के हवाले कर दिया। यह 27 दिसंबर, 2001 की आधी रात की बात है। दूसरे दिन 28 दिसंबर को पंजाब के अखबारों में बाबा के बारे में एक बड़ा समाचार उनके चित्र के साथ प्रकाशित हुआ था।

इंदौर पुलिस ने नरिन्दरजीत के चाचा सोहन सिंह व उनके साथ आये लोगों के निवेदन पर बाबाओं को अपनी हिरासत में ले लिया, पर कहा कि वह उन्हें अठारह घंटे से ज्यादा अपनी हिरासत में नहीं रख पायेंगे। क्योंकि इंदौर में उनके खिलाफ कोई भी अपराधिक मामला दर्ज नहीं है। इसलिए वह लोग पंजाब पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों से उन्हें हिरासत में रखने के आदेश भेजवाएं।

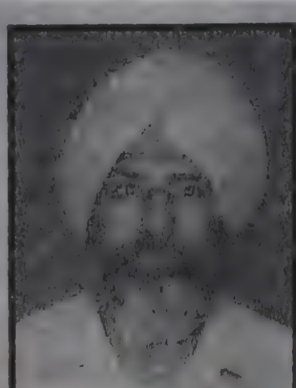
सोहन सिंह ने 28 दिसंबर को सुबह ही फोन पर अपने गांव में अपने बड़े भाई दरबारा सिंह को सारी वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए कहा था कि वह अभी जाकर कुराली स्थित थाना में बाबाओं के खिलाफ शिकायत दर्ज करवा दें और वहां की पुलिस से बाबाओं को अपनी हिरासत में रखने का संदेश भेजवाएं।

दरबारा सिंह ने तुरंत ऐसा ही करने का आश्वासन देते हुए, यह भी बताया कि आज यहां के समाचार पत्रों में बाबाओं की तलाश संबंधी एक बड़ा समाचार उनके चित्र के साथ प्रकाशित हुआ है। इस पर सोहन सिंह ने एक फैक्स नंबर देते हुए कहा कि वह तुरंत इस नंबर पर उस समाचार की कटिंग को फैक्स कर दें।

दरबारा सिंह ने तुरंत समाचार पत्र की कटिंग फैक्स कर दिया। आधे घंटे बाद पंजाब में छपी खबर की फैक्स कापी सोहन सिंह के हाथ में थी, जिसे उन्होंने तुरंत जाकर इंदौर पुलिस कोतवाली के इंचार्ज के सामने रख दिया।

समाचार की कटिंग का फैक्स करने के तुरंत बाद दरबारा सिंह नरिन्दरजीत सिंह को साथ लेकर थाना कुराली पहुंच गये। उन्होंने थानाप्रभारी प्रीतम सिंह से अपने साथ हुई तीन लाख रुपए की ठगी के बारे में बताते हुए शिकायत दर्ज करने की प्रार्थना की। थानाप्रभारी प्रीतम सिंह ने नरिन्दरजीत की शिकायत पर प्रथम सूचना नंबर 27/2001 भा.द.वि. की धारा 406, 420 के अंतर्गत मामला दर्ज करते हुए जिला मुख्यालय रोपड़ स्थित अपने वरिष्ठ अधिकारियों को भी सूचित कर दिया।

एस.एस.पी. रोपड़ गुरप्रीत सिंह भुल्लर उस दिन छुट्टी पर थे। इसलिए उन्होंने एस.पी. (डिटेक्टिव) सरदार जसपाल सिंह धनोया को वस्तुस्थिति से अवगत कराया और यह भी बताया कि इन्हीं अपराधियों के खिलाफ जिला बरनाला में पुलिस के पास भी शिकायत दर्ज हुई है। जिनके बारे में आज के समाचार पत्रों में भी समाचार प्रकाशित हुआ है। इस पर सरदार जसपाल सिंह धनोया ने तुरंत एस.एस.पी. बरनाला सरदार कंवरजीत सिंह संधू को स्थिति से अवगत कराया और उन्हें अपराधियों के इंदौर पुलिस की हिरासत में होने की जानकारी भी दी।



लेखक
प्रीत अमृत

एस.एस.पी. बरनाला श्री संधू ने तुरंत इंदौर पुलिस से संपर्क करके अपराधियों को अपनी हिरासत में ही रखने के लिए कहा, फिर अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को बाबाओं को पंजाब लाने के लिए जरूरी कानूनी कार्रवाई करने के आदेश जारी कर दिये।

19 जनवरी, 2002 को बरनाला पुलिस ने बाबा जसबीर सिंह व बाबा सुखदेव सिंह को गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल कर ली।

दोनों बाबाओं को न्यायालय में पेश करके पुलिस रिमांड पर ले लिया गया। पूछताछ के दौरान बाबा ने विदेश भेजने के नाम पर लोगों से पैसे लेने की बात स्वीकार कर ली। उन्हें बताया कि इन्हीं पैसों से उन्होंने कारें खरीदी थीं और बाकी पैसे मौजमस्ती में उड़ा दिये हैं।

पुलिस ने उनकी गाड़ियां जब्त कर लीं। उनमें सीलो कार, टाटा सुमो जीप व एक कंटेसा कार है। पता चला है कि बाबा की एक मिनी बस मध्य प्रदेश कर विभाग में बिना कर जमा किये प्रदेश में घूमने के जुर्म में जब्त है। बरनाला पुलिस ने बाबा जसबीर सिंह व बाबा सुखदेव सिंह से 28 जनवरी, 2002 तक पूछताछ की और फिर उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

कुराली पुलिस ने भी रोपड़ स्थित माननीय न्यायाधीश श्री पुनीत जिंदिया की अदालत में बाबाओं की पुलिस रिमांड पर मांग की, तो यहां से उन्हें 9 फरवरी से 11 फरवरी, 2002 तक का रिमांड मिला था। कुराली पुलिस ने पूछताछ के बाद 11 फरवरी को न्यायालय में पेशकर चार दिन का और रिमांड ले लिया था। बाबाओं ने कुराली पुलिस के समक्ष भी नरिन्दरजीत सिंह से तीन लाख रुपए ठगने की बात स्वीकार की। पूछताछ के बाद कुराली पुलिस ने उन्हें अदालत में पेश किया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया है। कथा लिखे जाने तक बाबा जसबीर और बाबा सुखदेव सिंह जेल में थे। ●

(कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित)

जब लोगों के सिर शर्म से झुक गये

एक सच्चे फकीर की कर्मस्थली पर काबिज, बाबा जसबीर सिंह व सुखदेव सिंह जब लोगों से लाखों रुपए ठग कर फरार हो गये थे, तो गुरुद्वारा डेरा बाबा मनीसर का बिजली तथा टेलीफोन के बिल का हजारों रुपया बकाया था। बिल जमा न कराने की स्थिति में संबंधित विभागों से कनेक्शन काटने की नोटिस आ रही थी। इस पर युवा अकाली नेता सरदार दर्शन सिंह नाईवाल ने इलाके के गणमान्य व्यक्तियों की एक बैठक गुरुद्वारा में बुलायी थी। बैठक में सुझाव रखा था कि चंदा इकट्ठा करके बिल जमा कर दिया जाये। पर कुछ लोगों का विचार था कि बाबाओं की करतूतों के कारण चंदा इकट्ठा करना काफी कठिन कार्य होगा। तब फैसला किया गया था कि बाबाओं का छोड़ा हुआ सामान नीलाम करके प्राप्त राशि से बिल जमा कर दिया जाये।

हालांकि अपना कीमती सामान तो बाबा वहां से उठा ले गए थे, पर कुछ सामान अभी भी एक कमरे में पड़े थे। निश्चित तारीख पर जब उस सामान को नीलामी के लिए कमरे से बाहर निकाला जाने लगा, तो यह देखकर वहां उपस्थित लोगों के सिर शर्म से झुक गए कि उस सामान में भारी मात्रा में व्हिस्की की खाली व भरी बोतलें, कंडोम के पैकेट तथा और बहुत-से ऐसे सामान थे, जिसे कम से कम एक धार्मिक स्थान पर नहीं होना चाहिए था।

इसी तरह बाबा जसबीर सिंह जब ऐशो-आराम में मस्त थे, तो उनकी दाढ़ी-मूंछ नहीं हुआ करती थी। लोग सोचते थे कि ऐसा प्राकृतिक है। उनकी दाढ़ी-मूंछ अभी उगी ही नहीं है। लेकिन अब यह भेद खुल गया है कि वह शेव करता था या फिर थ्रेडिंग द्वारा उन्हें उखाड़ देता था। जबकि वह सिख धर्म का प्रचार करता था। जिसमें शरीर के बाल कटवाना सख्त मना है। पुलिस हिरासत में वह बाल कटवा नहीं सका, इसलिए अब उसकी दाढ़ी-मूंछें उग आई हैं।

- खुराफाती दिमाग -

(पृष्ठ 43 का शेष)

पीछेवाली टेबल पर बैठा एक व्यक्ति उनके बीच हो रही बातचीत की एक-एक कड़ी को बड़े ध्यान से सुन रहा था। हां, वह व्यक्ति अवश्य सतर्क था कि बातचीत में मशगूल दोनों व्यक्ति किसी तरह से उस पर शक न कर पायें। इसी बीच उन दोनों व्यक्तियों में एक ने सामनेवाले व्यक्ति को अपना फोन नंबर नोट कराना शुरू किया, तो पीछे बैठे व्यक्ति ने भी झटपट उस फोन नंबर को अपनी डायरी में नोट कर लिया।

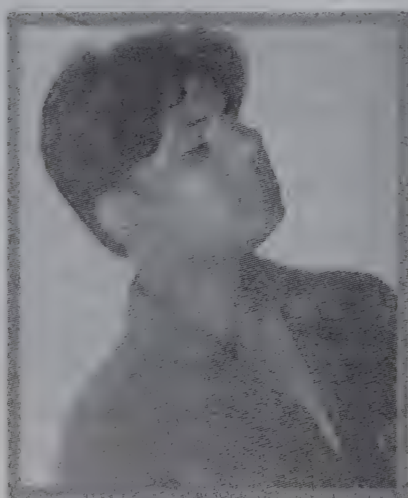
लगभग आधे घंटे पश्चात् जब दोनों व्यक्ति रेस्त्रां का बिल अदा कर बाहर निकले, तो उनके पीछे बैठा व्यक्ति भी अपना बिल अदा करके बाहर आ गया और अपने निश्चित स्थान की ओर चल पड़ा।

पंद्रह मिनट बाद उस व्यक्ति ने जिस आफिस में प्रवेश किया, वह उत्तर प्रदेश पुलिस के सबसे शक्तिशाली विभाग एस.टी.एफ. का मुख्यालय था। मुख्यालय में वह व्यक्ति सीधे एस.टी.एफ. के तेज-तर्रार उपाधीक्षक हरीश कुमार से मिला और अपनी सूचना से उन्हें अवगत कराते हुए अपने पास नोट किया हुआ फोन नंबर भी उनके सामने रख दिया।

दरअसल, हरीश कुमार को काफी दिनों से सूचनाएं मिल रही थीं कि लखनऊ शहर में कुछ लोग नकली नोटों का कारोबार चला रहे हैं। परंतु वह लोग कौन हैं, नोट कहां से लाते हैं, कहां और कैसे चलाते है? इस संबंध में उन्हें कोई पुख्ता जानकारी नहीं उपलब्ध हो पा रही थी। इसके लिए उन्होंने लखनऊ के सभी इलाकों में अपने मुखबिर भी फैला रखे थे। मुखबिरों के माध्यम से ही उन्हें इस बात का पता चल चुका था कि नाकाहिंडोला क्षेत्र में रहनेवाले एक परिवार के यहां इस तरह के कारोबार की आशंका है, जिसके यहां वाराणसी से आनेवाला कोई व्यक्ति नकली नोटों की खेप पहुंचाता है और यहां अपने आदमियों को नोट सौंपकर वह लौट जाता है।

हरीश कुमार ने उस परिवार को अभी छेड़ना इसलिए उचित नहीं समझा कि मुख्य अपराधी तो वाराणसीवाला व्यक्ति है। यदि हाथ डालना है, तो सीधे उसी पर डाला जाए। अगर इन लोगों से पूछताछ की गयी और तलाशी आदि में कुछ न मिला, तो मुख्य लोग सतर्क हो जाएंगे और वह लोग अंडरग्राउंड हो जायेंगे।

यही सोचकर उन्होंने अपने अधिकारियों के साथ मिलकर एक योजना बनायी और तय किया गया कि अपने किसी आदमी को उस परिवार के ऊपर निगरानी में लगा दिया जाए, जो उस परिवार में वाराणसी से आनेवाले व्यक्ति के संबंध में कोई ठोस जानकारी



अभियुक्त इखलाक

इकट्ठा कर सके। आखिर पी.सी. अनिल कुमार सिंह को यह जिम्मेदारी सौंप दी गयी।

अनिल कुमार सिंह एक तेज-तर्रार पुलिसिया था। वह इसके पहले भी एस.टी.एफ. के कई महत्वपूर्ण अभियानों में अपनी सक्रिय भूमिका निभा चुका था। उसकी काबिलियत पर एस.टी.एफ. अधिकारियों को पूरा भरोसा था। इसी लिए शायद इस काम की जिम्मेदारी उसके कंधे पर डाली गयी थी।

अनिल कुमार सिंह ने एक हफ्ते तक उस परिवार की निगरानी करने के बाद यह पता लगा लिया कि वाराणसी से आनेवाले जिस युवक के बारे में नकली नोट की खेप लाने की सूचना है, उसका नाम इखलाक है और उसकी इस परिवार में रिश्तेदारी भी है। इतना ही नहीं, उसे यह सूचना भी मिल गयी कि दो दिन बाद इखलाक फिर लखनऊ आनेवाला है। आज रेस्त्रां में मिलनेवाले वह दोनों व्यक्ति इखलाक व उसका वही रिश्तेदार था, जिसके यहां वह आता था। जबकि उनका पीछा करनेवाले और कोई नहीं, अनिल कुमार सिंह ही थे।

इखलाक और रिश्तेदार के बीच जो बातचीत हुई थी, उसका सारांश यह था कि इखलाक ने अपने रिश्तेदार को यह समझाया था कि इस बार वह माल लेकर नहीं आया है। क्योंकि वाराणसी से आनेवाली ट्रेन व बसों में कभी-कभी रास्ते में पुलिस चेकिंग हो जाती है। इसलिए अब जिसको भी माल लेना है, वाराणसी आकर माल ले जाए। उसने रिश्तेदार को अपना मोबाइल फोन नंबर देते हुए कहा था कि जिसे माल दिलाना हो, उसे यह नंबर देकर वाराणसी भेज देना। वह वहां आकर मुझसे संपर्क कर लेगा।

पीछे बैठे अनिल कुमार सिंह ने वही फोन नंबर नोट कर लिया था, जो अभी-अभी आकर उन्होंने हरीशजी को दिया था। अनिल कुमार सिंह द्वारा इखलाक और उसके रिश्तेदार के बीच हुई बातचीत का जो ब्यौरा हरीशजी को मिला था, उससे यह बात स्पष्ट हो गयी थी कि इखलाक ही वाराणसी से नकली नोटों की खेप ले आता है और वह नकली नोटों का कारोबार करनेवाले किसी गैंग का सदस्य है।

इखलाक का मोबाइल नंबर देते हुए हरीश कुमार ने अपने सब-इंसपेक्टर अविनाश मिश्रा को यह जिम्मेदारी सौंपी कि वह वाराणसी जाकर किसी भी तरह इखलाक से मिलकर, उससे नोटों का सौदा तय करे और जब बात फाइनल हो जाए, तो रंगे हाथों हम लोग उसे दबोच लेंगे।

अविनाश मिश्रा वाराणसी आकर एक औसत दर्जे के होटल में ठहरे और मोबाइल फोन के माध्यम से इखलाक से संपर्क किया और कहा कि तुम्हारे लखनऊवाले रिश्तेदार ने हमें भेजा है। कुछ माल लेना है, इसलिए होटल में आकर मिल लो।

इखलाक होटल आकर मिश्रा से मिला और जब उसे विश्वास हो गया कि मिश्रा वास्तव में नोट लेने का इच्छुक है, तो दूसरे दिन आकर उसने मिश्रा को पांच सौ व सौ रुपए के एक-एक नोट का सैम्पुल दिखाते हुए कहा कि एक असली नोट के बदले तीन नकली नोट दिये जायेंगे।

मिश्रा ने इखलाक को एक लाख रुपए का आर्डर देते हुए पांच हजार रुपये बतौर पेशगी दे दी। बाकी अट्ठाइस हजार रुपये माल की डिलेवरी के समय देने का वायदा किया। मिश्रा ने इखलाक से यह भी कह दिया कि नोट हमें पांच सौ व सौ के नोट की शक्ल में चाहिए। इखलाक आश्वासन देकर चला गया कि अगले दिन नोट मिल जायेंगे।

मिश्रा ने तुरंत ही यह सूचना लखनऊ में बैठे उपाधीक्षक हरीश कुमार को दी, तो वह भी उसी समय अपनी टीम लेकर वाराणसी के लिए चल पड़े। रात लगभग बारह बजे हरीश कुमार की टीम वाराणसी पहुंचकर एक अन्य होटल में ठहर गयी। यहां उन्होंने मिश्रा से संपर्क जान-बूझकर नहीं किया। क्योंकि इससे उन्हें डर था कि अगर इखलाक का कोई आदमी मिश्रा की निगरानी कर रहा होगा, तो मामला गड़बड़ा सकता है। इसलिए मिश्रा से मिलना उन्होंने उचित नहीं समझा। फिर वह मिश्रा को बता ही चुके थे कि वह वाराणसी पहुंच रहे हैं। इसलिए मिश्रा खुद ही उनसे मोबाइल पर संपर्क कर लेंगे।

12 अक्तूबर, 2001 की सुबह लगभग दस बजे मिश्रा ने अपने मोबाइल से हरीश कुमार के मोबाइल पर फोन करके बताया कि आज दोपहर दो बजे के लगभग वाराणसी युनिवर्सिटी के मुख्य गेट के नजदीक स्थित नावेल्टी सिनेमा हाल के पास इखलाक मुझे नकली नोटों की खेप देने आयेगा। उन्होंने इखलाक की पहचान के लिए बताया कि वह अपनी सफेद रंग की सी.बी.जेड. मोटर साइकिल से आयेगा और गले में पीले रंग का रामनामी अंगोछा डाले रहेगा। रामनामी अंगोछा मिश्रा ने इखलाक से यह कहकर डालने के लिए राजी कर लिया था कि इससे मैं समझूंगा कि किसी प्रकार

का कोई खतरा नहीं है। मिश्रा ने हरीश कुमार को बहुत सतर्क रहने के लिए कहा था, क्योंकि इखलाक केवल पांच सेकेंड में ही नोट देकर चला जानेवाला था, इसलिए जो भी कार्रवाई करनी होगी, उतने ही समय में होनी चाहिए।

एक बजे के आसपास हरीश कुमार अपनी छह सदस्यीय टीम के साथ निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच गये। उन्होंने अपने चार सदस्यों को तो अलग-अलग कोनों में खड़ा कर दिया और खुद गाड़ी में बैठकर अपने ड्राइवर को निर्देश दिया कि नोटों का बंडल लानेवाला युवक जैसे ही बंडल देकर चलने लगे, तो तुम तुरंत गाड़ी स्टार्ट कर उसकी गाड़ी में धीरे से टक्कर मार देना और जब तक वह संभले, तुम खुद ही उतरकर उससे झगड़ पड़ना।

ठीक पौने दो बजे के आसपास अविनाश मिश्रा एक रिक्शे से आकर वहां उतरे। वह चुपचाप इधर-उधर देखकर चहलकदमी करने लगे। हरीश कुमार की टीम ने किसी भी तरह से यह प्रकट नहीं होने दिया कि वह एक-दूसरे को पहचानते हैं। कोई ऐसी भाव-भंगिमा भी प्रकट नहीं होने दी कि वे एक हैं। यह सही भी था। अगर इखलाक का कोई व्यक्ति मिश्रा पर नजर रख रहा होता, तो उसके संदिग्ध हो जाने का भय था। मतलब जरा-सी भी चूक से सारा किया-धरा बेकार हो सकता था।

ठीक दो बजे इखलाक अपनी मोटर साइकिल से वहां आया और मिश्रा के पास एक झटके के साथ मोटर साइकिल रोक दी। गाड़ी स्टार्ट रखते हुए ही उसने अपनी जेब से एक बंडल निकालकर मिश्रा को सौंपा और मिश्रा के हाथों में थमा बंडल अपनी जेब के हवाले किया, फिर गेयर बदलकर मोटर साइकिल आगे बढ़ा दी।

इधर हरीश कुमार की टाटा सुमो का ड्राइवर, जो पहले से ही मिश्रा पर नजरें गड़ाये था, वह इखलाक के गले में पड़े रामनामी अंगोछे को देखकर एक्शन में आ गया। इखलाक की गाड़ी अभी चार कदम ही आगे सरकी थी कि टाटा सुमो उसकी मोटर साइकिल में हल्की रगड़ मारते हुए मोटर साइकिल के आगे इस तरह खड़ी हो गयी कि इखलाक का रास्ता पूरी तरह बंद हो गया। इखलाक एकाएक आयी इस रुकावट को समझ नहीं सका और अपनी मोटर साइकिल स्टैंड पर खड़ी करके सुमो के ड्राइवर से खुद ही भिड़ गया।

हरीश कुमार तो यही चाहते थे कि इखलाक किसी तरह रुक जाये। ड्राइवर से झड़प होते ही, वह भी उतरकर नीचे आ गये। तब तक उनकी टीम के अन्य चारों लोग भी वहां आ गये और इखलाक को घेरे में ले लिया। अविनाश मिश्रा, जो अभी तक दूर खड़े केवल अपनी टीम की कार्रवाई देख रहे थे, वह भी दौड़कर वहां आ गये। मिश्रा को देखते ही न जाने कैसे इखलाक को आभास हो गया कि वह पुलिस के जाल में फंस गया है। एस.टी.एफ. टीम चूंकि सादी वर्दी में थी, लिहाजा उसने तुरंत ही नौटंकी करते हुए रोड पर ही जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया कि "बचाओ... बचाओ... यह लोग मेरा अपहरण करके ले जा रहे हैं।"

यह इलाका भीड़-भाड़वाला तो था ही, दिन-दहाड़े किसी युवक के अपहरण की चीख-पुकार सुनते ही क्षणभर में ही सैकड़ों लोगों की भीड़ इन लोगों के चारों तरफ इकट्ठी हो गयी। एस.टी.एफ. टीम ने इस कार्रवाई को इतना गोपनीय रखा था कि अपने इस अभियान की जानकारी सिर्फ वाराणसी रेंज के डी.आई.जी. श्री वी.के. सिंह के अलावा किसी भी पुलिस अधिकारी को नहीं दी थी। मतलब यह कि कुछ पलों में यह सूचना वाराणसी पुलिस कंट्रोल रूम तक जा पहुंची कि युनिवर्सिटी के पास टाटा सुमो पर सवार कुछ लोग एक युवक का अपहरण करके लिये जा रहे हैं। आनन-फानन में कई थानों की पुलिस-जीपें वहां आ पहुंचीं और इखलाक तथा एस.टी.एफ. के सदस्यों को अपने घेरे में ले लिया। हरीश कुमार ने पुलिस अधिकारियों को अपना परिचय-पत्र दिखाकर अपने अभियान की रूप-रेखा से उन्हें अवगत कराया और यह भी बताया कि आप चाहें, तो अपने डी.आई.जी. साहब से बात कर लें।

डी.आई.जी. से बात करने के बाद वाराणसी पुलिस टीम और हरीश कुमार इखलाक को लेकर कैंट थाने आ गये। थाने में इखलाक की जब विधिवत तलाशी ली गयी, तो उसकी जेब से एक मोबाइल फोन, कुछ रुपए, कागजात व एक लड़की की तस्वीर छोड़कर, कोई ऐसी संदिग्ध वस्तु नहीं मिली, जिससे नकली नोटों का कारोबार करनेवाले उसके रैकेट के अन्य सदस्यों का नाम-पता मालूम हो सकता। हालांकि इखलाक एक लाख रुपये के नकली नोटों की



अभियुक्त निजामुद्दीन

अदला-बदली करते रंगे हाथों पकड़ा गया था। इस नाते कानूनी रूप से वह शिकंजे में पूरी तरह फंस गया था। लेकिन हरीश कुमार का काम केवल इखलाक की गिरफ्तारी से चलनेवाला नहीं था। केवल उसे पकड़ना होता, तो वह कब का उसे गिरफ्तार कर चुके होते। उनका मुख्य उद्देश्य तो उस पूरे रैकेट का पता लगाना था, जो इन नकली नोटों को छापता था या कहीं बाहर से लाकर सप्लाई करता था। इखलाक तो एक छोटी सी कड़ी मात्र था। हां, इतना अवश्य था कि इस कड़ी के सहारे पूरी श्रृंखला तक पहुंचा जा सकता था।

हरीश कुमार ने इखलाक से लगभग दो घंटे तक हर ढंग से पूछताछ की, लेकिन वह केवल एक ही राग अलापता रहा कि मैं जिस राजेश नाम के व्यक्ति से यह नोट ले आता हूं, उसका केवल मोबाइल नंबर ही मेरे पास है। बाकी उसके घर का पता मुझे नहीं मालूम है। वह मोबाइल पर ही संपर्क करके माल देने और पैसा लेने का स्थान तय करके उसी स्थान पर चुपचाप आ जाता है और नोट देकर चला जाता है।

तीस वर्षीय इखलाक एक स्मार्ट युवक था। उससे हर तरीके से पूछताछ करने के बाद हरीश कुमार को महसूस होने लगा कि हो सकता है कि राजेश ही इस गैंग का सरगना हो और गोपनीयता के चलते किसी को अपना पता न देकर सिर्फ मोबाइल नंबर से ही संपर्क करता हो।

इखलाक ने उन्हें राजेश का मोबाइल नम्बर दे दिया था। लेकिन उनके सामने परेशानी यह थी कि खुद फोन करने पर या इखलाक से ही राजेश की बात कराने पर संभावना यह थी कि अगर राजेश को जरा भी शक हो जाता या इखलाक बातचीत के दौरान उसे किसी गुप्त कोड के माध्यम से सतर्क कर देता, तो राजेश का हाथ से निकल जाना निश्चित था। राजेश को गिरफ्तार करने का एक ही रास्ता था कि इखलाक पर दबाव डालकर राजेश को बुलवाया जाये और इस कार्य में इखलाक गद्दारी न कर सके।

तभी हरीश कुमार को इखलाक की जेब से मिली युवती की तस्वीर का ध्यान आया। उन्होंने जब युवती के बारे में पूछताछ की, तो उसने सकुचाते हुए बताया कि यह उसकी प्रेमिका का फोटो है और वह उससे शादी करनेवाला है।

हरीश कुमार ने जब इखलाक से पूछा, "क्या तुम्हारी प्रेमिका तुम्हारे नकली नोटों के इस कारोबार के बारे में जानती है?"

इखलाक तुरंत ही हाथ जोड़ते हुए गिड़गिड़ाने लगा, "नहीं साहब, उसे यह सब कुछ नहीं मालूम। यह सब मैं चोरी-छिपे करता हूं। कृपा करके, उस तक यह बात न पहुंचने दीजिए, नहीं तो मेरी मोहब्बत तबाह हो जायेगी।"

लड़की के प्रति उसकी दीवानगी देखकर एकाएक हरीश कुमार को

उसकी कमजोरी का एहसास हुआ। उन्होंने अब इखलाक पर इसी बात का दबाव बनाते हुए कहा, "तुम किसी भी तरह राजेश को बुलाओ, तो हम तुम्हें छोड़ देंगे, अन्यथा तुम्हारी सारी करतूत का भंडाफोड़ उस लड़की के सामने कर देंगे। साथ ही तुम्हारे जेल जाने का भी बंदोबस्त कर देंगे।"

आखिर कुछ ही देर में इखलाक इतना नर्वस और हताश हो गया कि वह राजेश को बुलाने के लिए तैयार हो गया। उसने हरीश कुमार से अपना मोबाइल फोन मांगकर राजेश से संपर्क किया और उससे कहा, "राजेश, तुम वाराणसी स्टेशन के एक नम्बर प्लेटफार्म पर आ जाओ। एक पार्टी बाहर से माल लेने के लिए आनेवाली है। इसलिए आकर पैसा ले जाओ।"

इखलाक हरीश कुमार को पहले ही बता चुका था कि राजेश पहले पैसा ले लेता है, उसके बाद किसी निश्चित स्थान पर आकर नोट दे जाता है। लेन-देन की बात वह सिर्फ मोबाइल पर ही करता है।

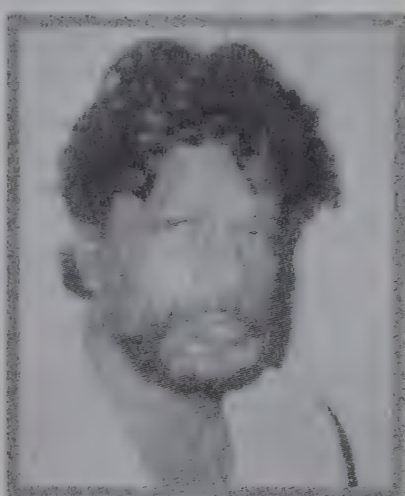
राजेश ने एक घंटे बाद प्लेटफार्म पर पहुंचने को कहा था। राजेश को सिर्फ इखलाक ही पहचानता था। इसलिए राजेश तक पहुंचने के लिए इखलाक को साथ रखना एस.टी.एफ. टीम की मजबूरी थी। लगभग आठ बजे एस.टी.एफ. टीम इखलाक को लेकर वाराणसी स्टेशन पर आ गयी और इखलाक को टिकट खिड़की के पास खड़ाकर दिया। एस.टी.एफ. टीम के सदस्य उसे चारों तरफ से घेरकर खड़े हो गये।

वैसे इखलाक से उन्हें अब गद्दारी की उम्मीद कम ही थी। फिर भी सतर्कता तो जरूरी थी। हो सकता था, ऐन मौके पर वह कोई बखेड़ा खड़ा कर दे।

मगर आशंका के बावजूद इस तरह का कुछ नहीं घटा। साढ़े आठ बजे के करीब एक युवक ने आकर जैसे ही इखलाक से मुलाकात की, इखलाक ने हरीश कुमार की टीम को इशारा कर दिया।

इशारा पाते ही टीम ने उस युवक को तुरंत दबोच लिया और इखलाक के साथ उसे लेकर थाने आ गयी।

थाने लाकर हरीश कुमार ने राजेश को स्पष्ट चेतावनी देते हुए कहा, "देखो राजेश, हम लोगों के पास तुम्हारा सारा काला-चिट्ठा मौजूद है और लगभग एक महीने से हम तुम्हारी हर गतिविधि पर नजर रख रहे हैं। हमने पहले इखलाक को गिरफ्तार किया और अब तुम्हें। यह हमारी कार्रवाई का सीधा सबूत है। इसलिए अच्छा यही होगा कि तुम अपने नकली नोटों के काले धंधे में शामिल सभी सदस्यों व इन नोटों की आमद का स्रोत सीधे-सीधे बता दो, अन्यथा बेकार ही हमें तुम पर पुलिस के असली रूप को दिखाना पड़ेगा।"



अभियुक्त श्याम सिन्हा

हरीश कुमार की बात सुनकर राजेश कुछ देर तो चुपचाप बैठा रहा और न जाने क्या सोचता रहा। फिर एकाएक उनकी ओर देखकर बोला, "आप ठीक कह रहे हैं साहब, अब सब कुछ बताना ही पड़ेगा। इसके अलावा अब कोई दूसरा रास्ता भी नहीं है।"

इसके बाद राजेश से पूछताछ के बाद रात में ही हरीश कुमार ने डी.आई.जी. वी.के. सिंह से बात कर कैंट थाने में अपनी ओर से राजेश व इखलाक के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कराया और कैंट पुलिस को साथ लेकर अन्य अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए निकल पड़े।

रात में ही उन्होंने इस गैंग के अन्य सदस्यों निजामुद्दीन, कृष्णार्तिकी, उदयप्रताप व श्याम सिन्हा को उनके घरों से गिरफ्तार कर लिया। इन सभी अभियुक्तों के घर से पुलिस ने नकली नोट भी बरामद किये, जिन्हें वह लोग अपने-अपने ग्राहकों को सप्लाई करने के लिये राजेश से लेकर रखे थे।

एस.टी.एफ. टीम एक तरीके से नकली नोटों का कारोबार करने वाले पूरे गैंग को अपने गिरफ्त में ले चुकी थी, परंतु एक मुख्य समस्या अभी भी उसके सामने मुंह बाये खड़ी थी। वह समस्या थी, नकली नोटों का इनके पास आने का मुख्य स्रोत। सभी अभियुक्त यह तो बता रहे थे कि वह सभी नकली नोट राजेश से ही लेते हैं। लेकिन राजेश यह नोट कहां से और कैसे लाता था, यह किसी को नहीं मालूम था। इधर राजेश से पूछताछ में राजेश एक नया ही राग अलाप रहा था। वह कह रहा था, "नेपाल से एक बार एक आदमी आकर उसे पांच लाख रुपया दे गया था। बस, उन्हीं रुपयों को उसने थोड़ा-थोड़ा करके सबको दे दिया था।"

पुलिस अधिकारियों के गले राजेश की यह बात किसी तरह नहीं उतर रही थी। क्योंकि राजेश न तो उस नेपालवाले व्यक्ति का नाम बता पा रहा था, न ही उसका पता-ठिकाना।

अब पुलिस ने राजेश के घर की दोबारा तलाशी लेने का विचार बनाया। क्योंकि पहली बार उसके घर की तलाशी में पुलिस को कुछ भी हाथ नहीं लगा था। पुलिस की गाड़ियां एक बार फिर राजेश के घर की ओर दौड़ पड़ीं। आखिर इस बार पुलिस को तलाशी में सफलता मिल गयी, जब राजेश के घर की दोछत्ती में उन्हें एक तहखाना मिल गया। इस तहखाने में ही नकली नोट बनाने की फैक्ट्री राजेश ने लगा रखी थी। इसमें एक कलर कंप्यूटर, इम्पोर्टेड कलर फोटोग्राफी मशीन, हजारों की संख्या में एक तरह छपे पांच सौ व सौ के नोटों की कटिंग समेत छपाई में प्रयोग आनेवाले अन्य सैकड़ों उपकरण भी बरामद हो गये।

राजेश के घर में सामान बरामद होते ही यह बात भी साफ हो गयी कि राजेश ही जहां इस गैंग का मुखिया था, वहीं नोटों की छपाई भी खुद ही करता था। बाकी लोग उसके कमीशन एजेंट थे, जिनको तीस प्रतिशत कमीशन पर वह नो[...] उपलब्ध कराता था।

अगले दिन हरीश कुमार [...] वाराणसी के पत्रकारों की एक संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस बुलाकर, ज[...] इस काले-कारनामे का भंडाफो[...] किया, तो प्रेस कांफ्रेस में मौजूद प्रेस फोटोग्राफरों में एक हलचल-सी मच गयी।

दरअसल, श्याम सिन्हा, जो इस गैंग के सक्रिय सदस्य के रूप में गिरफ्तार हुआ था, वह वाराणसी के फोटोग्राफी क्षेत्र का एक जाना-पहचाना नाम था। उसके सिखाये कई लड़के इस समय प्रेस फोटोग्राफर थे। इसके अलावा वह भोजपुरी फिल्मों का प्रसिद्ध कलाकार भी था। 'राजद्रोही,' 'बैरी सजना' 'दुल्हन बनी मोर बहिनिया' जैसी कई भोजपुरी फिल्मों में सिन्हा ने प्रभावी भूमिका निभायी थी। अब ऐसे व्यक्ति की गिरफ्तारी, वह भी नकली नोटों जैसे देशद्रोही अपराध में, सचमुच विश्वास करने जैसी बात नहीं थी। लेकिन सच्चाई तो सच्चाई होती है। आज के जमाने में जब सारी दुनिया समाज, नैतिकता और संस्कारों की होली जलाते हुए पैसे के पीछे भाग रही है, तो भला उसमें श्याम सिन्हा जैसे लोगों का धन के लोभ में अपराध के दलदल में घुस जाना कौन-सी बड़ी बात है।

सभी अभियुक्तों से पूछताछ तथा कैंट थाने के सब इंसपेक्टर [...] भृगुनाथ मिश्रा की विवेचना के आधार पर नकली नोटों का कारोबार करनेवाले इस गैंग की जो कहानी उभरकर सामने आयी, उसके अनुसार, राजेश ही इसका मुख्य सूत्रधार था। बाकी लोग तो उसके हमराह बनते गये थे।

राजेश विश्वकर्मा मूलतः जिला मऊ के थाना घोषी के रामपुरा गांव का रहनेवाला था। वह मात्र इंटर तक पढ़ा था। उसके पिता बालरू[...] विश्वकर्मा की घोषी में एक छोटी-सी कारपेंटर की दुकान थी। उसके अन्[...] दो भाई रामपलट व रामलोट भी फर्नीचर की दुकान खोले हुए थे। तीसरा भाई रामवृक्ष वाराणसी के बीरू बलैया में एक खराद के कारखाने में काम करता था।

राजेश बचपन से ही महात्वाकांक्षी था। उसके सपनों का महल इतना ऊंचा था कि वह जब किसी नौजवान को महंगी गाड़ी से आलीशान मकान से निकलते देखता, तो उसका मन ऐसी कल्पनाओं में विचरण करने लगता, जब वह भी ठाट-बाट से आलीशान बंगले में रहेगा, नई लकदक कार में घूमेगा, बड़े-बड़े लोग उससे मिलने को तरसेंगे। यानी वह जल्दी से जल्दी रइसों की दुनिया में अपनी गिनती करवाने की सोचता था।

कहावत है, औकात से ऊंची उड़ान उड़नेवाले परिंदे को पलभर में रास्ता भटकते देर नहीं लगती। सन्, 1996 में राजेश के पिता ने आजमगढ़ के आई.टी.आई. कालेज में राजेश का यह सोचकर दाखिला करा दिया था कि वह कोई डिप्लोमा वगैरह कर लेगा, तो इधर-उधर भागदौड़ करके किसी फर्म में इसकी नौकरी लग जायेगी। इस तरह राजेश आजमगढ़ में कालेज के हास्टल में ही रहकर ढलाई मशीन का कोर्स करने लगा। कुछ दिनों बाद राजेश कालेज के अतिरिक्त एक ढलाई कारखाने में पार्ट टाइम एक-दो घंटे काम भी करने लगा।

इसी कारखाने में एक दिन राजेश की मुलाकात अब्बास नाम के व्यक्ति से हुई। दरअसल अब्बास, संजय दुबे नाम के व्यक्ति के साथ मिलकर पांच रुपए के नकली सिक्के बनाने व बेचने का कारोबार करता था। राजेश से जब उसकी मित्रता हुई, तो राजेश को पैसे का लालच देकर उसने उसको अपने धंधे में शामिल कर लिया। शामिल क्या किया, यों समझिए कि राजेश अपनी हसरतों के चक्कर में खुद ही इस धंधे में उतर पड़ा। पांच रुपये के सिक्के ढलने के बाद बिलकुल असली सिक्कों का रूप ले लेते थे। यह लोग चार रुपये प्रति सिक्के के हिसाब से थोक दुकानदारों को आसानी से अपना माल सप्लाई करने लगे। राजेश को इस काम में कुछ ही दिनों में इतना रस आने लगा कि वह हर दूसरे-तीसरे दिन गोरखपुर तक सिक्के बेचने जाने लगा।

लगभग दो साल तक राजेश निर्बाध गति से सिक्कों का कारोबार करता रहा। इससे उसने हजारों की कमाई भी कर ली। परंतु सन्, 1998 के आखिर में एक दिन वह गोरखपुर की कैंट पुलिस द्वारा बस से उतरते समय रंगे हाथ नकली सिक्कों के साथ पकड़ लिया गया। उसके साथ संजय दुबे भी पकड़ा गया था। संजय दुबे इसके पहले भी आदिल नामक अपराधी के साथ तिहाड़ जेल में बंद रह चुका था।

लगभग छह महीने बाद राजेश जब जमानत पर छूटकर बाहर आया, तो जेल में एक से एक अपराधियों के साथ बिताये दिनों की रंगत उस पर पूरी तरह छा चुकी थी। बाहर आते ही उसका खुरपेंची दिमाग फिर कुलबुलाने लगा आखिर एक दिन वह फिर अब्बास को ढूंढ़ते हुए आजमगढ़ जा पहुंचा। यहां अब्बास उसे मिला, तो उसने राजेश को यह बताकर मायूस कर दिया कि तुम्हारे और संजय के पकड़े जाने के बाद ही मैंने सिक्कों की ढलाई का काम पूरी तरह बंद कर दिया है।

जाहिर था कि अब राजेश के लिए अब्बास के पास कुछ नहीं था। वह निराश मन से दूसरे दिन गोरखपुर लौट गया। राजेश वैसे अखबार व पत्रिकाएं बहुत कम या कभी-कभार ही पढ़ता था। परंतु उस दिन गोरखपुर जानेवाली बस जरा लेट थी, तो वह टहलता हुआ, बस स्टाप पर बने बुक-स्टाल तक आ गया। स्टाल पर तरह-तरह की पत्रिकाएं व अखबार सजे थे। राजेश ने सरसरी निगाह से एक तरफ से सबको देखना शुरू किया, तो एकाएक उसकी नजर एक अखबार की हेडलाइन पर अटक गयी। निगाह अटक क्या गयी, राजेश को उस खबर में अपना भविष्य दिखाई देने लगा।

दरअसल, अखबार में नकली नोटों का धंधा करनेवाले किसी गिरोह के पकड़े जाने की खबर छपी थी, जिनके बारे में छपा था कि पकड़े गये अभियुक्त कंप्यूटर के माध्यम से हू-ब-हू पांच सौ व सौ के नोटों का प्रिंट उतारकर उनकी फोटोकापी करके फिर नंबर डालकर बाजार में बड़े पैमाने पर नकली नोट सप्लाई करते थे।

बस, एकाएक राजेश के खुराफाती दिमाग में नकली नोटोंवाली बात घर कर गयी। उसने अखबार खरीदकर पूरी खबर कई बार ध्यान से पढ़ी और तय किया कि अब वह भी कंप्यूटर सीखकर नकली नोटों का कारोबार करेगा और जल्दी ही लाखों-करोड़ों कमायेगा।

दूसरे ही दिन राजेश ने गोरखपुर के मानस मंदिर के पास स्थित शकुंतला प्रेस में प्रिंटिंग प्रेस का काम सीखना शुरू कर दिया। वहां एक कंप्यूटर इंस्टीट्यूट में कंप्यूटर कोर्स भी करने लगा।

पूरे एक साल तक अथक परिश्रम करके राजेश ने कंप्यूटर प्रिंटिंग का काम सीखकर पूरी दक्षता हासिल कर ली। इंस्टीट्यूट के कंप्यूटर पर



अभियुक्त उदय प्रताप पांडे

ही उसने एक-दो बार सौ के नोट का प्रिंट निकालकर देखा भी, जो हू-ब-हू असली नोट जैसा ही था।

कंप्यूटर पर नोट बनाने की पूरी प्रक्रिया सीखने के बाद राजेश इस मुकाम तक पहुंच गया कि अब वह कभी भी अपने इस हुनर से हजारों-लाखों रुपए के नोट बना सकता था। लेकिन लाखों-करोड़ों तक पहुंचने की उसकी इस मंजिल की एक प्रमुख समस्या अभी बाकी थी। वह समस्या थी, एक कलर कंप्यूटर, कलर फोटोकापी मशीन तथा कुछ अन्य उपकरणों की। क्योंकि इनके बगैर वह नोट नहीं बना सकता था।

और इन सबको खरीदने के लिए कम से कम दो लाख रुपये की जरूरत थी, जिसकी व्यवस्था के चक्कर में उसने नाते-रिश्तेदार, दोस्त, सबके यहां दौड़ लगायी। लेकिन कहीं बात न बनी। आखिर दो लाख रुपए कोई छोटी रकम तो होती नहीं, जो राजेश के मांगते ही कोई उसके हाथ पर धर देता।

राजेश का तीसरे नंबर का भाई रामवृक्ष वाराणसी के जिस मोहल्ले में रहता था, उसी मोहल्ले में फोटोग्राफर श्याम सिन्हा भी रहता था। श्याम सिन्हा एक मंझा हुआ फोटोग्राफर तो था ही, इसके साथ-साथ उसने भोजपुरी भाषा में बननेवाली लगभग एक दर्जन फिल्मों में छायांकन का काम भी किया था। 'राजद्रोही' और 'बैरी सजना' जैसी प्रसिद्ध फिल्मों में श्याम सिन्हा की ही सिनेमेटोग्राफी थी। भोजपुरी की बहुचर्चित फिल्म 'दुल्हन बनी मोर बहिनिया' में तो श्याम सिन्हा ने एक निगेटिव एक्टर का रोल भी किया था। वाराणसी जनपद में श्याम सिन्हा की फोटोग्राफी के हुनर के जलवे की रूप रेखा बयान करने के लिए इतना ही काफी है कि वाराणसी के पचास प्रतिशत फोटोग्राफर उसके शिष्यों की श्रेणी में आते हैं।

राजेश के भाई रामवृक्ष की श्याम सिन्हा से अच्छी यारी-दोस्ती थी। राजेश वाराणसी अपने भाई के पास आता-जाता रहता था। इस नाते श्याम से भी उसकी जान-पहचान हो गयी थी। इधर गोरखपुर में राजेश को जब कहीं से दो लाख रुपए का इंतजाम नहीं हुआ, तो वाराणसी में अपने भाई के पास चला आया। वाराणसी में राजेश के पास कोई काम-धंधा तो था नहीं, इसलिए वह अक्सर दोपहर में श्याम सिन्हा के स्टूडियो पर आ जाता और वहीं श्याम के साथ बैठकर गप्पें लड़ाता था।

एक दिन की बात है, दोपहर का समय था। राजेश और श्याम एक साथ बैठे टी.वी. पर कोई भोजपुरी फिल्म देख रहे थे। तभी श्याम ने राजेश से मायूसी से कहा, "यार राजेश, यह किस्मत भी बड़ी अजीब चीज होती है। अब देखो न, यह फिल्म जो हम लोग देख रहे हैं, इसका निर्माता मेरे सामने नया-नया फिल्मी दुनिया में आया था। लेकिन

उसके पास पैसों का भंडार है। आज वह फिल्म निर्माता बना बैठा है और एक मैं हूं, जो वर्षों से फिल्मी दुनिया में धक्के खा रहा हूं और अपना कोई स्थान बनाने के लिए आज भी तरस रहा हूं।" अपने हाथ की लकीरों को खुद ही देखता हुआ वह कहता रहा, "काश! मेरे पास भी आज दस-बीस लाख रुपए होते, तो ऐसी धुआंधार फिल्म बनाता, जो पूर्वांचल में हंगामा मचा देती।"

भोजपुरी फिल्मों में चूंकि ज्यादातर पटकथाएं गांव-देहात पर आधारित तैयार की जाती हैं, इसलिए इनके कलाकार भी सस्ते होते हैं। लिहाजा, बीस-पच्चीस लाख में ही भोजपुरी फिल्म तैयार करना कोई बड़ी बात नहीं है। श्याम सिन्हा की फिल्म बनाने की इच्छा जानकर राजेश उस समय तो कुछ नहीं बोला, लेकिन अगले दिन उसकी दुकान पर आकर उसने अपना नकली नोटोंवाला प्रपोजल सीधे सीधे उसके सामने रखते हुए कहा, "यदि तुम दो लाख रुपये का इंतजाम करके मेरी जरूरत का सामान मुझे दिलवा दो, तो मैं साल छह महीने में ही तुमको लाखों-करोड़ों का आदमी बना सकता हूं। फिर चाहे तुम भोजपुरी फिल्म बनाना, चाहे हिंदी।"

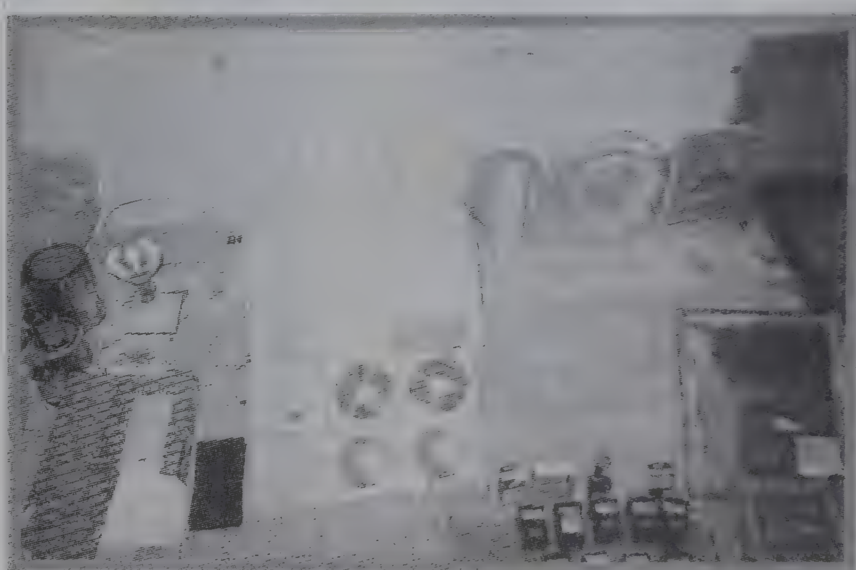
कहते हैं, आदमी की इच्छाएं ही कभी-कभी उसके पतन का कारण बन बैठती हैं। श्याम भी अपनी फिल्म निर्माता बनने की चाहत में इतना डूब गया कि बगैर कुछ सोचे-समझे, राजेश के नकली नोटोंवाले कारोबार में शामिल हो गया। इस काम में उसने एक अन्य दोस्त कृष्णार्तिकी को भी शामिल कर लिया। कृष्णार्तिकी मूलतः पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले का रहनेवाला था। वह वाराणसी के नजदीक ही मुगसराय स्टेशन पर रेलवे में अधिकारी था और मुगलसराय में ही 55/2, रविनगर में रहता था।

कुछ ही दिनों में श्याम ने अपना एक प्लाट बेच दिया और दो लाख रुपये का बंदोबस्त किया। फिर राजेश के लिए कलर कंप्यूटर, कलर फोटाकापी मशीन समेत नोट छापने के काम आनेवाले सभी उपकरण आदि खरीद दिये।

सामान खरीदने के बाद राजेश ने सिगरा थाना क्षेत्र के चांदुआ मोहल्ले में दो कमरों का एक फ्लैट ले लिया। उस फ्लैट की छत जरा ऊंची थी, इसलिए उसने अंदरवाले कमरे में एक दोछत्ती बनवाकर उसी दोछत्ती के अंदर अपना नोट छापने का पूरा प्लांट लगा लिया।

सब कुछ दुरुस्त करने के बाद राजेश ने पहली बार पांच-पांच सौ के नोटों के पचास नोट छापे, जिनमें दस-दस नोट उसने श्याम सिन्हा व कृष्णार्तिकी को दिये। बाकी स्वयं रख लिये। फिर तीनों ने मिलकर बड़ी आसानी से एक-एक करके सारे नोट बाजार में खपा दिये।

पहली बार ही इतनी आसानी से नोट चल गये कि इन लोगों के हौसले आसमान छूने लगे। अब तो पलक झपकते ही उन्हें लाखों-करोड़ों के अपने ख्वाब पूरे होते नजर आने लगे।



नकली नोट छापनेवाला कलर प्रिंटर तथा अन्य उपकरण

धीरे-धीरे इन लोगों ने अपने गिरोह में कोयला मार्केट निवासी उदय प्रताप पांडे, अर्दली बाजार निवासी निजामुद्दीन व उसके लड़के इखलाक को भी शामिल कर लिया, जिन्हें यह लोग तीस प्रतिशत कमीशन पर नोट देने लगे।



लेखक
रंजय सिंह

हां, इस पर भी राजेश ने इतनी सावधानी अवश्य बरती थी कि उसने अपने घर का पता श्याम सिन्हा व कृष्णार्तिकी के अलावा किसी को नहीं दिया। जिससे मिलना होता था, उसको वह श्याम या कृष्णार्तिकी के माध्यम से निश्चित स्थान पर बुलवा लेता और वहीं काम की बातचीत करके अपने घर चला जाता था। दो-चार महीने में ही इन लोगों ने उत्तर प्रदेश, बिहार तथा कोलकाता आदि में घूम-घूमकर लगभग दस लाख रुपये के नकली नोट बाजार में खपा दिये। यह शायद राजेश के हाथों की सफाई या उसका हुनर ही था कि कभी भी किसी नोट लेनेवाले दुकानदार ने इनके नोट को शक की निगाह से नहीं देखा। इसके अलावा राजेश एक सावधानी यह भी रखता था कि प्रत्येक गड्डी में सभी नोटों के नंबर अलग-अलग डालता था।

धीरे-धीरे इनके नेटवर्क का दायरा विस्तृत होता गया। बाहर के लोग भी इनके पास नोट लेने आने लगे। बाहर से आनेवाले हर व्यक्ति की डीलिंग कृष्णार्तिकी व श्याम सिन्हा ही करते थे। दरअसल, कृष्णार्तिकी मुगलसराय स्टेशन पर ही कार्य करता था, इस नाते वह स्टेशन पर ही नोटों की अदला-बदली कर लेता और किसी को शक भी न होता। मुगलसराय स्टेशन पर सभी उसको जानते ही थे। लिहाजा, उसका सामान भी कभी चेक नहीं होता था। वह पार्टी को ट्रेन में बैठाकर अटैची पकड़ा देता था।

जबकि निजामुद्दीन व उसका लड़का इखलाक लखनऊ, रायबरेली व उसके आसपास के जनपदों में जाकर अपने नाते-रिश्तेदारों से मिलते और उनको लालच देकर नकली नोटों का ग्राहक बना लेते।

राजेश ने अपनी तरफ से सभी सदस्यों को एक-एक मोबाइल फोन भी दे रखा था तथा हिदायत दी थी कि वे लोग पहले खुद पार्टी से बात करके देख लें कि पार्टी विश्वसनीय है या नहीं। इसके बाद ही मोबाइल पर संपर्क करके मुझे बता दें कि कितने नोटों का इंतजाम करना है।

इखलाक व निजामुद्दीन से तो राजेश हमेशा स्टेशन, होटल या बस स्टाप पर ही मिलता था और वहीं पर डिमांड के अनुसार, नोटों की अदला-बदली कर लेता था।

एक तरह से यह गिरोह अब तक लगभग पचास लाख रुपयों के नकली नोट बाजार में चलाने के लिए अपने एजेंटों को सौंप चुका था और न जाने कितने नोटों की नकली करेंसी अभी बाजार में चलाता रहता, लेकिन बधाई है एस.टी.एफ. के उस मुखबिर को, जो लखनऊ में उसी मोहल्ले में रहता था, जहां इखलाक वाराणसी से आकर अपने रिश्तेदार के यहां रुकता था। उसी रिश्तेदार के साथ बैठकर एक दिन उस मुखबिर का पीने-पिलाने का दौर चल रहा था, उसी दौरान रिश्तेदार ने नशे की झोंके में उससे यह बात बता दी थी कि वाराणसी में उसका एक रिश्तेदार है, जो पैंतीस प्रतिशत कमीशन पर एकदम असली नोट की तरह नकली नोट सप्लाई करता है। अगर तुम्हें लेना हो, तो बताना।

अगले दिन उसी मुखबिर ने यह सूचना एस.टी.एफ. के एडिशनल एस.पी. हरीश कुमार तक पहुंचा दी और फिर एस.टी.एफ. की तेज तर्रार टीम ने योजना बनाकर पूरे गिरोह को जेल की सलाखों के पीछे पहुंचा दिया। ●

(कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित)

हिमाचल प्रदेश की

आभूषण-प्रेमी गद्दी महिलाएं



आभूषणों से लदी एक गद्दी बालाः मनोरम सौंदर्य

हिमाच्छादित पहाड़ियां और अनूठी प्राकृतिक सम्पदा समेटे हिमाचल प्रदेश के चम्बा जिले में गद्दी लोग रहते हैं। चम्बा जिले की भरमौर का गद्दैरन क्षेत्र इनका स्थाई स्थान है।

गद्दी महिलाएं अपने गोरे रंग, सुडौल शरीर और अपूर्व सौंदर्य के कारण चित्रकारों की प्रेरणा रही हैं। अनेक चित्रकारों ने इनकी तस्वीर बनायी है। कांगड़ा के कलाप्रिय राजा संसारचन्द्र ने तो 'नौरवी' गद्दण पर मुग्ध होकर उससे विवाह रचा लिया था। गद्दणें चोली-कुरता पहनती हैं। कमर में ऊन का बना लम्बा रस्सीनुमा डोरा बांधे रहती हैं। गहने पहनना उन्हें बहुत पसंद हैं। पारम्परिक वस्त्रों तथा जेवरों से सजी-संवरी ये अपनी मासूमियत बिखेरती बड़ी मोहक लगती हैं। माथे या सिर पर प्रयुक्त होनेवाले आभूषणों में चौंक अति लोकप्रिय आभूषण है। इसकी बनावट प्याले जैसी होती है। यह औंधे ढंग से चोटी के बिल्कुल मध्य में एक जंजीर के साथ केशों के सहारे पहना जाता है। यह आमतौर पर चांदी का बना होता है तथा इसका भार एक तोले के लगभग होता है। मुख्य चौंके के साथ-साथ 2 छोटे-छोटे चौंक भी कानों के निकट सिर पर पहने जाते हैं। इन्हें गद्दी महिलाएं सुहाग का चिह्न मानती हैं।

ललाट की शोभा बढ़ानेवाले आभूषण को गद्दी 'चीरी' के नाम से पुकारते हैं। वैसे इसे 'श्रृंगार पट्टी' अथवा 'टीका' भी कहा जाता है। यह आभूषण चांदी का बना होता है। इसका वजन 6 से 8 तोले तक होता है। गद्दी महिलाएं नाक में नथ, बुलाक, लौंग, कील का प्रयोग करती हैं, जो सोने की बनी होती हैं। कानों के आभूषणों में सोने की 'बालियां' 1 से 4 तोले तक की होती हैं। 'फेर' यानी चांदी के 4 से 6 छल्ले प्रत्येक कान के ऊपरी भाग में पहने जाते हैं। इसका वजन 6 से 8 तोले तक होता है। बुन्दे या टॉप्स 1 या 2 तोले सोने के बने होते हैं। 'कांतेयालो' 8 तोले चांदी का जेवर होता है। 'झुमके' चांदी के 6 से 8 तोले तक के होते हैं, जो कानों में पहने जाते हैं, इनके साथ जंजीर लगी होती है।

'कांटे', 'लिटकनी', 'टुगनी' और 'कर्णफूल' कान के अन्य गहने हैं, जो वजन में 1 से 2 तोले तक होते हैं। ये सभी आभूषण चांदी के होते हैं।

इनमें 'जोमाल' (जयमाला) 20 से 30 तोले चांदी की बनी होती है और गले में डाली जाती है। दूसरा 30 से 40 तोले का 'चन्दनहार' चांदी का बना होता है। गले के अन्य आभूषणों में 'रालु', 'नालियां', 'मंज', 'नांदी' 1 से 2 तोले चांदी की होती हैं। गले का एक अन्य आभूषण 'कापूरी माला' है। इसे गद्दी लोग लाहौल घाटी से लाते हैं। यह रंग-बिरंगे पत्थर जैसे कठोर मनकों की माला होती हैं।

इनमें 'कंगन' 'जागरू', 'चूड़ियां', 'अरसी' 'छल्ला' और 'दस्तपंजा' शामिल हैं। कंगन चांदी के 8 से 10 तोले वजनी होते हैं। ये अन्दर से खोखले होते हैं। 'गाजरू' भी कंगन से मिलते-जुलते हैं, पर ठोस होते हैं। ये 15 से 30 तोले चांदी के बने होते हैं। इनके सिरों पर शेर का मुख बना होता है। चूड़ियां भी चांदी की बनी होती हैं तथा प्रत्येक चूड़ी का वजन 4 तोले के लगभग होता है। 'अरसी छल्ला' चांदी की अंगूठियां होती हैं। ये लगभग 2 तोले की होती हैं। इन पर त्रिशूल के आकार का दर्पण लगा होता है। 'दस्तपंजा' 2 से 3 तोले सोने की बनी जंजीरें होती हैं, जो हाथ के पंजे पर पहनी जाती हैं।

इनके अतिरिक्त 'कुल्लु', 'औतार', 'मोगलु', 'घुमकड़' 'तोरे' या पॉजेब आदि छोटे-छोटे आभूषण भी गद्दी स्त्रियों द्वारा बड़े शौक से इस्तेमाल में लाये जाते हैं। इतने भारी जेवर कामकाजी गद्दी महिलाएं हर समय नहीं पहनती हैं, पर मेलों, विवाह आदि अवसरों पर उनका सारा शरीर गहनों से लकदक करता रहता है। इन आभूषणों से सजी-संवरी ये महिलाएं जब नृत्य करती हैं, तो देखनेवाले मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। ●

— अशोक सरीन

साबरमती एक्सप्रेस कांड



आखिर सच क्या है

– के.एम. श्रीवास्तव

साबरमती एक्सप्रेस के जिन डिब्बों में राम सेवक सवार थे, उन्हीं पर हमला किया गया, इससे लगता है कि यह पूर्वनियोजित था। क्योंकि इस घटना के बाद पूरे देश में दंगा तो फैलना ही था और हुआ भी यही

सत्ताईस फरवरी, 2002। बुधवार का दिन। सुबह के लगभग आठ बज रहे थे। फैजाबाद से चलकर अहमदाबाद पहुंचनेवाली 9168 डाउन साबरमती एक्सप्रेस, जिसमें ढाई हजार से ज्यादा आदमी यात्रा कर रहे थे, चार घंटे विलंब से गोधरा स्टेशन पर पहुंची। अभी तक सब कुछ सामान्य था। साबरमती एक्सप्रेस में आम दिनों की अपेक्षा आज ज्यादा भीड़ थी, क्योंकि उसी ट्रेन से अयोध्या में बननेवाले राममंदिर के सिलसिले में आयोजित पूर्णाहुति कार्यक्रम में भाग लेकर राम सेवक भी लौट रहे थे।

सुबह का समय था। कुछ लोग लेटे थे, तो कुछ लोग अलसाये थे। कुछ अपनी सीटों पर बैठे थे। कुछ लोग चाय-नाश्ता के जुगाड़ में खिड़कियों से ताक-झांककर रहे थे। एक राम सेवक, जिसके कंधे से एक थैला लटक रहा था, प्लेटफार्म पर उतरकर टी स्टाल से चाय पीने लगा। उसी समय

एक मुस्लिम युवक ने पास आ
उसकी वेशभूषा पर कटाक्ष कि
उससे राम सेवक को बुरा
लगा, पर गुस्सा पीकर
समझाने लगा। लेकिन वह यु
समझने के बजाय उससे उल
ही गया। देखते-देखते और
कई आदमी उस युवक के
आकर राम सेवक से उलझ ग
राम सेवक से उलझते देख
कुछ राम सेवक भी नीचे उ
आये। इस बात का राम सेवक
विरोध किया, तो उनसे बहस





ट्रेन अग्निकांड के बाद शुरू हुई लाशों की गिनती

अहमदाबाद में दंगाइयों का उपद्रव



थी। कुछ पत्थर भी चलाने लगे, विशेषकर बोगी नंबर एस-सिक्स पर, जिसमें राम सेवक ही सवार थे। तभी कुछ लोग अचानक प्लेटफार्म पर आकर राम सेवकों के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। ट्रेन छूटने ही वाली थी। जिन्हें गोधरा उतरना था, वह तो उतर गये थे। बाकी सवारियों को लेकर ट्रेन फिर अपने गंतव्य की ओर आगे बढ़ी। लेकिन जैसे ही गोधरा स्टेशन के आउटर सिग्नल तक

(शेष पृष्ठ 94 पर)

उन्नीसवीं सदी का ठगजाल

– बाला दुबे

एक लंबे रूमाल के एक छोर पर मोटे तांबे का पैसा बंधा रहता है और शिकार के पीछे चुपचाप खड़ा ठग फुर्ती से वह रूमाल उसके गले में ऐसा डालता है कि तांबे का पैसा उसके टेंटुए में लग जाता है और जरा-सा झटका देते ही आदमी का दम घुट जाता है।





रकपुर छावनी की 34वीं बंगाल नेटिव इन्फेंट्री के कर्नल विटले के दफ्तर में उसी पलटन के सूबेदार मेजर भवानीदीन तिवारी कह रहे थे, "हुजूर, अब तक पांच सिपाही जो छुट्टी पर गये थे, वे तो पलटन में लौटे हैं और न ही अपने घर पहुंच पाये हैं। जरूर वह ी ठगों के शिकार हो गये हैं।"

कर्नल बोला, "यह ठग क्या चीज है?"

तब सूबेदार मेजर तिवारी ने उन्हें बताया कि ठग एक तरह से लुटेरे यारों का गिरोह है, जो दोस्त बनकर दगा करते हैं और अपने शिकार गले में रूमाल के छोर में बंधे मोटे तांबे के पैसे से गला घोंटकर मार नते हैं। हिंदुस्तान में ये मधुमक्खियों की तरह फैले हुए हैं। वैसे ठगों का र्न चौदहवीं सदी से पाया जाता है और ख्वाह यह हिंदू हों या लमान, सभी काली माता या भवानी को मानते हैं। कहते हैं कि माता ानी ने जब उस राक्षस का सिर काटा था, तो जमीन पर रक्त की ननी बूंदें पड़ी थीं, उनमें से उतने ही राक्षस तत्काल प्रकट हो गये थे। माता भवानी ने अपने दो गणों को आदेश दिया था कि उन राक्षसों हथियार से न मारें, बल्कि उनका गला घोंट दें। जिससे रक्त की कोई न टपक सके। तब से माता भवानी के माननेवाले यह ठग भी अपने कार को गला घोंटकर ही मारते हैं। एक लंबे रूमाल के एक छोर पर टे तांबे का पैसा बंधा रहता है और शिकार के पीछे चुपचाप खड़ा ठग फुर्ती से वह रूमाल उसके गले में ऐसा डालता है कि तांबे का पैसा उसके टेंटुए में लग जाता है और जरा-सा झटका देते ही आदमी का दम घुट जाता है।

यह सुनकर कर्नल विटले चौंका और उसने यह रिपोर्ट कलकत्ते स्थित गनर्वर जनरल लार्ड विलियम बैंटिंक के दफ्तर में भेज दी।

जब खोजबीन की गयी, तो पता चला कि ठगों का जाल पूरे हिंदुस्तान में फैला हुआ है, जो यात्रियों को भरोसे में लेकर एक निर्धारित समय पर मार डालते हैं।

लार्ड बैंटिक ने सिविल सर्विस के मिस्टर एफ.सी. स्मिथ को यह काम सौंपा। मिस्टर स्मिथ ने मेजर स्लीमेन को अपना प्रमुख सहायक बनाया और वर्तमान मध्य प्रदेश के सागर नगर में 'एंटी ठगी ऑर्गेनाइजेशन' महकमा खोल दिया। मेजर स्लीमेन का सहायक कैप्टन मीडोज टेलर बना। वैसे बाद में जब इस संस्था का विस्तार हुआ, तो उसमें प्रमुख कार्यकर्ता बने मिस्टर मार्टिन, जार्ज स्टॉकवेल, चार्ल्स फ्रेजर, जार्ज क्लार्क और विलकिंसन। फौजी अफसरों के जो हाकिम बाहर जाकर काम करते थे, उनमें प्रमुख हुए मेजर जनरल कबन और फ्रेजर, कर्नल लो, कर्नल स्टीवर्ट, स्पीअर्स, कॉलफील्ड और सदरलैंड। जिन्होंने ठगों का जाल तोड़ने में सही मायने में काम किया, वह थे मेजर स्लीमेन, मेजर

(शेष पृष्ठ 99 पर)



नक्सलियों के जीवन का खूबसूरत चित्रण

लाल सलाम

– के.एम. श्रीवास्तव



कामरेड चंद्रका की सशक्त भूमिका में नंदिता दास

आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र की सीमा से लगा हुआ ए विशाल क्षेत्र है भंवरागढ़। भंवरागढ़ तालुका गढ़चिरौली तहत आता है। यहां दूर-दूर तक फैले घने जंगलों नक्सलवादियों की गतिविधियां चलती ही रहती हैं। लेकिन उस दिन कु अजीब-सी हलचल थी उस जंगल में। एक सांवली-सी लड़की हाथ बंदूक लिए हरे रंग की कमीज और पैंट पहने जंगल में तेजी से भाग चली जा रही थी। उसके पीछे उसके साथी चारों ओर चौकन्नी निगाहों इधर-उधर देखते हुए भाग रहे थे। कुछ दूर जाने के बाद सभी लोग रु जाते हैं।

उस घने जंगल में तेजी से भागती हुई लड़की थी रूपी। रूपी अभिने नंदिता दास का नाम रखा गया है, जो नक्सलियों के वास्तविक जीवन प आधारित फिल्म 'लाल सलाम' में नायिका की भूमिका निभा रही हैं।

फिल्म 'लाल सलाम' आदिवासियों से जुड़ी पृष्ठभूमि पर आधारित कन्ना मड़ावी (शरद कपूर) महाराष्ट्र राज्य के नागपुर मेडिकल कालेज एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई कर रहा है। हमेशा की तरह इस बार भी अपने गांव कांदोड़ी लौटता है। यहां उसकी प्रेमिका रूपी (नंदिता दा उसका बेसब्री से इंतजार कर रही है। रूपी के जीवन का सपना है कन् और कन्ना का उद्देश्य है अपनी डाक्टरी की पढ़ाई करना। वह चाहता कि अपनी डाक्टरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद अपने गांव में ही रहक लोगों का इलाज करे। क्योंकि गांव के हालात देखकर लगने लगा थ गांववालों को उसकी बहुत जरूरत है। आदिवासियों के जीवन को अच्छी तरह जानता-समझता था। वह इस बात को महसूस करता था

(शेष पृष्ठ 104 प



अपमान का बदला लेते हुए नक्सलवादियों का एक दृश्य



रूपी (नंदिता दास) और कन्ना महावी (शरद कपूर): प्रेम की पींगे बढ़ाते हुए

मैं हाशिवरात्रि हिमाचल प्रदेश के मंडी नगर में बड़ी धूमधाम से मनायी जाती है। यह भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाई जाती है। यह उत्सव सात दिनों तक चलता है। इन दिनों मंडी शहर में बड़ी चहल-पहल रहती है। देश-विदेश से पर्यटक अनूठे देवमिलन पर्व शिवरात्रि को देखने मंडी आते हैं।

जिला मंडी 3950 वर्ग किलोमीटर में फैला हरियाली का पर्याय है। इस जिले में लगभग 500 प्राचीन मंदिर हैं, लेकिन अकेली मंडी तहसील में ही 50 मंदिर हैं। इसी कारण इसे मंदिरों का नगर और छोटी काशी भी कहते हैं।

मंडी में शिवरात्रि मनाने के पीछे कई कारण बताए जाते हैं। ऐतिहासिक ग्रंथों पर नजर डाली जाए, तो पता चलता है कि मंडी में शिवरात्रि की शुरुआत सन् 1788 से हुई थी। उन दिनों मंडी में राजा



राजमाधव की पालकी उठाए कहार शिवरात्रि के [illegible]



राजमाधव की मूर्ति की वंदना करते श्रद्धालु

देवमिलन का पर्व है: मंडी की शिवरात्रि

– अशोक सरीन

गुरु गोविंद सिंह की कृपा तथा आशीर्वाद प्राप्त मंडी नगर में महाशिवरात्रि को विभिन्न गांवों से आई देवताओं की पालकियां जब झुक-झुककर राजमाधव से मिलन करती हैं, तो देवलोक-सा दृश्य उपस्थित हो जाता है

रमा सेन अपनी बहादुरी और लेरी के लिए लोकप्रिय थे। उनके क बेटा था ईश्वरी सेन। राजा रमा सेन जब तक जीवित थे, कसी ने उनकी रियासत की ओर ांख नहीं उठाई। उनकी अचानक त्यु हो जाने से रियासत पर बाहरी ाक्रमण का खतरा मंडराने लगा। ुवराज ईश्वरी सेन की आयु उस मय मात्र सात वर्ष थी। पर ल्पायु में ही उन्हें राजगद्दी पर बैठा दिया गया। इस अवसर पर कांगड़ा े पराक्रमी व महत्वाकांक्षी राजा ंसारचंद ने लाभ उठाया और नन्हे ाजकुमार ईश्वरी सेन को कैद कर लेया।

महाराजा संसारचंद की योजना ालक की हत्या कर मंडी रियासत र अधिकार करने की थी। लेकिन जाको राखे साइयां मार सके न कोय' वाली कहावत यहां चरितार्थ हुई। प्रकृति ने कुछ ऐसा खेल रचा के महाराजा संसारचंद ने युवराज को बंधन से मुक्त कर दिया। जिस रोज युवराज अपनी रियासत पहुंचा, उस रोज संयोगवश महाशिवरात्रि का त्यौहार था। युवराज के सुरक्षित घर पहुंचने की खुशी में शिवरात्रि का त्यौहार धूमधाम से मनाने की प्रथा चल पड़ी। रियासत के लोगों के अनुसार, भगवान शिव की कृपा से युवराज रियासत पहुंचे थे।

कुछ विद्वानों का विचार है कि मंडी में शिवरात्रि की शुरुआत सन्, 1526 में भूतनाथ मंदिर के अस्तित्व में आने से हुई थी।

एक अन्य स्रोत के अनुसार, राजा सूरज सेन (1637-1664 ई.) की अपनी कोई संतान जीवित नहीं रह पाई। राज्य के लिए उत्तराधिकारी न होने से सभी चिंतित थे। इस विचित्र परिस्थिति में राजा सूरज सेन ने सन्, 1648 में भगवान कृष्ण की रजत मूर्ति का निर्माण करवाया और इसे राजमाधव की संज्ञा देकर मंडी राज्य को समर्पित कर दिया। यह प्रतिमा दमदमा राजभवन में प्रतिष्ठित की गई है। महाशिवरात्रि महोत्सव पर जिला मंडी के गांवों से आए देवी-देवता वैसे ही सप्ताह भर राजमाधव को झुक-झुककर नमन करते हैं, जैसे कुल्लू दशहरा के अवसर पर देवगण रघुनाथजी का अभिवादन करते हैं।

जिला मंडी में लगभग 300 गांव हैं। हर गांव का अपना देवता है। शिवरात्रि पर्व पर दूर-दराज गांवों से देवता पालकियों में बैठकर ढोल-नगाड़े व अन्य वाद्य यंत्रों के साथ मंडी नगर पहुंचते हैं। हर देवता के साथ चार कहार और कुछ गांव के प्रतिष्ठित लोग होते हैं। दूर-दुर्गम गांवों से देवता की यात्रा चार-पांच दिन पूर्व से शुरू हो जाती है। रास्ते में देवताओं के दर्शन करनेवाले श्रद्धालुओं की टोलियां देवताओं को नमन कर उनसे आशीर्वाद लेती हैं तथा मनौतियां मांगती हैं। कई लोग इन्हें रात में अपने घर ठहरने का आमंत्रण देते हैं। देवता की इच्छा हो, तो वह अपने प्रवक्ता, जिसे स्थानीय भाषा में 'गुर' कहते हैं, के माध्यम से स्वीकृति देता है। जहां देवता ठहरते हैं, वह घर पवित्र हो जाता है।



गांवों से आई देवताओं की पालकियां

महाशिवरात्रि पर्व की शुरुआत भूतनाथ मंदिर से होती है। इस मंदिर को दुल्हन की तरह सजाया जाता है। मंदिर के प्रांगण में आग जलाई जाती है तथा हवन किया जाता है। प्रज्ज्वलित अग्नि में लकड़ी डालना बड़ा पुण्य कार्य माना जाता है। रातभर मंदिर में श्रद्धालु भजन गायन कर शिवमहिमा का गुणगान करते हैं।

भूतनाथ मंदिर का निर्माण सोलहवीं शताब्दी में राजा अजबर सेन ने कराया था।

महाशिवरात्रि के रोज मंडी के राज देवता राजमाधव की पूजा की जाती है। उसके पश्चात् एक शोभायात्रा भूतनाथ मंदिर तक निकाली जाती है। वहां सभी विशिष्ट व्यक्ति पूजा करते हैं। मुख्य रूप से मेले का आरम्भ दूसरे दिन से होता है। इस रोज राजमाधव की पूजा के बाद विशाल शोभायात्रा निकाली जाती है। राजमाधव की कृष्णरूपी मूर्ति को कहार एक सजी संवरी पालकी में उठाकर चलते हैं। दो किलोमीटर का सफर तय करने के बाद शोभायात्रा मंडी शहर के हृदय पड्डल मैदान में पहुंचती है। गांव-गांव से आई देवताओं की पालकियां कतारबद्ध होकर अपने मुख्य देवता राजमाधव से मिलने के लिए खड़ी हो जाती हैं। यह दृश्य देखते ही बनता है। कहारों के कंधों पर सवार ग्राम देवताओं की पालकियां मनुष्यों की भांति झुक-झुककर राजमाधव से मिलन करती हैं। उस समय यह स्थल देवलोक-सा लगता है।

मंडी नगर के मध्य में बना सेरी रंग मंच सात दिनों तक हर सांझ देश-विदेश के कलाकारों का आकर्षण होता है। इस रंग मंच पर प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, जो देर रात तक चलते हैं। सात दिनों तक मंडी नगर में बड़ा खुशनुमा माहौल होता है। लोगों में प्रेम और भाईचारा ही इस उत्सव की पहचान है।

कभी शिवरात्रि मेले में 300 से भी अधिक देवता आया करते थे। लेकिन अब इनकी संख्या 130-150 के बीच रह गई है। इसका मुख्य करण उन्हें शिवरात्रि मेला कमेटी द्वारा उचित खर्च न दिया जाना है। प्रायः एक देवता की पालकी के साथ गांव से 20-25 व्यक्ति आते हैं। सभी व्यक्तियों के खान-पान, रहन-सहन का खर्च शिवरात्रि मेला कमेटी करती है।

मंडी, मांडव्य ऋषि की तपस्थली रहा है। ऐसा माना जाता है, इसी ऋषि के नाम पर इस नगर का नामकरण हुआ है। मंडी पर सिक्खों के दसवें गुरु गोविंद सिंह की अपार श्रद्धा रही है। इस बात का उल्लेख



देवताओं की पालकियों की शोभायात्रा में शामिल भक्तजन

यहां गुरुद्वारा के बाहर लगे बोर्ड पर मिलता है। इसके अनुसार, सन् 1701 के अप्रैल माह में श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज मंडी से 24 किलोमीटर दूर रिवालसर, जहां पवित्र झील है, पधारे थे। वहां उन्होंने पहाड़ी राजाओं को अन्याय और आततायी का नाश करने तथा न्याय की आवाज बुलंद करने के अपने उद्देश्य के संबंध में अवगत कराया था।

जब मंडी के राजा सिद्ध सेन को गुरुजी के आगमन का पता चला, तो वह अपने तीन पुत्रों सहित पालकी लेकर गुरुजी के पास पहुंचा तथा गुरुजी से अपनी रियासत में चरण डालने का अनुरोध किया। हुआ यों था कि मंडी में दो-तीन वर्ष से वर्षा न होने के कारण अकाल पड़ गया था। राजा सिद्ध सेन से एक विद्वान पंडित ने बताया था कि कोई ऐसा सज्जन, जिसके हाथ घुटनों से नीचे तक लम्बे हों, मंडी आए, तभी राज्य खुशहाल हो सकता है और प्रजा सुखी रह सकती है। गुरु गोविंद सिंहजी ऐसे ही दिव्य पुरुष थे। गुरुजी ने राजा सिद्ध सेन का अनुरोध स्वीकार कर लिया तथा पालकी में बैठ गए। गुरुजी को पालकी में बैठाकर स्वयं राजा सिद्ध सेन तथा उनके तीन बेटे अपने कंधों पर उठाकर लाए। मंडी पहुंचकर जिस स्थान पर गुरुजी की पालकी को उतारा गया, उसी स्थान पर गुरुद्वारा साहब बना हुआ है।

गुरु गोविंद सिंह ने व्यास नदी में एक हंडिया बहा दी। हंडी व्यास नदी की लहरों में ऊपर-नीचे तैरने लगी। गुरुजी ने हंडिया को निशाना बनाकर तीर छोड़ा। हंडिया उलट गई, पर टूटी नहीं। इस पर गुरुजी ने कहा–

"जैसे बची यह हांडी,
वैसे बचेगी तेरी मंडी!
जो मंडी को लूटेंगे,
तूफानी गोले छूटेंगे।"

आज भी मंडी के लोगों को विश्वास है कि इस शहर पर गुरु की कृपा तथा आशीर्वाद है। इससे यह हमेशा सुरक्षित रहेगी और कोई इसका बाल-बांका न कर सकेगा। इस गुरुद्वारे में गुरु की पांच चीजें पलंग, तलाई, रबाब, बंदूक और कंघा अब भी मौजूद हैं।

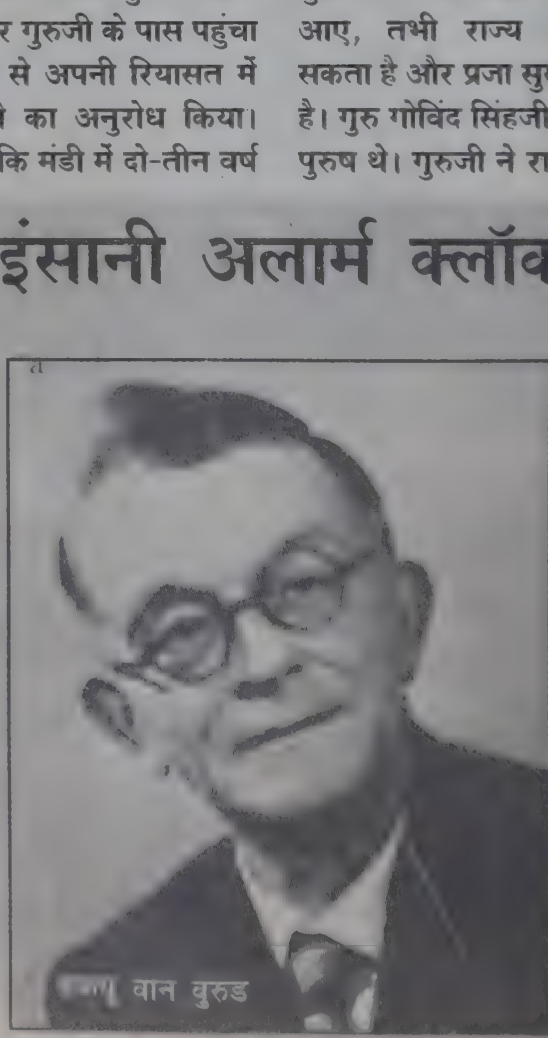
मंडी मंदिरों का शहर है। यहां भूतनाथ, टारना देवी, सिद्धभद्रा, पंजवक्त्र, भीमाकाली, जालपा, शीतला, राधाकृष्ण के दर्शनीय मंदिर हैं।

लघु कथा

इंसानी अलार्म क्लॉक

ज़रा आप ऐसे अनोखे इंसान की कल्पना करें, जो बिना घड़ी के अलार्म के ही ठीक उस समय जाग सकता है, जब वह चाहता है, यानी कि उसे जगानेवाला अलार्म किसी घड़ी में नहीं, बल्कि उसके जेहन में ही कहीं रहता है।

ऐसा ही एक अनोखा इंसान था, दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन शहर में रहनेवाला डब्ल्यू वान वुरुड। वान वुरुड को गहरी नींद से जागने के लिए किसी अलार्म की आवश्यकता कभी भी नहीं पड़ती थी। अलार्म के बगैर ही वह गहरी नींद से ठीक उस वक्त जग जाता था, जो वक्त अलार्म की सुई पर निर्धारित किया जाता था। अपनी इस अद्भुत मानसिक शक्ति का प्रदर्शन वान वुरुड ने अपने जीवन में कम से कम तीन सौ साठ बार किया था और इसमें उससे केवल एक ही बार चूक हुई थी।



डब्ल्यू वान वुरुड

जब यह शक जाहिर किया गया था कि वान वुरुड घड़ी की टिकटिक की गणना से ही वक्त का अनुमान लगा लेता था, तो एक बंद और खराब घड़ी का इस्तेमाल किया गया था। बंद घड़ी की अलार्म सुइयों पर वक्त का निर्धारण कर उसे वान वुरुड के सिरहाने रख दिया गया था।

क्लोज सर्किट कैमरों से निद्रामग्न उस पर कड़ी दृष्टि रखी गई थी। जांचकर्ताओं के आश्चर्य की उस समय कोई सीमा नहीं रही थी, जब वान वुरुड ठीक उस वक्त नींद से जागकर उठ बैठा था, जिस वक्त पर बंद घड़ी की अलार्म सुइयां रखी गई थीं। लोग वान वुरुड को जीवित इंसानी अलार्म क्लाक भी कहने लगे थे।

– सुरेन्द्र कुमार



पर्यटन विभाग द्वारा कब्र और मस्जिद का जीर्णोद्धार कराने के बाद

चिंगस जहां मुगल सम्राट जहांगीर सदियों से सोया है

– अशोक जेरथ

कश्मीर की ओर जाने के लिए एक मात्र मार्ग, मुगल सड़क सुंदरबनी, नौशहरा, खानपुर, राजौरी आदि से होती हुई चिंगस के रास्ते से नूरी छम्ब पहुंचती है, जहां दूसरा अथवा तीसरा डेरा लगता था। इस मार्ग पर स्थान-स्थान पर मुगलों ने सराय बनाई हुई थी। जहां उनके अहलकार तैनात रहते थे। अक्सर लाहौर से चलकर घोड़ों पर एक रोज का सफर तय कर मुगल कारवां गुजरात अथवा भिंबर पहुंचता था। यदि शाही महिलाएं साथ होतीं, तो पालकियों पर सवार इनका कारवां दो दिन भी लगा सकता था।

इस मार्ग पर लगभग तेरह पड़ाव थे। इन पड़ावों पर या तो सरायों का निर्माण किया गया था, या किलों का। उदाहरण स्वरूप भिंबर, सहाबाद, नारियां और चिंगस में सराय थीं और राजौरी तथा भिंबर में किलों का निर्माण किया गया था। अक्सर ये सराएं नदी अथवा जलस्रोतों के किनारों पर स्थित थीं।

सराय इतनी बड़ी होती कि एक बार में पूरा शाही कारवां उसमें ठहर सकता था। इस कारवां में शाही सवारियों के साथ-साथ उनके सुरक्षा अधिकारी, नौकर-चाकर, घोड़े, हाथी होते थे, जिनके रहने के लिए उचित प्रबंध किया जाता था। यह सराय दो कारणों से बनाई जाती थीं। एक रात्रि पड़ाव के लिए, दूसरे राज्य की राजनीति से प्रदूषित वातावरण से थोड़ा अलग हटकर नैसर्गिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए और कुछ दिन चैन के क्षणों को पकड़ने के लिए। अक्सर यह किले और सराएं अब भग्नावशेषों में परिवर्तित हो रही हैं। समय रहते इन्हें संवारा नहीं गया, तो गत तीन सौ वर्षों का इनका इतिहास लुप्त हो जाएगा।

इन सरायों में चिंगस की सराय अति महत्वपूर्ण थी। भिंबर के बाद मुगल कारवां सहाबाद, नौशहरा और नारियां को छोड़कर यहीं पर अपना डेरा लगाता था। यह सबसे महत्वपूर्ण जगह पर स्थित थी। सामरिक और स्थापत्य की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण था। यह एक किले की तरह बनाई गई थी, जिसे एक अति शक्तिशाली प्राचीर घेरे थी। सारी इमारत तीन हिस्सों में बंटी थी।

इनके अलावा सराय के प्रवेश द्वार के साथ लगे कटार में बनाए गए अनेक प्रकोष्ठ थे, जो घुड़साल के तौर पर इस्तेमाल किए जाते थे। यह प्रकोष्ठ अभी भी वैसा ही रूप लिए हैं। यह प्रकोष्ठ प्रवेश द्वार के दोनों ओर कतारों में स्थित हैं। प्रकोष्ठ स्तम्भों पर टिकी कमानीदार छतों से सज्जित हैं। सराय के दूसरी ओर इन घोड़ाघरों को देखते अनेक हवादार प्रकोष्ठ थे, जो शाही परिवार तथा दरबारियों अथवा उन सामंतों के उपयोग में आते थे, जो शाही कारवां में शाही परिवार के साथ होते थे।

प्रवेश द्वार के बिलकुल सामने दोमंजिला हवादार महलनुमा प्रकोष्ठ शाही दम्पति के लिए सुरक्षित रहते थे। इन्हें शाही दम्पत्ति के अलावा और कोई भी इस्तेमाल नहीं कर सकता था। इनके साथ लगते प्रकोष्ठ शाही परिवार के लिए 'रिजर्व' रहते थे। यह प्रकोष्ठ बाहर की ओर खुलते थे और काष्ठकला से सज्जित स्तम्भों और फलकों से घिरे थे, जो इनके शाही होने की तस्दीक करते हैं। कलात्मक ये फलक और स्तम्भ इस सदी के पहले दशक तक विद्यमान थे। पर कालांतर में लकड़ी के स्तम्भ, फलक और छत को संभाले बड़े-बड़े शहतीर तक गायब हो गए और अब मात्र पत्थरों और चूने की दीवारें ही बाकी बचीं हैं और छतों की कमानियां उनके स्थापत्य की ओर संकेत करती हैं। इस इमारत अर्थात सराय का तीसरा महत्वपूर्ण हिस्सा मस्जिद है, जो रिहायशी इलाके में स्थित है। इस मस्जिद में शाही परिवार के सदस्य और सामंत नमाज पढ़ा करते थे। नमाज पढ़ने के मैदान के एक कोने में शहतूत के एक पेड़ के नीचे एक कब्र स्थित है। इसी में मुगल शहंशाह जहांगीर की अंतड़ियां दफन हैं।

वस्तुतः कश्मीर से वापस लाहौर जाती शाही सवारी जब चिंगस के पास खानपुर के इलाके में पहुंच रही थी कि शहंशाह की मृत्यु हो गई थी। भाग्य से उस वक्त उसकी चहेती रानी नूरजहां उसके साथ थी। उसने बड़ी चालाकी और होशियारी से स्थिति को संभाला। शहंशाह की मृत्यु का समाचार तब तक राजधानी नहीं पहुंचना चाहिए, जब तक कि उत्तराधिकारी की ताजपोशी नहीं हो जाती अन्यथा बलवा होने का डर था। रानी ने जहांगीर के मृत शरीर को पूरा साफ करने का आदेश दिया। शरीर के भीतर के हिस्से-अंतड़ियां आदि निकालकर विधिवत वहीं दफना दिए गए और खाली शरीर को सूखे घास फूस और आलेपों से भरकर सी दिया गया।

अब शहंशाह के शरीर को एक कुर्सीनुमा आसन पर ऐसे बैठा दिया गया, जैसे शहंशाह सोच की गहन मुद्रा में बैठा हो। आंतों को फारसी में चिंगस कहा जाता है। अतएव इस सराय को बाद में चिंगस का नाम दिया गया। बाद में शाही कारवां शहंशाह के मृत शरीर को लेकर राजधानी आगरा पहुंचा और उनके पुत्र शाहजहां की ताजपोशी होने के बाद शहंशाह की मृत्यु की घोषणा की गई। चिंगस सराय अब भग्नावशेष के तौर पर बाकी रह गई है। ●

साबरमती एक्सप्रेस कांड

(पृष्ठ 85 का शेष)

पहुंची कि कुछ लड़कों ने फिर ट्रेन की ओर कुछ पत्थर फेंके। ट्रेन के डिब्बों से पत्थरों के टकराने की आवाज तो आयी, लेकिन किसी ने उस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया।

लोगों का ध्यान तब उस ओर गया, जब सिग्नल से आगे निकलते ही गाड़ी रुक गयी। डिब्बे के अंदर सवार किसी शरारती तत्व ने ही जंजीर खींच दी थी। गाड़ी रुकते ही लोगों की बातचीत शुरू हो गयी, "लगता है, अभी सिग्नल नहीं हुआ है।"

किसी ने कहा, "यहां की व्यवस्था ही ऐसी है। जहां मन होता है, वहीं ट्रेन खड़ी कर देते हैं।"

जबकि लाइन एकदम क्लीयर थी।

ट्रेन रुकने के बाद आउटर के लाइनमैन ने ड्राइवर से गाड़ी आगे बढ़ाने के लिए कहा। ड्राइवर ने उससे कहा कि चेन खींचने की वजह से वैक्यूम पाइप बंद हो गया है, जिसे ठीक करने में दस मिनट का समय लगेगा। तभी पूर्वी केबिन की ओर से नारे लगाते हुए लगभग एक हजार लोगों की भीड़ आती दिखाई पड़ी। भीड़ के हाथों में हथियार थे। भीड़ ट्रेन के करीब आ गयी। अट्ठारह बोगियोंवाली उस ट्रेन को भीड़ ने घेर लिया और विशेषकर एस-सिक्स और एस-सेवेन नंबरवाली बोगी पर पत्थरबाजी करने लगे। बाहर से ही ट्रेन पर पत्थर बरसाये जाने लगे। पत्थरों से बचने के लिए ट्रेन पर सवार लोगों ने खिड़की और दरवाजे बंद कर लिये। कुछ लोगों ने तोड़फोड़ शुरू कर दी। चारों तरफ से चिल्लाने की आवाजें आने लगीं। उन लोगों ने ट्रेन में आग भी लगा दी। देखते-देखते एस-सिक्स और एस-सेवेन बोगियों से आग की लपटें उठने लगीं। कुछ लोग जान बचाने के लिए उन बोगियों से कूदकर भागने लगे। लेकिन आग तब तक इतनी बुरी तरह फैल चुकी



जली हुई साबरमती एक्सप्रेस के डिब्बे

थी कि सैकड़ों लोग उसमें फंसे रह गये और बाकी लोग उस आग में देखते ही देखते जलकर स्वाहा हो गये।

इन दो बोगियों व अन्य बोगियों में विश्व हिंदू परिषद के लगभग साढ़े तीन सौ राम सेवक अयोध्या से वापस लौट रहे थे। 15 मार्च से शुरू होने वाले रामंदिर निर्माण के सिलसिले में आयोजित पूर्णाहुति कार्यक्रम में वे भाग लेने गये थे। 24 फरवरी को आयोजित इस कार्यक्रम में भाग लेने के बाद सभी लोग वापस लौट रहे थे। इन लोगों पर अचानक हुआ यह हमला किसी की समझ में नहीं आया कि आखिर बात क्या है? कुछ लोगों ने माना कि सुबह-सुबह कुछ शरारती तत्वों ने पत्थरबाजी की होगी और गाड़ी की गड़बड़ी से उसमें आग लग गयी होगी, जबकि यह सोचा-समझा हमला था।

दरअसल, लोगों ने जान-बूझकर राम सेवकों पर हमला करने और उन्हें जान से मारने की योजना बनायी थी। 27 फरवरी की सुबह किया गया यह हमला एक सुनियोजित चाल थी। हालांकि गोधरा पुलिस ने जब गाड़ी पर हमला होते देखा, तो काबू पाने के लिए गोलियां चलायी थीं। लेकिन वे हमलावरों पर काबू नहीं पा सके थे।

थोड़ी ही देर में इस घटना की जानकारी गुजरात भर में फैल गयी और चारों तरफ सांप्रदायिक तनाव फैल गया। राम सेवकों पर हुए हमले के जवाब में दुकानें, बसें और इमारतों में आग लगा दी गयी। प्रशासन ने अहमदाबाद, बड़ोदा, राजकोट समेत कई शहरों में कर्फ्यू

गुजरात में दंगों का इतिहास

गुजरात के गोधरा से उठे सांप्रदायिक तनाव को लोग भले ही नहीं भूल पा रहे हैं, लेकिन यह सच है कि गुजरात सन्, 1410 से हिंसक घटनाओं का गवाह रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार, गुजरात में पहली बार सन्, 1410 में दंगा हुआ था। लेकिन सबसे भीषण दंगा सन्, 1974 में होली के दौरान हुआ था। सन्, 1715-1716 में भी दंगे देखे गये थे। उस समय दिल्ली के बादशाह ने अहमदाबाद के मुस्लिम प्रबंधक को हटाकर हिंदू प्रबंधक को नियुक्त किया था। आजादी मिलने के दौरान हुए गदर के बाद भी वहां दंगा हुआ था। उस समय अंग्रेज पुलिस अधिकारी मेजर ईगर ने अहमदाबाद से हजारों की संख्या में हथियार भी बरामद किये थे। मगर वह सांप्रदायिक दंगा नहीं, आजादी के दौरान हुआ संघर्ष था। सन्, 1942 में अहमदाबाद शहर में लगभग 100 दिन तक भारत छोड़ो आंदोलन को दबाने के लिए कर्फ्यू लगाया गया था।

सन्, 1969 में जातीय दंगा भयानक रूप से हुआ था। सन्, 1985 में भी राज्य सरकार की आरक्षण नीति के खिलाफ दंगा भड़का था। इसमें सौ लोग मारे गये थे। इसके अलावा सन्, 1989-90 में चुनाव के दौरान और आडवाणी की रथयात्रा के दौरान भी अहमदाबाद में दंगे भड़के थे। सन्, 1992 में अयोध्या का विवादित ढांचा गिराने के बाद भी गुजरात के कई शहरों में दंगा हुआ था।

गा दिया। लेकिन 57 राम सेवकों की उस बोगी की आग में चिता न ही गयी।

देखते ही देखते गुजरात के कई हरों और आसपास के इलाकों में सांप्रदायिक तनाव पैदा हो गया और एक-एक करके हत्याओं का दौर शुरू हो गया।

गोधरा पंचमहल जिले के तहत आता है। गोधरा गुजरात और मध्य प्रदेश का सीमावर्ती क्षेत्र है। गोधरा काफी संवेदनशील इलाका माना जाता है, जहां घांची मुसलमानों की अधिकता है। यहां मुसलमानों के अलावा हिंदू और सिंधी रहते हैं। सिंधियों के पाकिस्तान से आने के बाद से ही यहां अक्सर तनाव रहता है।

सन्, 1947 से '50 तक यहां पहली बार दंगा हुआ था। इसके बाद से ही यहां अक्सर दंगा होता रहता है। इसके परिणामस्वरूप सन्, 1966 में यहां केन्द्रीय सुरक्षा बल की छावनी बना दी गयी थी। कम शिक्षा प्राप्त लोगों में धार्मिक कट्टरता अधिक होती है। इसी लिए 15 मार्च को अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के शिलान्यास की बात शुरू हुई, तो यहां तनाव पैदा होने लगा और राजस्थान से होकर आई.एस.आई. के एजेंटों ने गोधरा की मस्जिदों में मीटिंग शुरू कर दीं।

यहां की मस्जिदों में हर शाम धर्म की आड़ लेकर अयोध्या में बाबरी मस्जिद के स्थान पर राम मंदिर के निर्माण के खिलाफ प्रचार किया जाने लगा। मस्जिदों में चलनेवाली मीटिंग में इस बात का भी निर्णय लिया गया कि 15 मार्च को अयोध्या में राम मंदिर का शिलान्यास करने से पहले ही वहां भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री पहुंचा दी जाएगी।

दरअसल, आई.एस.आई. की शह पर उनके भाड़े के कार्यकर्ता 24 फरवरी से पहले ही राम सेवकों के अयोध्या पहुंचकर लौटने से पहले ही आगे की योजना तैयार करके, उस पर अमल करना चाहते थे। इस बात पर एक फरवरी, आठ फरवरी और 15 फरवरी को नमाज के बाद एक गुप्त मीटिंग भी हुई थी। लेकिन संभवतः समय पर उन्हें



दंगा के दौरान आगजनी

विस्फोटक सामग्री व अन्य सामग्री नहीं मिल सकी थी। जब कार्यक्रम योजना के अनुसार नहीं बना, तो दंगा फैलाने की रूपरेखा तैयार की गयी और इस रूपरेखा के अनुसार अहमदाबाद और बड़ौदा तथा गोधरा के संवेदनशील इलाकों में तैयारी पूरी की गयी। इस तैयारी में अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों के घरों में पत्थरों, एसिड बम और टायरों का भंडार जमा किया गया।

22 फरवरी को दंगा फैलाने की पूरी योजना को जामा पहना दिया गया और निर्णय लिया गया कि फैजाबाद से अहमदाबाद आ रही गाड़ी पर सवार राम सेवकों पर हमला किया जाये। इस हमले की सूचना मिलते ही अहमदाबाद और आसपास के इलाकों में हमले शुरू हो जायेंगे। इसलिए गाड़ी के गोधरा पहुंचते ही गाड़ी पर कुछ लोग सवार हो गये। ट्रेन के स्टेशन छोड़ते ही लोगों ने अविलम्ब गाड़ी के चार डिब्बों की चेन एक साथ खींचकर गाड़ी को रोक दिया। जैसे ही साबरमती एक्सप्रेस सिग्नल से कुछ पहले रुकी, उस पर अंधाधुंध हमला शुरू कर दिया गया।

इस हमले की तैयारी पूर्ण नियोजित थी। इसलिए साबरमती की बोगियों में आग लगाने के लिए मिट्टी का तेल और पेट्रोल जैसे ज्वलनशील पदार्थ हमलावर अपने साथ लाये थे। आश्चर्य की बात तो यह थी कि गोधरा में साबरमती पर आगजनी की घटना के तुरंत बाद ही अहमदाबाद में आगजनी और तोड़फोड़ की घटनाएं शुरू हो गयी थीं। दरियापुर इलाके में कई स्थानों पर तेजाब के बम फेंके गये। जिस स्थान पर यह घटना घटी थी, वहीं पर पुलिस स्टेशन मौजूद है। लेकिन इसे आपसी विवाद मानकर पुलिस ने तत्परता नहीं दिखायी। बापूनगर में एक बस में आग लगाकर अल्पसमुदाय के लोगों को घायल कर दिया गया।

इससे पहले कि बात किसी की

आखिरी मंजिल पर सब एक?

एक ओर जहां शवों को जलाने की तैयारी की जा रही थी, वहीं जो जलने से ही शव बने थे, उनमें हिंदू-मुसलमान बराबर थे और उनमें फर्क करना मुश्किल था। रामोल के जनतानगर में हिंदू-मुसिलमानों की संख्या बराबर है। बरसों से एक दूसरे के साथी हैं। यहां के लोग आज भी सांप्रदायिक हिंसा के माहौल से बहुत दूर है। रामोल से 20 किलोमीटर दूर अहमदाबाद, हारकेश्वर श्मशान, जहां दुकानें लूटी गयीं, लोग जलाये गये, लेकिन रामोल के लोग इस पागलपन से दूर रहे। शवों की देखभाल बरकत कर रहे थे। श्मशान तक जाने में दोनों जाति के लोग थे। औरतें और बच्चे भी थे।

बरकत कहते हैं, "इस शहर में साल दर साल दंगे हुए, लेकिन बाबरी की घटना के बाद भी हमारे यहां दंगा नहीं हुआ। हमें गोधरा की घटना से कुछ लेना देना नहीं।"

विराज रावल कहते हैं, "बरकत जैसे लोग हमारे अपने हैं। वह हमारे हर सुख-दुख, शादी-त्यौहार में साथ रहते हैं। इस बार के दंगों को भी उन्होंने मानवता पर गंदा हमला बताया।"

काश ऐसे लोग पूरी भारत भूमि पर होते...?

समझ में पूरी तरह से आती, गुजरात के कई इलाकों में सांप्रदायिक तनाव फैल गया था। बारह बजे तक तो आधा गुजरात सांप्रदायिकता की आग में जलने लगा था। राज्य सरकार ने स्थिति पर काबू पाने का भरसक प्रयास किया, लेकिन जब तक स्थिति पर काबू पाया गया, तब तक सैकड़ों निरीह लोगों की जानें जा चुकी थीं।

आई.एस.आई. ने अपनी योजना को कार्यरूप दे दिया था। लेकिन राज्य सरकार जब इस बात को अच्छी तरह जानती थी कि गोधरा संवेदनशील इलाका है, तो वहां सुरक्षा का पुख्ता प्रबंध करना चाहिए था। गुजरात सरकार को जब जानकारी थी कि अयोध्या में राम मंदिर निर्माण शुरू करने की बात पर विश्व हिंदू परिषद बार-बार जोर दे रहा है। गुजरात विश्व हिंदू परिषद का गढ़ माना जाता है। इसके बावजूद लापरवाही बरती गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि पूरा देश सांप्रदायिकता के तनाव में उलझ गया।



हमें भी जीने दो

गौरतलब है कि राज्य सरकार इस घटना के दौरान इसे राजनीतिक रंग दे रही थी और विपक्ष पर आरोप लगा रही थी कि सरकार को बदनाम करने के लिए इस तरह की घटनाएं हो रही हैं। इतना ही नहीं, मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी ने घटना के बाद अगले दिन गुरुवार को विधान सभा में यह भी कहा कि यह घटना सुनियोजित थी। जब उन्हें इस घटना के पूर्व नियोजित होने की जानकारी थी, तो उन्हें आवश्यक कदम उठाने चाहिए थे।

अहमदाबाद समेत लगभग 37 शहरों और कस्बों में स्थिति से निबटने के लिए सेना बुलायी गयी। सेना विशेष विमान से पहुंच चुकी थी, लेकिन उसने अपनी कार्रवाई केवल इसलिए शुरू नहीं कि थी कि उनके पास आने-जाने के लिए गाड़ियां नहीं थीं। कितनी दयनीय स्थिति बन जाती है, जब राज्य का मुख्य मंत्री एक तरफ तो इस बात की घोषणा करता है कि घटना में आतंकवादियों का हाथ है और इससे निबटने के लिए वह कोई ठोस प्रबंध नहीं कर पाता।

एक अमानवीय घटना में अहमदाबाद के मेघाणीनगर में अल्पसंख्यक समुदाय के तीस लोगों को जिंदा जला दिया गया। इनमें अहमदाबाद के ही बापूनगर स्थित एक मुहल्ले में एक पूर्व सांसद एहसान जाफरी और उनके परिवार के चार सदस्यों के साथ 19 लोगों को भी जिंदा जला दिया गया। पूर्व सांसद ने स्थानीय पुलिस से बार-बार सहायता मांगी थी, लेकिन उन्हें कोई सहायता नहीं मिल सकी थी।

यहां दो हजार दंगाइयों के दो गिरोह, जो लाठी और आग्नेय अस्त्रों से लैश थे, एक दूसरे की जान के दुश्मन बने हुए थे।

दूसरी तरफ, पहले से ही दंगे को बढ़ावा देने की तैयारी किये बैठे दंगाई घर की छतों से एसिड बम, जलते हुए टायर और पत्थर फेंक कर लोगों को भड़का रहे थे। दुखद बात तो यह थी कि रामोल गांव में दस हजार लोगों का एक हुजूम उन ग्यारह लोगों के शव, जो गोधरा ट्रेन में मारे गये थे, लेकर चले रहे थे। वे सब इतने उत्तेजित थे कि सारा जुलूस चीखते हुए चल रहा था, "तुम्हारी शहीदी बेकार नहीं जाएगी, मंदिर बनकर रहेगा।" और यह आक्रोशित भीड़ कुछ भी कर गुजरने के लिए उद्धत थी। उन पर पुलिस का कोई नियंत्रण न था।

इस बात पर बहुत कम लोगों ने ध्यान दिया कि दंगा शुरू करने और दंगे को बढ़ावा देनेवाले काफी

अब भी सिहर उठते हैं यात्री

गुजरात के गोधरा शहर में 27 फरवरी को साबरमती एक्सप्रेस पर हुए भीषण हमले में जिंदा बचे यात्री घटना की याद कर सिहर उठते हैं। जिंदा बचे यात्रियों ने बताया कि उन लोगों को इस हमले के दौरान दिल दहला देने वाला अनुभव हुआ है।

साबरमती एक्सप्रेस पर उस दिन यात्रा करनेवाले धीरज पंड्या ने बताया कि गोधरा स्टेशन से खुलने के तत्काल बाद रेलगाड़ी रुक गई। यात्रियों को लगा कि लाल सिग्नल होने की वजह से गाड़ी रुकी होगी। यात्री कुछ सोचते, इससे पहले ही चारों ओर से पत्थरों की बरसात होने लगी। एक बड़ा पत्थर उनके पास आकर गिरा। यात्रियों को वास्तविकता का पता लगने में कुछ समय लगा। तब तक कई यात्री इन पत्थरों का शिकार हो चुके थे। यह हालत देखकर मैंने कम उम्र की दो लड़कियों को अपने पास बुलाया और उन्हें सीट के नीचे छिप जाने के लिए कहा।

16 वर्षीया गायत्री पांचाल भी इसी ट्रेन से यात्रा कर रही थीं। उन्होंने बताया कि उसे किसी ने डिब्बे की टूटी खिड़की से बाहर निकाला। उसने अपनी आंखों के सामने डिब्बे में अपने पिता और बहनों को जिंदा जलते देखा है। गायत्री अभी भी सदमे से उबर नहीं पाई है।

गायत्री ने बताया कि हमलावरों ने एक तरह से रेलगाड़ी पर पत्थरों की बारिश शुरू कर दी थी। हमलावरों का पथराव लगभग आधे घंटे तक जारी रहा। एक पत्थर उसकी बहन प्रतीक्षा को लगा और वह घायल हो गयी। गायत्री ने बताया कि प्रतीक्षा के अलावा उसकी एक और बहन छाया इस हमले में मारी गयी। गायत्री के अनुसार, पथराव के बाद हमलावरों ने रेलगाड़ी के डिब्बों पर मिट्टी तेल और पेट्रोल छिड़कना शुरू कर दिया और इन डिब्बों में आग लगा दी।

देखते ही देखते इन डिब्बों से आग की लपटें निकलने लगीं। इन डिब्बों की टूटी खिड़कियों से कुछ लोग ही बाहर निकलने में कामयाब हो सके।

बड़ी उम्र का कोई यात्री इन डिब्बों से बाहर नहीं निकल सका। वृद्ध महिलाओं ने तो हमलावरों से विनती भी की, लेकिन हमलावरों ने कुछ नहीं सुना। गायत्री के अनुसार, उसके आसपास सिर्फ खून ही खून नजर आ रहा था।

कम उम्र के लोग थे। गोधरा स्टेशन के पास साबरमती एक्सप्रेस पर हमले से पहले पांच-पांच, दस-दस के गुट में यह लोग स्टेशन और रेल ट्रैक के पास पहले से ही जमा होने लगे थे। इन सभी की उम्र दस वर्ष से लेकर इक्कीस वर्ष तक के आसपास थी। गोधरा स्टेशन पर मौजूद रेल पुलिस चाहती, तो इन दंगाइयों को पहले से ही अपनी पकड़ में ले सकती थी। लेकिन यहां भी लापरवाही बरती गयी।

पुलिस ने इस बीच लगभग सौ संदेहास्पद जेहादियों को जरूर गिरफ्तार कर लिया था, जिनमें जेहादियों के नेता सलीम शेख और अब्दुल रहीम धंतिया भी शामिल थे। यह अलग बात थी कि गोधरा के वे पार्षद थे और कांग्रेस से जुड़े हुए थे। आखिर परिणाम क्या निकला? कुछ जुनूनी लोगों और अपने आपको धर्म के प्रति समर्पित कहनेवाले कट्टरपंथियों की बीमार मानसिकता के चलते मासूम और निर्दोष लोगों की मौत। यहां हिंदू या मुसलमान होने का सवाल नहीं है। यहां सवाल यह है कि गंदी और घिनौनी मानसिकता के जाल में चंद नासमझ लोगों को फंसाकर तमाशा देखना।

घटना घटित होने के बाद आंतकवादी गतिविधि बताना और उसकी जांच करके दोषी लोगों को सजा देने की बात तो अच्छी लगती है। लेकिन जब उस पर अमल करने की बात आती है, तो कानून और सरकार चलाने की दुहाई दी जाती है। गोधरा जैसा शहर, जहां एक बार या दो बार नहीं, कई बार, बल्कि बार-बार दंगे हो चुके हैं। इसके बावजूद वहां कानून व्यवस्था कमजोर क्यों थी? छावनी होने के बावजूद कार्रवाई करने में समय लगा और हालात इतने बिगड़ गये कि सारा मामला सेना को सौंपना पड़ा।

सेना की नौ टुकड़ियों ने शहर के सभी संवेदनशील इलाकों में फ्लैग मार्च किया। चप्पे-चप्पे पर सेना की तैनाती की गयी। उसके बाद दरियापुर, शाहपुर शाहीबाग और नरोड़ा में फ्लैग मार्च हुआ। शहर के कई इलाकों में कर्फ्यू



मृत राम सेवकों की सामूहिक चिताएं

सांप्रदायिकता की आग में ऐसा भी हुआ

गोधरा कांड में हुए सांप्रदायिक तनाव के कारण उन सभी नवयुवक-नवयुवतियों को निराश होना पड़ा, जिनकी शादी 27 फरवरी, 28 फरवरी और 1 मार्च को होनी थी। इसके बावजूद उनके जीवन की शुभ घड़ी को देखते हुए 1 मार्च को अहमदाबाद में कई शादियां हुईं।

इन शादियों में कोई रौनक नहीं थी। यही समय गुजरात में शादियों का होता है और हजारों नवयुवक-नवयुवतियां धूम-धड़ाके के साथ परिणय-सूत्र में बंधते हैं, लेकिन 28 फरवरी को लगभग पांच सौ विवाह नहीं हो सके। कुछ शादियां पुलिस की मौजूदगी में केवल मंत्रोच्चार के साथ की गयीं। एक ओर जहां नये सफर पर चलने वाले जोड़े अपनी शादी को लेकर काफी खुश थे, वहीं उन्हें इस कांड को लेकर काफी दुख था। ऐसी शादियां भी हुईं, जिनके कार्ड महीना भर पहले बांट दिये गये थे, लेकिन इन शादियों में कोई बाराती नहीं पहुंच सका था।

राजकोट में भी लगभग दो सौ विवाह समारोह रद्द कर दिये गये। एक ओर जहां सांप्रदायिक तनाव के समाचारों से समाचार पत्र भरे पड़े थे, वहीं विवाह आदि के रद्द होने के विज्ञापनों की भी भरमार थी। कुछ शादियां बिना बारात के ही घरों में की गईं। इन शादियों में शहनाई नहीं बज रही थी। बाहर केवल गोलियां चल रही थीं, चारों ओर मौत का तांडव हो रहा था। अग्निकुंड में आग जलने के स्थान पर पूरा शहर अग्निकुंड बना हुआ था। उसी रात बाजीपुर में 27 लोगों को इस अग्निकुंड में स्वाह कर दिया गया।

इन दिनों में जिन लोगों का विवाह हुआ, उन्हें अपने परिणय-सूत्र में बंधने की खुशी तो नहीं, सांप्रदायिकता की आग जरूर याद रहेगी।

लगाया गया। कलोल के एक कारखाने में आग लगा दी गयी। अस्पताल में बड़ी संख्या में छुरेबाजी से घायल और एसिड से जले हुए लोग लाये जा रहे थे।

कम से कम 40 लाशें शहर के नरोड़ा इलाके से बरामद की गयीं। बापूनगर इलाके से 48 लोगों के शव मलबे से निकाले गये। इनमें महिलाओं और बच्चों के शव भी थे।

इस पागलपन के शिकार लोगों को मेघाणीनगर के सिविल अस्पताल में भरती कराया गया। अहमदाबाद के ही मेघाणीनगर की गुलमोहर सोसायटी के जले हुए घरों से 24 लाशें निकाली गयीं। जबकि इसी सोसायटी के 22 लोगों के बारे में अभी तक कोई पता नहीं चल सका। मुम्बई से अहमदाबाद जा रही सुमो में सवार आठ लोगों को रोककर लकड़ियों से जला दिया गया।

मरनेवालों या घायल होनेवाले लोग आखिर कौन थे? यह बात उन लोगों को सोचनी चाहिए, जो जेहाद के नाम पर अपनी व्यक्तिगत मानसिकता, अपनी व्यक्तिगत सोच के चलते उन्हें जिंदा दफन करवा देते हैं।

पं. बंगाल के मुख्यमंत्री ने कोलकाता में अमेरिकन एम्बेसी हमले के बाद से कहना शुरू किया कि मदरसों के नाम पर धार्मिक शिक्षा और कट्टरपंथी बनने की ट्रेनिंग दी जा रही है। यह बात सच साबित हुई है। गुजरात से सटा है राजस्थान और मध्य प्रदेश। यह गोधरा कांड सबूत है कि राजस्थान से ही कट्टरपंथी गोधरा आये और मध्य प्रदेश के रास्ते अपना मकसद हल करने के बाद भागने में सफल रहे।

गोधरा में आगजनी और दंगे की साजिश रचनेवाला हरकत उल जेहाद ए इस्लामी का आतंकवादी शुक्रवार, एक मार्च को बंगाल-बिहार सीमा पर गिरफ्तार किया गया। इसी ने बताया कि आई.एस.आई. की शह पर गोधरा में आगजनी और सारे राज्य में आतंक फैलाने की घटना को अंजाम दिया गया था। दंगे के आरोप में लगभग बारह सौ

सब कुछ कैसे घटा

गोधरा का हादसा और उसके बाद खासतौर पर अहमदाबाद फिर उसके बाद पूरे देश में भड़की सांप्रदायिक हिंसा अचानक ही नहीं घटी। पहले यह बताया गया कि गोधरा स्टेशन के आउटर पर यह रेल अचानक रुक गयी थी। और तभी वहां आसपास के मुस्लिम संप्रदाय के लोगों ने अयोध्या से लौट रहे राम सेवकों की उग्र और आक्रामक कहा-सुनी हो गयी थी।

सच यह है कि यह ट्रेन उस जगह पर हमले के लिए तय किए गए इरादे के तहत रोकी गई थी और चार डिब्बों की चेनें खींची गई थीं। ट्रेन रुकने के बाद आउटर के लाइनमेन ने ड्राइवर से गाड़ी आगे बढ़ाने के लिए भी कहा, मगर उसने जांच करने और चेन खींचने से बंद हो गए वैक्यूम पाइप ठीक करने के लिए दस मिनट का समय मांगा। गोधरा स्टेशन से बाहर राजस्थान से आनेवाली लूप लाइन पार होने से ठीक पहले, यानी प्लेटफार्म से सिर्फ 500 मीटर दूर आठ बजकर एक मिनट पर आखिरी और हत्यारी चेन पुलिंग हुई।

गोधरा की दर्दनाक घटना के चश्मदीद तथा साबरमती एक्सप्रेस के ड्राइवर राजेन्द्र राव तथा असिस्टेंट ड्राइवर मुकेश पचौरी का कहना है कि उन्होंने भागकर पुलिस बुलाने की कोशिश की, मगर पुलिसवालों के पास सिर्फ डंडे थे और उनके हथियार मालखाने में बंद थे।

श्री राव ने बताया कि गोधरा रेलवे प्लेटफार्म पर झगड़े के कारण सबसे पहले 7 बजकर 45 मिनट पर चेन पुलिंग हुई, जिसे सुधारने के बाद गाड़ी आगे बढ़ी। दोनों बार एक साथ चारबोगियों से चेन खींची गई। श्री पचौरी ने बताया कि अचानक हुए इस हमले से घबराकर यात्रियों ने खिड़कियों एवं दरवाजे बंद कर लिए और भीड़ ने बोगी क्रमांक एस सिक्स, जो इंजन से आठवां डिब्बा था, में लगभग आठ बजकर बीस मिनट पर आग लगा दी। यात्रियों को भी हमले की इस भयानकता का अंदाजा नहीं था। वे अगर जवाबी हमला करते, तो केवल कुछ लोग ही घायल होते। गोधरा में अमूमन चार से साढ़े चार बजे होटल खुल जाते हैं।

घटनावाले दिन दुकानें भी नहीं खुलीं। साथ ही प्लेटफार्म पर हुआ झगड़ा भी इसी का एक हिस्सा था। चेन पुलिंग होने के बाद तोड़फोड़ पर उतारू भीड़ को देखकर श्री राव ने तुरंत वाकीटाकी पर गोधरा के अधिकारियों को घटना की जानकारी देते हुए फौरन पुलिस सहायता की मांग की।

श्री राव ने बताया कि तब तक सहायक चालक पचौरी विपरीत परिस्थिति के बावजूद जान जोखिम में डालकर चेन रीसेट करने इंजन से कूदे। उन्होंने दस पंद्रह मिनट में चारों बोगियों की चेन रीसेट कर भी दी। तभी आठ बजकर बीस मिनट पर इंजन से आठवीं बोगी (एस-6) से धुआं उठता दिखाई दिया।

श्री राव ने वाकीटाकी पर एक बार फिर पुलिस, फायर ब्रिगेड तथा मेडिकल की मांग की। तब तक ट्रेन उपद्रवियों से पूरी तरह घिर गई थी। इंजन के सहायक चालक श्री पचौरी इंजन से आग बुझाने का सिलेंडर लेकर निकले थे कि उपद्रवी इंजन की ओर लपके।

ऐसे में उन्होंने घबराकर इंजन अंदर से बंद कर लिया, जबकि भीड़ अंदर आने की कोशिश कर रही थी। मौत सामने थी, तभी गोली चलने की आवाज आई। गोली की आवाज सुनकर भीड़ छंट गई। इसके बाद श्री पचौरी ने रेल इंजन में रखे चार तथा गार्ड के दो सिलेंडर से आग पर काबू करने की कोशिश की।

लोगों की गिरफ्तारी का नाटक हुआ, लेकिन गोधरा की मस्जिदों में महीने भर से इस योजना की तैयारी करने वाले और कट्टरपंथियों की गिरफ्तारी अभी भी बाकी है।

इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि 23 फरवरी को बकरीद नहीं होती, तो आई.एस.आई. के इशारे पर अयोध्या में भयंकर विस्फोट होता और 24 फरवरी को हुए पूर्णाहुति के कार्यक्रम के दौरान हजारों राम सेवकों की मौत हो जाती। इसके लिए अयोध्या में पहले से ही सुरक्षा के कड़े प्रबंध किये जा चुके थे। अयोध्या की सुरक्षा सी.आर.पी.एफ. को पहले ही सौंप दी गयी थी। मुख्य मार्गों से मिलानेवाले सभी रास्तों पर अवरोध लगाये गये थे। आनेवाली रेलगाड़ियों के मार्गों में परिवर्तन कर दिये गये थे।

इन सुरक्षा प्रबंधों ने सन्, 1990-1992 की याद ताजा कर दी। इसी तरह के सुरक्षा प्रबंध 30 अक्तूबर और दो नवंबर 1990 को



सेना की तैनाती

हुए गोलीकांड और 6 दिसंबर 1992 को विवादित ढांचा गिराये जाने के बाद किये गये थे।

गोधरा कांड से राज्य सरकार को और अन्य राज्य सरकारों को सबक लेना ही चाहिए, जिससे इस प्रकार की घटना की पुनरावृत्ति न हो। मुम्बई बम कांड, दिल्ली सचिवालय कांड, कोलकाता एम्बेसी कांड और अब गोधरा कांड के बाद भी यदि बात समझ में नहीं आती, तो ऐसे कांड या इससे भी भयंकर कांड देखने के लिए तैयार रहना चाहिए। घटना के बाद चंद लोगों की गिरफ्तारी का नाटक करने से लाइलाज बीमारी का उपचार कतई संभव नहीं है।

आतंकवाद की घटना हो या कट्टरपंथियों की मानसिकता का छिछोरापन, उसका उपाय देशव्यापी बंद या भूख हड़ताल जैसे उपाय नहीं है। इसका उपाय है उस वटवृक्ष को उखाड़ फेंकना, जिसकी जड़ें काफी गहराई तक गयी हैं। ●

— उन्नीसवीं सदी का ठग जाल —

(पृष्ठ 87 का शेष)

वॉर्थविक, कैप्टन पैटन और कैप्टन मीडोज टेलर।

मेजर स्लीमेन और कैप्टन मीडोज टेलर ने कठिन प्रयास करके यह खोजा कि ठगों का प्रमुख सरगना फिरंगिया बामन है और ठगों का गढ़ वर्तमान में मध्य प्रदेश के दमोह, सुजैना और अमाना हैं। इन क्षेत्रों के अलावा अवध के जमालदेही ठग और इटावा के मेधपुनिया ठग भी खतरनाक थे, जो जाति के कहार थे। इन ठगों ने सांकेतिक जुबान भी बना ली थी। मसलन जब शिकार के गले में फंदा डालने का इशारा होता, तो वह "झिरनी" बोलते थे और जैसे ही ठगों का सरदार जोर से कहता "तम्बाकू लाओ", तभी अपने-अपने शिकार के पीछे खड़े ठग फटाफट रूमाल गले में डालकर अपने शिकार को तुरंत गला घोंटकर मार डालते थे। शिकार को मारने से पहले कुछ ठग, जिन्हें "कबरखोदा" कहते थे, उस रात के शिकारों के लिए कब्र पहले से ही खोदकर तैयार रखते थे। आदमी का गला घोंटकर उसे तुरंत ही कब्र में दबा दिया जाता था और जमीन चौरस कर दी जाती थी। सन्, 1831 से लेकर सन्, 1837 तक अंग्रेजों ने तीन हजार ठगों को पकड़ा और उन्हें दंडित किया और सन्, 1860 तक ठगी को समाप्त ही कर डाला।

- ठग किस प्रकार काम करते थे, उसका वर्णन लेफ्टिनेंट सैंडर्स ने मेजर स्लीमेन को बताया। जबकि वह भेष बदलकर वर्तमान मध्य प्रदेश में यात्रियों की भीड़ में शामिल हो गया था और पुराने विंध्य प्रदेश के जैतगढ़ के इलाके में पहुंच गया था। वहां उसने स्थिति को देखकर अपने मुखबिर साइमन ब्राइट को (जो कि बिशप हीबर का शिष्य था) यात्रियों में घुसा दिया था। अफसोस, साइमन ब्राइट भी लाख सयाने होने पर भी ठगों द्वारा मारा गया था, पर अपने हाथ से लिखे कागज वहीं छिपाकर रख गया था, जो बाद में लेफ्टिनेंट सैंडर्स के हाथ लग गये थे।

उन दिनों भारत के विशाल आंचल पर ठगों का जाल फैला था। एक शहर से दूसरे शहर तक सही-सलामत पहुंचने पर घर के लोग कथा-भागवत करवाते थे। मुसलमान पीरों के मजार पर चादर चढ़ाते थे। बगैर हादसे के वापस लौट आना, बहुत बड़ी बात थी।

लेफ्टिनेंट सैंडर्स ने बताया था कि साइमन ब्राइट के गुम होने पर ही अंग्रेज जैतगढ़ की ओर बढ़े थे।

भारत भ्रमण पर न जाने कहां से यात्री आये थे। अकबर के जमाने से वह भारत के भीतरी हिस्सों में घुसे और इस देश की खुशहाली देखकर विस्मित हुए। और फिर तो बनियर, टैवरनियर, बिशप हीबर, पीटर मंडी, मानूची आदि का तांता-सा लग गया।

साइमन ब्राइट शायद अपने आका बिशप हीबर से आज्ञा लेकर ही विंध्य प्रदेश में घुसा था। वरधा तक वह अपना झोला पीठ पर लादे पहुंच गया था। वरधा से अंजी जाने की तैयारी कर रहा था। वरधा एक बड़ा-सा गांव था। तालाब के छोर पर एक कच्ची सराय थी, जिसमें वह करीमबख्श आढ़तिये के साथ ठहरा था। करीमबख्श जवाहरात का व्यापारी था। अपने व्यापार के सिलसिले में उसे जैतगढ़ जाना था। सुना था कि जैतगढ़ का महाराजा तीसरा विवाह करने जा रहा था। वैसे करीमबख्श के साथ उसके सात-आठ साथी भी थे, जिनमें गूंगा, रहीमा और पन्नी जैसे अच्छे तलवारबाज भी थे। साइमन ब्राइट टूटी-फूटी हिंदुस्तानी बोल लेता था। जिस दिन रहीमा और पन्नी आंगन में तलवार के हाथ दिखाकर करीमबख्श से वाहवाही लूट रहे थे, तभी बीच में साइमन ब्राइट आ गया। उसने भी रहीमा की तलवार से दो-दो हाथ किये थे। कोई पांच मिनट के अंदर ही उसने ऐसा नपा-तुला हाथ मारा कि रहीमा की तलवार झनझनाकर दूर गिर पड़ी थी।

"वाह-वाह! क्या हाथ मारा है!" करीमबख्श ने खुश होकर कहा, "तुम किधर जा रहे हो फिरंगी?"

साइमन ब्राइट ने कहा, "जहां भी आप लोग ले जायें। मुझे तो विंध्याचल का इलाका देखना है। एक महीने के बाद वापस लौट जाऊंगा।"

करीमबख्श को साइमन ब्राइट हर तरह से जंचा। मुफ्त में बढ़िया तलवारबाज हाथ लग रहा था। इधर ठगों के मारे नाक में दम हो रहा था। करीमबख्श ने कहा, "तुम हमारे साथ चलो। अकेले सफर करना खतरनाक है।"

साइमन ब्राइट को ठगों के किस्से मालूम थे। एक कुतूहल-सा उसके मन में उठता और वह सजग होकर उनसे दो-दो हाथ करने को उत्सुक रहता।

करीमबख्श ने अपने मुखबिर फैला रखे थे। वैसे उसके पास कोई खास लंबी-चौड़ी रकम नहीं थी। सिर्फ पांच हजार की थैली थी, जिसे वह तरह-तरह से छिपाने की कोशिश कर रहा था। सबसे पहले वरधा के बशारत ठग ने करीमबख्श को भांपा था। बशारत का छोटा-सा दल था— करीब तीस ठगों का। उसका इलाका वरधा से अंजी तक था। अंजी में रमचरना का दल सक्रिय था। अंजी से जैतगढ़ तक उसका इलाका था। बहुत दिनों



"साइमन ब्राइट को ठगों के किस्से मालूम थे एक कुतूहल-सा उसके मन में उठता"

से कोई मोटा आसामी वरधा से नहीं चल रहा था। करीमबख्श के मुखबिरों के साथ जब बशारत के सधे हुए मुखबिर टकराये, तो उन्होंने बात ही बात में सब टोह लगा ली।

बशारत का दल बाजेवालों की टोली बनकर आया था। नफरी, नक्कारा, ढोलक और मंजीरों के साथ बशारत चला था। रामप्रसाद नफीरी अच्छी बजा लेता था और बख्शू नक्कारा इतना अच्छा बजाता

था कि समां बंध जाता था।

करीमबख्श को बताया था कि कुछ बाजेवाले अंजी जा रहे हैं, शायद किसी रईस की शादी है। इनाम-इकराम मिलने की बड़ी आशा से बशारत ने जब झुककर करीमबख्श को सलाम किया और जब उसके दल ने एक फड़कती हुई चीज सुनायी, तो करीमबख्श बहुत खुश हुआ था। उसने कहा था, "तुम हमारे साथ-साथ चलो। रास्तेभर जश्न मनता रहेगा। अगर ठग मिले भी, तो तुम उन्हें धुनें सुनाकर मस्त कर देना।"

बशारत बड़े उत्साह से बोला, "अजी हुजूर, ठगों के दिन तो लद रहे हैं। सुना है, सागर में फिरंगी साहबों ने ठगों को खदेड़ने का बीड़ा उठा लिया है। ठगों में खलबली मची हुई है। कई ससुरे भाग गये और कई पकड़े गये हैं।"

यह बात सुनी वैसे करीमबख्श ने भी थी। ठगों का आधा काम-फतह तभी हो जाता था, जबकि कोई उनकी बात का विश्वास कर लेता था। करीमबख्श अब बशारत से बतियाने लगा। दल खुश था, चिड़िया पिंजड़े में घुसने लगी है।

बशारत बड़ी सावधानी से चाल चल रहा था। पर अभी तक उसे कामयाबी



"करीमबख्श को बताया था कि कुछ बाजेवाले अंजी जा रहे हैं शायद किसी रईस की शादी है"

हासिल नहीं हो पायी थी। वरधा से दूसरे पड़ाव पर उसने काम अंजाम करने का इरादा कर लिया था, तभी न जाने कहां से सुबराती उसे मिल गया। सुबराती रमचरना के दल का 'कबरखोदा' था।

दोपहर को जब सब बड़ के पेड़ के नीचे आराम कर रहे थे, तब साइमन ब्राइट बैठा हुआ भारत भ्रमण के तजुर्बे लिख रहा था। उसी समय बशारत सुबराती को लेकर दूर निकल पड़ा था। नाले के पास आकर ही बशारत ने बताया था कि करीमबख्श को वह अगले पड़ाव पर ठिकाने लगा देगा। बशारत को ताज्जुब तो तब हुआ, जब सुबराती ने बताया, "अमां मियां, अधूरा काम करके क्या हासिल होगा। तुम्हें कुछ बसंत की खबर भी है। करीमबख्श पांच की दूसरी थैली अंजी में वसूल करेगा, फिर जैतगढ़ जाकर व्यापार में पैसा लगायेगा।"

बशारत यह सुनकर चौंक पड़ा। उसके मुखबिरों ने यह सब नहीं बताया था। उसके चेहरे पर रोब के उभरे चिह्न देखकर सुबराती बोला, "हाथ कंगन को आरसी क्या! लगे हाथ आज करीमबख्श से यह कहकर भी देख लो कि तुम अंजी के व्यापारी सोमनचंद के यहां भी जा रहे हो और वहीं से जैतगढ़ भी जाओगे। यह बताना कि तुम सोमनचंद को कितने अरसे से जानते हो।"

बशारत गूंगों की तरह सिर्फ सिर हिलाता रहा और वापस बड़ के पेड़ के नीचे आ गया। तब रात होने लगी, तो वे बातों में मशगूल हो गये। बड़ के पास की भट्टी खुल गयी थी। कढ़ाह चढ़ गया था और बकरे का गोश्त और आलू की सब्जी बन रही थी। बशारत ने देसी शराब की बोतलें भी निकालीं, पर सिवाय रहीमा के और कोई पीता नहीं था। साइमन ब्राइट शुरू से ही बड़ा सतर्क रहता था और बैठे हुए लोगों से दूर जाकर खड़ा रहता था। वह इतना सतर्क था कि आसपास भी किसी को नहीं खड़ा रहने देता था। उसकी इस बात से करीमबख्श बहुत खुश था। 'फिरंगी वाकई बहुत होशियार है।' वह अक्सर कहता भी था।

जब खाना चल रहा था, तब बशारत ने बात छेड़ी, "अंजी में लाला सोमनचंद के यहां मैं कई बार बजा आया हूं। कितने नेक हैं लाला साहब। क्या व्यापार और क्या व्यवहार, बिलकुल हीरा आदमी हैं वह!"

करीमबख्श सुनकर उत्सुक हुआ। सोमनचंद के साथ वह नया काम करने जा रहा था। वैसे अब तक सोमनचंद के बारे में उसे तसल्लीबख्श खबर ही लगी थी। उसने पूछ ही डाला, "यह सोमनचंद आदमी तो खरा है न?"

"अजी सोना है सोना... खरा सोना," बशारत बोला, "अभी पिछले साल ही लाख रुपये के आसामी से वह उलझा था। क्या मजाल कि बात नीची हो जाये!"

करीमबख्श ने कुछ सोचा और फिर बोल ही पड़ा, "मैं भी व्यापार के सिलसिले में उसके पास रुकूंगा। कोई खास लंबा-चौड़ा काम नहीं है। चार-पांच के पेटे में सौदा पट रहा है। देखो, क्या होता है?"

बात खुलासा हो गयी थी। वाकई सुबराती ठीक कहता है, 'हद है, मैं पांच हजार की रकम पर ही रोजा खोले दे रहा था। जबकि आसामी दस हजार का बनने जा रहा है।'

पर बशारत को फिक्र यह भी लगी थी कि अंजी के बाद रमचरना का इलाका लग जाता है।

दूसरे दिन मौका पाकर बशारत सुबराती से मिला था, "तुम्हारी बात बिलकुल सही निकली, सुबराती भाई," बशारत बोला, "पर अब बात यहां अटक रही है कि मुर्गी को मोटी होने से पहले ही हलाल करना सरेआम बेवकूफी है। उधर अंजी के बाद तुम्हारे उस्ताद रमचरना का इलाका लग जाता है।"

बशारत को बात जंच गयी। थोड़ी देर तक सौदेबाजी होती रही। फिर चार हजार में सौदा पट गया। अंजी आकर बशारत को आसामी को रमचरना को सौंप देना होगा।

बशारत एक तरह से खुश ही था। बगैर हापापाई के रकम हाथ लग रही थी। इसके अलावा रमचरना पर भी ठप्पा था कि एक तगड़ा आसामी उसे वाजिब दामों में दिया जा रहा था।

अंजी पहुंचकर बशारत ने करीमबख्श को बताया कि उसके घर में डाका पड़ गया है, लिहाजा उसे उल्टे पांव वापस लौटना पड़ेगा। बहरहाल,

जैतगढ़ अब उसका चचेरा भाई ईदू जायेगा। सुबराती ने अंजी पहुंचकर फौरन अड्डे की तरफ प्रस्थान किया और सारी बात रमचरना को समझा दी। रमचरना ने फौरन ही अपने दल को सतर्क कर दिया और सराय में आ धमका।

रमचरना की जुबान में चाशनी घुली थी। उसने आकर करीमबख्श को झुककर सलाम किया और रात को उसके पांव भी दबाये। लंतरानी हांकने में उसका जवाब नहीं था। करीमबख्श को उसने देखते ही देखते पटा लिया। आंखें चौड़ीकर उसने हाथ मटकाये और ठगों का किस्सा सुनाने लगा, "अजी हुजूर, पिछले साल मेरा ठगों से साबका पड़ा था। बात यों हुई कि एक हिंदू सेठ अपने छह-सात नौकरों को लेकर जैतगढ़ जा रहे थे। अब मुझे तो जैतगढ़ के सब रास्ते रटे पड़े हैं। न जाने सेठजी के साथ एक और सौदागर मंडली कहां से साथ लग गयी। मैं एक शादी में जा रहा था। मेरा माथा तो तब ठनका, जब वह सौदागर मंडली बजाय सीधे रास्ते के, टेढ़े-मेढ़े रास्ते बताने लगी। अजी, मैं फौरन ही समझ गया कि ये बेईमान ठग लोगों का गिरोह है। मैं भी चौकन्ना हो गया। मुझे तो एक ही मंतर मालूम था कि दो-चार आदमी हमेशा अलग खड़े रहने चाहिए और आसपास किसी को भी नहीं फटकने देना चाहिए। और हुआ भी यही। जब भी ठगों का गिरोह अपना जाल फैलाये, तो मेरे तीन आदमी दूर खड़े हो जायें। तलवारें हाथ में रहें उनके। अजी, उन्होंने सब घोड़े खोल डाले, पर हम काबू में नहीं आने दिये।"

करीमबख्श को यह सुनकर फौरन ही साइमन ब्राइट की आदत याद आ गयी, "हमारे साथ जो फिरंगी है न, वह भी यही करता है।" करीमबख्श बोला, "यह पट्ठा रात के खाने के वक्त सबसे दूर खड़ा रहता है। कोई पास भी आये, तो उसे दुत्कार देता है।"

"अजी बड़े मतलब का बंदा है यह तो।" रमचरना बोला।

"यही तो तुरूप का इक्का है, जो ठगों की सब चालें काटता है। वैसे तो अल्लाह ने चाहा, तो हम तो किसी को भी अपने संग लगायेंगे ही नहीं।"

रमचरना ने तरह-तरह से करीमबख्श का विश्वास जीता। यहां तक कि दूसरे दिन उसने अपने दल के पंद्रह आदमी सराय में भेजे। उनमें से एक मालदार सेठ और बाकी के हाली-मवाली बनकर आये। साथ में दो बंदूकें भी थीं। करीमबख्श बंदूकों के लालच में आने लगा था। पर रमचरना ने अलग ले जाकर उसे सलाह दी, "यह क्या कर रहे हैं हुजूर। मुझे तो दाल में काला नजर आ रहा है। इनका साथ जंच नहीं रहा है। यह सेठ भी जरूरत से ज्यादा मीठा बोलता है और बार-बार अपना माल दिखाता है। इसका साथ छोड़ो। इसे पहले निकल जाने दो।"

करीमबख्श इस बात से बहुत प्रभावित हुआ। रमचरना ने ऐसा नाटक किया कि उसने नये दल के साथ जाने में आनाकानी शुरू कर दी। नया दल रमचरना के ही गिरोह का टुकड़ा था। यह नाटक बहुत ही सफल हुआ। करीमबख्श के साथ-साथ साइमन ब्राइट भी रमचरना की बात से प्रभावित हुआ। उसने रमचरना से कहा भी था, "मुझे यह बात बतायी गयी है कि जब रात का खाना या जश्न चल रहा हो, तो दूर अकेले खड़े रहना चाहिए। मैंने सुना है कि ठग लोग पीछे खड़े होकर फंदा डालते हैं।"

रमचरना फौरन बोल पड़ा, "बिलकुल ठीक बताया है, जिस किसी ने भी आपको बताया है। अजी, सुनते हैं कि पीछे से टेंटुए पर ऐसा रूमाल फेंकते हैं कि आदमी चिल्ला भी नहीं पाता। हे भगवान, कैसे राक्षस हैं यह ठग लोग भी।"

अंजी से चार दिन बाद वह लोग जैतगढ़ की तरफ चले थे। रास्ते में तीन पड़ाव पड़ने थे। दूसरे पड़ाव पर रमचरना ने फैसला कर लिया था। तीसरे पड़ाव के पास ही उसके कबरखोदे जम गये थे। कुल दस कब्रें खोदनी थीं, जिन्हें उन्होंने नाले के करीब तैयार कर लिया था।

रात को खाने से पहले रमचरना ने पेड़े निकाले थे, जिनमें अच्छी मात्रा में भंग मिलायी थी। साइमन ब्राइट ने चार पेड़े खा लिये थे और जब अंधेरा छाते ही तरंग में आया, तो उसे अजीब-सा लगने लगा था। नशे की झुनक में वह अपनी तलवार संभाले और भी दूर खड़ा हो गया था। उधर करीमबख्श के आदमी रबड़ी चाटने में जुट गये थे। रात को खाना भी बड़ा स्वादिष्ट बना था। रमचरना को ज्यादा माथा-पच्ची नहीं करनी पड़ी। जब खाने के बाद मीठी खीर उड़ चुकी थी, तभी हुक्के ताजा किये जाने लगे। और फिर रमचरना ने आवाज दी, "तम्बाकू लाओ।"

साइमन ब्राइट, जो बड़ा सयाना बन रहा था, वह भी शिथिल पड़ गया था। गले में एक झटके से पैसा-बंधा रूमाल लिपटा और फिर चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा छा गया।

करीमबख्श और उसके तलवारबाज चूं तक नहीं कर पाये। और फिर जैसा कि होता है, उन्हें घसीटकर उनकी कब्रों के पास लाया गया। सारा माल-असबाब काबू में कर लिया गया। कान की अंतियां और अंगूठियां भी उतार ली गयीं और उन्हें दबाकर जमीन चौरस कर दी गयी।

खलबली तो तब मची, जब एक महीना गुजरने तक भी साइमन ब्राइट



"सुनते हैं कि पीछे से टेंटुए पर ऐसा रूमाल फेंकते हैं कि आदमी चिल्ला भी नहीं पाता"

विशप हीबर के पास नहीं लौटा। और तब बात टकराती हुई कैप्टन मीडोज टेलर के कान में भी पहुंची।

कैप्टन मीडोज टेलर उन दिनों मेजर स्लीमेन का सहायक अफसर था। मेजर स्लीमेन को ठगी उन्मूलन का भार सौंपा गया था और उसने सागर में अपना केंद्र बनाया था। क्योंकि सागर के पास नरसिंह पुर में ठगों का माना हुआ अड्डा था, जो कि दूर-दूर तक छापे

मारकर काम कर रहा था।

जब ठगों ने माल-असबाब लूटा था, तो साइमन ब्राइट के हाथ के लिखे कागज-पत्तर भी हाथ में आये थे। ठगों ने कागजों को पुड़िया बांधने के काम में लाया और जब एक पुड़िया का कागज वरधा में अंग्रेज जासूस के हाथ लगा, तब बात साफ हो गयी थी। अंग्रेज जासूस राबर्ट स्नो वरधा आकर साइमन के बारे में तहकीकात कर रहा था। पुड़िया का कागज, जिस पर साइमन के हाथों लिखी अंग्रेजों ने पुष्टि कर दी कि साइमन वरधा से ही चला था।

इधर जब तीन महीने तक करीमबख्श और उसके साथियों का कुछ पता नहीं चला, तो उनके यहां भी रोना-पीटना शुरू हो गया था। कुछ रियासती हरकारों को पैसा ले-देकर पता लगाया। स्नो वरधा से वापस लौट चला था। उसे सोलह आने विश्वास हो गया था कि साइमन ठगों के चंगुल में फंसकर मारा गया है।

कैप्टन मीडोज टेलर ने खबर सुनकर अपनी चाल चली थी। उसने चपरासी दल को तैयार कर लिया और उन्होंने फौरन नौटंकी करना शुरू कर दिया। दो चपरासी भारी भरकम सेठ बन गये और एक उनका मुनीम



"अंजी के पड़ाव से करीब बीस मील पहले रात को जश्न बड़े जोर-शोर से मनाया जा रहा था"

बना। दस आदमी नौकर-चाकर और बंदूकधारी जमादार बन गये। उनके पीछे लेफ्टिनेंट सैंडर्स अपने बीस सिपाहियों को लिये बनजारों का रूप धरे चलने लगा।

वरधा की कच्ची सराय में चपरासी दल ने यह नाटक शुरू किया था। रोज जलेबी-कचौड़ी का नाश्ता और दूध-लस्सी की बहुतायत ने बशारत का ध्यान खींचा। रामप्रसाद को भेजा था बशारत ने। रामप्रसाद सब कुछ अपनी आंखों से देखकर आया था। कानों की सुनी ठग नहीं मानते थे। जिस दिन सेठ ने पुखराज और हीरों की पुड़िया खोल-खोलकर देखी, तो रामप्रसाद मुंह में पानी भरे टुकुर-टुकुर देख रहा था। बार-बार सेठजी कह रहे थे, "पचास हजार का माल तो अपने पास है और भगवान ने चाहा, तो एक लाख के हीरे चार-पांच दिन में नागपुर से आ जायेंगे। सुनते हैं, जैतगढ़ के राजा की तीसरी शादी होनेवाली है। भगवान शंकर ने चाहा, तो दोगुना फायदा हो जायेगा।"

रामप्रसाद की बांछें खिल गयीं। उसने पास खड़े वहीदा से फिरनी में कहा, "आरफासारफामी तरफगड़ा हैरफै।" (आसामी तगड़ा है)।

वहीदा ने फिरनी में ही उत्तर दिया, "कारफारफी मारफाल हारफाथ लरफगेगा।" (काफी माल हाथ लगेगा)।

जब दोनों ने बशारत को खबर सुनायी, तो बशारत का दिल बांसों उछल पड़ा। बशारत बोला था, "अगर अल्लाह ने चाहा, तो हम यह काम करके सालभर तक के लिए निच्चू हो जायेंगे।"

बशारत ने अबकी बार जैतगढ़ रियासत के तिलंगों का रूप धरा था। सबके कुरते पाजामे एक रंग के थे और सर पर पीली पगड़ियां थीं। हाथ में लंबे बरछे थे। बशारत के कंधे पर चमड़े का थैला पड़ा था, जिसमें कुछ कागज भरे थे। थैले के ऊपर जैतगढ़ का राजचिह्न त्रिशूल बना था और लिखा था, "जैतगढ़ राज्य।"

तीस आदमियों का दल कच्ची सराय पर आकर टिका। बशारत ने जरूरत से ज्यादा ऊंची आवाज में बार-बार कहा, "हम जैतगढ़ महाराजा के सिपाही हैं और हम मालगुजारी वसूल करके वापस जा रहे हैं। काफी रकम है हमारे पास। शायद हमारे सिपाहियों की एक दूसरी टुकड़ी चार-पांच दिन में आ जाये। तभी हम इकट्ठे होकर चलेंगे। रास्ते में ठगों का जोर है और हमारे पास सरकारी रकम है।"

यह बात इस तरह फैलायी गयी कि सेठजी के कानों तक पहुंच सके। और हुआ भी वही। चपरासी दल के नकली सेठजी के कानों तक बात पहुंच गयी। दोनों तरफ से चालें शुरू हो गयीं। बशारत ने तो उनका विश्वास जीतने की चाल चली और चपरासी दल ने उसमें फंसने का नाटक शुरू कर दिया। उधर सराय के बगल में बैठे परचूनिये छिद्दीमल के साथ लेफ्टिनेंट सैंडर्स ने उठना-बैठना शुरू कर दिया। बड़ी मीठी जुबान में उसने लेफ्टिनेंट सैंडर्स से कहा था, "साव, बिलकुल तुम जैसा ही गोरा-चिट्टा था वह फिरंगी भी। और जब करीमा सेठ चला था, तो यह आदमी भी उनके साथ चला था। तब शायद यह नफीरी नगाड़ेवाला बनकर आया था। मानो चाहे मत मानो, पर मेरा तो माथा ठनक रहा है। हो-न-हो, यह आदमी ऐबी जरूर है। अरे, दूर क्यों जाओ। करीमा का तो अब तक पता ही नहीं चला, पर यह पट्ठा हट्टा-कट्टा नजर आ रिया है।"

सैंडर्स ने सुनकर अपना फैसला कर लिया था, वह इस बशारत के साथ जरूर आगे बढ़ेगा।

कोई चार दिन तक बशारत नकली सेठ को फुसलाता रहा और नकली सेठ जान-बूझकर उसके जाल में फंसता रहा।

सोमवार के दिन यात्रा का श्रीगणेश हुआ। सेठ मंडली के भेष में चपरासी दल सतर्क होकर कदम बढ़ा रहा था। उनके पीछे-पीछे लेफ्टिनेंट सैंडर्स अपनी टुकड़ी लिए होशियारी से चल रहा था।

अंजी के पड़ाव से करीब बीस मील पहले रात को जश्न बड़े जोर-शोर से मनाया जा रहा था। अरब की मशहूर तवायफ गुलाबो अपने साजिंदों के साथ बुलवायी गयी थी। शाम से ही चहल-पहल शुरू हो गयी थी। डेरे के पास चार किस्म के गोश्त पकाये जा रहे थे। एक दर्जन आतिशी शराब की बोतलें मुहैया कर ली गयी थीं। बाहर दरियों पर चांदनी बिछा दी गयी थी। अगरबत्ती की महक से वातावरण सुगंधित हो रहा था। गावतकियों के सहारे लोग अधलेटे टिके हुए थे। चपरासी दल बिलकुल

सतर्क था। उन्हें पता चल चुका था कि आज ही कत्ल की रात मनायी जानी थी।

हल्की-हल्की गुलाबी सरदी थी। इस कारण शाल और गुलूबंद लपेटे हुए सब लोग बैठे थे। लेफ्टिनेंट सैंडर्स ने चपरासी दल के गुलूबंदों में कड़े गत्ते के खोल छिपा रखे थे। अगर पैसा बंधा रूमाल गले में लिपट भी गया, तो वह टेंदुए में नहीं फंस सकता था और न ही उमेठने पर धंस सकता था। चपरासी दल ने सतर्कता से गुलूबंद लपेट रखे थे। इसके अतिरिक्त छह छंटे हुए चपरासियों के पास छोटे तमंचे भी भरे हुए रखे थे, जो उनके अंगोंछा में लिपटे हुए सामने धरे हुए थे।

लेफ्टिनेंट सैंडर्स के सिपाही बिखरे हुए थे। उनके पास बारह बंदूकें थीं। तलवार और बरछे भी काफी मात्रा में थे।

करीब साढ़े नौ बजे गुलाबो जान की ठुमरियां छाने लगी थीं। जो शराब के प्याले चपरासी दल को दिये जा रहे थे, उन्हें वे होशियारी से आंखें बचाकर पीकदान में डाल रहे थे। वैसे शराब के नशे का पूर्ण अभिनय वे बड़ी कुशलता से कर रहे थे।

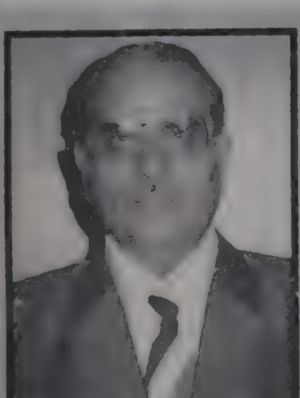
लगभग दस बजे तक कबरखोदे अपना काम कर चुके थे। उनका एक सदस्य दबे पांव छिपकर आया था और जश्न की जगह खड़े ग्यासिया से फुसफुसा कर बोला था, "कितनी देर और है?"

ग्यासिया ने बताया कि एक-डेढ़ घंटे में काम निबट जायेगा। साढ़े ग्यारह के करीब चपरासी दल ने नशे में झूमने का नाटक और भी तेज कर दिया। उसी वक्त हुक्के और फर्शी ला-लाकर ठग रखने लगे। हुक्के ताजे किये जाने लगे थे। अब वे बशारत के मुंह से संकेत सुनने की प्रतीक्षा में सतर्क हो गये थे। गुलाबो जान की ठुमरी वातावरण में मचलने लगी थी। वह बड़े हाव-भाव से गा रही थी, "ननदिया सैयां दुआर फिर गये री।" सब तरह "वाह-वाह" हो रही थी। जैसे ही महफिल रंग पर आयी कि ठग दल आगे बढ़ने लगा।

करीब-करीब सभी ने अपना स्थान ले लिया। एक चपरासी के पीछे एक ठग। इन ठगों के पीछे लेफ्टिनेंट सैंडर्स अपने सिपाहियों को लिये हमला करने की तरतीब से सतर्क खड़ा था। ठुमरी की चाल बढ़ती जा रही थी। तभी बशारत ने इधर-उधर देखा। सब जगह उसके आदमी ठीक जगह पर तैनात हो चुके थे। उसने अपने बगलगीर सेठ से कहा, "हुक्के मंगवाये जायें।"

चपरासी ने सिर हिलाया और वह भी सतर्क हो गया। तभी बशारत चिल्लाया, "तम्बाकू लाओ।"

और तभी धमा-चौकड़ी-सी मच गयी। ठगों को आश्चर्य तो तब हुआ, जबकि उनका फेंका हुआ रूमाल गले में धंसने के बजाय खिसकने लगा। उधर चपरासी दल को सागर में प्रशिक्षण मिल चुका था। रूमाल पड़ते ही उन्होंने पीछे हाथ डालकर बैठे-बैठे ही धोबी पाट मारा। ठग किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। कुछ तो भद्द से आगे आ टपके और कुछ चपरासियों से धर-पटक करने लगे। कुछ लम्हे को तो बशारत भी हक्का-बक्का रह गया।



लेखक
बाला दुबे

तभी पीछे से लेफ्टिनेंट सैंडर्स "चार्ज" कहता हुआ टूट पड़ा। पांच मिनट में फैसला हो गया। दो ठगों को सिपाहियों ने संगीन भोंककर मार डाला था। बाकी के सब देखते-ही-देखते काबू में आ गये। चपरासियों का हेड चिल्लाया, "हुजूर, कबरखोदों को भी पकड़ लिया जाये।"

उन ठगों की मुश्कें बांध दी गईं। लेफ्टिनेंट सैंडर्स बशारत को आगे धकेलता हुआ बोला, "चलो, हमें कबर दिखाओ।"

बशारत हारा-सा चलने लगा। पांचों कबरखोदे भी पकड़ लिये गये थे।

बीस कोड़े खाकर बशारत ने सब कुछ उगल दिया था। "साइमन को उसने रमचरना को अंजी में बेच दिया था।" यह भी उसने बताया था। बशारत को जब लेफ्टिनेंट सैंडर्स ने बताया कि अमीर अली जैसे ठगों के उस्ताद एवं पीर भी सरकारी गवाह बन गये हैं, तो बशारत एकाएक टूट गया। फिर वह भी मुखबिर बनकर लेफ्टिनेंट सैंडर्स के साथ-साथ चल पड़ा था।

जैतगढ़ से दस मील इधर उसने रमचरना के गिरोह को पकड़वाया। लेफ्टिनेंट सैंडर्स को आश्चर्य तो तब हुआ, जब रमचरना ने हाथ जोड़कर बताया, "महाराजा जैतगढ़ की हम परजा हैं हुजूर। उनके इलाके में जो मालमत्ता लूटा जाता है, उसका चौथाई भाग हम उन्हें भेंट करने जाते हैं। जब कोई विपदा हमारे सर आती है, तो महाराज हमें अपने छत्तर के नीचे ले लेते हैं।"

उसी रात लेफ्टिनेंट सैंडर्स ने अपनी लंबी-चौड़ी रिपोर्ट में कैप्टन मीडोज टेलर को लिखकर भेजा था, "ठगों के सर पर लोकल राजाओं का हाथ है। लूट का चौथाई भाग उन्हें दिया जाता है।"

और नागपुर के कमिश्नर ने इस बात का फायदा तुरंत ही उठाया। जैतगढ़ उन दिनों भोंसले राज्य के अधीन था। भोंसले का शीराजा बिखरने लगा था। लिहाजा, जैतगढ़ के प्रशासन की देख-रेख करने के लिए रेजीडेंसी कायम करना अब जरूरी हो गया था। पर रियासत में घुसने का कोई वाजिब बहाना नहीं मिल पा रहा था। आज यह बहाना भी हाथ आ गया था।

इतिहास गवाह है कि कैप्टन मीडोज टेलर ने उस समय के उस्ताद ठग अमीर अली को गिरफ्तार किया था। ठग उन्मूलन का ब्यौरा भरी किताब 'कन्फैशन्स ऑफ ए ठग' कैप्टन मीडोज टेलर की एक दस्तावेजी किताब साबित हुई।

इसके अतिरिक्त मेजर स्लीमेन की पुस्तक 'ठग गैंग्स' और सर फ्रांसिस टकर की पुस्तक 'दि येलो स्कार्फ' भी ठगी पर प्रामाणिक दस्तावेज हैं। यह पुस्तकें भारत सरकार की 'नेशनल आर्केव्यूइज' में मौजूद हैं। ●

भारतीय मनोरम कहानियाँ का स्वामित्व तथा अन्य विवरण
(फार्म 4)

प्रकाशन स्थानः दिल्ली
प्रकाशन की अवधिः मासिक
राष्ट्रीयताः भारतीय
प्रकाशक का नामः विकास लूथरा
पताः 93, संगम अपार्टमेंट्स, पश्चिम विहार, दिल्ली-110041
मुद्रक का नामः विकास लूथरा
पताः 93, संगम अपार्टमेंट्स, पश्चिम विहार, दिल्ली-110041
सम्पादक का नामः विकास लूथरा
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका पत्रिका पर स्वामित्व हैः विकास लूथरा
पताः 93, संगम अपार्टमेंट्स, पश्चिम विहार, दिल्ली-110041
मैं विकास लूथरा घोषित करता हूं कि ऊपर दिये गये विवरण मेरी जानकारी और विश्वास से सही हैं।

हस्ताक्षरः विकास लूथरा
31 मार्च, 2002

— लाल सलाम —

(पृष्ठ 89 का शेष)

शिक्षा, अच्छी खेती, लोकतांत्रिक अधिकारों से परे आदिवासी बस प्रकृति पर ही निर्भर रहते हैं। इसके विपरीत कन्ना को इस बात का पक्का विश्वास था कि वह एक न एक दिन उस समाज का मानसिक और आर्थिक विकास करने में अवश्य सफल होगा।

अचानक एक दिन कन्ना का विश्वास डगमगाने लगा। उसके शांत जंगल में नक्सलवादियों का प्रवेश हो गया। उन नक्सलवादियों के हौसले बुलंद करने में पूंजीपति और चंद सरकारी कर्मचारी सहयोग देने लगे। क्योंकि उन सभी के साथ न्याय नहीं हो सका था। न्याय के अभाव में जुटनेवाले लोगों से कन्ना टकरा गया। कन्ना ने कभी नहीं सोचा था कि वह जिन लोगों से टकरा रहा है, वह सिर्फ बंदूक और उससे निकलनेवाली गोलियों की भाषा समझते और बोलते हैं।

कन्ना ने अपने भाई घीसू (विजय राज) और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ-साथ गांववालों को भी नक्सलियों के देशद्रोही इरादों से सावधान किया और उन्हें स्पष्ट रूप से समझाया कि नक्सलवादी देशद्रोही हैं। उन्हें किसी भी तरह से उनका साथ नहीं देना चाहिए। इसके बाद कन्ना अपनी आगे की पढ़ाई के लिए नागपुर वापस चला जाता है।

दूसरी तरफ रूपी को कन्ना का इंतजार है। वह उसके साथ अपनी शादी के सपने संजोए है। कुछ समय बाद कन्ना मड़ावी डाक्टर बनकर अपने गांव वापस आता है। गांव आने से पहले उसने गांव के बारे में तरह-तरह के सपने अपने मन में संजोये हैं। लेकिन गांव पहुंचकर उसके यह सपने बिखर जाते हैं। उसे पता चलता है कि उसका भाई घीसू नक्सलवादी बन गया है और रूपी उसे छोड़कर इस दुनिया से जा चुकी है।

गांववालों ने कन्ना से यह बात छिपाई थी कि रूपी जिंदा है। दरअसल, वह कन्ना को नहीं बताना चाहते थे कि उसके प्रेम की दीवानी और



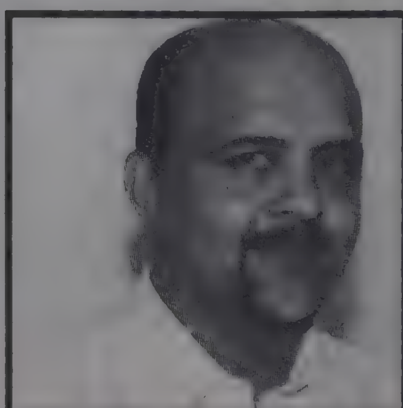
भोली-भाली रूपी की भूमिका में नंदिता दास

उसके साथ अपने सपनों को सजाकर सुखी संसार की कल्पना करनेवाली रूपी भी नक्सलवादी बन गयी है। अपने ऊपर हुए जुल्म और अत्याचार के खिलाफ उसने नारी रूप को त्यागकर अत्याचार के खिलाफ बंदूक उठा ली है। इस बात का गहरा दुख कन्ना को होता है। इसके बावजूद कन्ना ने लोगों की सेवा करने का फैसला किया। वह गांव में ही रहकर अपनी प्रैक्टिस करने लगा। लोग उसका सम्मान करने लगे। उसकी हर बात मानने लगे। उसके प्यार और लोकप्रियता का परिणाम यह हुआ कि वह नक्सलवादियों की आंखों में कांटे की तरह चुभने लगा।

नक्सलवादी पार्टी के प्रचार में स्पेशल टास्क फोर्स के साथ हुए टकराव में घीसू मारा जाता है और कामरेड चन्द्रका अपना बदला पुलिस इंसपेक्टर देशपांडे (सयाजी शिंदे) से

पर्दे के पीछे का असली नायक: निर्माता संजीव करंबेलकर

फिल्म "लाल सलाम" के निर्माता संजीव करंबेलकर ही इस फिल्म के असली नायक हैं। जब तक उन्हें कथा-पटकथा-संवाद वास्तविक या वास्तविकता के एकदम निकट होने का अहसास नहीं हुआ, फिल्म नहीं बनायी। फिल्म का एक-एक दृश्य उनकी अपनी कल्पना और जीवन से जुड़ी घटनाओं पर आधारित है। वह बताते हैं, "मैंने जब 'हुकुमी' पढ़ा, तो कुछ और जानने की इच्छा हुई। इसके लिए मैं लगभग छह वर्षों तक उन लोगों से मिलता रहा। उनके दुख-दर्द की जानकारी उन्हीं लोगों के मुंह से सुनता रहा। इसके बावजूद नक्सलवाद से संबंधित छोटी से छोटी जानकारी भी हासिल करता रहा। मुझे उन



हालातों की जानकारी भी मिली, जिन हालातों में नक्सली जन्म लेता है। उसके बाद मैंने पटकथा पर काम शुरू करवाया। पटकथा पर जो बात मुझे नहीं पसंद आती थी, उसे नहीं रखता था। मेरी पसंद का सवाल भी नहीं था। मेरा सोचना बस यही था कि जो कुछ मैंने देखा है, सुना है या मेरा अनुभव है, उसे उसी तरह पर्दे पर लाया जाये।"

आज संजीव करंबेलकर अपनी फिल्म को अपनी शोध और अनुभवों के आधार पर एकदम सही मानते हैं। उनका कहना है, "इस फिल्म को आम फिल्म नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि यह वास्तविकता पर आधारित होते हुए भी व्यावसायिकता लिये हुए है। जब मेरी फिल्म सेंसर ने देखी, तो उन्होंने इस बात की सराहना की कि सचमुच यह एक अच्छी फिल्म बनी है। फिल्म में सभी कलाकारों ने पूरी मेहनत की है और एक-एक पात्र को सजीव कर दिया है। मुझे इस बात का संतोष है कि मैंने देश की गंभीर समस्या नक्सलवाद को आम दर्शकों तक पहुंचाने की एक सफल कोशिश की है।



प्यार के क्षणों में रूपी और कन्ना (नंदिता दास और शरद कपूर)

लेती है। तभी कन्ना को पता चलता है कि कामरेड चन्द्रका कोई और नहीं, उसकी अपनी रूपी है। जहां उसे रूपी के जिंदा होने की बात से खुशी मिलती है, वहीं उसके नक्सलवादी बन जाने का दुख भी होता है। आखिर वह एक फैसला करता है और रूपी को अपने परिवार, प्यार, समाज और कानून का वास्ता देकर अपने गांव लौट आने को विवश कर देता है।

छायाकार -निर्देशक संतोष सिवन ने इस विषय को लेकर फिल्म 'द टेररिस्ट' का निर्माण किया था। लेकिन यह फिल्म किसी एक ही पात्र विशेष को लेकर उसकी भावनाओं को पर्दे पर उतारा गया था। जबकि 'लाल सलाम' का कथानक भारत में चलनेवाले समूचे नक्सलवाद के खिलाफ है।

पश्चिम बंगाल के एक छोटे-से गांव से उठी चिनगारी की लपटों में आज देश के ग्यारह राज्य धधक रहे हैं। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, आंध्र प्रदेश, पं. बंगाल, झारखंड जैसे राज्य आज नक्सलवादी गतिविधियों की आग से बुरी तरह झुलस रहे हैं। आखिर वह चाहते क्या हैं? उनकी समस्याएं क्या हैं? क्या आज भी नक्सलवादी जन्म लेता है?

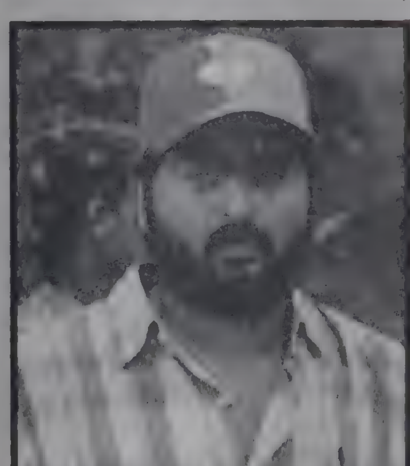
इन तमाम बातों ने फिल्म 'लाल सलाम' के निर्माता संजीव करंबेलकर को भीतर से झकझोरकर रख दिया था लगभग छह साल पहले उन्होंने नक्सलवाद पर लिखी एक किताब 'हुकुमी' पढ़ी थी।

इस उपन्यास की एक-एक बात, शोध करके और व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर लिखी गयी थी। 'हुकुमी' को पढ़ने के बाद निर्माता संजीव करंबेलकर ने व्यक्तिगत शोध किया और उसके आधार पर फिल्म निर्माण करने का फैसला किया। उपन्यास के आधार पर इसकी पटकथा और संवाद लिखने का काम के.के. सिंह को सौंपा गया। के.के. सिंह कई सफल फिल्मों के लेखक रह चुके हैं। उन्होंने 'वीरगति' का निर्देशन भी किया था। सन्, 1999 में के.के. सिंह की पटकथा के आधार पर संजय रावल ने फिल्म का निर्देशन किया था और फिल्म में काम करनेवाले कलाकार थे दीपक तिजोरी और दिव्या दत्ता।

फिल्म की पटकथा का ज्ञान निर्माता संजीव को भले ही न हो, लेकिन वह विषय के साथ इतनी गंभीरता से जुड़े हुए थे कि वह हर बात को कथा की वास्तविकता न सही, लेकिन उसे काफी निकटता से पर्दे पर देखना चाहते थे। इस फिल्म की शूटिंग के बाद जब उन्होंने उसे पर्दे पर देखा, तो वह संतुष्ट नहीं हुए और उन्होंने पूरी फिल्म डिब्बे में बंद कर दी। कुछ महीने बाद संजीव ने एक बार फिर उस उपन्यास को पढ़ा और मन ही मन इस बात पर विचार करने लगे कि आखिर उनकी कल्पना को पर्दे पर सही तरीके से कौन उतार सकता है? अभी वह इस बात पर कोई फैसला कर पाते कि उनकी मुलाकात के.के. सिंह के सहायक अरशद जमाल से हो गई। वैसे वह अरशद से पहले भी मिल चुके थे। लेकिन विषय को लेकर कोई बातचीत नहीं

बहुत 'बोल्ड' पटकथा और संवाद हैं — अरशद जमाल

सुप्रसिद्ध लेखक के.के. सिंह के सहायक रह चुके अरशद जमाल की स्वतंत्र लेखक के रूप में यह पहली फिल्म है। इस फिल्म को लेकर वह काफी उत्साहित हैं। वह कहते हैं, "मेरे स्वतंत्र लेखन का यह पहला मौका है। फिल्म नक्सलवादी जैसे गंभीर विषय पर है। इसकी पटकथा और संवाद की जिम्मेदारी मुझ पर विश्वास के साथ देना फिल्म निर्माता संजीवजी का अपनापन है। फिल्म जितनी बोल्ड बनी है, उतने ही बोल्ड उसके संवाद हैं। मुझे जहां आश्चर्य है, वहीं इस बात की खुशी भी है कि सेंसर बोर्ड ने बोल्ड संवादों को भी पास किया। दरअसल, संवाद ही उस विषय की गंभीरता के



बनाये रखने में सहायक थे।"

अरशद जमाल ने सहायक निर्देशक के रूप में भी काम किया है। इसलिए इस विषय की पटकथा और संवादों के साथ-साथ उसे पर्दे पर अच्छी तरह से प्रस्तुत करने में भी उनसे काफी सहयोग मिला है। 'बैंडिट क्वीन' के बाद संभवतः यह दूसरी फिल्म है, जिसके संवाद वास्तविकता के अहसास के साथ-साथ विषय और पात्र की गंभीरता का अहसास कराते हैं। अरशद अपने अनुभवों के आधार पर बताते हैं, "मैं के. एम. श्रीवास्तव के साथ एक फिल्म की शूटिंग के लिए दार्जिलिंग गया था। उसके बाद कई फिल्मों की शूटिंग के लिए मुंबई के बाहर गया, लेकिन दार्जिलिंग के बाद 'लाल सलाम' की शूटिंग में दिल खोलकर काम करने में खूब मजा आया। वास्तविक कथा पर जहां फिल्म का निर्माण होता है, वहां सचमुच ही काम करने का अलग ही मजा है। साथ ही एक अलग संतुष्टि का अनुभव होता है।"

हुई थी। अरशद जमाल को उन्होंने 'हुकुमी' की पटकथा पर पांच दिन तक काम करने को कहा। यह अरशद का 'ट्रायल' था। जब संजीव ने अरशद की पटकथा को देखा, तो उन्हें संतोष हुआ और पटकथा संवाद लिखने का काम अरशद जमाल को सौंप दिया।

अब निर्माता संजीव करंबेलकर चाहते थे कि अच्छी कथा-पटकथा और वास्तविकता के काफी निकटवाले संवादों को पर्दे तक सही रूप से कोई निर्देशक पहुंचा दे। इसी भागदौड़ में उन्होंने पुणे के गगनबिहारी बोटाटे को निर्देशन की जिम्मेदारी सौंपी। गगनबिहारी बोटाटे थियेटर से पिछले बीस वर्षों से जुड़े हुए हैं। अभिनय की बारीकियों का उन्हें अच्छा अनुभव है। इसके साथ ही वह नाना पाटेकर और दीप्ति नवल के साथ 'सूर्योदय' नामक फिल्म भी बना चुके हैं। विषय की गंभीरता को देखते हुए, उन्होंने लेखक अरशद जमाल को उनके साथ 'एसोसिएट' भी कर दिया। इस तरह तैयारियां करने के बाद फिल्म की मुख्य भूमिका के लिए कई अभिनेत्रियों से बात हुई, लेकिन नंदिता दास का चुनाव इसलिए किया गया कि वह रूपी की उस भूमिका में एकदम फिट बैठती थी। महत्वपूर्ण बात यह थी कि उस समय उनके बाल भी कटे हुए थे।

नंदिता दास के साथ किसी ऐसे कलाकार की आवश्यकता थी, जिसकी छवि दर्शकों पर खास न हो और उसे वास्तविक भूमिका के समान नहीं, तो करीब जरूर होना चाहिए। दरअसल, यह भूमिका महाराष्ट्र के आदिवासियों की सेवा के लिए समर्पित बाबा आमटे के दामाद डा. कन्ना मड़ावी की थी। कन्ना देश के ऐसे पहले डाक्टर हैं, जिन्होंने आदिवासियों के लिए जंगलों और गांवों में रहकर काम किया है। उनके जीवन के साथ यह बात काफी हद तक सही बैठती है कि 'सादा जीवन उच्च विचार'। शरद कपूर का इस भूमिका के लिए चुनाव काफी सोच-विचार करने के बाद किया गया। क्योंकि उसकी



प्यार की खुशी का अहसासः नंदिता दास और शरद कपूर

पहली दोनों फिल्में 'जोश' और 'आगाज' ने कोई विशेष सफलता हासिल नहीं की थी। इसलिए दर्शकों के बीच शरद की विशेष छवि नहीं थी। जब डा. कन्ना मड़ावी की भूमिका के लिए शरद कपूर का चुनाव हो गया, तो वह काफी उत्साहित था। अपनी भूमिका के लिए उस डाक्टर से व्यक्तिगत रूप से नागपुर में मिला और उनके अनुभवों के आधार पर अपनी भूमिका को निभाया।

नंदिता दास मूल रूप से पश्चिम बंगाल की ही हैं। इसलिए वह काफी पहले ही नक्सलवादियों और उनकी गतिविधियों के बारे में सुन चुकी हैं। इसके बावजूद उसने नक्सलवादी लड़ाई की भूमिका के लिए पूरी पटकथा को कई बार पढ़ा। इनके अलावा 'लाल सलाम' में मकरंद देशपांडे राजप्पा की भूमिका में विजयराज घीसू, राजपाल याद‌व दत्तु, हेमांगिनी मैनी की भूमिका में हैं। सयाजी शिंदे इस फिल्म में इंसपेक्टर देशपांडे की भूमिका निभा रहे हैं। इनके साथ हैं अनंत जोग और अखिलेन्द्र मिश्रा।

कलाकारों के चुनाव के बाद अच्छे और सुलझे हुए तकनीशियंस के चुनाव की आवश्यकता थी। ऐसे

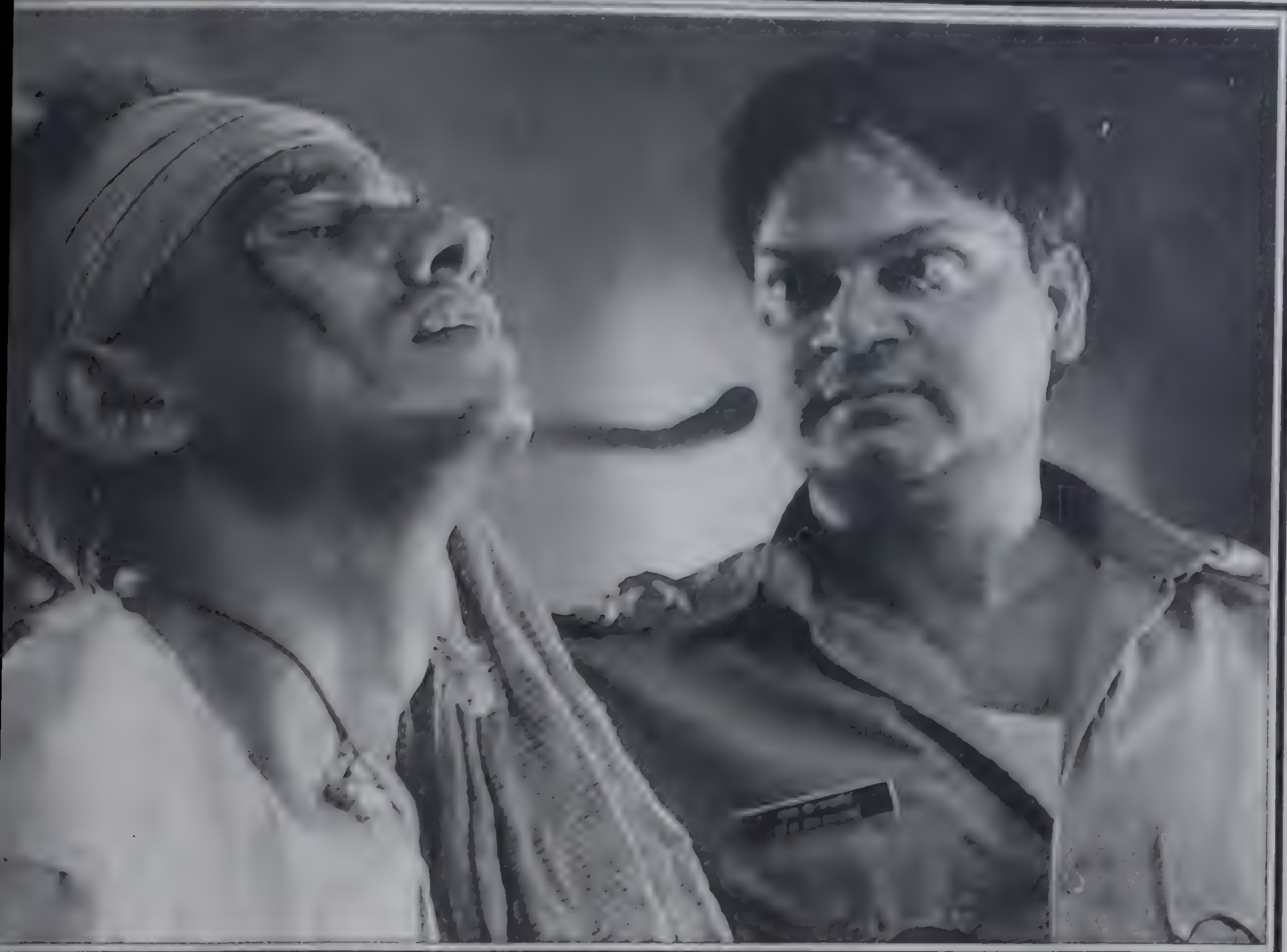
ऐसी फिल्मों में काम करना बहुत अच्छा लगता है— नंदिता दास

"जिस तरह की फिल्में मैं पसंद करती हूं, उस तरह की फिल्म 'लाल सलाम' को मैं अपने मनपसंद चरित्र के लिए विशेष मानती हूं। क्योंकि उसमें एक यथार्थ चरित्र निभा रही हूं। आदिवासी क्षेत्र की एक ऐसी भोली-भाली युवती रूपी का चरित्र है मेरा, जिसके साथ बलात्कार किया जाता है तथा बलात्कारी कोई और नहीं, उस क्षेत्र का पुलिस अधिकारी देशपांडे (सयाजी शिंदे) है।



"हालात ऐसे होते हैं कि मैं अपने अपमान का बदला लेने तथा आदिवासियों को शोषण से मुक्त कराने के लिए खूंखार नक्सलवादी 'कामरेड चंद्रका' बन जाती हूं। मेरा प्रेमी कन्ना मड़ावी (शरद कपूर) शहर से डाक्टरी की पढ़ाई पूरी करके उसी क्षेत्र में आता है। उसे जब पता चलता है कि उसकी गैर-मौजूदगी में उसकी प्रेमिका रूपी एक खतरनाक नक्सलवादी बन गई है, तो वह हतप्रभ रह जाता है।

इस फिल्म को करने में मुझे बहुत मजा आया। हमारी यूनिट ऐसे घनघोर जंगलों में शूटिंग करती रही, जहां आरामदायक सुविधाएं तो छोड़िए, बिजली तक की सुविधा अभी तक नहीं पहुंची है।"



घीसू की भूमिका में विजयराज और इंसपेक्टर की भूमिका में अखिलेंद्र मिश्रा

ठभूमि पर बननेवाली फिल्मों के ए यह काफी आवश्यक होता है छायाकार, लेखक-निर्देशक की ल्पना को पर्दे पर साकार कर है। वैसे प्रचार में छायाकार को ई महत्व नहीं दिया जाता है, केन पूरी कहानी को प्रत्यक्ष रूप प्रस्तुत करने में छायाकार का ही गदान रहता है। 'लाल सलाम' के यांकन की जिम्मेदारी देवु देवधर मौंपी गयी। संपादन विभूति ण को, एक्शन अब्बास अली को र शूटिंग के दौरान कार्यकारी निर्माता के रूप में काम की पूरी जिम्मेदारी अनूप श्रीवास्तव को सौंपी गयी। सहायक निर्माता हैं, मानसी करंबेलकर।

मार्च, 1999। लगभग दो सौ लोगों का काफिला गढ़चिरौली के भंवरागढ़ के लिए रवाना हुआ। सभी लोगों को एक अंजान जगह पर जाने और वहां के जंगलों को देखने की उत्सुकता थी। मन ही मन कुछ खुशी थी, तो कुछ दहशत भी थी। क्योंकि वह एक ऐसी जगह जा रहे थे, जिसे नक्सलियों का गढ़ माना जाता है। इसके अलावा उस विशाल जंगल में जंगली जानवरों का भी डर था। ऊपरवाले का नाम लेकर सभी लोग अपने निश्चित स्थान पर पहुंच गये। उनके ठहरने के लिए बाबा आमटे के निवास पर ही व्यवस्था थी।

शूटिंग शुरू हुई। पूरी फिल्म जंगल की खिलती हरियाली के बीच फिल्मायी जानी थी। सिलसिला दिन-रात का शुरू हुआ, तभी नक्सलियों का एक दल बाबा आमटे के निवास पर पहुंचा और जानने की कोशिश की कि उन पर फिल्मायी जानेवाली फिल्म की वास्तविकता क्या है? उन्हें पूरी पटकथा के बारे में जानकारी दी गई। पूरी तरह से संतुष्ट होने के बाद बिना किसी रोक-टोक के फिल्म की शूटिंग शुरू हुई। वैसे इस यूनिट की सुरक्षा के लिए स्थानीय पुलिस के साथ-साथ सुरक्षाकर्मी भी मौजूद थे। इसके बावजूद कहीं न कहीं भय छाया रहता था।

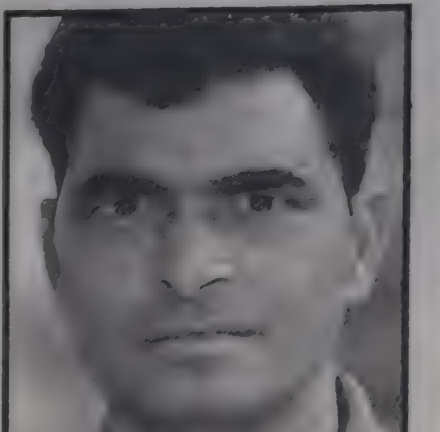
लगातार तीन महीने की शूटिंग के बाद गर्मी का मौसम आ गया और गर्मी की तपन के साथ जंगल की उमस ने हरियाली को उजाड़ दिया। परिणामस्वरूप शूटिंग का काम कुछ महीनों के लिए रुक गया। पूरी यूनिट बरसात के आने और खत्म होने का इंतजार करती रही। आखिर हरियाली एक बार फिर छायी और शूटिंग का काम फिर शुरू हुआ। इस तरह फिल्म की शूटिंग में काफी समय लग गया। "लाल सलाम" की शूटिंग से पहले इस बात की आवश्यकता थी कि शूटिंग उन्हीं स्थानों पर की जाए, जहां पर नक्सलवादियों का संबंध या संपर्क रहा हो। इसलिए भंवरागढ़, गढ़चिरौली के अलावा मध्य प्रदेश के बस्तर, आंध्र प्रदेश के करीमनगर और महाराष्ट्र के ईगतपुरी के इलाकों में शूटिंग की गई। इतना आसान नहीं था, इन वास्तविक स्थानों पर पहुंच पाना। क्योंकि नक्सलवादी घने जंगलों में शहर से मीलों दूर रहते हैं। इसलिए ऐसा अक्सर होता था कि पूरी यूनिट को पूरे सामान के साथ कई-कई मीलों तक पैदल चलना पड़ता था।

ऐसे में एक बार शूटिंग करनेवाली क्रेन कैमरे और छायाकार देवु देवधर के साथ पलट गई थी। इसके अलावा नासिक के पास आमला गांव में शूटिंग के दौरान गांव के बच्चे को बिजली का तार छू जाने से जोरदार झटका लगा। बच्चा तो बच गया, लेकिन गांववालों में तनाव पैदा हो गया था। जिसकी वजह से केवल एक सीन की शूटिंग करने के बाद उसी रात यूनिट को वापस लौटना पड़ा था।

'लाल सलाम' को केवल एक फिल्म मात्र नहीं कहा जा सकता है

मेरी प्रमुख भूमिका है— सयाजी शिंदे

"लाल सलाम' में मैं पुलिस धिकारी देशपांडे का किरदार भा रहा हूं। दरअसल, देखा ाए तो हालात ही किसी पुलिस धिकारी को भ्रष्ट व जुल्मी बना ते हैं। मेरा चरित्र ऐसा ही है, नसे तबादला करके ऐसे ादिवासी इलाके में भेज दिया या है, जहां नक्सली गतिविधियां रों पर है। उस पर मेरा बॉस म.पी. कांबले, मुझ पर हुक्म लाता रहता है। क्योंकि किसी



वक्त वह मेरा जूनियर था। चूंकि वह दलित वर्ग से आया है, इसलिए प्रमोशन पाकर एस.पी. बन बैठा है। जाहिर है, मेरा चरित्र कुंठित हो ही जाएगा। इसलिए वह आदिवासियों पर शोषण, अत्याचार करने लगता है। इससे पूर्व मैंने "दरमियां", "दमन" और "शूल" जैसी फिल्मों में यथार्थ चरित्र निभाये हैं। समझ लीजिए, यह चरित्र भी उसी श्रेणी का है।"

और न ही इसे कला फिल्म कहा जा सकता है। फिल्म एक ऐसे विषय पर है, जो आम आदमी की भी जानकारी में है। इसलिए इसे कला फिल्म का दर्जा तो नहीं दिया जा सकता है और न ही इसे मारधाड़ और चमकवाली पूर्ण रूप से व्यावसायिक फिल्म कह सकते हैं। दरअसल, 'गदर' और 'लगान' ने आम कथा से अलग हटकर कुछ नई प्रस्तुति की सफलता ने इस बात को साबित कर दिया है कि एक ही फार्मूले पर बननेवाली फिल्मों से अलग बनी फिल्में दर्शकों को आकर्षित करने में सफल हो सकती हैं। इसी तरह 'लाल सलाम' फिल्म नहीं, नक्सलवाद के पीछे छिपे कारणों और उसकी कड़वी सच्चाई का खूबसूरत चित्रण है।



अपने सपनों में खोयी रूपी

संगीत पक्ष भी फिल्म के विषय के लिए काफी महत्व रखता है। इसलिए हदयनाथ मंगेशकर के संगीत के अनुरूप ही गीतों का चुनाव किया जाना था। इसके लिए गुलजार से बेहतर कोई हो ही नहीं सकता था। संगीत और गीत की तैयारियों में लगभग एक साल का समय लग गया। लेकिन जब गीत तैयार हुआ, तो उसमें पृष्ठभूमि, लोकसंगीत और एक अलग तरह के अहसास का तालमेल था। इसी लिए इसे और भी अधिक प्रभावी बनने के लिए लता मंगेशकर जैसी गायिका का होना आवश्यक था।

10 जुलाई, 200 को फिल्म के पांच गाने मुम्बई के वेस्टर्न आउटडोर रिकार्डिंग में पूरे किये गये। लता मंगेशकर की शायद यह अंतिम फिल्म है, जिसमें उन्होंने सभी गाने खुद गाये हैं। वैसे फिल्म में केवल चार गाने ही रखे गये हैं।

अक्तूबर, 2000 में फिल्म की शूटिंग का काम पूरा हो चुका था। लेकिन शूटिंग के दौरान घटनेवाली घटनाएं अभी भी ताजा हैं। वास्तविकता की महक आज भी कलाकारों से आती है। आखिर इसकी गहराई तक जाने में एक लंबा समय लगा है। छह साल का समय कम नहीं होता। इसके अतिरिक्त एक ऐसा अनुभव जिसमें नंदिता दास को पहली बार बंदूक उठाने के लिए मजबूर होना पड़ा।●

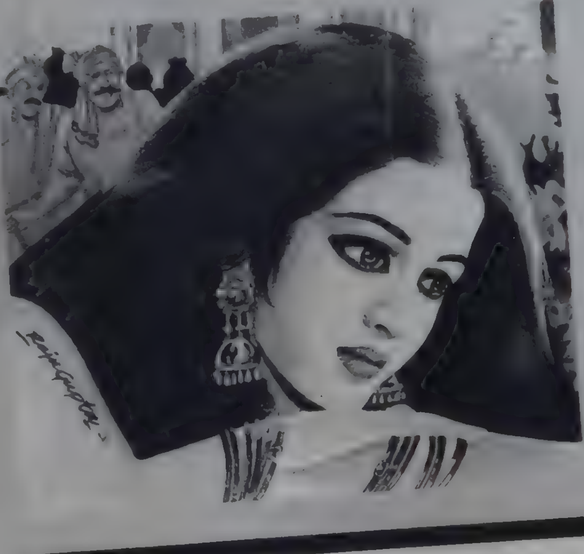
— राजमहल —

(पृष्ठ 45 का शेष)

(पृष्ठ 45 का शेष)

थी और थी भयानक गरीबी। पुश्तैनी सात एकड़ जमीन में केवल की एक फसल होती थी, जिससे दो वक्त का भोजन जैसे-तैसे पाता था। भविष्य पर खतरा मंडराता देख मैं मैट्रिक पास करते मां-बाप से जिद करके बी.एस-सी. पढ़ने के नाम पर शहर चला था। शहर आते ही मैंने सबसे पहला काम यह किया कि इस खोली को अपना आशियाना बनाया। यहीं रहकर मैंने बी.एस-सी. ीन और एम.ए. के दो साल गुजारे। गांव से चावल-दाल सब्जी था। मिट्टी के तेल के स्टोव पर खाना पकाता। नगर निगम के पर नहाता और सुलभ शौचालय में दैनिक क्रियाएं निबटाता था। हर आते ही मैंने शहर के जमनादास वाचनालय में पार्ट टाइम नौकरी ली थी। वहां मुझे पैसे बहुत कम मिलते थे। लेकिन जैसा कि मैंने कि मेरी प्रकृति आत्मकेंद्रित है। इसलिए मैंने पुस्तकीय अध्ययन यादा समय जाया किया। साहित्य के अध्ययन में मैं ऐसा डूबा कि स-सी. के बाद मैंने एम.ए. हिन्दी साहित्य से किया।

फाइनल परीक्षा के बाद मुझे जॉब की तलाश थी और रिजल्ट का ार था। मैंने समय काटने के लिए शहर की समस्याओं कुछ ज्वलंत लेख लिखे। 'हेलो इंडिया' में संपादक ाम खुला खत के अंतर्गत शित हुए। मैं शब्दों से ोर खींचने में उस्ताद था। ों की यह तस्वीरें एडीटर वत झा को पसंद आ गईं। दिन वह लाइब्रेरी आए मुझसे मिले। मुझे अपने र बुलाया और मुझे प्रशिक्षु ददाता के रूप में रख ा। झा साहब ने तब हंसते कहा था, "देखो, राजीव। यहां अनुभव होगा कि हम तुम्हारा शोषण कर रहे हैं। कन अगर तुम कुछ बनना चाहते हो, तो तुम्हें यह शोषण सहन करना ा। हां, तुम जितनी जल्दी काम सीख लोगे, उतनी ही जल्दी इस ण से मुक्त हो सकोगे...।"



"मुझे आश्चर्य हो रहा था कि प्रीवियर्स के खात्मे के इतने दिनों बाद भी लोग राजवंश के लोगों को महाराज, महारानी, युवराज और राजकुमारी जैसे संबोधन देते थे"

"यस सर," कहकर मैं उस पांच सौ रूपल्ली की नौकरी में लग था। लेकिन जल्दी ही मुझे लगा कि पत्रकारिता के डेली रूटीन वर्क री रुचि नहीं थी। हां, रंगीन फीचर पेज में कभी-कभी विशेष लेख ता, तो अवश्य संतुष्टि मिलती थी। एक बार कुछ दिनों के लिए ग्रामीण इलाकों के छुटभैये संवाददाताओं द्वारा भेजे गए न्यूज को रने का काम दिया गया, तो मुझे लगा कि पत्रकारिता बहुत ही बोरिंग है। तभी से मेरे दिलो-दिमाग में एक रंगीन पत्रिका बस गई थी। सपना था कि एक दिन मैं स्वतंत्र रूप से विशेष समाचार-विचार एक साप्ताहिक या पाक्षिक रंगीन पत्रिका निकालूं।

कायदे से मुझे अब तक इतनी तरक्की तो मिल ही जानी चाहिए कि मैं पत्रकारिता में स्वतंत्रता से काम कर सकता। लेकिन डेढ़ साल भी मैं प्रशिक्षु ही था। जाने कब तक मेरा शोषण होता रहेगा। यही ते हुए ठंड की उस सुबह कीचड़भरी नाली में कुल्ला कर रहा था एक मोटर साइकिल मेरे सामने आकर रुकी। जिस पर सवार था ो इंडिया' का चीफ सिटी रिपोर्टर कालका सिंह। उसे देखते ही मैं समझ गया कि आज किसी अभियान में मुझे तुरंत चलना होगा। मैंने अपनी गंदी खोली में उसका स्वागत किया। पहली बार वह मेरे झोपड़े में दाखिल हुआ था। इसलिए वह अपने पैंट की क्रीज का ख्याल रखते हुए मेरे बिस्तर के पायताने पर बैठकर मेरी गरीबी की गंध लेने लगा।

मैं अपनी गरीबी छिपा भी नहीं सकता था। खोली एक कमरे की ही थी। दीवारों पर पलस्तर की जगह अखबार चिपके हुए थे। कहीं कपड़े टंगे थे, तो कहीं जूठे बर्तन पड़े थे। एक ओर मेरी खड़खड़िया साइकिल खड़ी थी। कमरे में पीछे की ओर एक छोटी-सी खिड़की खुली हुई थी। उसका छोटा होना ही अच्छा था, क्योंकि वहां से हवा के साथ नाली की दुर्गंध भी आ रही थी।

"कहीं जाना है दादा?" मैंने बनियान पहनते हुए पूछा।

"हां," कालका सिंह ने कर्कश आवाज में कहा, "यार राजीव, तुम कोई अच्छा-सा कमरा क्यों नहीं ढूंढ़ लेते?"

"दादा, आप तो जानते ही हैं कि कीड़े नाली में ही रहते हैं।" मैंने खुद पर क्रूर व्यंग्य किया, "शानदार सातवां साल है। अब तो आदत पड़ गई है।" मैंने उधड़ी हुई जींस पैंट में खुद को डालते हुए कहा। हालांकि मुझे भूख लगी थी, लेकिन कालका सिंह के सामने बासी डबलरोटी चबाने की इच्छा नहीं हुई। मैंने चप्पल पहनते हुए कहा, "दादा, कुछ चाय-वाय?"

"अरे नहीं, बस अब चल दो। आज मैं तुम्हें राजमहल घुमाकर लाता हूं।" कहता हुआ वह उठ खड़ा हुआ।

थोड़ी देर बाद हम दोनों स्टेट हाइवे से गुजर रहे थे। गुनगुनी धूप थी। लेकिन हवा की ठंडक अभी गई नहीं थी। मोटर साइकिल ने एक टर्न लिया और हम हाइवे से एक पक्की सड़क पर उतर गए। मोड़ पर एक बोर्ड लगा था, जिस पर लिखा था— 'राजमहल 2 किलोमीटर। यह आम रास्ता नहीं है।' सड़क के दोनों ओर पहले सागौन के प्लांटेशन दिखे। फिर नजर आये नीलगिरी के ऊंचे-ऊंचे पेड़, रबड़ के प्लांटेशन और न जाने क्या-क्या? वहां मजदूर अपने बीवी-बच्चों सहित काम में मशगूल नजर आए।

मैंने उन दिनों राजमहल के बारे में काफी कुछ पढ़ा-सुना था। लेकिन कभी वहां गया नहीं था। मुझे पता चला था कि राजा शेर बहादुर सिंह के फार्म में कोई मजदूर-विवाद था। कालका सिंह मुझे बताए जा रहा था कि हजारों एकड़ में फैला यह प्लांटेशन राजमहल की सम्पत्ति है। राजा साहब ने कंपनी बनाकर पब्लिक में बांड जारी किए हैं। उसने भी आड़े वक्त के लिए पच्चीस हजार के बांड खरीद रखे हैं।

अचानक मोटर साइकिल की रफ्तार धीमी हुई, तो मुझे विशाल प्राचीर के दर्शन हुए। फिर एक बुलंद दरवाजे पर मेरी नजर पड़ी, जिसमें से दो ट्रक एक साथ गुजर सकते थे। बंद दरवाजे पर दो गार्ड्स रायफल लिए खड़े थे। उन्होंने नीली ड्रेस पर लाल पगड़ी पहन रखी थी। एक गार्ड ने हमें सलाम किया। फिर वह बाजू में बने केबिन में शायद फोन पर अनुमति प्राप्त करने चला गया। कालका सिंह ने चश्मा उतारते हुए मेरी ओर देखा और फिर एक आंख टीप दी।

गार्ड ने लौटकर हमारे लिए फाटक खोला और राजदूत के चक्के राजमहल परिसर में दौड़ने लगे। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि प्रीवियर्स के खात्मे के इतने दिनों बाद भी लोग राजवंश के लोगों को महाराज,

महारानी, युवराज और राजकुमारी जैसे संबोधन देते थे। सामान्य लोग तो चलिए परम्परा निभा रहे थे। लेकिन शहर का प्रेस भी उन्हें सिर चढ़ाए हुए था। यह सब देखकर मुझे कोफ्त होती थी।

कई एकड़ में फैला था राजमहल परिसर। चारों ओर मोटे-मोटे पेड़ थे। गहन हरियाली थी। रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियां थीं और लता-बेल-बूटे थे। मैंने इतने किस्म के फूल-पौधे तो शहर के मनोरंजन पार्क में भी नहीं देखे थे। रास्ते के दोनों ओर तालाब थे। दोनों में कमल खिले थे। तालाब के घाट सफेद संगमरमर के पत्थरों से बंधे थे। राजमहल की बुर्ज और मीनारें प्राचीन वास्तुशिल्प का बेहतरीन नमूना थीं। हमें काफी सीढ़िया चढ़नी पड़ीं। कांच के बड़े पैनल डोर पर होल्स्टर में पिस्तौल लिए एक साढ़े छह फुटा लम्बा-चौड़ा गार्ड खड़ा था।

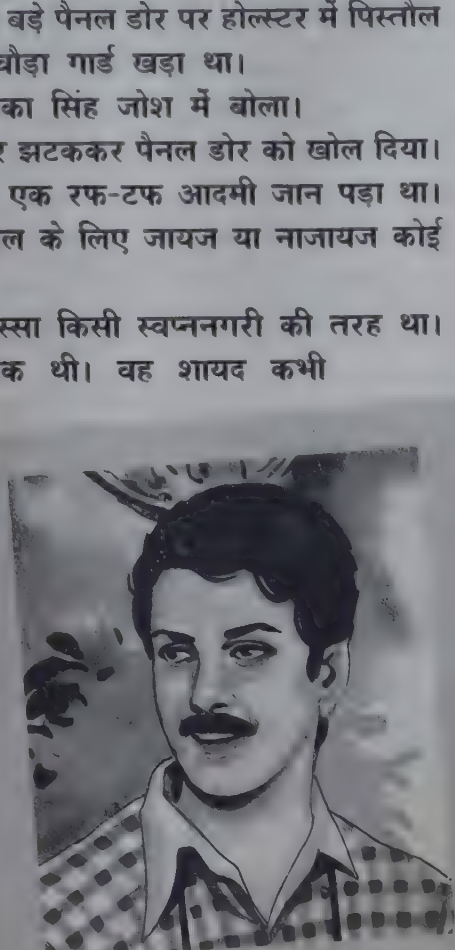
"कैसे हो हुकुम सिंह?" कालका सिंह जोश में बोला।

"खैरियत है साब," गार्ड ने सिर झटककर पैनल डोर को खोल दिया।

मुझे उस वक्त भी हुकुम सिंह एक रफ-टफ आदमी जान पड़ा था। बाद में पता चला कि वह राजमहल के लिए जायज या नाजायज कोई भी काम कर सकता था।

खैर, राजमहल का भीतरी हिस्सा किसी स्वप्ननगरी की तरह था। आतंरिक साज-सज्जा अत्याधुनिक थी। वह शायद कभी महाराजाओं का दीवाने-आम रहा होगा। लेकिन अभी वह फाइवस्टार होटल की लॉबी जैसा था। पुरानी एक ही गंध शेष थी। दीवारों पर बड़ी-बड़ी मूंछवाले पगड़ीधारी पुरुषों के तैल-चित्र टंगे थे।

सामने एक लम्बा-चौड़ा रिसेप्शन था। एक-दो महिला-पुरुष कर्मचारी नजर आए। फिर मैंने एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति को देखा, जो सूट-बूट में लकदक हमारी ओर बढ़ रहा था। उसके चेहरे पर व्यवसायिक मुस्कान थी। पास आकर बोला, "आइए, कालका सिंहजी, मैं आपका ही इंतजार कर रहा था।"



"मैंने तपाक से हाथ बढ़ाया लेकिन हाथ मिलाते हुए मुझे अहसास हुआ कि दीवानजी ने मेरे हाथ से अपना पैर मिलाया हो चेहरे पर उपेक्षा के भाव थे"

"हम भी तो आपका दर्शन करने के लिए बेताब थे दीवानजी," हंसते हुए कालका सिंह ने उस शख्स से हाथ मिलाया, "हां, दीवानजी। यह हैं राजीव, मेरे असिस्टेंट।"

मैंने तपाक से हाथ बढ़ाया। लेकिन हाथ मिलाते हुए मुझे अहसास हुआ कि दीवानजी ने मेरे हाथ से अपना पैर मिलाया हो। चेहरे पर उपेक्षा के भाव थे। इसके बाद दीवानजी नामक वह प्राणी कालका सिंह को लेकर रिसेप्शन के पीछे किसी कमरे में गुम हो गया। मैं एक सोफे पर बैठा अर्दली द्वारा पेश की गई चाय घुटकता रहा। कोई आधे घंटे बाद कालका सिंह ने मुझे आवाज दी और हम लौट पड़े। कालका सिंह के चेहरे से खुशी मानो टपकी पड़ती थी।

इस खुशी की वजह थोड़ी देर बाद मालूम पड़ी। जब एक रेस्टोरेंट में नाश्ते का बिल देते समय उसने सौ की नोटों की एक पैक गड्डी निकाली, जिसकी पतली स्ट्रिप पर राजमहल छपा था। मेरा मन जाने क्यों खट्टा हो गया। मुझे लगा जैसे कालका सिंह को राजमहल की ओर से बख्शीश दी गई थी।

उस दिन नाश्ते के दौरान कालका सिंह ने मुझे राजमहल के बारे में एक किस्सा सुनाया। उसने मुझे चाहे जो किस्सा सुनाया हो, लेकिन मैंने उसे कुछ यों समझा।

"...राजमहल के वर्तमान मालिक शेर बहादुर सिंह के दादा महा[...] विजय प्रताप सिंह के जमाने में मजदूरों को खाना-कपड़ा और अ[...] सुविधा राजमहल की ओर से मिलती थी। उनके पिताश्री कुंवर ब[...] सिंह के जमाने में भी मजदूरों में खुशहाली थी। लेकिन अब न वे प्र[...] राजा रहे और न उनके वे बंधुआ मजदूर, जो राजा को ईश्वर मा[...] अब तो केवल मालिक-नौकर का संबंध रह गया था। मजदूरों को म[...] कम मिलती थी। जबकि काम ज्यादा लिया जा रहा था। इसलिए म[...] में असंतोष बढ़ने लगा था।

एक युवा मजदूर लक्ष्मण सिंह के नेतृत्व में पहली बार 'राजमहल का[...] यूनियन' का गठन हुआ था। यूनियन ने जब अपना सात सूत्रीय मा[...] दीवानजी के सामने रखा, तो वह आग बबूला हो उठे। लक्ष्मण सिं[...] व्यक्तिगत रूप से घूस देने की कोशिश की गई। लेकिन वह न माना[...] आखिरकार एक दिन राजमहल के इतिहास में पहली बार हड़ताल हो[...] तब दीवानजी ने हुकुम सिंह को लेकर यूनियन के एक शराबी पदाधि[...] को लम्बा-चौड़ा ऑफर देकर अपने पक्ष में कर लिया। इसके कुछ ही[...] बाद मजदूरों में फूट पड़ गई और एक नई यूनियन 'राजमहल हित[...] मोर्चा' का जन्म हुआ, जिसमें अर्दली, खानसामा और कुछ लालची म[...] थे। दीवानजी ने यूनियन [...] फांक तो किए ही, साथ ही स[...] मजदूरी एक-दो रुपए बढ़[...] जिससे हड़ताल टूट गई।

कालका सिंह से मुझे य[...] मालूम हुआ कि यह सब दीव[...] की चक्रम बुद्धि का कमाल[...] वरना राजा साहब तो उन [...] कोलकाता चले गए थे। [...] इकलौती बेटी के पास[...] अपने मामा के घर रहकर [...] कर रही थी। वह गए थे[...] मनाने कि वह विदेश जा[...] इच्छा त्यागकर अपने पि[...] स्टेट में आकर रहे और प्लां[...] का काम-काज संभाले। वास्तव में रानी मां चूंकि इस दुनिया में[...] थीं, इसलिए राजा साहब अपने कलेजे के टुकड़े को सीने से लग[...] अंतिम सांसें लेना चाहते थे। राजा साहब हाई ब्लडप्रेशर के मरीज[...] कालका सिंह के अनुसार, राजकुमारी सुवर्णा एक तुनकमिजाज ल[...] थी। यदि उसे मालूम हो जाये कि यहां मजदूरों में अशांति है, त[...] यहां कतई नहीं आएगी।

नाश्ता खत्म करके हम जब खोली की तरफ जा रहे थे, तो [...] में कालका सिंह ने कहा, "यहां के सभी पत्रकार राजमहल के[...] हैं। भई, जमाना ही बदल गया है। अब तो पत्रकारिता बिजनेस ह[...] है। राजमहल की ओर से सब अखबारों को बड़े-बड़े विज्ञापन और मा[...] को कीमती उपहार दिए जाते हैं। कहते हैं कि डायन भी एक घर [...] देती है। इसलिए हम भी राजमहल को सपोर्ट कर देते हैं। समझ[...] हो न राजीव मेरी बात?"

"हां दादा," मैंने अनमने ढंग से कहा। मेरे मन में राजमहल के[...] विरोधी भावनाएं पैदा हो रही थीं।

"देखो राजीव, तुम्हें एक रिपोर्ट तैयार करनी है," कालका सि[...] अपना असली आशय स्पष्ट किया, "इस रिपोर्ट से यह बात साबित [...] चाहिए कि राजा साहब एक अत्यंत संवेदनशील इंसान हैं। आ[...] उन्होंने स्वयं मजदूर बस्ती में एक बच्चे को गोद में उठाकर फोटो खिंच[...]

ह फोटो हमें शाम तक मिल जाएगी। तुम जो रिपोर्ट बनाओगे, फोटो सहित चार-पांच दिन बाद छपेगी— राजकुमारी के स्वागत वह बेहयाई हंसी हंसते हुए बोला, "मैं तुम्हें रिपोर्ट के डिटेल्स दे लेख जरा जोरदार होना चाहिए, जिससे राजकुमारी देखे, तो खुश ाए। समझ रहे हो न मेरी बात? फिर तो तुम्हारे भी सौ रुपए पक्के ो।"

स रात अपनी खोली में एक लट्टू के नीचे बैठा मैं कालका सिंह ताए तथ्यों को अपने कथ्य में पिरोकर लेख तैयार करने में जुटा मेरा मन मुझे लगातार धिक्कार रहा था कि मैं भी राजमहल के चार और शोषण में हिस्सेदार बनने जा रहा हूं। दिल आखिर दिमाग ाड़ बैठा। ऐसे में कुछ कागज बरबाद करने के बाद मेरे हाथ जो आया, वह इतना सतही था कि उसे फेंक देने की इच्छा हुई। लेकिन ता कैसे? वह तो आर्डर का माल था।

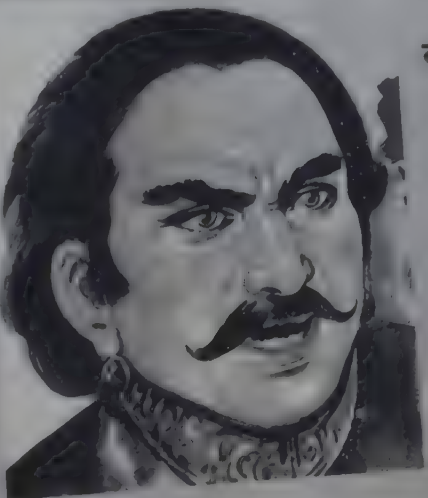
ूसरे दिन कालका सिंह को वही फालतू डिस्पैच धमाकर में उसकी ा के सामने अटेंशन खड़ा हो गया। लेख पढ़कर कालका सिंह ने घूरकर देखा। फिर धमकाते हुए बोला, "यह क्या है? तुमने तो लिखा है, जैसे काम निबटाया हो।"

"मैंने तो कोशिश की थी दादा।" मैंने मिमियाते हुए कहा।

"खाक कोशिश की है तुमने," वह गरज उठा। हाल में एक-दो कर्मचारी हमें ने लगे। वह फिर गुर्राया, म कभी सिटी रिपोर्टर नहीं सकते। समझ रहे हो न बात? कभी नहीं।" कहते उसने रिपोर्ट को -तोड़कर वहीं रद्दी की ारी में डाल दिया।

मैंने उसे सहलाने की गरज कहा, "अभी तो समय है ा। मैं फिर से लिख दूंगा या किसी और से...।"

"डोंट टीच मी, अंडरस्टैंड?" गरजकर बोला, "भाग लो से।"



"इस रिपोर्ट से यह बात साबित होनी चाहिए कि राजा साहब एक अत्यंत संवेदनशील इंसान हैं आज ही उन्होंने स्वयं मजदूर बस्ती में एक बच्चे को गोद में उठाकर फोटो खिंचवायी है"

यकीन मानिए उस दिन कालका सिंह के पास से लौटते हुए पहली मुझे अपने पेशे से नफरत हुई थी। मैं अब किसी का असिस्टेंट कर नहीं जी सकता था। मुझे लिखने की पूरी स्वतंत्रता चाहिए थी। सोचा, जब राजमहल के बंधुआ मजदूर अपने हक के लिए लड़ ते हैं, तब क्या मैं पढ़ा-लिखा कलम का मजदूर अपना हक नहीं सकता?

इसी आवेश में मैं उस शाम भागवत झा के कमरे में दाखिल हुआ। याद है, झा साहब चुरूट पी रहे थे। मुझे देखते ही उन्होंने कहा, लो राजीव, क्या बात है? एनीथिंग रांग?"

"सर, मुझे फ्री-जॉब कब मिलेगा? डेढ़ साल तो हो गए।" मैंने उनसे ब मिलाई।

"सिट डाउन राजीव," झा साहब ने चुरूट का कश लिया, "मैंने तुम्हारे में मलिक साहब से चर्चा की है। वह जल्दी ही कोई...।"

"मैं अब ज्यादा इंतजार नहीं कर सकता सर," मैंने दृढ़ता से कहा, ापको मालूम है कि 'नया तूफान' वालों ने विज्ञापन दिया है।"

भागवत झा अवाक रह गए थे। वह जानते थे कि मेरे बोलने का लब क्या है? 'नया तूफान' शहर का एक दूसरा समाचार पत्र था, पने कल ही 'नगर संवाददाता चाहिए' शीर्षक से विज्ञापन निकाला था। मैं वहां अभी आसानी से काम पा सकता था।

"देखो राजीव," वह संकोच से बोले, "मामला अगर मेरे हाथ में होता, तो तुम जानते हो कि मैं क्या करता?"

"आप कहें... अगर आप इजाजत दें, तो मैं एक बार मलिक साहब से मिलना चाहता हूं सर।" मैंने धीमे, लेकिन ठोस स्वर में अपने मन की बात कह दी। हालांकि मैं नहीं जानता था कि मलिक साहब से मिलने के बाद मेरे लिए सौभाग्य के द्वार खुलते ही चले जाएंगे।

'हेलो इंडिया' के मैनेजिंग डायरेक्टर मलिक साहब पॉश कालोनी के एक शानदार बंगले में रहते थे। दूसरे दिन मैं उनके सामने बंगले के लॉन में बेंत की कुर्सी पर बैठा अपना हाले-दिल सुना रहा था। झा साहब ने इस मुलाकात का इंतजाम किया था। मोटे-ताजे मलिक साहब को मैंने अभी तक सूटेड-बूटेड ही देखा था। लेकिन इस वक्त वह सफेद कुरता-पायजामा में थे। उनके पूरे व्यक्तित्व से धन की सुगंध आ रही थी।

"लिसन राजीव," मेरी बात सुनकर मलिक साहब बोल पड़े, "तुम में एक प्लस प्वाइंट है, तो एक माइनस प्वाइंट भी है। तुम एक संवेदशील राइटर जरूर हो, लेकिन बुरा मत मानना, इस शहर के बारे में तुम्हारी जानकारी बहुत कम है, राइट?"

"राइट सर।" मैंने निराशा में सिर झुका लिया।

"ओ.के.," उन्होंने जैसे मेरी निराशा को तोड़ते हुए मुझे खुश करने की गरज से कहा, "मैं तुम्हें फ्री-जॉब दूंगा। लेकिन एक शर्त होगी। तुम खेल-कूद, कला, संस्कृति जैसे सब्जेक्ट का कवरेज करोगे। शहर की राजनीति, अपराध-कानून, उद्योग-व्यापार जैसे सब्जेक्ट को टच नहीं करोगे, राइट?"

"राइट सर।" मुझमें जान आ गई थी।

"याद रहे। तुम दूसरे पत्रकारों के काम में जरा भी दखल नहीं दोगे। तुम्हारी सच्चाई तुम्हारे साथ है। उनकी उनके साथ। तुम किसी को क्रास नहीं करोगे, न कालका सिंह को और न विनयमोहन को।"

"यस सर।"

"तुम्हें सालभर का समय मिलेगा। इस बीच तुम्हें शहर में अपनी पहचान बनानी होगी। हम तुम पर नजर रखेंगे। फिर आगे देखा जाएगा।" मलिक साहब ने मानो मीटिंग का अंत करते हुए कहा, "आलराइट, तुम्हारा पहला फ्री जॉब होगा— राजकुमारी सुवर्णा से इंटरव्यू।"

मलिक साहब की इस उद्घोषणा ने मेरे दिल की धड़कन बढ़ा दी। मैं सोचने लगा कि मुझे अब उसी राजमहल में जाकर एक नकचढ़ी लड़की से बात करनी होगी। उधर मेरी इन भावनाओं से बेखबर मलिक साहब बोले जा रहे थे, "मैं जानता हूं कि यहां का प्रेस जगत राजकुमारी के स्वागत में बिछ जाएगा। करीब पांच साल बाद आ रही है सुवर्णा। लेकिन तुम उससे सेंसेशनल बातें करोगे।" मलिक साहब की आंखों में हल्की-सी कमीनगी के लक्षण उभर जाए। फिर वह मुस्कराते हुए बोले, "तुम्हारे लिए यह एक चैलेंज होगा। चलो, मैं तुम्हें एक टिप देता हूं। राजा साहब ने एक बार चर्चा में बताया था कि राजकुमारी सुवर्णा कविताएं भी लिखती हैं। तुम उसी एंगल से उसे पकड़ना। राइट?"

"राइट सर।"

"अब तुम जा सकते हो। प्रेस जाकर झा साहब से मिल लेना। मैं उन्हें फोन कर रहा हूं।" टी टेबल पर पड़े मोबाइल को उठाकर मलिक साहब ने कहा, "वी केयरफुल राजीव। याद रखना, मैं तुम पर भरोसा कर रहा हूं।"

मलिक साहब का यह भरोसा छप्पर फाड़कर मुझ पर बरस पड़ा। प्रेस में सब मुझे प्रमोशन की बधाई देने लगे। यह बात भी लीक हो चुकी थी कि मैं राजकुमारी का इंटरव्यू लेने के लिए अधिकृत हो चुका हूं। कालका सिंह ने मुझे बधाई तो न दी, लेकिन हाथ जरूर मिलाया। उसके चेहरे पर व्यंग्यात्मक मुस्कान थी। वह मुझसे जल रहा था। यह जलन स्वाभाविक भी थी। मेरा पहला जॉब उसके लिए नुकसानदायक था। अब वह राजकुमारी की लल्लो-चप्पो करने के लिए राजमहल फिलहाल नहीं जा सकता था।

दोपहर तक मेरा पहला एप्वॉयंटमेंट लेटर मेरे हाथ में आ गया। मुझे ढाई हजार रुपए मासिक वेतन पर रख लिया गया था। झा साहब की सिफारिश पर हजार रुपए एडवांस भी मिल गए थे। प्रेस की ओर से मुझे एक ओलिम्पिक कैमरा फ्लेशगन के साथ मिला, जिसकी तकनीक सीखने में मैंने प्रेस फोटोग्राफर के साथ कई घंटे गुजारे। सम्पादक महोदय ने समय-समय पर मुझे प्रेस की स्कूटर उपयोग करने की छूट दे दी, जिसे नगर संवाददाता विनयमोहन रात-दिन घसीटा करता था।

मैं अभी इस खुशी का इंज्वाय कर ही रहा था कि तीसरे दिन शाम को विनयमोहन ने मुझे स्कूटर की चाबी थमाते हुए बताया कि राजकुमारी आज टपक पड़ी हैं। राजमहल में शहर के सभी संवाददाताओं को कल सुबह 9 बजे का समय दिया गया है। उसने मुझे शुभेच्छाएं दीं, तो मेरा चेहरा देखने लायक था। मैंने एक रेडीमेड कपड़े की दुकान से नई जींस पैंट, चेक की शर्ट और कैप खरीदा। रात गए तक अपनी खोली में पड़ा-पड़ा प्रश्नावली तैयार करता रहा। मेरे सामने असली संकट यह था कि जब राजकुमारी ने सबको एक साथ बुलाया था, तब मैं उससे अकेले में इंटरव्यू कैसे ले सकूंगा?

दूसरी सुबह नए पैंट-शर्ट में लक-दक, कैमरा लटकाए मैं तेज गति से स्कूटर दौड़ा रहा था। मुझे पता ही नहीं था कि दुर्भाग्य मुझ पर हंस रहा था। अभी मैं स्टेट हाइवे पर पहुंचा ही था कि अचानक स्कूटर की आवाज बदलने लगी। फिर उसने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। मैंने पेट्रोल की जांच की, किक पर किक लगाई, प्लग साफ किया, लेकिन सब बेकार। आखिर स्कूटर को दो किलोमीटर पैदल घसीटकर जैसे-तैसे मैं एक गैराज पहुंचा। मैंने वहां मिस्त्री को पटाकर उससे एक लूना का जुगाड़ किया और राजमहल की ओर दौड़ा। लेकिन तब तक सत्यानाश हो चुका था। जब मैं राजमहल के गेट पर पहुंचा, तभी मुझे मोटर साइकिलों और स्कूटरों का एक काफिला लौटता हुआ नजर आया। यह काफिला वास्तव में स्थानीय पत्रकारों का एक झुंड था, जो मुझे व्यंग्यात्मक नजरों से देखता हुआ बाय-बाय करके निकल गया।

"आह...।" उस दिन अपने दुर्भाग्य के वार से कितना आहत था मैं! सबसे पहले तो मुझे आत्महत्या का विचार आया। फिर मैंने इस्तीफा देने का निर्णय लिया, क्योंकि अब किस मुंह से मैं राजकुमारी से भेंट करता। मैं अपनी नाकामयाबी से जलता-भुनता गैराज में स्कूटर बनवाकर वापस लौट आया और अपनी खोली में गरम दूध के साथ, डबलरोटी लीलने लगा।

जीवन में कुछ ऐसे भी संयोग होते हैं, जो आपके टूटे हुए आत्मविश्वास को फिर से जोड़ देते हैं। मैं अभी नाश्ते से निबटा ही था कि मेरे पड़ोस में रहनेवाला एक नौजवान आकर मुझसे पचास रुपए उधार मांगने लगा। मैंने उसे पैसे दे दिए। उसने बताया कि उसे टी.बी. हो गई है। इसलिए उसे पूरे कोर्स की दवाइयां लेनी होंगी। वह हाड़तोड़ मेहनत करता था। मैंने उसे जब आराम करने की सलाह दी, तो वह बताने लगा कि गरीबों के नसीब में आराम नहीं होता। गांव में उसकी जवान बीवी और बच्चे हैं। वह कमाएगा नहीं, तो वे भूखे मरेंगे।

सचमुच उसका दुख मुझसे कहीं ज्यादा बड़ा था। फिर भी वह [illegible] कर रहा था। जबकि मैं खामोश बैठा था। ठीक है, मुझसे गलत[illegible] चुकी थी। लेकिन इतनी भी नहीं कि मैं हार मानकर बैठ जाऊं। [illegible] भी मुझे राजकुमारी का इंटरव्यू लेने की कोशिश करनी चाहिए। [illegible] करना ठीक नहीं होगा, वह टरका देगी। इसलिए मैं दोपहर ढाई [illegible] आत्मविश्वास बटोरकर राजमहल की ओर चल पड़ा।

मैंने बड़े फाटक पर स्कूटर रोकी। वहां एक ही गार्ड खड़ा था। [illegible] उसे प्रेस कार्ड दिखाकर कहा कि मैं राजकुमारी से इंटरव्यू लेने [illegible] हूं। गार्ड ने बाजू के कक्ष में जाकर फोन लगाया और निराशाजनक [illegible] में कहा कि अभी आराम का समय है। न दीवानजी से बात हो पा[illegible] है, न राजा साहब से। मैंने उसे डंपटते हुए कहा कि वह बेवकूफी [illegible] रहा है। राजकुमारी ने मुझे बुलाया है। मैं लेट हो चुका हूं। अब [illegible] उसने और लेट किया, तो मैं राजकुमारी से उसकी शिकायत कर[illegible] बस, राजकुमारी से शिकायत की बात छेड़ते ही, उसने मेरे लिए दर[illegible] खोल दिया।

राजमहल परिसर की चिकनी सड़क पर स्कूटर दौड़ाते हुए मेरे [illegible] में हुकुम सिंह का खौफ मौजूद था। लेकिन मुझे पता नहीं था कि [illegible] वक्त मेरे पास सौभाग्य मौजूद है। धीमी गति से स्कूटर चलाते हुए [illegible] नजर अचानक तालाब के पार जा पहुंची, जहां पीले सलवार सू[illegible] एक गोरी-चिट्टी लड़की साफ-सुथरे घाट पर बैठी पानी में कंकड़ [illegible] रही थी। अरे, यही तो थी मेरी मंजिल। राजकुमारी सुवर्णा, जिसकी [illegible] मैंने प्रेस में देखी थी।

मैंने स्कूटर एक झुरमुट के नीचे खड़ी की और उस ओर बढ़ ग[illegible] मेरी आहट पर उसने आधा चेहरा घुमाकर मुझे एक झटके में दे[illegible] फिर वह पानी से खेलने लगी। मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था। [illegible] बहुत सुंदर थी। वह बड़बड़ाए जा रही थी, 'यह खा लो, वह खा [illegible] मैं क्या गाय-बकरी हूं, जो दिन-रात पगुराती रहूं।' फिर उसका [illegible] मेरी ओर हुआ, "चले जाओ यहां से। मैंने कहा था न, मैं अकेले र[illegible] चाहती हूं। इसी लिए तो मैं यहां आती नहीं।"

मैं समझ गया कि वह मुझे राजमहल का कोई कर्मचारी समझ [illegible] है। मेरे सिर पर कैप था, फिर उसने मुझे आधी नजर से ही देखा [illegible] मैंने देखा, एक पेड़ के नीचे चटाई बिछी थी, जिस पर एक हैंडबैग [illegible] मिनरल वाटर की बोतल रखी थी। एक डायरी हवा में फड़फड़ा [illegible] थी, जिसके बीच एक खुली हुई पेन थी। मुझे लगा कि सुवर्णा इस ए[illegible] में कविता लिखने के मूड में आई हुई है। यहां बता दूं कि मैं कवि [illegible] था, लेकिन कविताओं के विश्लेषण में मुझे महारत हासिल थी।

"हैलो," मैंने उसे नरम स्वर में पुकारा, "आप क्या लिख रही [illegible] गीत, गजल या नई कविता?"

मेरा इतना कहना था कि वह उठकर मेरी ओर बढ़ी। फिर मुझे कुतू[illegible] से देखती हुई बोली, "तुम.... आप कौन?"

"आई एम राजीव, फ्राम डेली हेलो इंडिया," मैंने हंसते हुए हाथ [illegible] बढ़ाया।

उसने हाथ मिलाने में देर नहीं की। इससे मेरा आत्मविश्वास [illegible] ही रहा था कि मुझे मीठा स्वर सुनाई दिया, "सॉरी, मैं समझी थी [illegible] आप... खैर जाने दीजिए। लेकिन आप इस वक्त कैसे? आपको तो सु[illegible] आना चाहिए था। जब मैंने सभी पत्रकारों को राजमहल में बुलाया थ[illegible]

मैं जैसे इसी संवाद की प्रतीक्षा में था। अंधेरे में बाण छोड़ता हु[illegible] बोला, "हां, सुबह बहुत से पत्रकार आए थे राजकुमारी सुवर्णा से [illegible] करने। लेकिन कवियित्री सुवर्णा से किसी ने बात नहीं की। इस[illegible] मैं बिना सूचना दिए चला आया, आपको डिस्टर्ब करने।"

मेरी बातें सुनकर सुंदरी की आंखें फैल गईं। उसने दिलचस्प अंदाज में पूछा, "अच्छा, आपसे किसने कहा कि मैं कविताएं लिखती हूं?"

"वह टॉप सीक्रेट है," मैंने हंसते हुए कहा, "यह बताइए कि मैंने आपको कहीं डिस्टर्ब तो नहीं किया?"

"नहीं, आपने ठीक ही किया," सहज हास्य के साथ वह बोली, "सूचना देते तो शायद मैं आपसे नहीं मिलती।"

"क्यों?"

"यहां हर कोई मुझे राजकुमारी समझता है। एक ही दिन में ऊब गई।" उसने मुंह बनाया।

"लेकिन मेरी नजर में तो आप एक इंसान हैं। और अब इंसान के नाते चलिए और मुझे दिखाइए कि आप क्या लिखती हैं?" मैंने उसकी आंखों में झांकते हुए कहा।

आज हंसी आती है यह सोचते हुए कि उस दिन अचानक मेरे पास कहां से इतना आत्मविश्वास इकट्ठा हो गया था कि मैंने राजकुमारी को अपने वाक्जाल में फंसा लिया। थोड़ी ही देर बाद हम दोनों चटाई पर जा बैठे थे और वह मुझे अपनी डायरी से अपनी लिखी गजलें सुना रही थी। मैं पूरे ध्यान से उन्हें सुन रहा था और उसके कई शेरों पर वाह-वाह कर रहा था। गजलें सुनने-समझने की मुझमें अच्छी-खासी तमीज थी। हालांकि गजल की बहर में कहीं-कहीं लोच थी, लेकिन अपने तजुर्बे से मैं कह सकता हूं कि वह इस छोटी-सी उम्र में ही अच्छी गजलें लिख रही थी। उसमें एक लोकप्रिय शायरा होने के लक्षण थे। गजलें सुनने के बाद मैं उससे बहुत देर तक साहित्यिक बहस करता हुआ नोट्स लेता रहा। मैंने डायरी पर कलम चलाते हुए सुवर्णा के कुछ फोटोग्राफ्स उतारे। फिर जब मेरा काम खत्म हुआ, तब मैंने अपना सामान संभाला और उठ खड़ा हुआ, "अच्छा सुवर्णाजी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं अब चलना चाहूंगा।"

"जाएंगे आप?" उसकी आंखों से हल्की-सी निराशा छलकी।

लगता था, जैसे वह मुझसे कुछ देर और बातें करना चाहती थी। मैं खुश हुआ, लेकिन मुझे हड़बड़ी थी। शाम तक इस इंटरव्यू को लिखकर प्रेस में देना था। इसलिए हंसता हुआ बोला, "हां, शायद फिर से आने के लिए जाना पड़ता है।"

"ओह," मेरे स्टाइल पर उसे हंसी छूट गई, "यू आर आलवेज वेलकम राजीव।"

उसका इतना कहना था कि जाने कहां से दीवान बद्रीप्रसाद और दो कारिंदे वहां आ धमके।

"बेबी, आप यहां हैं, उधर राजा साहब..." दीवानजी ने इतना कहते हुए मुझे घूरा, "तुम... यहां कैसे? कालका सिंह के असिस्टेंट हो न तुम?"

मेरी शिराएं अपमानबोध से झनझना उठीं। इससे पहले कि मैं उसे कोई जवाब दूं, सुवर्णा ने मोर्चा संभाल लिया। वह बोली, "यह मेरे नए दोस्त हैं राजीव।"

दीवानजी का चेहरा सफेद हो गया। अचकचाते हुए बोलने की कोशिश की उन्होंने, "लेकिन बेबी, यह तो.... यह तो...।"

"ओहो। मैं बेबी नहीं, सुवर्णा हूं।" वह बेहद ढिठाई से बोली, "आपका कांटेक्ट नम्बर क्या है राजीव?"

मैंने मुस्कराते हुए अपना फोन नंबर उसे एक कागज पर लिखकर थमा दिया और मुस्कराते हुए विदा हो गया।

उस रात आठ बजे मैं नाइट एडीटर के सामने बैठा था। नाइट एडीटर के बूढ़े हाथों में मेरा ताजा लेख कांप रहा था। वह काफी दिलचस्पी से उसे पढ़ रहे थे। मेज पर सुवर्णा के तीन फोटोग्राफ भी पड़े थे, जिनमें से एक को मेरे लेख के साथ छपना था। मैं स्वीकार करता हूं कि मैं राजकुमारी सुवर्णा के सौंदर्य से प्रभावित था। इसलिए अपने लेख को बनाने में मैंने भारी मेहनत की थी।

"ग्रेट राजीव," नाइट एडीटर ने चश्मे के भीतर से आंखें घुमाईं, "तुमने पहला ही काम बहुत बेहतरीन किया है।"

"थैंक्यू सर," कहते हुए मैंने राहत की सांस ली।

रात ठीक साढ़े ग्यारह बजे एक सस्ते होटल से खाना खाकर, मैं अपनी खड़खड़िया साइकिल से अपनी खोली पहुंचा। इतने दिनों में आज पहली बार मुझे अपनी खड़खड़िया साइकिल से नफरत हुई थी। मैंने पहली बार अपनी झोपड़ी में बदबू का अहसास किया था। पहली बार फटे हुए जूतों पर कोफ्त हुई थी। मुझे लगा कि शायद इसकी वजह राजकुमारी सुवर्णा के प्रति मेरें मन के कोने में छिपा एक आकर्षण है। लेकिन कहां सुवर्णा, और कहां मैं?

उस रात बेचैनी में काटकर दूसरी सुबह प्रेस पहुंचा, तो 'हेलो इंडिया' में छपे मेरे लेख पर चर्चा छिड़ी हुई थी। अखबार के अंतिम रंगीन पृष्ठ पर उसे बढ़िया स्थान दिया गया था। कुछ लोगों को मेरा लेख बेहद पसंद आया था। लेकिन कुछ को लेख खटक भी रहा था। विनयमोहन ने जब मुझसे कहा कि लेख में राजकुमारी या राजा साहब जैसे शब्द का जिक्र कहीं न कहीं जरूर आना चाहिए था। तब मैं सोचने लगा कि कहीं मलिक साहब को लेख पसंद नहीं आया, तो क्या होगा?

बहरहाल, मेरी सोच गलत निकली। मलिक साहब और झा साहब दोनों की कारें एक साथ प्रेस पहुंचीं। मुझे केबिन में बुलाया गया। मुझे बधाइयां देते हुए मलिक साहब बोले, "मुझे पता चला है कि तुम एक खोली में रहते हो। वह तुम्हें सूट नहीं करता। तुम्हें एक सप्ताह के भीतर नए अपार्टमेंट की चाबी मिल जाएगी। और हां, उसका किराया प्रेस देगा।"

इतना ही नहीं, जब उन्होंने मुझे होंडा के शो-रूम से एक नई मोटर साइकिल उठा लेने का निर्देश दिया, तो मैं मलिक साहब को भगवान मान बैठा। यह तो मुझे बाद में मालूम पड़ा कि वह मुझे जितना दे रहे थे, उससे कई गुना ज्यादा कमा रहे थे। वह भी सिर्फ मेरे एक लेख की वजह से। विनयमोहन ने मुझे बताया था कि बुढ़ऊ बिना स्वार्थ के किसी को एक पैसा नहीं देते। लेकिन मेरे मामले में राजकुमारी के जादू का डंडा चल गया था। दूसरे अखबारों ने राजकुमारी की रुचि, आदत, दिनचर्या और सुवर्णा प्लांटेशन की स्कीमों पर खूब लल्लो-चप्पो के साथ मॉडलिंगवाली तस्वीरें छापी थीं। जबकि 'हेलो इंडिया' के लेख ने उसे एक उभरती हुई शायरा बना दिया था। सुबह ही राजकुमारी ने निर्णय लिया था कि सुवर्णा प्लांटेशन के सारे रंगीन विज्ञापन सालभर के लिए 'हेलो इंडिया' को दिए जाएं। मलिक साहब मेरे लेख से लाखों रुपया पीटने जा रहे थे।

मुझे याद है कि मैं प्रेस के बिजनेस मैनेजर मनोज पारिख के साथ बाजार से नई होंडा लेकर लौटा, तो साथियों ने पकड़ लिया कि पार्टी हो जाए। कैंटीन में चाय-नाश्ता के बीच ही प्रेस का अटेंडेंट हरीराम ने आकर मुझे सूचित किया कि मेरे लिए राजमहल से सुवर्णा का फोन आया था। वह दस मिनट बाद फिर फोन करेंगी।

थोड़ी देर बाद मैं प्रेस के रिसेप्शन में खड़ा था। वहां सामने सीट पर आपरेटर लता सिंह थी। हम उसे मजाक में लाल बिंदीवाली बाई बोलते थे। मेरा दिल धड़क रहा था। अचानक फोन की घंटी बजी, तो लता सिंह से पहले ही मैंने फोन उठा लिया, "हेलो, राजीव हियर।"

"मैं ढालूमल बोल रिया हूं जी। वह मेरे बम्पर ड्रा के विज्ञापन का क्या हुआ?"

मेरा मुंह सिकुड़ गया। लाल बिंदीवाली बाई ने मेरे हाथ से फोन लेकर विज्ञापन विभाग को दे दिया और मेरी झेंप पर हंसने लगी। थोड़ी देर बाद दूसरे फोन की घंटी बजी, तो मेरी हिम्मत फोन उठाने की नहीं हुई। लता ने फोन उठाकर सुना और मुस्कराते हुए मुझे इशारा किया।

मैंने फोन लिया तो एक जलतरंग बज उठा, "हैलो राजीव, मैं सुवर्णा।"

"हेलो सुवर्णाजी। कहिए, आप कैसी हैं?"

"आई एम आल राइट राजीव। थैंक्यू जनाब, आपने तो मुझे शायरा ही बना दिया।" हल्की हंसी के साथ आवाज आई।

उसके थैंक्यू कहने का तरीका मुझे बहुत पसंद आया। मैंने कहा, "आप तो मुझे शर्मिंदा कर रही हैं। वह तो मेरा जॉब था।"

"जॉब?" उसके स्वर में व्यंग्य घुल गया, "हां, वह तो जॉब था आपका। जॉब खत्म, तो रिश्ते भी खत्म, है न?"

मेरे दिल की धड़कन तेज हो गई। जवाब नहीं था मेरे पास। फिर भी बोला, "नहीं-नहीं, ऐसा क्यों कहती हैं आप?"

"अच्छा, यह बताइए कि आप इतना अच्छा क्यों लिखते हैं?"

"कहिए तो कल से बकवास लिखना शुरू कर दूं।" मैंने मजाक किया।

"नहीं-नहीं, मजाक नहीं, बात दरअसल यह है कि आपके लेख ने मुझे सुबह से ही परेशान कर रखा है।"

"मैं अपने लेख से बोल देता हूं कि वह आपको परेशान न करे।" मैं तो जैसे पूरे मूड में आ चुका था। मेरी बगल में लाल बिंदीवाली बाई मुझे अवाक नजरों से देख रही थी। काश, कालका सिंह यहां होता, तो जल-भूनकर खाक हो जाता।

"आप फिर मजाक करने लगे," उसके स्वर में उलाहना थी, "अरे भई, सुबह से मेरे पास कई पत्रकारों के फोन आ रहे हैं कि वह फिर से मेरी शायरी पर इंटरव्यू करना चाहते हैं। यहां तक तो गनीमत था, लेकिन अब यहां की साहित्य समितिवाले पीछे पड़ गए हैं कि एक कवि गोष्ठी होनी चाहिए—वह भी राजमहल में।"

"बिलकुल होनी चाहिए।"

"हो तो रही है," उसका स्वर एकदम बच्चों जैसा था, "इसलिए तो आपको फोन किया। एक अनुरोध है आपसे।"

"आदेश दीजिए।"

"नहीं, अनुरोध है।"

"अच्छा, अनुरोध ही सही। बोलिए, क्या बात है?"

"देखिए राजीवजी, मैं यहां के कवि-शायरों से अंजान हूं। आप मौजूद रहेंगे, तो मेरी हौसला-आफजाई होगी।"

"ओह, तो मुझे आना पड़ेगा अंत्येष्टि में।"

"अंत्येष्टि?"

"हां, हम लोग जो कविता की दुनिया से बाहर हैं, गोष्ठी को अंत्येष्टि ही कहते हैं।" मैंने मजाक किया।

"क्या कहते हैं आप भी!" वह तुनक गई थी।

"सॉरी-सॉरी," मैं हंसता हुआ बोला, "मुझे कितने बजे आना है?"

"गोष्ठी सात बजे है। बुरा न मानें, तो मेरी कार आपको लाने साढ़े छह बजे पहुंच जाएगी। आप प्रेस में ही होंगे न?"

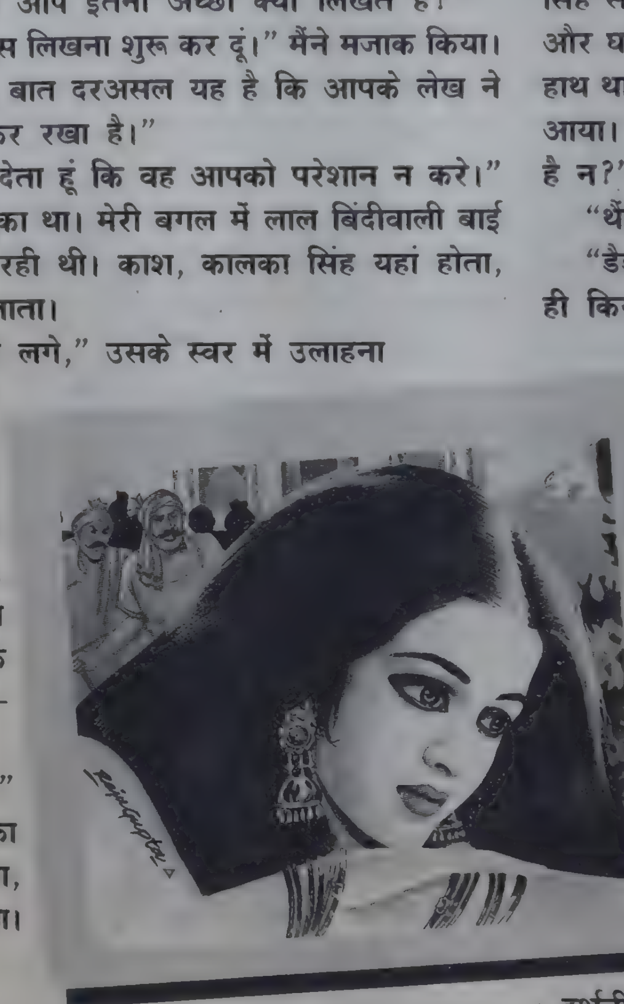
"जी।"

"देखिए, आपकी यह शाम हमारी होगी। खाना भी यहीं है। आ तो जाएंगे न आप?"

"आप बुलाएं और हम न आएं। मैं साढ़े छह बजे तैयार रहूंगा।"

"ओ.के. बाय।"

"बाय।" कहकर मैंने फोन रख दिया और लाल बिंदी की ओर थैंक्यू उछालता अपने दोस्तों के पास चला आया।



"आई एम आल राइट राजीव थैंक्यू जनाब आपने तो मुझे शायरा ही बना दिया हल्की हंसी के साथ आवाज आई"

किताबों के अनुसार, कोई-कोई प्रख्यात कवि कालजयी होता है। लेकिन मेरा विचार यह है कि कवि चाहे जो हो, वह कालजयी होता ही है। क्योंकि उसे समय से कोई लेना-देना नहीं होता। राजमहल की कवि गोष्ठी में दस लोग मौजूद थे। सात से नौ बज गए। एक-दूसरे को सुनते-सुनाते, किसी ने भी नहीं कहा कि अब उठा जाए। मैं कवि नहीं, एकमात्र श्रोता था। इसलिए मुझे ही बोलना पड़ा कि समय पर ध्यान दिया जाए।

उस रात डिनर टेबल पर जाने से पूर्व पहली बार राजा शेर बहादुर सिंह से मुलाकात हुई। वह गरिमामय व्यक्तित्व के धनी थे। लम्बे-चौड़े और घनी मूंछोंवाले। मुझसे राजा साहब बड़े ही गर्मजोशी से मिले। मेरा हाथ थामकर वह बोले, "थैंक्यू राजीव, बेबी को तुम्हारा लेख बहुत पसंद आया। हमने भी 'हेलो इंडिया' को ढेर सारा विज्ञापन दे दिया है। ठीक है न?"

"थैंक्यू सर।"

"डैडी," सुवर्णा बीच में बोल उठी, "हमने इन पर कोई एहसान थोड़े ही किया है।"

"ओह बेबी, मैंने कब कहा कि एहसान किया है," राजा साहब विनम्रता से बोले, "हम तो राजीव के बेहद शुक्रगुजार हैं। कम से कम इसी बहाने तुमने कोलकाता जाने का इरादा तो छोड़ दिया।"

मैंने सुवर्णा की ओर देखा। वह मुस्कराने लगी थी। फिर जब हंसी-मजाक के बीच हमारा शानदार डिनर समाप्ति की ओर था, तभी सुवर्णा ने एक जिद की कि हम सब राजमहल का शाही खजाना देखकर ही विदा लें, जो ऐतिहासिक रूप से दर्शनीय है। मैं 'न' नहीं कर सका। लेकिन सच कहूं तो मेरी हालत अच्छी नहीं थी। महफिल में दो घंटे की बैठक ने मुझे थका दिया था। उस पर सुस्वादु भोजन खाकर मैं उबासियां लेने लगा था।

मुझे वह दृश्य याद आ रहा है, जब हम राजमहल के गर्भगृह में एक बड़े-से हाल में खड़े थे।

वहां जाते ही मुझे लगा, जैसे मैं किसी जादूनगरी में आ पहुंचा हूं। दीवारें बेहद पुरानी थीं और एक अजीब-सी रहस्यमयी बू वहां के माहौल में तैर रही थी। वहां हाल के बीचों-बीच एक आदमकद तिजोरी बनी थी। राजा साहब ने तिजोरी के पीछे जाकर कुछ किया, जिसे हम नहीं देख पाए। फिर वह लौटे और मुस्कराते हुए उन्होंने तिजोरी का हैंडल घुमाया। तिजोरी के दोनों पट खुलते चले गए। इसी के साथ हम पर रोशनी की तेज बारिश हुई। हमारे सामने तिजोरी के फिर से दो पट बंद नजर आ रहे थे, जिनमें दो छेद थे। अब राजा साहब आगे बढ़े। दोनों छेदों में एक-एक चाबी डालकर घुमाया। वह दोनों पट खुल गए और हमारी आंखें हीरे-जवाहरातों की चमक से चौंधिया गईं। राजा साहब हमें शाही खजाने के बारे में बताते जा रहे थे कि यह सुवर्णा की दादी का पानदान है, तो यह मेरे दादाजी की कटार। यह ठोस सोने की है। यह मेरे ससुराल से दहेज में मिला था, चांदी का घोड़ा आदि-आदि। वहां नीलम, पुखराज और बेशकीमती हीरे थे।

हम सब हैरत से खजाने की चीजों को देख रहे थे कि सुवर्णा की ावाज उभरी, "डैडी, अपना जादू तो दिखाइए।"

राजा साहब शायरों और कवियों की प्रशंसा सुन-सुनकर खुश हो े थे। उनके चेहरे पर मानो सिकन तैर गई। वह बोले, "ओह बेबी, से छोड़ो भी।"

"दिखाइए न डैडी," सुवर्णा के स्वर में रहस्यानुभूति छिपी थी, "उसके ना शाही खजाने का मजा ही क्या है?"

"तुम नहीं मानोगी न। ओ.के., आप सभी अपनी-अपनी जगह पर ड़े रहें।" कहकर राजा साहब ने पहले तिजोरी में एक खटका दबाया, ो भीतरी दो पट आकर जुड़ गए और दीवार बन गए। वहां चाबियों े इस्तेमाल करने के बाद राजा साहब ने दोनों पट बंद कर दिए। ऐसा ोते ही रोशनी की तेज चमक हम पर से हट गई और वहां मामूली उजाला ह गया। अब राजा साहब हंसते हुए आगे बढ़े। मैंने देखा, सुवर्णा की ांखों में किसी बच्चे-सी चंचलता थी। राजा साहब ने हाथ से दोबारा ंडल खींचा और वह जादू हो गया। हमारे देखते ही देखते हाल में तेज ोशनी फैल गई थी। हमने हैरत से देखा कि हाल की दोनों दीवारों पर ोहे के सीखचों की दीवारें खड़ी हो गई थीं। यानी अब हम हाल में कैद ोकर रह गए थे। कई शायर चीख उठे थे।

"यह चोरों के लिए चूहेदानी है। जो भी शाही खजाने को लूटने आयेगा, वह यहां कैद हो जाएगा। बोलिए, यह इंतजाम कैसा लगा?" राजा साहब शायद प्रशंसा सुनना चाहते थे।

"एक्सीलेंट! वाह, क्या बात है।" जैसी कई आवाजें एक साथ उभरीं।

उन लोहे के सीखचों को हटाने के लिए राजा साहब को एक बार फिर तिजोरी के पीछे जाना पड़ा। इसके बाद ही हम वहां से बाहर निकल सके।

वापस लौटते समय एक घटना और हुई। हम लोग जब उस हॉल से बाहर निकले, तो दरबान ने तुरंत ही वहां एक मोटा ताला जड़ दिया। राजा साहब ने उस दरबान से छुटपुट बातें कीं। हमें उसका नाम मालूम हुआ। वह लक्ष्मण सिंह था। तभी मुझे याद आया कि हो न हो, यह वही लक्ष्मण सिंह है, जिसने राजमहल में पहली बार मजदूरों का नेतृत्व किया था।



"कवियों की संगत ने मेरे मन को भी भटका दिया था मैंने भी मेहनत-मशक्कत करके तीन प्रेम कविताएं लिख डाली थीं"

कुछ दिन बाद मैं अपने नए अपार्टमेंट में शिफ्ट हो गया। बढ़िया जगह थी। शहर के बीचों-बीच अलग-अलग कालोनियां एक साथ गड्डमड्ड हो गई थीं। तीन मंजिली बिल्डिंग में ग्राउंड फ्लोर पर मेरा अपार्टमेंट था। वह खुला-खुला और इतना साफ-सुथरा था कि मेरी पुरानी चीजें उसमें सूट नहीं करती थीं। मैं अपने अधिकांश पुराने सामान बाजू की खोली के नौजवान के हवाले कर आया था। वह मेरी खड़खड़िया साइकिल पाकर बेहद खुश हुआ था। मैंने विनयमोहन के साथ बाजार जाकर कुछ जरूरी चीजें उधार ले ली थीं। नए अपार्टमेंट में आते ही मैंने अपने पड़ोसी वर्माजी से परिचय बढ़ाया। वह भले मानस थे। बैंक में नौकरी करते थे। उन्होंने मेरे घर की देखभाल और खाना पकाने के लिए एक बिहारी नामक 18 वर्षीय ग्रामीण लड़के का इंतजाम कर दिया था।

मेरे अपार्टमेंट में एक हॉल था और एक बेडरूम। साहित्य समिति के सदस्य एक लाइब्रेरी में गोष्ठी करते चले आ रहे थे। लेकिन अब राजकुमारी सुवर्णा चूंकि नई सदस्य बन चुकी थीं, इसलिए साहित्य समितिवालों को भी अपना स्टैंडर्ड सुधारना जरूरी था। मुझे हंसी आई, जब साहित्य समिति के अध्यक्ष वैष्णवजी ने मुझसे कहा कि मैं एकाध अच्छा हॉल खोजूं, क्योंकि अब सुवर्णा हर गोष्ठी में आया करेंगी। मैंने उन्हें दरियादिली से अपने हॉल के बारे में सुझाव दिया, तो वैष्णवजी खुश होकर मेरा शुक्रिया अदा करने लगे।

कवियों की संगत ने मेरे मन को भी भटका दिया था। मैंने भी मेहनत-मशक्कत करके तीन प्रेम कविताएं लिख डाली थीं। मेरी इच्छा थी कि उन्हें मैं गोष्ठी में सुवर्णा की उपस्थिति में सुनाऊं।

लगभग पंद्रह दिन बाद मेरे मन की मुराद पूरी हुई। उस दिन दोपहर तीन बजे मेरे घर पर गोष्ठी थी। मेरे मन में भारी उत्साह था। समिति के सारे सदस्य, जिसमें तीन महिलाएं भी थीं, हॉल में बिछे गद्दे पर चौकड़ी मारकर बैठ थे। साढ़े तीन बजे जब वैष्णवजी ने गोष्ठी की शुरुआत की, तब मैं बेहद निराश था। अभी तक राजकुमारी सुवर्णा पहुंची नहीं थी। उसके बिना कविता सुनाने का कुछ मजा ही नहीं था। लेकिन तभी सुवर्णा की कार की आवाज ने सबका ध्यान खींच लिया। गोष्ठी में जैसे नई जान आ गई। मुझे तब बहुत अच्छा लगा, जब सुवर्णा आकर सबको नमस्कार करती हुई मेरे बगल में बैठ गई और उसने देर से पहुंचने के लिए सबसे माफी मांगी। उसने अपनी पारी आते ही मुझसे फुसफुसाकर पूछा कि वह कौन-सी रचना पढ़े? फिर उसने काफी मधुर कंठ से दो गजलें सुनाईं। अब मेरी बारी थी। किसी को पता नहीं था कि मैंने भी कुछ लिखा है। इसलिए जब मैंने शरमाते-मुस्कराते हुए अपनी जेब से कविताओं का कागज निकाला, तो वहां खुशी की लहर दौड़ गई। सब हैरत में थे। सुवर्णा तो मुझे बड़ी आकर्षक नजरों से घूर रही थी। खैर, मुझे गाना तो नहीं आता था, लेकिन किसी बड़े कवि की स्टाइल से मैंने अपनी रचनाएं पढ़ीं। अपनी विश्लेषण शक्ति के आधार पर मैं कह सकता हूं कि मेरी रचनाएं बेहद सतही थीं। लेकिन गोष्ठी में सभी तरफ से वाह-वाही हो रही थी। सुवर्णा भी उस वाह-वाही में शामिल थी। इसलिए उस वक्त यही लगा था कि मुझमें भी कविता के बीज है, जो आगे चलकर अंकुरित होंगे।

दूसरे दिन दोपहर को मैं प्रेस में टेबल पर जमा हुआ था। मैंने रात को शहर में खेला हुआ एक नाटक देखा था। उसी की रिपोर्टिंग करने में व्यस्त था कि फोन पर मुझे सुवर्णा ने बुला लिया।

"हैलो राजीव, अब तो जनाब आप भी हमारे गुट में शामिल हो गए हैं?" उसकी हास्य मिश्रित आवाज ने कहा।

"अरे वह तो कुछ नहीं, बस यों ही।" मैंने जरा झेंपते हुए कहा।

"यह तो बताइए कि वह कौन है, जिसकी याद में जनाब कवि बन गए हैं?"

मेरे मुंह से निकलने ही वाला था कि वह तुम हो सुवर्णा, जिसके लिए मैं कवि बनने की कोशिश कर रहा हूं। लेकिन मैं रुककर बोला, "कोई आधार नहीं है। यों ही कल्पना में..."

"कल्पना तो है, लेकिन कोई तो आधार होगा। खैर, छोड़िए। देखिए,

मैंने रात एक नई गजल लिखी है।"

"अरे वाह, फिर तो सुनाइए न।"

"ऐसे नहीं जनाब, आमने-सामने बैठकर सुनाएंगे। क्या आज शाम छह बजे राजमहल तशरीफ ला सकते हैं?"

"व्हाई नॉट, मैं पहुंच जाऊंगा।"

"कार भेज दूं।"

"इसकी जरूरत नहीं हैं, मैं आ जाऊंगा।"

"और हां, अपनी कविताएं भी लेते आना। मैं उन्हें दोबारा सुनना चाहती हूं। ठीक है, ओ.के. बाय।"

मैंने फोन रखा। मेरा दिल बल्लियों उछल रहा था। सुवर्णा की बातें मुझे उकसा रही थीं। पिछली गोष्ठी में सुनाई गई वैष्णवजी की पंक्तियां मुझे याद आ रहीं थीं, "चांद क्या कभी छुआ जाता है। दिल बड़ा जिद्दी हुआ जाता है।" लेकिन जब चांद खुद आसमान से हाथ बढ़ाए, तो उसे छूने में क्या हर्ज है?

शाम छह बजे मैं राजमहल जा पहुंचा। हुकुम सिंह ने राजमहल के बाहर मुझे घूरा। दीवानजी ने मुझे देखकर आंखें नचाईं। लेकिन मैंने उन्हें कोई तवज्जो नहीं दिया। मुझे राजकुमारी ने आमंत्रित किया था। रिसेप्शन में सुवर्णा का नाम लेते ही एक खूबसूरत प्रौढ़ महिला ने मुझे सीढ़ियों से ले जाकर ऊपरी हाल तक पहुंचा दिया, जहां सुवर्णा ने मुस्कराते हुए मेरा स्वागत किया। हरे रंग के सलवार सूट से बाहर झांकता उसका चेहरा लाल कमल की तरह खिला हुआ था।

हम दोनों सोफे पर आमने-सामने बैठ गए। सामने की टेबल पर बहुत-सी खाने-पीने की चीजें रखी थीं। फिर उसने तरन्नुम में अपनी नई गजल सुनाना शुरू किया। उसका मधुर स्वर, नए अल्फाज और उसका सुंदर चेहरा मिल-जुलकर गजल को बहुत ही दिलकश बना रहे थे। मेरी दाद पर उसके चेहरे पर आनेवाली मुस्कराहट मुझे उस पर फिदा किए दे रही थी। गजल खत्म हुई और उसने मेरी कविताएं सुनने की फरमाइश की। मैंने जैसे-तैसे अपनी प्रेम कविताएं फिर से उसके सामने पेश कर दीं। सुनने के बाद वह संजीदा होकर बोली, "राजीवजी, माफ कीजिएगा। मुझे लगता है, अभी आपको और कोशिश करनी होगी।"

राजकुमारी सुवर्णा के मुंह से मैं सिर्फ प्रशंसा सुनना चाहता था। जबकि वह मुझे बता रही थी कि मेरी रचनाएं सतही हैं। उसने कहा कि मैंने कविताओं में हृदय से ज्यादा मस्तिष्क से काम लिया है।

"हूं-हूं," करते हुए उस वक्त मैं चाय शिप करता हुआ अपनी झेंप मिटा रहा था कि सहसा उसने बड़ी दिलचस्पी से कहा, "फोन पर तो आप टाल गए थे। आखिर आपकी रचना का कोई तो आधार होगा?"

"आधारहीन हैं, केवल कल्पना है।" मैंने ऊपरी मन से कह दिया।

"मैं नहीं मानती जनाब," उसने रहस्यपूर्ण ढंग से कहा, "हर किसी की प्रेम-कविता का कोई न कोई आधार होता है।"

मैं जरा चौंका। मुझे लगा कि वह स्वतः मेरे सामने कोई रहस्य खोलना चाहती है। हिचकिचाते हुए मैंने कहा, "अच्छा, तो आपकी रचना का भी कोई आधार है?"

उसने मुस्कराते हुए मुझे देखा, फिर हंसते हुए बोली, "हां, बिलकुल है।"

मैं चौंका। वह बताना चाहती है। यानी मुझे उससे पूछना चाहिए। मैंने धड़कते दिल से पूछा, "तो बताइए कि आखिर वह कौन है?"

मेरे प्रश्न पर सुवर्णा की नजर में एक चमक आ गई। बड़े ही धीमे स्वर में उसने अपना हाले-दिल मेरे सामने रख दिया। जैसा कि मेरे दिल के एक कोने में संदेह था, सुवर्णा कोलकाता में एक युवक विकास मुखर्जी को चाहने लगी थी। विकास एक बड़े बिजनेसमैन का बेटा था। उन दोनों की जान-पहचान सुवर्णा के मामा के लड़के ने कराई थी, जो कोलकाता की एक कंपनी में कंप्यूटर इंजीनियर था। सुवर्णा ने कहा कि विकास को वह मुझसे मिलाएगी। वह बहुत ही सज्जन और नरमदिल इंसान है। छोटी उम्र में ही वह बिजनेस में भारी दखल रखता है। हाल ही में जर्मनी से लौटा है। मैं उदास मन से उसकी बातें सुनता रहा।

थोड़ी देर बाद मैंने सुवर्णा से इजाजत ली, तब उसने अनुरोधपूर्वक मुझसे कहा, "मैं आपको अपना दोस्त मानती हूं राजीव। मुझे आप पर भरोसा है कि हमारी यह बातें आप किसी और से नहीं कहेंगे।"

मैंने बुझे मन से उसे भरोसा दिलाया और लौट पड़ा। मोटर साइकिल चलाते हुए मेरे दिल से एक आह निकली। आकाश में चांद खिला था। हवाएं तेज थीं। मैं अब स्वयं को हल्का महसूस कर रहा था। राजकुमारी का भूत जो मेरे सिर पर पिछले कुछ दिनों से सवार था, वह उतर गया था। मैं सोच रहा था कि अच्छा हुआ, जो सुवर्णा ने मुझे पहले ही सब कुछ बता दिया, वरना बाद में मुझे जाने कितनी तकलीफ होती। मैंने तय कर लिया कि अब मैं कभी कविताएं नहीं लिखूंगा।

सप्ताहभर बाद का किस्सा है। इस बीच न सुवर्णा का फोन आया, न मैंने उसे कभी याद किया। उस सुबह मैं नहाकर बाथरूम से निकला ही था कि बिहारी ने मुझे सूचना दी कि पड़ोसी वर्माजी के घर मेरा अर्जेंट फोन आया है। मैंने प्रेस में अपना कंटेक्ट नंबर वहीं का दे रखा था।

मैंने जाकर फोन उठाया, "हैलो।"

"हैलो राजीवजी, मलिक साहब बात करेंगे।" संभवतः वह मलिक साहब का पी.ए. था। फिर थोड़े इंतजार के बाद मलिक साहब की आवाज उभरी, "हैलो राजीव।"

"गुड मार्निंग सर।" मुझे आश्चर्य था कि 'हेलो इंडिया' के मालिक मलिक साहब को इतनी सुबह मुझसे कौन-सा काम आ पड़ा है।

"मार्निंग। लिसन राजीव, तुम्हारे पास सिर्फ एक घंटा है। आठ बजे, आई रिपीट-ठीक आठ बजे तुम्हें राजमहल पहुंचना है। वहां तुम्हारे लिए एक न्यूज इंतजार कर रही है।"

"राजमहल में न्यूज?" मैं चौंका।

"हां, वहां एक घटना घट गई है। राजा साहब ने स्पेशली तुम्हें बुलाया है। अंडरस्टैंड?"

"यस सर।"

"ओ.के. राजीव। मैं अभी तीन घंटे बाद एक डेलीगेशन के साथ फॉरेन टूर पर निकल रहा हूं। तुम राजमहेल के न्यूज को ठीक से कवर करोगे, राइट?"

"राइट सर।" मुझे यही तो कहना था। फोन रखकर मैं सोचने लगा कि मलिक साहब कितनी जल्दी अपनी बनाई सीमा का उल्लंघन कर बैठे। कायदे से घटनाक्रमों के कवरेज के लिए विनयमोहन है, कालका सिंह है। लेकिन राजा साहब ने कहा, तो मलिक साहब न कैसे करेंगे? मुझे रहस्य की अनुभूति होने लगी। आखिर राजा साहब ने मुझे ही क्यों बुलाया है?

सुबह ठीक आठ बजे मैं राजमहल पहुंचकर दंग रह गया। वहां लॉन पर मौजूद दीवान बद्रीप्रसाद पत्रकारों से घिरे थे। वह सबको बता रहे थे कि कल रात शाही खजाना उड़ाने के लिए एक चोर गर्भगृह में घुसा था, जो अब शाही कैदी है। वहां पत्रकारों के अलावा कुछ पुलिस के जवानों के साथ भूरी मूंछों और कठोर चेहरेवाले इंसपेक्टर गायकवाड़ मौजूद थे, जो पुलिस महकमे में ईमानदार व्यक्ति के रूप में प्रख्यात थे।

हम सबको गर्भगृह ले जाया गया। वहां मुझे फिर आश्चर्य का झटका लगा। शाही खजाने के कक्ष में लोहे के सीखचों के पीछे एक आदमी घुटनों के बल बैठा रो रहा था। वह था लक्ष्मण सिंह। गर्भगृह का रक्षक। सारा कमरा रोशनी से चमचमा रहा था। बड़ी तिजोरी के पट बंद थे। दीवानजी ने बताया, तो हमने देखा कि तिजोरी के पास कुछ औजार

बिखरे पड़े थे। दो बड़ी तालियां भी नजर आ रही थीं। मुझे एक रहस्यानुभूति ने घेर लिया।

हमारे सामने लक्ष्मण सिंह सीखचों को झटका देते हुए चीखने लगा कि वह चोर नहीं है। उसे फंसाया गया है। उसका फोटो न उतारा जाए। लेकिन फोटोग्राफर दीवानजी ने बुलवाए थे। धड़ाधड़ शटर क्लिक होने लगे।

इस हंगामे से निकलने के बाद हम सब राजमहल के लॉन में कुनकुनी धूप सेंकते इजीचेयरों पर जा बैठे थे। मुख्य कुर्सी पर दीवान बद्रीप्रसाद जमे थे। उनके बाजू में भीमकाय हुकुम सिंह खड़ा था। चाय-नाश्ता चल रहा था। मैं उदास था और मन ही मन खिचड़ी पकाए जा रहा था। वहां पता चला कि राजा साहब अपनी बिटिया के साथ दो दिन पहले ही कोलकाता गए हैं। उन्हें रात को ही इत्तला दे दी गई थी। उनके ही निर्देश पर यह पत्रकार वार्ता रखी गई है।

"हां, तो साहबान," दीवानजी ने मुस्कराते हुए कहा, "कुछ देर पहले लोहे के पिंजड़े में बंद जिस शख्स को आपने अपनी आंखों से देखा है, वह वास्तव में राजमहल का नमकहराम मुल्जिम लक्ष्मण सिंह है। यह वही लक्ष्मण सिंह है, जिसने सबसे पहले राजमहल के मजदूरों में बगावत के बीज बोए थे। चूंकि उसकी मंशा पूरी न हो सकी और दूसरी यूनियन के झंडे तले मजदूर काम पर लौट आए, इसलिए वह अपने मन में रंजिश ले बैठा।"

दीवानजी ने गला खंखारकर साफ किया, फिर आगे कहा, "इस शख्स ने अभी दो महीना पहले हमारे प्रधान रक्षक हुकुम सिंह से आग्रह किया था कि वह गभगृह में ड्युटी देना चाहता है, क्योंकि उसे पुस्तकें पढ़ने का शौक है और गर्भगृह के बाहर गलियारे में अच्छी रोशनी रहती है, क्यों हुकुम सिंह?"

"जी सरकार।" हुकुम सिंह बोला।

दीवानजी ने आगे कहा, "चूंकि गर्भगृह का रक्षक रामदास लम्बी छुट्टी पर गांव जानेवाला था, सो हुकुम सिंह ने लक्ष्मण को वहां तैनात कर दिया। इस बीच हुकुम सिंह ने साफ-सफाई के लिए उससे गर्भगृह का ताला कई बार खोलवाया। जाहिर है कि इसने मोम पर चाबी की नकल उतारी होगी और उसके जरिए डुप्लीकेट चाबी बनाकर गर्भगृह के भीतर दाखिल हुआ। हालांकि उसके पास तिजोरी की चाबी नहीं थी। लेकिन जैसा कि आपने देखा, तिजोरी के पास चाबियों के गुच्छे और कई औजार पड़े हैं, जिससे वह तिजोरी खोलना चाहता था। लेकिन तिजोरी का हैंडल खींचते ही उसका सारा प्लान खाक में मिल गया।"

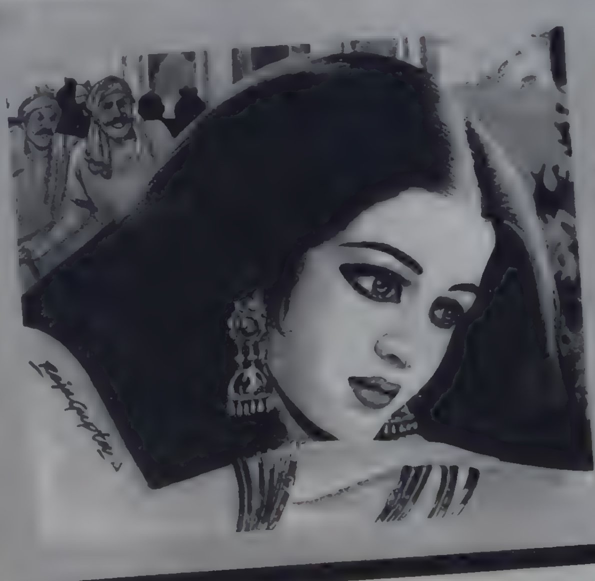
मैं सोचने लगा कि दीवानजी ने अच्छा होमवर्क कर रखा है। अब तक मैं समझ चुका था कि यह सब धोखा है। लक्ष्मण सिंह को बदनाम करना और उसे एक झूठे मुकदमे में फंसाकर नौकरी से अलग करने की यह एक चाल है।

"क्या हम कुछ पूछ सकते हैं?" एक अधेड़ पत्रकार ने पूछा।

"श्योर-श्योर, पूछिए।" दीवानजी बोले।

"यह करामाती पिंजरा कब बनाया गया था?"

"इसे हमारे महाराजा शेर बहादुर सिंह के पूज्य पिताश्री ने खजाने की सुरक्षा के मद्देनजर बनवाया था। कोलकाता से इंजीनियर और कारीगर बुलाए गए थे।"



"यह जो कुछ बोलते हैं वह सिर्फ राजकुमारीजी से बोलते हैं क्यों राजीवजी एक पत्रकार ने मुझ पर व्यंग्य कसा"

"कृपया इसका सिस्टम बताएं, जिससे स्टोरी बढ़िया बन जाए।" एक छोकरे से पत्रकार ने पूछा, तो दीवानजी पूरा सिस्टम समझाने लगे। फिर उसी पत्रकार ने पूछा कि उन्हें कैसे पता चला कि चोर पिंजरे में जा फंसा है?

"हुकुम सिंह अपने मुंह से बताओ।" दीवानजी ने इशारा किया।

तब हुकुम सिंह बड़े ही मुलायम स्वर में कहने लगा, "साहब, मेरा रोज का काम है। सुबह चार बजे उठता हूं और पूरे राजमहल का एक चक्कर लगाता हूं। मैंने गर्भगृह के पास जब लक्ष्मण सिंह को नदारद पाया, तब जाकर भीतर झांका। देखता हूं, वहां लक्ष्मण सिंह फंसा हुआ है। फिर मैंने दीवानजी को सूचना दी।"

दीवानजी ने हाथ उठाकर उसे रोकते हुए कहा, "इसके बाद मैंने तुरंत राजा साहब को कोलकाता इत्तला दी। उनके आदेश पर आप सबको बुला लिया और हां, पुलिस को भी इन्फार्म किया।"

"इन्फार्म क्या जनाब, आपने तो चोर को पुलिस के सामने तश्तरी में रखकर परोस दिया। इन्हें तो मेहनत करने की जरूरत ही नहीं रही।" अधेड़ पत्रकार ने कहा, तो सभी हंसने लगे। इंसपेक्टर गायकवाड़ का चेहरा अपमानबोध से तमतमा उठा।

"आप भी कुछ बोलिये, राजीव जी? इतने खामोश कैसे हैं आप?" दीवानजी ने मुझे लक्ष्य करते हुए कहा।

"यह जो कुछ बोलते हैं वह सिर्फ राजकुमारीजी से बोलते हैं, क्यों राजीवजी?" एक पत्रकार ने मुझ पर व्यंग्य कसा।

मैं अपमान से खौल उठा। मैंने अब प्रहार करने का फैसला किया। मैंने दीवानजी की आंखों में झांककर कहा, "आपकी इच्छा भी पूरी किए देता हूं। लक्ष्मण सिंह का कहना है कि उसे फंसाया गया है। उसने चोरी नहीं की...।"

"तो हमने कब कहा है कि उसने चोरी की है और कब नहीं कहा कि उसे फंसाया गया है," दीवानजी ने चेहरे पर क्रूरताभरी मुस्कराहट फैल गई, "भई, हमने तो चूहादानी बनाई ही इसलिए है कि चूहा आए और उसमें फंस जाए।"

"क्या बात कही है दीवानजी, आपने? मान गए," दाढ़ीवाले एक पत्रकार ने लल्लो-चप्पो करते हुए कहा, "चूहादानी.... वाह!"

सभी हंसने लगे थे, तभी मैंने थोड़ा जोर से कहा, जिसका रिहर्सल मैंने मन ही मन कर लिया था, "मैं पूछता हूं दीवानजी कि जब तिजोरी खोली ही नहीं गई, तब सीखचों ने लक्ष्मण सिंह को कैसे कैद कर लिया?"

"वाह, आप कैसे कह सकते हैं कि तिजोरी खोली ही नहीं गई?"

"तिजोरी के पट बंद हैं।" मैं अड़ा हुआ था।

"हो सकता है," दीवानजी बोले, "हैंडल खींचा हो लक्ष्मण सिंह ने, फिर जब सींखचों ने उसे घेरा हो, तब उसने तिजोरी बंद कर दी हो। यह देखने के लिए जब तिजोरी खोलने से सींखचे कैद कर लेते हैं, तो हो सकता है कि तिजोरी बंद करने से सींखचे खुल जाते हों। क्यों भाइयों?"

"हां, हां बिल्कुल।" कुछ पत्रकारों ने मुंह खोला।

वहां खामोशी छा गई। सब मेरा मुंह ताक रहे थे कि अब मैं क्या बोलता हूं। मैं मुस्कराया, "अगर ऐसा हुआ है, तो रोशनी कम होनी चाहिए। लेकिन हम सभी ने देखा है कि वहां बेहद रोशनी थी।"

"एक्सक्यूज मी, राजीवजी," इंसपेक्टर गायकवाड़ ने अपनी सीट पर कसमसाते हुए पूछा, "आप कहना क्या चाहते हैं?"

"मैं कहना चाहता हूं कि बिना टेक्निकल एक्सपर्ट से जांच कराए लक्ष्मण सिंह को दोषी न माना जाए। और ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूं कि मैं जानता हूं कि तिजोरी का बाहरी द्वार खोले जाने से रोशनी बढ़ती है और बंद होने से रोशनी घटती है। मुझे स्वयं राजा साहब ने यह जुगाड़ दिखाया था।"

दीवानजी की शक्ल देखने लायक हो गई थी और हुकुम सिंह की आंखें इतनी क्रूर थीं कि अगर मैं अकेले होता, तो शायद वह मेरी गर्दन ही मरोड़ देता। मगर मुझे परवाह नहीं थी। मैंने इंसपेक्टर गायकवाड़ और कुछ पत्रकारों को अपने पक्ष में कर लिया। वे सब नई पूछताछ करने लगे। आखिर दीवानजी को कहना पड़ा कि शाही खजानेवाले हॉल के बाजू में एक और कमरा है, जहां सीखचों का यांत्रिक जुगाड़ लगा हुआ है। इंसपेक्टर गायकवाड़ ने वह कमरा देखना चाहा। दीवानजी को वह कमरा खोलवाकर दिखाना पड़ा। वास्तव में इस कमरे के यांत्रिक जुगाड़ से भी पिंजरा उठाया-गिराया जा सकता था। यह प्रणाली शायद इसलिए बनाई गई थी कि अगर मूल प्रणाली में कोई दोष आ जाए, तो इस दूसरे इंतजाम से सीखंचों का संचालन किया जा सके। वहां पता चला कि इस जुगाड़ से यदि सींखचा बंद भी किया जाए, तब भी रोशनी चमकती रहती है।

मेरी इस थ्योरी से इंसपेक्टर गायकवाड़ सहमत था कि किसी ने उस कमरे से सीखंचों को संचालित किया था। विचार-विमर्श करते हुए मुझे पता चला कि इंसपेक्टर गायकवाड़ राजमहल से नफरत करता था। राजमहल में उससे लगभग नौकरों जैसा सुलूक किया जाता था।

लक्ष्मण सिंह को पुलिसवाले थाने ले जा चुके थे। मैं इंसपेक्टर गायकवाड़ के साथ ही थाने पहुंचा। मैंने कस्टडी में लक्ष्मण सिंह से मुलाकात की। पहले तो उसने मुझे राजमहल का पिट्ठू समझा, लेकिन इंसपेक्टर गायकवाड़ के समझाने पर वह मुझे अपना बयान देने के लिए राजी हो गया।

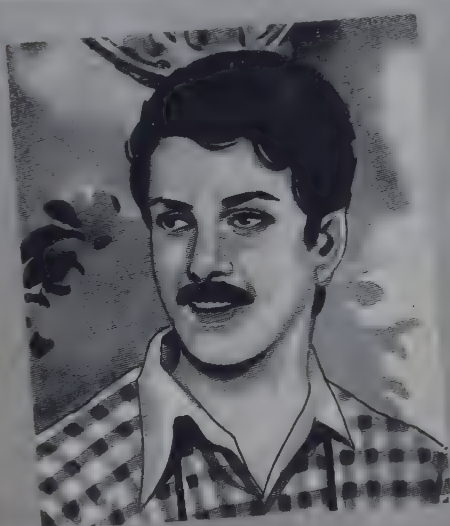
लक्ष्मण सिंह को सचमुच फंसाया गया था। रामदास को महीने भर की छुट्टी पर भेजकर दीवानजी ने गर्भगृह में उसकी ड्युटी लगवाई, हुकुम सिंह उससे रोज रात ताश पत्ती खेलने आता था। यही नहीं, वह रोजाना थर्मस भी लाता था, जिसमें गरमागरम चाय होती थी। घटना की रात इस चाय में कोई नशीली चीज मिला दी गई होगी, क्योंकि उस रात हुकुम सिंह ने पेट खराब होने का बहाना बनाकर चाय पीने से इनकार कर दिया था। उस चाय के पीते ही लक्ष्मण सिंह को नींद के झोंके आने लगे और थोड़ी देर बाद उस पर बेहोशी छा गई। फिर क्या हुआ, उसे कुछ पता नहीं। बेहोशी टूटी, तो वह सीखचों में कैद था।

इंसपेक्टर गायकवाड़ और मैंने अंदाजा लगाया कि यह सारा किया धरा भले ही हुकुम सिंह का था, लेकिन कम से कम दीवानजी जरूर ही इसमें शामिल थे। लक्ष्मण सिंह के बेहोश होने पर हुकुम सिंह ने ही पहले से बनवाई गई नकली चाबियों से गर्भगृह का ताला खोला होगा और लक्ष्मण सिंह को तिजोरी के पास डाल दिया होगा। सबूत के लिए औजारों का एक थैला और नकली चाबियां वहां छोड़ी होंगी। फिर उसने आसानी से बाहर आकर पास के कमरे के जुगाड़ से सींखचों को गिराकर बंद कर दिया होगा। क्योंकि उसे सींखचों से बाहर रहना था।

उस दोपहर मैंने अपने अपार्टमेंट की राइटिंग टेबल पर बैठकर आर-पार का फैसला लिया। यह फैसला मेरी अच्छी-खासी नौकरी भी छीन सकता था। लेकिन मुझे परवाह नहीं थी। शहर में छोटा-सा ही सही, मेरा एक नाम था। दूसरे अखबारों में मुझे काम मिलने में मुश्किल नहीं थी। मैं प्रेस जाकर मजदूर आंदोलन के सारे नोट्स ले आया था। आंदोलन से शुरू करके मैंने राजमहल के इस षड्यंत्र का पूरा कच्चा-चिट्ठा लिख दिया। राजमहल कामगार यूनियन के दूसरे मजदूरों से भी मेरी बात हुई थी। विपक्षी दल के लोग भी इसे षड्यंत्र मानते हुए सत्तापक्ष को घेरने की तैयारी में लगे थे। क्योंकि राजा साहब सत्ता पक्ष के करीबी थे।

मैं रात आठ बजे प्रेस में आपरेटर के पास बैठा अपना लेख टाइप करा रहा था। सम्पादक भागवत झा घर के लिए निकल गए थे। मलिक साहब का प्लेन सुबह ही उड़ चुका था। नाइट एडीटर मेरे लेखों को अब जांचते नहीं थे। इसलिए मैं कुछ भी लिखने के लिए आजाद था।

दूसरे दिन 'हेलो इंडिया' ने शहर में हंगामा बरपा दिया। अखबार की सारी प्रतियां बिक गईं। मेरे लेख की चर्चा हर जगह हो रही थी। जबकि दूसरे अखबार के संवाददाता मुंह छिपाए घूम रहे थे। उन सभी को राजमहल का चमचा कहा जा रहा था। दिनभर सम्पादक महोदय के पास फोन आते रहे।



"दूसरे दिन 'हेलो इंडिया' ने शहर में हंगामा बरपा दिया अखबार की सारी प्रतियां बिक गईं मेरे लेख की चर्चा हर जगह हो रही थी जबकि दूसरे अखबार के संवाददाता मुंह छिपाए घूम रहे थे"

इंसपेक्टर गायकवाड़ ने केस को कुछ ऐसे बनाया था कि मजदूर यूनियन की तरफ से नियुक्त वकील ने लक्ष्मण सिंह की जमानत तत्काल करवा दी। हुकुम सिंह और राजमहल के दूसरे कर्मचारियों से बकायदा पूछताछ होने लगी। दीवानजी भागवत झा के कमरे में तमतमाते हुए दाखिल हुए। जब निकले, तो ऐसे, जैसे भीगी बिल्ली। बाद में झा साहब ने मुझे केबिन में बुलाकर कहा कि मैं सावधान रहूं। मलिक साहब जाने इस मामले में कैसा स्टैंड लें? मैंने उनसे कह दिया कि वह मेरे बारे में फिक्र न करें। मैंने इस्तीफा लिखकर अपनी जेब में रख लिया है। जिस दिन बोलेंगे, उसी दिन डेट डाल दूंगा।

दो-तीन दिन बीते होंगे। उस रात मैं काम से लौटा। अभी मैं अपार्टमेंट के गैरेज में मोटर साइकिल रखकर लौट ही रहा था कि अंधेरे में अचानक एक कंबल मुझ पर आ गिरा। मैं कुछ सोच-समझ पाऊं, उससे पहले मुझ पर लोहे के रॉड से एक जबरदस्त वार हुआ। अगर यह वार गर्दन पर ठीक से होता, तो शायद मेरी जान ही चली जाती। चेतना लुप्त होते-होते मैंने महसूस किया कि किसी ने मुझे जकड़ लिया है और मुझे एक चीज का अहसास हुआ- वह थी मिसेज वर्मा की चीख। इस चीख की बदौलत ही दुश्मनों ने मुझे वहीं जान से मारने का प्रोग्राम रद्द कर दिया था। मुझे बाद में पता चला कि मिसेज वर्मा बाजार से लौटकर अपने अपार्टमेंट की तरफ जा रही थीं कि उन्होंने यह हमला होते देखा। वह चीखकर अपने अपार्टमेंट की ओर दौड़ीं और पुलिस को इत्तला दी। लेकिन तब तक मुझे मारुति वैन में डालकर बदमाश फुर्र हो गए थे।

बहरहाल, मेरी चेतना जब लौटी, तब मैंने खुद को एक भारी कंबल में लिपटा हुआ पाया। सारे शरीर में दर्द था, लेकिन गर्दन कुछ ज्यादा

ही दुख रही थी। मैं वहां खामोश पड़ा हिल-डुल रहा था। फिर मुझे पानी की गंध आई। ऊपर आकाश में हल्की चांदनी छिटकी हुई थी। सबसे पहले तो मैंने अपनी चीख रोकी। अपनी अनुभूतियों से मैं समझ गया कि लाल नदी में एक लंबी नाव पर सवार हूं।

मैंने आवाजों के जरिए पहले तो समझा कि नाव पर कुल दो व्यक्ति सवार थे। लेकिन जब तीसरे व्यक्ति की खरखराती आवाज आई, तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए। इस आवाज को मैं अच्छी तरह पहचानता था। यह हुकुम सिंह की आवाज थी। मैं समझ गया कि वे मुझे जल समाधि देने बहाव की ओर ले जा रहे हैं।

उफ्, कितना डर गया था मैं! लेकिन इस डर ने ही मुझे जान बचाने की अंतः प्रेरणा भी दी। मैंने पहले तो हाथों को स्वतंत्र करने की चुपचाप कोशिश की, लेकिन कंबल में ऐसे लिपटा था कि यह कोशिश कामयाब नहीं हुई। मैं खड़ा होने की कोशिश करता, तो दुश्मन मुझे देख लेते। अचानक एक तरकीब सूझ गई। मैंने लुढ़कना शुरू किया। इसमें पचास प्रतिशत चांस था। लेकिन भाग्य प्रबल था। कंबल का वजन कम होते ही मैं समझ गया कि तरकीब काम आ गई है। मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया और आहिस्ते-आहिस्ते कंबल से निकलता हुआ नाव के दाहिने किनारे पहुंच गया।

दुख और दर्द को भूल गया मैं। कंबल शायद एक राउंड बना था, तभी मैंने सिर उठाकर नाव के अगले सिरे पर बैठे दुश्मनों को देखा। मुझे वह भूत-प्रेतों जैसे नजर आए। अब मैंने जैसे-तैसे कसमसाकर एक हाथ को स्वतंत्र किया, जूते-मोजे उतारे और नाव का किनारा थामकर चोट की परवाह किए बिना उछाल मारी। दूसरे ही क्षण मैं कंबल समेत पानी में जा गिरा। भयंकर ठंड का अहसास हुआ। कंबल को अलग करते हुए मैंने एक जोर की सांस ली और गोता लगाया, तभी किसी ने पानी को बड़ी जोर से पीटा। दुश्मनों को मेरी गतिविधि का पता चल चुका था।

हमारे गांव में पानी के भीतर ही एक दूसरे को छूना और बचना हमारी तैराकी का प्रिय खेल रहा था। मैंने पहले से ही सोच रखा था कि मुझे क्या करना है। इसलिए मैंने पानी के भीतर जाकर नाव को टटोलते हुए क्रास किया। फिर पानी से सिर निकालकर देखा। तीनों साये मेरी ओर पीठ किये शायद कंबल को पतवारों से पीट रहे थे। मैंने एक जोर की सांस ली और गोता लगाकर बाएं किनारे की तरफ तेजी से बढ़ा। मैं गिनती गिन रहा था– जैसा हम बचपन की तैराकी में गिनते थे। मैं पानी से सिर निकालता, सांस लेता, फिर गोता लगाता हुआ किनारे पहुंच गया। लाल नदी ने मुझे बचा लिया था। आखिर मैं उसकी ही गोद में पला-बढ़ा जो था।

बाएं किनारे पर कीचड़ सने कदमों से पहुंचा, तो वहां की ठंड ने मुझमें जोरों की कंपकंपाहट ला दी। मैंने आंखें फाड़-फाड़कर देखा। एक नाव की झलक दिखाई दी, जो मछुआरों की बस्ती की तरफ बढ़ रही थी। वह लाल नदी का दूसरा किनारा था। किनारे पर पांव में गड़ती गिट्टी-पत्थर की चिंता किए बिना काफी दूर चलने पर पगडंडी मिली, तो मैं दौड़ पड़ा। वहां आम का बगीचा था। फिर खेत-खलिहान के दर्शन हुए और अंत में मिली एक झोपड़ी! जहां आग जल रही थी। बिना दूध की चाय पक रही थी। दो अधेड़ उम्र के किसान आग के पास बैठे बातें कर रहे थे। एकबारगी तो वे मुझे देखकर घबरा गए। लेकिन थोड़ी ही देर बाद मैं उनके बीच उन्हीं का कंबल ओढ़कर मजे से लाल चाय पीता हुआ अपनी रामकहानी उन्हें सुना रहा था। उनमें से एक किसान की बेटी हमारे गांव नैनपुर में ब्याही थी।

उस रात मैं घास के बिछौने पर आग के पास ही सो गया था। सुबह मुंह अंधेरे मुझे बैलगाड़ी में लादकर मेरे किसान दोस्तों ने सरकारी अस्पताल पहुंचा दिया। मैं उन्हें ठीक से धन्यवाद भी नहीं दे सका। मेरी हालत बेहद खराब थी। बुखार चढ़ आया था। बदन ऐसे दुख रहा था कि मेरे मुंह से कराहें निकल रही थीं। लेकिन 'हेलो इंडिया' का मुड़ा-तुड़ा प्रेस कार्ड दिखाते ही अस्पताल का आरामदेह बिस्तर मेरे लिए उपलब्ध हो गया। मैंने अस्पताल से दो फोन किए। एक एडीटर भागवत झा को और दूसरा अपने पड़ोसी वर्माजी को। बस, फिर तो शहर भर में अच्छा-खासा हंगामा मच गया।

पुलिस फौरन पहुंची। मैंने उन्हें सारी रामकहानी सुना दी। इंसपेक्टर गायकवाड़ ने मेरा कंधा थपथपाया और कहा कि शुक्र है, मैं बच गया। लेकिन हुकुम सिंह नहीं बच पाएगा। मेरा बुखार चढ़ता-उतरता रहा। दिनभर मुलाकाती आते-जाते रहे। शहर के राजनैतिक दलों के नेता प्रतिद्वंद्वी अखबारों के पत्रकार, जान-पहचानवालों की भीड़ अस्पताल और मेरे कमरे में डटी रही। यहां तक कि डाक्टर और नर्स भी परेशान हो गए। लक्ष्मण सिंह ने मुझे आकर सूचना दी कि मजदूर आंदोलन जोर पकड़नेवाला है। कल राजमहल के विरोध में नगर बंद किया जा रहा है।

पड़ोसी वर्माजी को जितना धन्यवाद दिया जाए, उतना कम था। उन्होंने न सिर्फ नाश्ता, खाना आदि भेजवाया, बल्कि मेरे घरेलू सहायक बिहारी को सुबह ही मेरे पास भेज दिया। वह बेचारा जी-जान से मेरी सेवा में लगा था। फिर जब शाम के छह बजने जा रहे थे, तब इंसपेक्टर गायकवाड़ मुझसे दोबारा मिलने आए। सुबह मेरा बयान लेते वक्त उसके चेहरे पर काफी गम्भीरता थी, जबकि इस वक्त वह मुस्करा रहा था।

"खुशखबरी है राजीव," वह बेड के बगलवाले स्टूल को खींचकर उस पर बैठते हुए बोला, "तुम्हारे हमलावर गिरफ्तार हो चुके हैं।"

"अच्छा, क्या हुकुम सिंह भी?"

"यस। वह साला मल्लाहों की बस्ती में पिए हुए पड़ा था। दरअसल, तुम्हारी कहानी ने मल्लाहों की बस्ती की तरफ मेरा ध्यान खींचा। मैंने फुर्ती से मुखबिर दौड़ाए, तो मालूम पड़ा कि हुकुम सिंह की यारी वहां के दो मल्लाहों राजू और गनपत से है। हमने उन्हें पकड़ा और जमकर धुलाई की। उन्होंने कुबूल किया कि वह दोनों भी रात हुकुम सिंह के साथ थे। हुकुम सिंह ने उनसे कहा था कि एक लाश को ठिकाने लगाना है।" इंसपेक्टर मुस्कराया।

"लाश?" मेरा शरीर कांप उठा।

"हां, शायद हुकुम सिंह ने तुम्हें मरा हुआ मान लिया था या फिर वह जान-बूझकर उनसे छिपा गया होगा। साला हुकुम सिंह मुंह नहीं खोल रहा है।" गायकवाड़ के चेहरे पर हल्की निराशा थी। फिर वह दृढ़ता से बोला, "कोई बात नहीं है। मैं भी जिद्दी हूं। सच उगलवाकर ही रहूंगा। इस मामले में दीवान तो हंडरेड परसेंट इन्वाल्व है। अगर उसे किसी तरह थाम लूं, तो फिर अंतिम सिरे तक पहुंचा जा सकता है।"

"क्या आपको लगता है कि इसमें राजा साहब भी शामिल हैं?" मैंने उसका मन्तव्य समझते हुए पूछा।

"बिलकुल," गायकवाड़ ने जोर देकर कहा, "वरना तुम्हीं सोचो, कारिंदे भला ऐसे काम क्यों करेंगे? उनका क्या इंट्रेस्ट है? और सुनो, वह दीवान का बच्चा आया था हुकुम सिंह को जमानत पर छुड़ाने। कहता था कि राजा साहब को यह पसंद नहीं आयेगा कि पुलिस ने उनके खास आदमी को पकड़ रखा है। वह गृह मंत्री से बोलकर मेरा तबादला करा देंगे। बोलने में मैं भी कम नहीं हूं। ऐसी घुड़की दी कि साला थाने से फौरन भाग खड़ा हुआ। मुझे कोई फिक्र नही है। एक बार मैं राजमहल के रुतबे की ऐसी-तैसी कर देना चाहता हूं।"

मैंने उसके स्वर में पूर्वाग्रह महसूस किया। मुझे लग रहा था, जैसे इस मामले में राजा साहब की कोई भूमिका नहीं थी।

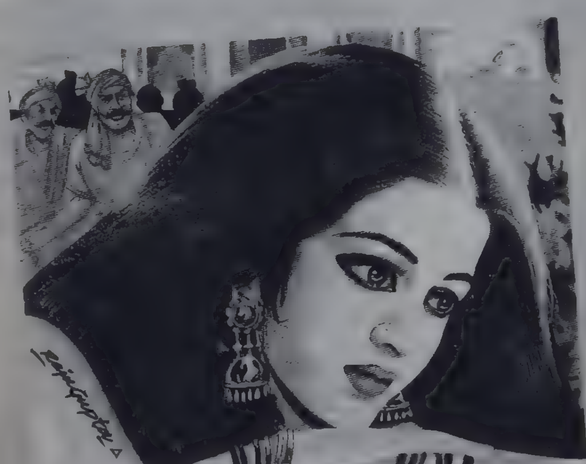
"तुम्हें शायद पता नहीं है कि यह मामला अब राजनैतिक रंग लेने लगा है। बात सी.एम. तक जा पहुंची है। आई.जी. साहब खुद इंट्रेस्टेड

हैं कि अपराधी पकड़े जाएं। चाहे वह कितना ही रसूख क्यों न रखते हों। मजदूर लोग नगर बंद कराने जा रहे हैं। अपोजीशनवाले विधानसभा में सवाल उठा रहे हैं। तुम तो यार पूरे हीरो बन गए हो, हीरो।" गायकवाड़ हंसता हुआ बोला, "बहरहाल, मैं चाहता हूं कि तुम जल्दी अच्छे हो जाओ। फिर निबटेंगे। ओ.के., अब मैं चलता हूं।"

मेरा कंधा थपथपाकर इंसपेक्टर गायकवाड़ चला गया। मैं बिहारी के हाथों तैयार किया गया फलों का जूस लेता हुआ सोचने लगा कि क्या कोलकाता में राजा साहब और सुवर्णा को इस मामले की जानकारी हो चुकी होगी? यदि हां, तो उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी। मुझे यही जानने की उत्सुकता थी।

इस उत्सुकता का अंत तीन दिन बाद तब हुआ, जब मुझे अस्पताल से छुट्टी मिलनेवाली थी। मेरा बुखार छू-मंतर हो चुका था। गर्दन में थोड़ा दर्द जरूर था, वरना अब मैं शारीरिक रूप से तनदुरुस्त था। मैं सुबह का अखबार बांच रहा था। सारे अखबार दो दिनों तक मेरी स्टोरी 'लीड' के रूप में छापने के बाद अब खामोश हो चुके थे। अखबारवालों ने मेरी हत्या की साजिश को, किसी न किसी रूप में राजमहल से जोड़ा था। दीवानजी निशाना बने थे। एक छोटे अखबार ने तो राजा साहब पर भी उंगली उठाते हुए मामले की जांच सी.बी.आई से कराने की मांग उठायी थी।

उस शाम महल का एक कारिंदा दरवाजा धकेलकर भीतर आया। उसने राजकुमारी सुवर्णा के आने की सूचना देते हुए फलों की एक डलिया बिहारी को थमा दिया। फिर मुझे वह नमस्कार करके चला गया। बिहारी ने मेरा बेड ठीक कर दिया और कमरे से बाहर निकल गया। मैं बिस्तर पर अधलेटा राजकुमारी का इंतजार करने लगा।



"सॉरी राजीव मैं तुम्हें देखने फौरन नहीं आ सकी पर जैसे ही मैंने तुम्हारे बारे में सुना फौरन पापा को लेकर लौट आई"

सुवर्णा ने जब कमरे में प्रवेश किया, तो मैंने देखा कि उसके चेहरे का गुलाबी कमल मुरझाया हुआ था।

"ओह राजीव," वह मेरी ओर तेजी से लपकी। उसने फूलों का एक शानदार बुके मुझे थमाते हुए चिंतातुर स्वर में कहा, "अब कैसे हो?"

"आई एम फाइन सुवर्णा। हाऊ आर यू?" मैं उसकी उदासी दूर करने के नाम पर मुस्कराया।

"थैंक्स गॉड," वह हड़बड़ाती हुई कुर्सी पर बैठ गई, "मैं तो सोच रही थी कि जाने आप किस हाल में हों। यहां यह सब क्या हो गया? सॉरी राजीव, मैं तुम्हें देखने फौरन नहीं आ सकी। पर जैसे ही मैंने तुम्हारे बारे में सुना, फौरन पापा को लेकर लौट आई।"

"थैंक्स, राजा साहब कैसे हैं?"

"अच्छे नहीं हैं," वह उदासी में बोली, "जब-तब सुगर बढ़ जाता है। ब्लडप्रेशर के मरीज हैं। अच्छा, एक बात कहीं मैं भूल न जाऊं। पापा शर्मिंदा हैं राजीव। खुद उनकी इच्छा थी यहां आने की। लेकिन तुम्हारे केस ने उन्हें आहत कर दिया है। सो बोले, पहले तुम्हीं जाओ। मैं किस मुंह से राजीव का सामना करूंगा?"

"अरे!" मैं बोला।

"हां, और जानते हो, यह सारा किया-कराया दीवानजी का है। पापा ने उन्हें राजमहल से निकाल दिया है।"

"अच्छा।" मुझे प्रसन्नता हुई।

"और वह हुकुम सिंह? अब तो उसकी जमानत भी लेनेवाला कोई नहीं है। मैंने तो पापा से कह दिया है कि ऐसे खतरनाक लोगों के लिए राजमहल में कोई जगह नहीं होनी चाहिए।"

"थैंक्यू सुवर्णा।"

"थैंक्यू मत बोलो, राजीव। तुम्हें मेरे पापा को माफ करना होगा। वह बूढ़े हैं, बीमार हैं। तुम्हें शायद पता नहीं कि शराब उनकी कमजोरी है। दीवान और हुकुम सिंह उनकी इसी कमजोरी के चलते राजमहल में मनमानी करते रहे हैं।"

सुवर्णा के इस अनुनय-विनय ने मेरे मन को पिघला दिया। मैंने मीठे स्वर में कहा, "देखो सुवर्णा, मैंने राजा साहब के बारे में अभी तक बुरा नहीं सोचा है और न सोचूंगा। यह मान लो कि यह सब कुछ मेरे बुरे दिनों में घट गया।"

"नहीं," सुवर्णा ने प्रतिवाद किया, "अपराधियों को उनके किए की सजा मिलनी ही चाहिए।"

थोड़ी देर बाद सुवर्णा चली गई। मैंने राजा साहब के बारे में सोचा। उनके कारिंदों ने सचमुच उनकी लाचारी का फायदा उठाया होगा।

दूसरे दिन मुझे अस्पताल से छुट्टी मिल गई। घर पर एक दिन आराम करने के बाद अगली सुबह प्रेस जाने का फैसला किया था। लेकिन वह हो न सका। उसी रात कोई साढ़े तीन बजे राजा शेर बहादुर सिंह हार्ट अटैक से गुजर गए थे।

बिहारी के मुंह से सुनते ही मैं राजमहल की ओर भागा। वहां कोहराम मचा हुआ था। सुवर्णा का रोते-रोते बुरा हाल था। मैं उसे सांत्वना देता हुआ रात होते तक राजमहल में ही ठहरा रहा। फिर जब भूखी-प्यासी सुवर्णा ने मेरे हाथ से एक गिलास दूध पी लिया, तब कहीं जाकर मैं वापस लौटा। राजा साहब का पार्थिव शरीर अंतिम दर्शन के लिए दीवानेआम में रखा हुआ था।

अग्नि संस्कार कार्यक्रम अगली सुबह होना था। सुवर्णा के अनुसार, कोलकाता और कानपुर के रिश्तेदार रात तक पहुंचनेवाले थे।

अगली सुबह राजमहल पहुंचा, तो सुवर्णा के साथ एक गोरा-चिट्टा चश्माधारी सुदर्शन युवक खड़ा था। यही था विकास मुखर्जी। सुवर्णा की कल्पना का आधार, उसका प्रेमी। परिचय के बाद करीब 15-20 मिनट की बातचीत में ही मैं समझ गया कि विकास निहायत जहीन इंसान है। उसकी शांत आंखें बहुत दूर तक देखती हैं। इतने नम्र स्वर में हमारे यहां कोई बातचीत नहीं करता था। सच कहूं तो विकास से ईर्ष्या हुई।

राजा साहब की भव्य शवयात्रा निकाली गई। राज्य के तीन मिनिस्टर, शहर के नामी-गिरामी लोग, बाहर से आए नाते-रिश्तेदार सभी राजा साहब की शवयात्रा में शामिल हुए। हम एक बगीचे में पहुंचे। पता चला कि वही था- शाही श्मशान। वहां राजा साहब की चिता को अग्नि दी गई। मैं, भागवत झा, कालका सिंह वगैरह से कुछ अलग-थलग खड़ा जीवन-मृत्यु के रहस्य में जकड़ा हुआ था कि मेरी पीठ पर एक वजनी हाथ आया। मैंने घूमकर देखा- इंसपेक्टर गायकवाड़ खड़ा था। उससे क्या बातचीत हुई, यह तो इस वक्त याद नहीं आ रहा। लेकिन इतना जरूर याद है कि आखिर में उसकी और मेरी कुछ झड़प-सी हो गई थी। दरअसल, उसने कहा था,

राजीव, इस वक्त मुझे कहना तो नहीं चाहिए, लेकिन तुम पर हमले पीछे राजा साहब का हाथ जरूर था।"

मैंने दृढ़ स्वर में, लेकिन धीमे से प्रतिवाद किया, "आप अपने पूर्वाग्रह ऐसा कह रहे हैं मिस्टर गायकवाड़।"

उसने मुझे घूरा फिर फीकी हंसी हंसता हुआ बोला, "यों ही नहीं कह रहा हूं राजीव। मैंने हुकुम सिंह को वादा माफ गवाह बनने का झांसा देकर उगलवा लिया है। केस में राजा साहब ने ही कोलकाता आदेश फरमाया था।"

"आप मान लीजिए शौक से। मगर मैं नहीं मानता।"

"क्यों?"

"इसलिए कि मुझे विश्वास ही नहीं होता।"

"हूं," वह मुझे भेदक नजरों से ताकता हुआ बोला, "कहीं तुम अपनी दोस्त राजकुमारी पर विश्वास तो नहीं कर बैठे हो?"

मैं तिलमिला उठा। मैंने उसे झिड़कते हुए कहा, "इस समय तो ऐसा मजाक न करें, इंसपेक्टर साहब।"

"ओह सॉरी," इंसपेक्टर ने जल्दी में कहा, "राजा साहब तो हैं नहीं, तो उनके बारे में क्या सोचना? आलराइट, फिर मुलाकात होगी।"

वह चला गया, तो मैं पुलिसवालों के विरुद्ध सोचने लगा। यह पुलिसवाले भी अजीब जीव हैं। राजा साहब ने दीवान और हुकुम सिंह को निकाल दिया है। ऐसे में वह तो बोलेंगे ही अनाप-शनाप। अब क्या इसी आधार पर स्वर्गीय राजा साहब की शान में गुस्ताखी की जाए?

राजा साहब के बारे में मेरे यह सद्विचार मात्र दस दिनों में बदल गए थे। इस बीच मैंने नौकरी ज्वाइन कर ली थी। और सामान्य काम-काज निबटा रहा था। विकास राजमहल में मेहमान बना हुआ था। सुवर्णा से इस बीच फोन पर मेरी दो-तीन बार बातचीत हुई थी। उसके आग्रह पर दसवीं के दिन मैं प्रेस का काम जल्दी निबटाकर राजमहल के महाभोज में शरीक हुआ। फिर जब मैं लौटना चाहता था, तब विकास ने बड़े आग्रह से मुझे रोक लिया।



"मैं चाहकर भी सुवर्णा की बातों में ध्यान नहीं दे पा रहा था इंसपेक्टर गायकवाड़ सही था मैं जिसे पिता तुल्य और नरमदिल आदमी समझता था वह भीतर से कितना क्रूर और हिंसक था"

शाम हो रही थी। राजमहल के नौकर-चाकर अंतिम पारी में खाना निबटा रहे थे। नाते-रिश्तेदारों में कोई शहर गया था, तो कोई नदी में नाव की सैर कर रहा था। विकास, मैं और सुवर्णा बैठक में थे। बस, कॉफी लेकर मैं विदा होने ही वाला था कि सुवर्णा ने विकास से कुछ कानाफूसी की, फिर मेरी ओर देखा। उसका चेहरा काफी संजीदा था। उसने हिचकते हुए कहा, "राजीव, कई दिनों से मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूं," उसने निगाहें नीची कीं, "यह बात अगर मैं दिल में रखूं, तो शायद हमेशा एक अपराधबोध मुझे सताता रहेगा।"

"अरे, तो कह दीजिए!" मैं मुस्कराया।

सुवर्णा हिचकिचाई, तो विकास बोल उठा, "मैंने सुवर्णा को पहले ही कहा था कि वह इस बात को आपके सामने जाहिर कर दे या फिर मैं बोल दूं। दरअसल, राजा साहब अंतिम रात एक प्रायश्चित कर गए थे।"

मेरी समझ में कुछ नहीं आया। मैं उन्हें बारी-बारी से घूरने लगा था। तब सुवर्णा बोली, "राजीव, मैं मौका खोज रही थी। सबसे पहले तो आप मुझे माफ कर दें।"

"चलिए किया माफ, मगर बताइए तो बात क्या है?" मैं रहस्य अनावरण के लिए बेचैन हो गया था।

"थैंक्स राजीव। मैंने एक बार तुमसे कहा था न कि पापाजी को माफ कर दो, क्योंकि वह आपके हमले के मामले में अंजान थे।"

"वह तो रात गई-बात गई। अब उसमें भला क्या रखा है। डोंट वरी एबाउट दैट।"

"लेकिन शायद सच्चाई जानकर आपको दुख होगा।" सुवर्णा ने मेरी आंखों में झांका।

मेरा मन मचलने लगा था। तभी विकास की आवाज सुनाई पड़ी, "माफ करें, राजा साहब ने ही आपको सबक सिखाने के लिए वह आदेश दिए थे।"

"ओह।" मेरे मुंह से निकला। मैं तो सचमुच दंग रह गया था।

"आपको सुनकर जरूर सदमा पहुंचा होगा," सुवर्णा ने धीमे से कहा, "ट्रस्ट मी, मुझे जरा भी पता नहीं था कि पापाजी तुम्हारे लक्ष्मण सिंह वाले लेख से इतना चिढ़ गए थे कि फोन पर ही उन्होंने दीवानजी को तुम्हें देख लेने को कह दिया था। उन्होंने अंतिम रात मेरे सामने कन्फेस किया कि उनकी मंशा तुम्हारी हत्या करवाने की नहीं थी। वह तुम्हें धमकाना और डरा देना चाहते थे। लेकिन वह पिए हुए थे और उनके मुंह से.... तुम सुन रहे हो न राजीव?"

"हां," मेरे मुंह से निकला। मैं चाहकर भी सुवर्णा की बातों में ध्यान नहीं दे पा रहा था। इंसपेक्टर गायकवाड़ सही था। मैं जिसे पिता तुल्य और नरमदिल आदमी समझता था, वह भीतर से कितना क्रूर और हिंसक था, तो यह थी राजमहल की हकीकत। बाहर से सुंदर-स्वच्छ और भीतर से कुत्सित और गंदा। मुझे सुवर्णा और विकास से भी नफरत होने लगी थी। फिर मैंने सोचा कि मैं अतिरेक सोच रहा हूं। इनका क्या दोष है? अगर पिता खुद अपनी बेटी से झूठ बोले, तो बेटी क्या करेगी? अगर सुवर्णा सच्ची न होती, तो वह इस बात को मुझे आज बताती ही क्यों? मैंने एक गहरी सांस ली।

"मैं आपसे क्षमा चाहती हूं राजीव, प्लीज।"

मैंने कंधे उचकाए, "अब भूल जाइए सारी बातें। आपने मुझे बताकर अच्छा किया। राजा साहब की रूह को जन्नत नसीब हो।"

"थैंक्यू राजीव," सुवर्णा ने राहत की सांस ली, "बातें मन में पड़ी रह जाती हैं, तो उनका आकार बढ़ने लगता है। उस रात पापा का ब्लडप्रेशर बहुत बढ़ गया था। मुझे बुलाया, पहले तो मुझसे माफी मांगते रहे। फिर उन्होंने यह रहस्योद्घाटन किया। वह रोते रहे। मैं भी रोती रही। उसी रात वह...।" कहते हुए सुवर्णा की आंखें छलक आईं। विकास ने उसे अपना रूमाल दिया।

"विकास जी, सुवर्णा को संभालिए," मैं उन्हें सांत्वना देता हुआ बोला, "यह सच है कि मैं शायद पूरी जिंदगी इस घटना को भूल न पाऊं। लेकिन मेरा यह वायदा है कि इससे आपके-हमारे संबंधों में कोई फर्क नहीं आएगा।"

कुछ देर बार विकास और सुवर्णा को उस खेदजनक माहौल से निकालने के बाद मैं घर लौटा, तो नार्मल था। मैंने इंसपेक्टर गायकवाड़

से इसकी चर्चा न करने का फैसला किया। फिर मैं अपनी डेली रूटीन में लग गया। मुझे पता नहीं था कि आठ-दस दिन बाद मेरा भाग्य मुझे ऊंचे आसमान पर उड़ाने मेरे दरवाजे आ खड़ा होगा।

सुबह नौ बजे होंगे। बिहारी भीतर था। मैं नहा-धोकर चाय-नाश्ता से निबटने के बाद एक चित्रकार से मुलाकात के लिए कुछ प्रश्नावली तैयार कर रहा था। चित्रकार से इंटरव्यू के लिए मैंने समय ले रखा था, ग्यारह बजे का। तभी राजमहल की कार मेरे अपार्टमेंट के सामने आकर रुकी। मैंने आश्चर्य से देखा। सुवर्णा और विकास साथ-साथ उतरे। मैंने सहर्ष उनका स्वागत किया। उन्होंने सिर्फ चाय पी। इस दौरान बातचीत से पता चला कि सुवर्णा और विकास शादी करनेवाले हैं। विकास को यह शहर पसंद आ गया है। वह यहीं सेटल होने पर विचार कर रहा है। इसी बातचीत के अंत में सुवर्णा ने एक लखटकिया सवाल किया, "अच्छा राजीव, क्या आप अपनी वर्तमान नौकरी से संतुष्ट हैं?"

"यह क्या सवाल है," मैंने मजाक में कहा, "कहीं आप मुझे राजमहल के दीवान का पोस्ट ऑफर तो नहीं करनेवाली हैं?"

"नहीं, मजाक नहीं। सच बताइए कि क्या आप संतुष्ट हैं?"

"पता नहीं, मैंने कभी सोचा ही नहीं।"

"दरअसल," विकास बोल उठा, "हम चाहते हैं कि यहां कुछ ऐसा किया जाए, जिसमें आपका हमारा साथ रहे।" चश्मे के भीतर चमकती उसकी आंखें मुझे उत्साह से भरी हुई मालूम पड़ीं।

"मैं कुछ समझा नहीं," मैं मुस्कराया।

"अच्छा यह बताइए, एक बार आपने जिक्र किया था कि डेली पेपर में आपको उतनी रुचि नहीं है, जितना मैगजीन में। बोला था न आपने?"

"अरे वह," मैंने फीकी हंसी के साथ कहा, "वह तो एक सपना है।"



लेखक

रंजीत भट्टाचार्य

जन्मः 25 अगस्त, 1951, धमतरी (म.प्र.) वाणिज्य स्नातक। साहित्य तथा पत्रकारिता में निरंतर पच्चीस वर्षों से सक्रिय। अब तक दो पुस्तकें 'पांव बने हाथ' (काव्य संग्रह) और 'अबूझमाड़ का अतिथि' (विज्ञान उपन्यास) प्रकाशित। मानवाधिकार पर मध्य प्रदेश पी.यू. सी.एल. के रायपुर आयोजन में पुरस्कृत। 'कैमरा इन मांडु' में राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय छायाकारों के बीच छायांकन हेतु पुरस्कृत।

"अगर उसे हकीकत में बदल दिया जाए तो?" विकास मुस्कराने लगा था।

"यहां कहां है मैगजीन?" मैं हैरत में बोला, "बाहर जाकर काम करने में दिलचस्पी नहीं है मेरी, मैं पहले ही बता चुका हूं।"

"कौन कहता है जी आपको बाहर जाने के लिए," सुवर्णा ने मुस्कराते हुए कहा।

"हम तो कह रहे हैं कि हम तीनों मिलकर क्यों न एक रंगीन मैगजीन निकालें?"

मैं खामोश था। वह दोनों मुस्करा रहे थे। मेरे मुंह से निकला, "रंगीन मैगजीन?"

"जी हां, रंगीन मैगजीन।" सुवर्णा बोली।

"क्या आप एक पत्रिका की योजना बना सकते हैं?" विकास ने बात आगे बढ़ाई, "खर्च की परवाह न करें। आप वहां सिर्फ काम ही नहीं करेंगे, बल्कि हमारे वर्किंग पार्टनर भी होंगे। पत्रिका की आय के लिए भी चिंता की बात नहीं। सुवर्णा के प्लांटेशन के सारे विज्ञापन तो मिलेंगे ही, क्यों सुवर्णा?"

"हां राजीव, अब आप बोलिए, क्या बोलते हैं?"

मैं भला क्या बोलता? मेरी आंखों में तो मेरा सपना तैर रहा था। मैंने मूर्खों की तरह आंखें झपकाईं और उन्हें सहमति दे दी।

वह दिन था और आज का दिन। इस बीच मेरे छह माह काफी व्यस्त गुजरे हैं। मेरे मामले की दो पेशियां गुजर चुकी हैं। इंसपेक्टर गायकवाड़ के अनुसार, दीवान बद्रीप्रसाद और हुकुम सिंह को बस सजाएं होने ही वाली थीं। उसे अफसोस यही है कि वह राजा साहब को सजा नहीं दिला सकता, क्योंकि वह गुजर गए हैं। विकास और सुवर्णा ने शादी कर ली है। 'हेलो इंडिया' से मैं लगभग छह माह पहले ही इस्तीफा देकर इंडियाना कंपनी का तीसरा वर्किंग पार्टनर बन गया था। आज मेरे पास कंपनी द्वारा दिया हुआ किराए का बंगला है, आने-जाने के लिए कार है और एक रंगीन पत्रिका— 'भारतीय आईना' है, जिसकी व्यवस्था में मैंने दिन-रात एक कर दिया है। 'आईना' जिसका आज शाम शहर के सेंट्रल हॉल में देश के सूचना प्रसारण मंत्री उद्घाटन करने आ रहे हैं...।

"सर...सर।"

इस आवाज पर मैं चौक पड़ा। घड़ी देखी। नौ बजने जा रहे थे। बिहारी मोबाइल लिए मुझे आवाज दे रहा था। मैंने मोबाइल लेकर उसमें झांका। सुवर्णा का फोन था।

"हैलो सुवर्णा।"

"राजीव, आर यू रेडी?"

"ओ यस।"

"तो आ जाओ। टुडे इज अवर वेरी बिजी डे।"

"ओ.के., मैं आधे घंटे में पहुंच रहा हूं।"

"आधे घंटे में?"

"हां, साढ़े नौ बजे मिलने की बात थी न?"

"अरे भई, जल्दी आ जाते, तो रात एक ताजा गजल लिखी है।" वह हंसती हुई बोली।

"ओफ, इस व्यस्तता में भी गजल?" मैं चकराया।

"क्या करूं? रात को बन गई। सबसे पहले तुम्हें ही सुनना है।"

"अच्छा, आता हूं भई।" मैं हंसता हुआ बोला और मोबाइल बिहारी को थमाता हुआ बाथरूम की तरफ दौड़ गया।

मुझे अपनी पुरानी यादों पर गुस्सा आ रहा था, जिसने आज तक मेरा बहुत वक्त बरबाद किया था। सच कहूं, तो मेरे पास सब कुछ था, लेकिन वक्त नहीं था। मैं और ऊंचा जाना चाहता था... और ऊंचा।●

(चित्रांकन चित्रकार की कल्पना से)

पुलिस फाइल से





बलराज कृष्ण भोला
(पुलिस उप महानिरीक्षक)

देवकी के साथ जो कुछ भी हुआ, वह महज एक दुर्घटना है। दुर्घटना किसी के भी साथ हो सकती है। देवकी को मैं उसके काले अतीत से निकालकर, खुशियों की रोशनी में ले जाना चाहता हूं

मजबूर लड़की

वरिष्ठ आई.पी.एस. अधिकारी बलराज कृष्ण भोला से मेरी पहली मुलाकात तब हुई थी, जब वह नैनीताल जनपद के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक थे। मैं एक कथा के संदर्भ में उनसे मिलने गया था। पहली मुलाकात में ही मैं उनके व्यक्तित्व और व्यवहार से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा सका। इसके बाद तो मैं अनेक मामलों की जानकारी के सिलसिले में उनसे मिलता रहा। इन मुलाकातों से मुझे पता चला कि बलराजजी लेखन व साहित्य में भी काफी रुचि रखते हैं और नियमित रूप से सत्यकथाओं पर आधारित पत्रिकाएं पढ़ते हैं। एक दिन उन्होंने मुझसे बताया कि उनकी लंबी पुलिस सेवा के दौरान अनेक ऐसी मार्मिक, रहस्यमयी और हैरतअंगेज घटनाएं घटी हैं, जिनके आधार पर एक से एक रोचक सत्यकथाएं लिखी जा सकती हैं। लेकिन दौड़भाग और समयाभाव के कारण वह अपना लिखने का शौक पूरा नहीं कर पाते। यह जानकर मेरा लेखकीय मन उनके संस्मरणों के भंडार से सत्यकथाएं चुनने को आतुर हो उठा।

मैंने जब भोलाजी से अनुरोध किया, तो उन्होंने फुरसत के क्षणों में मुझे अपने अनेक संस्मरण सुनाये। मैंने उनके संस्मरणों के आधार पर 'पुलिस फाइल से' कालम के लिए अनेक कथाएं लिखीं, जब तक बलराज कृष्ण भोला नैनीताल जनपद में तैनात रहे, यह कहानियां हम दोनों की मुलाकात की कड़ी-सी बन गयीं।

कालांतर में उनका नैनीताल से तबादला हो गया। उनके जाते ही कहानियों का यह सिलसिला टूट-सा गया। लंबे समय तक मेरा भोलाजी से कोई संपर्क नहीं हो पाया। इस बीच उनकी पदोन्नति भी हो गयी।

कुछ वर्षों बाद बलराज कृष्ण भोला अचानक कुमायूं परिक्षेत्र के पुलिस उप महानिरीक्षक बनकर पुनः नैनीताल आ गये। अपना पद भार ग्रहण करने के बाद, जब उन्होंने मुझे याद किया, तो मैं फौरन उनसे मिलने चला गया। इसके बाद हमारी मुलाकातों का सिलसिला फिर शुरू हो गया। हमारी हर मुलाकात ने एक सत्यकथा को जन्म दिया। परिणामस्वरूप कहानियों का सिलसिला फिर शुरू हो गया।

एक दिन मैंने उनसे कहा, "भोलाजी, मैंने आपके पुलिस सेवाकाल में घटी घटनाओं के आधार पर अनेक कथाएं लिखी हैं। हालांकि आपने बड़ी रोचक व मार्मिक घटनाएं बतायी हैं। लेकिन मेरे मन की तृष्णा अभी तक शांत नहीं हुई है। मैं चाहता हूं कि आप मुझे किसी ऐसी घटना के बारे में बताएं, जो आपकी सेवाकाल का अविस्मरणीय मामला हो, जिसे आप आज तक चाहकर भी ना भूल पाये हों।"

"एक ऐसी घटना है, जो आज भी मेरे मन में बिलकुल तरोताजा है। लेकिन मैं इस घटना के बारे में तुम्हें कुछ बता नहीं सकता। इसके लिए मैं वचनबद्ध हूं। मैंने इस घटना के पात्र को वचन दे रखा है कि मैं इस घटना की जानकारी 'प्रेस' को देकर इसे सार्वजनिक नहीं करूंगा।" डी.आई.जी. साहब ने साफ मना कर दिया।

भोलाजी की बातों से मेरी जिज्ञासा और बढ़ गयी। मैंने उत्सुकता से कहा, "आखिर ऐसी क्या वजह है कि एक पुलिस अधिकारी होने के बावजूद आपने ऐसा वचन दे दिया?"

"पुलिस अधिकारी भी इंसान होता है। उसमें भी मानवीय संवेदनाएं होती हैं। उसके सीने में भी दिल धड़कता है। लेकिन कानून का रखवाला होने के नाते उसे अपने जज्बातों पर नियंत्रण रखना पड़ता है। फिर भी जिंदगी में कभी ऐसे नाजुक क्षण भी आते हैं, जब हमारा जमीर हमसे कहता है कि हम पहले एक इंसान हैं, फिर सिपाही। ऐसे ही भावुक क्षणों में मैंने वचन दे दिया था।"

"फिर तो मैं उस घटना के बारे में जरूर जानना चाहूंगा, जिसने पत्थर को भी पिघला दिया।" मैंने अनुरोध किया।

"क्षमा करना मित्र, मैं वचन में बंधा हूं। मैं तुम्हें वह घटना बताकर अपना वचन नहीं तोड़ सकता।"

"लेकिन मैं आपसे वचन तोड़ने के लिए कब कह रहा हूं। आपने

'प्रेस' को कुछ न बताने का वचन दिया है। आप इस वचन पर कायम रहिए। आप एक पत्रकार के रूप में मुझे कुछ न बतायें। लेकिन एक मित्र के रूप में तो वह घटना बता ही सकते हैं। ऐसा करने से आपका वचन भी कायम रहेगा और मेरी जिज्ञासा भी शांत हो जायेगी।"

मेरी बातों से भोलाजी गहरे सोच में पड़ गये। मेरे बार-बार अनुरोध करने पर अंततः वह मान गये। बलराज कृष्ण भोला ने मुझे अपनी पुलिस सेवा की जिस मार्मिक घटना के बारे में बताया, उसे मैं यहां अक्षरशः उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत कर रहा हूं:

मैं उन दिनों उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में पुलिस अधीक्षक के पद पर तैनात था। जनवरी का महीना था। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। कोहरे की धुंध भी छायी थी। अभी मैं अपने आफिस में आकर बैठा ही था कि मुझे सूचना मिली कि जनपद के प्रतापपुर गांव के एक कुएं में किसी नवजात शिशु की लाश पड़ी हुई है।

सूचना मिलते ही मैं घटनास्थल पर पहुंच गया। घटनास्थल प्रतापपुर गांव के सीमांत क्षेत्र में स्थित एक पुराना कुआं था। उस कुएं में एक शिशु की लाश पड़ी थी। गांव की आबादी ज्यादा नहीं थी। लेकिन लाश मिलने की खबर से कुएं के आसपास उत्सुक ग्रामवासियों की भीड़ जमा हो गयी थी।

उस हल्के के थाना इंचार्ज इंसपेक्टर आर.के. शर्मा मेरे निर्देश पर दल-बल सहित पहले ही मौके पर पहुंच चुके थे। वह भीड़ को एक तरफ हटाकर मौके की कार्रवाई करने में जुटे थे। लेकिन तमाशबीनों की भीड़ से बार-बार पुलिस के काम में व्यवधान पैदा हो रहा था।

मैंने इंसपेक्टर शर्मा को भीड़ को सख्ती से दूर हटाने का आदेश देते हुए लाश को फौरन बाहर निकलवाने को कहा। लाश का निरीक्षण करने पर पता चला कि वह एक नवजात कन्या थी, जिसे पैदा होने के कुछ ही समय बाद कुएं में फेंक दिया गया था। अब सवाल यह था कि वह नवजात कन्या किसकी थी और उसका हत्यारा कौन था?

इस बारे में जब मौके पर मौजूद ग्रामवासियों से पूछताछ की गयी, तो किसी भी गांववाले से कोई महत्वपूर्ण जानकारी नहीं मिली, जिससे पुलिस को कोई सुराग मिलता।

मेरा अनुमान था कि वह मृत शिशु या तो किसी कुंवारी युवती का होगा, जिसने शादी से पहले मां बनने के कलंक से बचने के लिए उस मासूम को पैदा होते ही कुएं में फेंक दिया होगा या फिर वह नवजात कन्या किसी ऐसे दम्पति की अनचाही औलाद होगी, जिसकी पहले से ही कई पुत्रियां रही होंगी। उस दम्पति को पुत्र की चाह रही होगी, लेकिन पुनः पुत्री पैदा होने पर दम्पति ने उसे कुएं में फेंक दिया होगा।

अपने इस अनुमान के आधार पर मैंने इंसपेक्टर शर्मा को आदेश दिया कि वह अपने गोपनीय सूत्रों व गांव की दाई या प्रसव करानेवाली वृद्ध महिलाओं के माध्यम से इस बात की जानकारी हासिल करें कि घटना के दिन या उसके आसपास गांव की किन-किन गर्भवती महिलाओं को प्रसव हुआ था।

प्रतापपुर गांव मामूली आबादीवाला एक छोटा-सा गांव था। इंसपेक्टर शर्मा को यह जानकारी हासिल करने में ज्यादा समय नहीं लगा। उसने अपने सूत्रों के माध्यम से जानकारी हासिल करने के बाद मुझे बताया कि घटना के दो दिन पहले गांव की दो महिलाओं ने बच्चों को जन्म दिया था। जबकि एक महिला को घटना से एक दिन पहले प्रसव हुआ था। लेकिन इन तीनों महिलाओं के बच्चे जिंदा और स्वस्थ थे।

इंसपेक्टर शर्मा ने मुझे यह भी बताया कि उसने उन कुंवारी युवतियों के बारे में भी छानबीन कर ली है, जिन पर बदचलनी के कारण अविवाहित मां बनने का शक किया जा सकता था। लेकिन इंसपेक्टर शर्मा के अनुसार, गांव में शक के दायरे में आनेवाली ऐसी कोई भी अविवाहित युवती नहीं थी।

मैंने इंसपेक्टर शर्मा से कहा कि मृत शिशु की लाश प्रतापपुर गांव के कुएं से बरामद हुई है। यह इस बात का प्रमाण है कि वह शिशु इसी गांव की किसी महिला या युवती का है। बाहरी गांव का व्यक्ति दूसरे गांव में आकर ऐसा नहीं कर सकता। मैंने शर्मा को निर्देश दिया कि अगर वह मुखबिरों के माध्यम से सुरागरसी करें, तो शीघ्र ही कोई न कोई 'क्लू' जरूर मिल जायेगा।

करीब एक हफ्ते बाद इंसपेक्टर शर्मा ने मुझे यह महत्वपूर्ण जानकारी दी कि उसे एक मुखबिर के माध्यम से पता चला है कि घटना से ठीक एक दिन पहले गांव की देवकी चौधरी नाम की महिला को प्रसव पीड़ा हुई थी। गांव का ही एक युवक कुंती नामक दाई को प्रसव के लिए देवकी के पास बुलाकर ले गया था। मुखबिर ने दावा किया है कि देवकी ने उस दिन एक कन्या को जन्म दिया था।

इंसपेक्टर शर्मा ने बताया कि उसने इस मामले में दाई कुंती से पूछताछ की, तो कुंती ने इस बात की तस्दीक भी की है कि घटना से एक दिन पहले देवकी को प्रसव पीड़ा हुई थी। उसने यह भी कहा है कि एक युवक उसे देवकी के पास बुलाकर ले गया था। कुंती के अनुसार, उस समय देवकी प्रसव वेदना से तड़प रही थी। लेकिन जब उसने देवकी के शरीर को हाथ लगाया, तो देवकी भड़क उठी थी। उसने भला-बुरा कहकर कुंती को वहां से भगा दिया था। कुंती के अनुसार, देवकी को उसके सामने प्रसव नहीं हुआ, लेकिन एक अनुभवी दाई होने के नाते वह दावे से कह सकती है कि उस रोज देवकी जिस दर्द से तड़प रही थी, वह प्रसव पीड़ा ही थी।

इंसपेक्टर शर्मा ने बताया कि सच्चाई जानने के लिए जब वह देवकी से मिला, तो यह देखकर चौंक गया कि देवकी गर्भवती हालत में थी। जब उसने देवकी से पूछताछ की, तो देवकी ने इस बात को स्वीकार किया कि वह गर्भवती है। लेकिन उसने इस बात से स्पष्ट इनकार कर दिया कि घटना से एक दिन पहले उसे प्रसव पीड़ा हुई थी। उसने स्वीकार किया कि उस दिन दाई कुंती उसके पास आयी थी और उसका परीक्षण करने के बहाने जबरदस्ती उसके जिस्म से छेड़-छाड़ करने लगी थी। देवकी के अनुसार, उसे कुंती की इस हरकत पर गुस्सा आ गया था और उसने कुंती को डांटकर भगा दिया था।

इंसपेक्टर ने यह भी बताया कि उसने अपनी आंखों से देवकी के पेट में गर्भ का उभार देखा है, इसलिए उसे देवकी की बातों पर विश्वास करना पड़ा।

कुंती और देवकी के परस्पर विरोधी बयानों से मुझे यह मामला बड़ा रहस्यमय और पेचीदा लगा। मुखबिर का दावा था कि घटना से एक दिन पहले देवकी ने एक कन्या को जन्म दिया था। दाई कुंती ने भी इस बात पर जोर दिया था कि उस रोज देवकी को प्रसव पीड़ा हुई थी। लेकिन देवकी इस बात से स्पष्ट इनकार कर रही थी और उसके पेट में गर्भ का उभार भी बरकरार था। अब सवाल यह था कि अगर कुंती और मुखबिर की बात सही थी, तो देवकी इस बात से क्यों इनकार कर रही थी? अगर उसने वास्तव में बच्चे को जन्म दे दिया था, तो उसके पेट में अब भी गर्भ का उभार कैसे बना हुआ था? क्या मुखबिर और कुंती झूठ बोल रहे थे? लेकिन क्यों? जब देवकी को प्रसव पीड़ा हुई ही नहीं थी, तो वह युवक दाई को बुलाकर उसके पास क्यों ले गया था? आखिर वह युवक कौन था? उसका देवकी से क्या संबंध था?

मेरे दिमाग में इस तरह के अनेक सवाल खलबली मचा रहे थे। चूंकि मुझे देवकी का किरदार संदिग्ध नजर आ रहा था। इसलिए मैंने शर्मा को निर्देश दिया कि वह देवकी के किरदार और उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में विस्तृत जानकारी हासिल करके मुझे रिपोर्ट करें।

शर्मा ने इस संदर्भ में जो जानकारी हासिल करके मुझे बताया, उसके अनुसार देवकी प्रतापपुर गांव के चौधरी दलीप सिंह की इकलौती पुत्री थी। देवकी का लगभग छह माह पूर्व विवाह हो

[च]ुका था। उसकी ससुराल प्रतापपुर [क]े निकटवर्ती गांव दानपुर में थी। [दे]वकी के पति का नाम रघुवीर सिंह [थ]ा और वह सेना में कैप्टन था। [दे]वकी घटना से कुछ ही दिन पूर्व [अ]पने मायके प्रतापपुर आयी थी। [इं]सपेक्टर की जानकारी के अनुसार, [दे]वकी का चाल-चलन अच्छा था। [व]ह जितने धनी और प्रतिष्ठित [प]रिवार की पुत्री थी, उतने ही [स]म्पन्न और प्रभावशाली परिवार [क]ी बहू भी थी।

अब प्रश्न यह था कि अगर देवकी ने उस रोज वास्तव में पुत्री को जन्म दिया था, तो वह ब्याहता होने के बावजूद स्वयं को गर्भवती बताते हुए इस घटना को छिपाने का प्रयास क्यों कर रही थी?

अचानक मेरे दिमाग में यह बात आयी कि मुखबिर और दाई देवकी पर प्रसव होने का आरोप लगा रहे थे, जबकि देवकी के विवाह को मात्र छह महीने ही हुए थे। छह माह में किसी भी महिला द्वारा एक पूर्ण विकसित बच्चे को जन्म देना असंभव था। तब मेरे मस्तिष्क में यह विचार कौंध गया कि कहीं ऐसा तो नहीं कि विवाह से पहले देवकी के किसी से अवैध संबंध रहे हों और मृत शिशु उसी अवैध संबंधों का परिणाम हो?

अपने संदेह की पुष्टि के लिए मैंने इंसपेक्टर शर्मा को निर्देश दिया कि वह देवकी का मेडिकल चेकअप करायें। देवकी के डाक्टरी परीक्षण से सच्चाई सामने आ गयी। देवकी का प्रसव हो चुका था। उसने दूसरों को धोखा देने के लिए और स्वयं को गर्भवती दर्शाने के लिए अपने पेट पर कपड़ों की पोटली बांधकर गर्भ का बनावटी उभार बना रखा था।

देवकी की चोरी पकड़ी गयी थी। अब उसके सामने सच्चाई उगलने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। मैंने उसे मनोवैज्ञानिक प्रभाव में लेते हुए कहा, "देखो देवकी, अब तुम्हारे लिए झूठ बोलना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के समान होगा। तुम एक इज्जतदार बाप की बेटी और प्रतिष्ठित परिवार की बहू हो। अभी तक तो मामला हमारे हाथ में है। लेकिन तुम जितना झूठ बोलोगी, उतना ही मामला चर्चा का विषय बनेगा। तुम्हारी चारों ओर इतनी बदनामी होगी कि तुम किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहोगी। ऐसी हालत में तुम्हारा पति भी तुम्हारा परित्याग कर सकता है। लेकिन अगर तुम सच-सच बता दोगी, तो मैं वादा करता हूं कि यह बात मुझ तक ही सीमित रहेगी और मैं तुम्हें बचाने की पूरी कोशिश करूंगा।"

मेरी बात का देवकी पर असर हुआ। वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसने स्वीकार किया कि कुएं से बरामद मृत बच्ची को उसी ने जन्म दिया था। उसने बताया कि उसे एक षड्यंत्र में इस तरह फंसाया गया कि वह षड्यंत्रकारी के इशारे पर कठपुतली की तरह नाचने के लिए मजबूर थी।

देवकी से विस्तृत पूछताछ करने के बाद उस नवजात बच्ची की हत्या की पृष्ठभूमि में जो सनसनीखेज कथा उभरकर सामने आयी, उसे सुनकर मैं भी स्तब्ध रह गया।

25 वर्षीया देवकी प्रतापपुर गांव के धनी और सम्पन्न किसान दलीप सिंह चौधरी की इकलौती संतान थी। देवकी की मां का उसके बचपन में ही देहांत हो गया था। दलीप सिंह ने ही उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था। दलीप सिंह के पास दौलत की कोई कमी नहीं थी। इसलिए उसने बचपन से जवानी तक देवकी की हर इच्छा और हर मांग को पूरा किया था। अगर देवकी किसी एक खिलौने के लिए जिद करती, तो दलीप सिंह उसके लिए खिलौनों का ढेर लगा देता था। देवकी को अगर जरा-सा जुकाम होता था, तो दलीप सिंह उसके लिए डाक्टरों की लाइन लगा देता था।

बाप के लाड़-प्यार से देवकी बचपन से ही जिद्दी और अहंकारी हो गयी थी। जवानी की दहलीज तक पहुंचते-पहुंचते वह इतनी मगरूर हो गयी थी कि अपने आपको गांव की राजकुमारी समझने लगी थी। वह दूसरों को हमेशा तुच्छ और हीन समझती थी और उनका उपहास उड़ाती रहती थी। अगर कोई उसका विरोध करता या उससे उलझने की कोशिश करता, तो दलीप सिंह उसे ऐसा सबक सिखाता था कि वह दोबारा ऐसा करने का साहस नहीं कर पाता था। देवकी के घमंडी स्वभाव तथा दलीप सिंह के धन व बल की ताकत के कारण कोई भी शरीफ गांववाला देवकी से टकराना नहीं चाहता था।

प्रतापपुर गांव में रमेश और श्यामलाल नामक दो युवक रहते थे। यह दोनों छात्र थे और आपस में गहरे मित्र थे। दोनों मित्र बेहद शरारती और मजाकिया

उसने बताया कि उसे एक षड्यंत्र में इस तरह फंसाया गया कि वह षड्यंत्रकारी के इशारे पर कठपुतली की तरह नाचने के लिए मजबूर थी।

स्वभाव के थे।

एक बार होली के अवसर पर रमेश और श्यामलाल ने देवकी को एकांत में पाकर उससे खूब छेड़छाड़ की और उसे सिर से पांव तक गोबर में मिलाये हुए रंग से तर कर दिया।

यद्यपि यह एक साधारण और रस्मी बात थी। गांव में होली पर अक्सर मनचले युवक-युवतियां एक-दूसरे पर गोबर मिला पानी डालते रहते हैं, लेकिन मगरूर देवकी ने इसे अपनी शान में गुस्ताखी समझा और रमेश व श्यामलाल को सबक सिखाने की ठान ली।

देवकी रोते-रोते अपने पिता के पास पहुंची और उसने रमेश व श्यामलाल पर झूठा आरोप लगाते हुए कहा कि उन दोनों ने एकांत में उसे पकड़ लिया और उसके साथ कुकर्म करने का प्रयास किया। देवकी ने कहा कि उसने किसी तरह भागकर अपनी इज्जत बचायी, वरना आज उसकी इज्जत लुट जाती।

यह सुनकर दलीप सिंह का खून खौल उठा। उसने आव देखा न ताव, अपनी लाइसेंसी बंदूक और लाठी-डंडों से लैस पालतू गुंडे लेकर उसी समय रमेश व श्यामलाल के घर पहुंच गया। दलीप के इशारे पर उसके लठैतों ने श्यामलाल और रमेश को इतनी बुरी तरह पीटा कि वह दोनों लहूलुहान होकर बेहोश हो गये। जिस समय दलीप सिंह के लठैत सरेआम श्यामलाल और रमेश पर लाठियां बरसा रहे थे, उस समय गांव के अनेक लोग वहां मौजूद थे। लेकिन दलीप सिंह के दबदबे के कारण किसी ने भी उन्हें रोकने का साहस नहीं किया।

रमेश और श्यामलाल जब जख्मी और बेहोशी की हालत में जमीन पर पड़े थे, तो अचानक देवकी दनदनाते हुए वहां आयी। अहंकारी देवकी ने अपनी चप्पल निकाली और उन दोनों के मुंह पर चप्पल मार दी। इसके बाद वह बड़े घमंड से अकड़ती हुई, अपने पिता के साथ वापस चली गयी।

रमेश और श्यामलाल अत्यंत गरीब परिवार के युवक थे। उनके घरवाले पानी में रहकर मगर से बैर मोल लेना नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने दलीप सिंह के जुल्म के खिलाफ न तो पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करायी और न ही इस मामले में पंचायत बुलायी।

रमेश व श्यामलाल एक लंबे समय तक बिस्तर पर पड़े रहे। धीरे-धीरे उनके शरीर के जख्म तो भर गये, लेकिन दिल का जख्म जस का तस बना रहा। उनके दिलों में प्रतिशोध की ज्वाला दहकने लगी थी। वह देवकी से अपने अपमान का बदला लेने के लिए मचलने लगे थे। वह रात-दिन इसी उधेड़बुन में रहते थे कि उस मगरूर लड़की को ऐसा सबक सिखाया जाये कि उसे जिंदगी भर पछताना पड़े।

काफी सोच-विचार के बाद रमेश और श्यामलाल ने देवकी से अपनी बेइज्जती का बदला लेने के लिए एक सटीक योजना तैयार की। इस योजना को अमली जामा पहनाने के लिए वह उचित अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

एक दिन दलीप सिंह एक

विवाह समारोह में शामिल होने के लिए गांव से बाहर गया था। देवकी घर में अकेली थी। रमेश और श्यामलाल के लिए यह सुनहरा अवसर था। वह पूरी तैयारी के साथ आधी रात को देवकी के घर पहुंच गये।

उन्होंने चिर-परिचित अंदाज में देवकी के दरवाजे पर दस्तक दी। वह गहरी नींद में सो रही थी। खटखटाहट की आवाज सुनकर वह अचानक उठ बैठी। उसने सोचा, शायद उसके पिता विवाह समारोह से लौट आये हैं। नींद की खुमारी में उसने बिना सोचे-समझे फौरन दरवाजा खोल दिया।

दरवाजा खुलते ही रमेश और श्यामलाल बाज की तरह उस पर टूट पड़े। रमेश ने फुर्ती से चाकू निकालकर देवकी की गर्दन पर टिका दिया और धमकी भरे स्वर में बोला, "खबरदार! अगर शोर किया या चिल्लाने की कोशिश की, तो जान से मार दूंगा।"

देवकी भयभीत हो गयी। डर के मारे उसके मुंह से आवाज तक नहीं निकली। श्यामलाल ने उसके दोनों हाथ बांध दिये और उसे उठाकर चारपाई पर पटक दिया। हथियारों से लैस दो जवान बलिष्ठ मर्दों के सामने निहत्थी देवकी बिलकुल बेबस और लाचार हो गयी थी।

रमेश और श्यामलाल ने चाकू के नोक पर बारी-बारी से देवकी के साथ कुकर्म किया और योजना के अनुसार, अपने साथ लाये कैमरे से देवकी की कई अश्लील तस्वीरें भी खींच लीं।

रमेश और श्यामलाल ने अपनी मनमानी करने के बाद देवकी को धमकाते हुए कहा, "मगरूर लड़की, तूने अपने बाप की दौलत और ताकत के घमंड पर हम पर बलात्कार का झूठा इल्जाम लगाया था। अब हमने इसे सच साबित कर दिया है। इस सच्चाई को हमने अपने कैमरे में कैद करके तेरी दर्जनों तस्वीरें भी खींच ली हैं। अब अगर तूने हमारे खिलाफ जुबान खोली, तो हम इन तस्वीरों का लिफाफा खोलेंगे। फिर पूरे गांव में तेरी ऐसी बदनामी होगी कि तुझे अपने आप से नफरत हो जायेगी। तूने तो बेहोशी की हालत में हमारे मुंह पर चप्पल मारा था। लेकिन गांववाले खुलेआम तेरे मुंह पर थूकेंगे। बदनामी का यह काला दाग माथे पर लगा होने से तू जिंदगीभर कुंवारी रहेगी। इसलिए अगर अपनी भलाई चाहती है, तो अपनी जुबान बंद रखना।"

इस धमकी से देवकी की जुबान पर ताला लग गया था। बदनामी के डर से उसने इस घटना के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया। इस हादसे से देवकी का सारा घमंड एक ही झटके में चकनाचूर हो गया। अब उसे अपनी भूल का अहसास हुआ। उसे रह-रहकर यह भय सताने लगा कि अगर रमेश और श्यामलाल ने उसकी अश्लील तस्वीरें गांववालों को दिखा दीं, तो उसके खानदान की इज्जत की धज्जियां उड़ जाएंगी। इस भय से देवकी का खाना-पीना और नींद हराम हो गयी।

एक दिन देवकी रमेश और श्यामलाल से एकांत में मिली और हाथ जोड़कर विनतीभरे स्वर में बोली, "देखो, मैं मानती हूं कि मैंने तुम पर झूठा इल्जाम लगाकर ज्यादती की थी। तुमने भी मुझसे मनचाहा बदला लेकर अपने कलेजे की आग ठंडी कर ली है। अब तुम वह सारे फोटोग्राफ्स मुझे दे दो। इसके बदले में तुम जितना भी पैसा चाहोगे, मैं देने के लिए तैयार हूं। यह मेरे खानदान की इज्जत और मेरे भविष्य का सवाल है?"

रमेश और श्यामलाल ने महज देवकी से बदला लेने के लिए यह कुकृत्य किया था। लेकिन जब उन्होंने देखा कि देवकी चंद तस्वीरों के बदले मुंह मांगी रकम देने के लिए तैयार है, तो उनके मन में बैठा लालच का शैतान जाग उठा। उन्हें लगा, जैसे तस्वीरों के रूप में उनके हाथ में देवकी का 'रिमोट' आ गया हो। इस 'रिमोट' से वह देवकी को अपने इशारों पर नचाकर उससे पैसे ऐंठने के साथ-साथ उसका जिस्म भी हासिल कर सकते हैं।

रमेश और श्यामलाल ने उन तस्वीरों के माध्यम से देवकी को ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। वह दोनों देवकी को तस्वीरों का भय दिखाकर देवकी से बार-बार पैसे मांगने लगे। बेबस देवकी घर से पैसे चुरा-चुराकर उन्हें देती रही।

रमेश व श्यामलाल ने देवकी का सिर्फ आर्थिक शोषण ही नहीं किया, बल्कि उन्होंने तस्वीरों के जोर पर उसका शारीरिक शोषण भी किया। वह दोनों देवकी को डरा-धमकाकर एकांत में बुलाते थे और उससे जबरन मनमानी करते थे। देवकी कठपुतली की तरह उनके इशारों पर नाचती रही।

ससुराल में जैसे-तैसे कुछ दिन बिताने के बाद जब देवकी पहली बार मायके आयी, तो उसने आते ही रमेश और श्यामलाल से संपर्क किया और उनसे अपनी परेशानी से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की

कुछ ही समय बाद इसका दुष्परिणाम सामने आ गया। देवकी के पांव भारी हो गये।

इसी बीच दलीप सिंह ने निकटवर्ती गांव दानपुर निवासी चौधरी महेन्द्र सिंह के पुत्र रघुवीर सिंह से देवकी का रिश्ता पक्का कर दिया। रघुवीर सिंह फौज में कैप्टन था। उसके पिता महेन्द्र सिंह गांव का सबसे संपन्न और प्रतिष्ठित किसान था।

अब देवकी के सामने एक और समस्या खड़ी हो गयी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। चूंकि रमेश और श्यामलाल के अलावा उसका कोई राजदार नहीं था और उन्होंने ही उसके लिए यह समस्या पैदा की थी। इसलिए जब देवकी ने उन्हें अपना संकट बताया, तो उन दोनों ने देवकी को आश्वासन दिया कि इस समय वह शादी करके अपनी ससुराल चली जाये। कुछ दिन बाद जब वह मायके आयेगी, तब तक वह इस समस्या का कोई न कोई समाधान निकाल लेंगे। देवकी ने उनकी बात मान ली।

जिस समय देवकी दुल्हन बनकर मायके से ससुराल गयी, उस समय वह अपने पेट में तीन महीने का गर्भ भी साथ ले गयी थी।

देवकी की संपन्न ससुराल में उसे किसी चीज की कमी नहीं थी। कैप्टन रघुवीर सिंह के रूप में उसे ऐसा आदर्श, सुंदर और प्यार करनेवाला पति मिला, जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी। लेकिन ससुराल में सब कुछ अच्छा होने के बावजूद भी देवकी हमेशा किसी अनिष्ट की आशंका से भयभीत रहती थी। वह जल्दी ही अपने मायके आकर अपनी मुसीबत से छुटकारा पाना चाहती थी।

ससुराल में जैसे-तैसे कुछ दिन बिताने के बाद जब देवकी पहली बार मायके आयी, तो उसने आते ही रमेश और श्यामलाल से संपर्क किया और उनसे अपनी परेशानी से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की।

तब रमेश और श्यामलाल ने अपनी सोची-समझी योजना के तहत देवकी को समझाते हुए कहा, "तुम चिंता मत करो। ससुराल में सामान्य तरीके से रहो और कुछ समय बाद अपने पति से कह देना कि तुम्हारे पांव भारी हो गये हैं। तब तुम्हारा जिस्म मोटा होने पर वह तुम्हारे चरित्र पर शक नहीं करेगा।"

"लेकिन....।" देवकी ने कुछ कहना चाहा।

लेकिन उससे पहले ही वह दोनों उसकी बात काटकर बोले, "हम जानते हैं कि तुम यह कहना चाहती हो कि जब ससुराल में तुम मात्र छह महीने में बच्चे को जन्म दोगी, तो सारा भेद खुल जायेगा। लेकिन ऐसी नौबत नहीं आयेगी। जब तुम्हारा गर्भकाल पूरा हो जायेगा, तो तुम मायके आ जाना। यहां हम तुम्हारे प्रसव की ऐसी गुप्त व्यवस्था करा देंगे कि किसी को पता भी नहीं चलेगा। प्रसव होने के बाद तुम

अपने पति से यह कह देना कि तुम्हारा गर्भपात हो गया। इस तरह तुम्हें इस मुसीबत से छुटकारा भी मिल जायेगा और तुम्हारा बच्चा भी सुरक्षित रहेगा।"

"लेकिन बच्चा...?"

"तुम उसकी चिंता मत करो। उसके पालन-पोषण की पूरी जिम्मेदारी हमारे ऊपर है। तुम सिर्फ उसके भरण-पोषण के लिए हमें आर्थिक मदद करती रहना।" श्यामलाल और रमेश ने देवकी को झांसा दिया।

वस्तुतः यह उन दोनों की एक सोची-समझी चाल थी। उनकी योजना थी कि प्रसव के बाद वह देवकी के बच्चे को किसी गुप्त स्थान पर ले जाकर उसकी हत्या कर देंगे और उसकी परवरिश के नाम पर देवकी से रकम ऐंठते रहेंगे।

देवकी मजबूर थी। वह उनके झांसे में आ गयी। वह इस बात से बिलकुल अनभिज्ञ थी कि वह षड्यंत्र के दलदल में फंसती जा रही है। वह जितना ही इस दलदल से बाहर निकलने का प्रयास करेगी, उतना ही उसमें धंसती जायेगी।

जब देवकी का गर्भकाल पूरा हो गया, तो वह ससुराल से मायके आ गयी। उसने रमेश व श्यामलाल से संपर्क करके उन्हें बताया कि उसके प्रसव का समय निकट आ गया है।

चूंकि दलीप सिंह की मौजूदगी में देवकी का प्रसव होने से सारा राज खुल सकता था। अतः दलीप सिंह को कुछ दिन के लिए गांव से बाहर भेजने के लिए रमेश व श्यामलाल ने एक चाल चली। उन दोनों को पता था कि दलीप सिंह की एक बहन दिल्ली में रहती है और वह अक्सर बीमार रहती है। इसलिए रमेश व श्यामलाल ने दलीप सिंह के नाम उसकी बहन की मौत का एक झूठा टेलीग्राम भेज दिया। बहन की मौत का समाचार मिलते ही दलीप सिंह तत्काल दिल्ली के लिए रवाना हो गया।

दलीप सिंह के जाने के अगले ही दिन देवकी को प्रसव पीड़ा हुई। उस समय रमेश व श्यामलाल उसके घर में मौजूद थे। धीरे-धीरे देवकी की हालत बिगड़ने लगी और वह दर्द से बुरी तरह तड़पने लगी। देवकी की हालत देखकर रमेश और श्यामलाल घबरा गये। उन्हें ऐसा लगा कि अगर देवकी मर गयी, तो गड़बड़ हो जायेगा। चूंकि देवकी उनके लिए सोने का अंडा देनेवाली मुर्गी थी, इसलिए उसकी जिंदगी से उनका निजी स्वार्थ जुड़ा था।

देवकी की गंभीर हालत देखकर रमेश और श्यामलाल ने अपने एक विश्वासपात्र आदमी को भेजकर दाई कुंती को बुलवा लिया। देवकी नहीं चाहती थी कि कुंती को इस राज का पता चले। इसलिए उसने कुंती को भला-बुरा कहकर वहां से भगा दिया। कुंती अपना-सा मुंह लेकर वापस चली गयी।

उसके जाने के कुछ समय बाद देवकी ने सामान्य प्रसव से एक पुत्री को जन्म दिया। प्रसव के बाद जब वह सामान्य स्थिति में आयी और उसने अपनी नवजात बच्ची के बारे में चिंता प्रकट की, तो श्यामलाल व रमेश ने उसे आश्वासन दिया कि उसकी बच्ची की परवरिश में कोई कमी नहीं होने पायेगी।

देवकी को झूठी तसल्ली देने के बाद श्यामलाल व रमेश उस बच्ची को रात के अंधेरे में एक कपड़े में लपेटकर कुएं पर ले गये और उन्होंने उस मासूम को जिंदा कुएं में फेंक दिया। इसके बाद वह दोनों चुपचाप अपने-अपने घर चले गये।

रमेश और श्यामलाल ने हर काम बड़ी चालाकी से किया था। उन्होंने सोचा था कि इस बात का किसी को पता नहीं चलेगा। लेकिन सुबह होते ही जब गांववालों ने कुएं में बच्ची की लाश देखी, तो गांव में खलबली मच गयी। गांववालों की सूचना पर मौके पर पुलिस भी आ गयी।

जब मामला पुलिस तक पहुंच गया, तो रमेश और श्यामलाल घबरा गये। उन्हें डर लगने लगा कि अगर देवकी ने जुबान खोल दी, तो वह बच नहीं सकते। इसलिए उन्होंने देवकी को धमकी दी कि वह इस बारे में पुलिस को कुछ न बताये। उन्होंने देवकी को यह भी हिदायत दी कि वह स्वयं को पुलिस के शक से दूर रखने के लिए अपने पेट पर कपड़ा बांधकर स्वयं को गर्भवती जताने का प्रयास करे। रमेश और श्यामलाल का मानना था कि देवकी के पेट पर गर्भ का बनावटी उभार देखकर पुलिस को उस पर रत्ती भर शक नहीं होगा।

लेकिन ऐसा नहीं हुआ और सच्चाई प्याज के छिलके की तरह परत दर परत खुलकर सामने आ गयी।

देवकी के बयानों के आधार पर मैंने रमेश व श्यामलाल को गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया। पूछताछ के दौरान उन्होंने अपना जुर्म स्वीकार करते हुए कहा कि उन्होंने देवकी से अपने अपमान का बदला लेने के लिए उसके साथ कुकर्म किया था और उसकी अश्लील तस्वीरें खींची थीं। उन्होंने यह भी स्वीकार कर लिया कि इन तस्वीरों के जोर पर उन्होंने देवकी को ब्लैकमेल किया और उसका यौन उत्पीड़न किया। रमेश और श्यामलाल ने यह भी स्वीकार किया कि उन्होंने एक सटीक योजना के तहत देवकी को गुमराह करके उसकी नवजात बच्ची को कुएं में फेंककर उसकी हत्या कर दी थी।

रमेश और श्यामलाल की निशानदेही पर देवकी के अश्लील फोटो व निगेटिव भी बरामद कर लिए गये।

मेरे निर्देश पर इंसपेक्टर शर्मा ने रमेश और श्यामलाल से आवश्यक पूछताछ करने के बाद उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। उनके घरवालों ने उनकी जमानत कराने की काफी कोशिश की, लेकिन अदालत ने उनकी जमानत नामंजूर कर दी।

वक्त और हालात ने देवकी की जिंदगी की नाव को ऐसे मंझधार में पहुंचा दिया, जहां से उसे दूर-दूर तक किनारा नजर नहीं आ रहा था।

यह देवकी के दुर्भाग्य की विडम्बना ही थी कि इस बच्ची के हत्याकांड का पर्दाफाश होने के बाद उसकी गांव में इतनी बदनामी हो गयी कि वह किसी को मुंह दिखाने के लायक नहीं रही। कल तक वह जिन गांववालों के सामने अकड़कर चलती थी, अब उन्हीं के सामने उसका सिर शर्म से झुक गया था। गांववालों ने उससे बोलना तक छोड़ दिया। इस घटना से दलीप सिंह को इतना गहरा आघात लगा कि वह बदहवास-सा हो गया। शर्म के मारे उसने घर से बाहर निकलना ही छोड़ दिया।

देवकी ने कभी सोचा भी नहीं था कि घमंड में की गयी उसकी एक छोटी-सी भूल की उसे इतनी बड़ी सजा मिलेगी कि उसकी जिंदगी, मौत से भी बदतर हो जायेगी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह सिर पर इतना बड़ा बदनामी का बोझ लेकर कहां जाये? अब उसके लिए न ससुराल में जगह थी, न मायके में पनाह।

जिस समय यह घटना घटी थी, उस समय देवकी का पति कैप्टन रघुवीर सिंह आसाम में तैनात था। उसके पिता महेन्द्र सिंह ने उसे इस बारे में टेलीग्राम कर दिया था।

मैं सोच रहा था कि जब रघुवीर सिंह को यह समाचार मिलेगा कि उसकी पत्नी शादी से पहले ही गर्भवती हो गयी थी, तो वह देवकी को किसी भी हालत में स्वीकार नहीं करेगा। वह उसका परित्याग कर देगा या फिर गुस्से में न जाने क्या कर बैठेगा।

इस घटना के कुछ दिन बाद एक दिन जब मैं अपने आफिस में बैठा कार्य में व्यस्त था, तो एक आकर्षक युवक मुझसे मिलने आया। शक्ल-सूरत और वेश-भूषा से वह सुशिक्षित और संपन्न घर का नजर आ रहा था।

"नमस्ते, कप्तान साहब।" युवक ने आते ही मुझसे अदब से अभिवादन किया।

"बैठिए।" मैंने खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मेरा नाम रघुवीर सिंह है, मैं आर्मी में कैप्टन हूं। आजकल मेरी पोस्टिंग आसाम में है। वैसे मैं मूल रूप से दानपुर गांव का रहनेवाला हूं। मेरे पिता का नाम महेंद्र सिंह हैं।" युवक ने बड़ी शालीनता से अपना परिचय दिया।

मैं समझ गया कि वह देवकी का पति है, फिर भी मैं जान-बूझकर

अंजान बना रहा।

रघुवीर सिंह कुछ क्षणों तक खामोश रहा। फिर गंभीर स्वर में बोला, "कप्तान साहब, मेरे पास समय बहुत कम है। मैं बहुत जल्दबाजी में आया हूं। मुझे कल ही ड्यूटी पर वापस जाना है। मुझे आपसे एक निवेदन करना है।"

"कहिये।" मैंने जिज्ञासा से कहा।

"सर, आपने प्रतापपुर में हुए शिशु हत्याकांड का पर्दाफाश तो कर ही दिया है और अभियुक्तों को भी सलाखों के पीछे पहुंचा दिया है। मैं समझता हूं कि अब पुलिस का काम पूरा हो चुका है। अब मेरी आपसे एक प्रार्थना है।"

"क्या?" मैंने तपाक से पूछा।

"सर, मैं चाहता हूं कि अब आप अपने स्तर से अधिकारिक तौर पर इस केस के बारे में प्रेसवालों को कोई जानकारी न दें और अपने मातहत स्टाफ को भी इस बारे में निर्देश दे दें कि वह किसी भी पत्रकार को इस वारदात की जानकारी न दे।" रघुवीर बड़े विनम्र स्वर में बोला।

"क्यों?"

"एस.पी. साहब, मैं नहीं चाहता कि देवकी की अब और अधिक बदनामी हो। गांव में तो उसका जीना मुश्किल हो ही गया है। अगर आपने प्रेसवालों को सब कुछ बता दिया, तो वह इस घटना को नमक-मिर्च लगाकर इस तरह उछालेंगे कि गांव से बाहर भी देवकी के इस कृत्य के चर्चे होने लगेंगे। वह बेचारी वैसे ही बहुत दुखी है। अगर ऐसा हुआ तो निराशा में वह जीने की रही-सही आशा भी छोड़ देगी। इसलिए मैं नहीं चाहता कि उसे अब और अधिक मानसिक कष्ट हो। प्लीज, मेरी पत्नी की सुख-शांति के लिए मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर लीजिए।"

"इसका मतलब है कि तुम देवकी के बारे में सब कुछ जान चुके हो और उसे अब भी पत्नी के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार हो!" मैंने उत्सुकता से पूछा।

"कैसी बात कर रहे हैं सर, देवकी मेरी ब्याहता पत्नी है। मैंने अग्नि को साक्षी मानकर जिंदगीभर उसका साथ निभाने की सौगंध खायी है। देवकी के साथ जो कुछ भी हुआ है, वह महज एक हादसा था। वह मजबूर थी। मजबूरी में उसने जो कुछ किया, वह मेरी नजर में गुनाह या पाप नहीं है। देवकी निर्दोष है। मुझे तो इस बात का दुख है कि नादान देवकी ने मुझ पर भरोसा नहीं किया। अगर वह शादी के तुरंत बाद मुझे इस हादसे के बारे में सब कुछ बता देती, तो मैं उस बच्ची को अपना नाम देकर न देवकी को बदनाम होने देता और न ही उस मासूम बच्ची की हत्या होने देता।"

कैप्टन रघुवीर सिंह की बातें सुनकर मैं भौचक्का रह गया। अपनी पुलिस की नौकरी में मेरा बड़े-बड़े अपराधियों, चोर-उचक्कों, तस्कारों और पेशेवर कातिलों से पाला पड़ा था। लेकिन रघुवीर सिंह जैसा सज्जन और महान इंसान मुझे पहली बार मिला था। मुझे उससे मिलकर वाकई हार्दिक प्रसन्नता हुई थी।

मैंने अपनी खुशी का इजहार करते हुए कहा, "कैप्टन, मुझे तुमसे मिलकर बहुत खुशी हुई। तुम आज की भटकी हुई युवा पीढ़ी के लिए एक आदर्श हो। मुझे तुम्हारी मदद करने में गर्व होगा।"

"यह आपका बड़प्पन है सर। लेकिन मैं इतनी तारीफ के काबिल नहीं हूं। मैं तो एक सीधा-सादा अनुशासित फौजी हूं। बस, मेरे जीने का अंदाज कुछ अलग है। देवकी के साथ जो कुछ हुआ, वह मेरी नजर में सिर्फ एक दुर्घटना है। दुर्घटना किसी के साथ भी हो सकती है। मान लीजिए, लड़ाई के मैदान में दुश्मन की गोली से मेरे हाथ-पांव कट जाएं या मैं विकलांग हो जाऊं, तो क्या मेरी पत्नी को मेरा परित्याग कर देना चाहिए? बिलकुल नहीं। इस देश में तो पत्नी, पति की मौत पर जिंदा चिता पर जल जाया करती थीं, तो क्या पति का पत्नी के प्रति कोई दायित्व नहीं बनता? हिंदू धर्म में पति-पत्नी का रिश्ता इतना पवित्र और अटूट माना गया है कि इसे सात जन्मों का बंधन कहा गया है। मेरी तो अभी देवकी से शादी हुए सात महीने भी नहीं हुए हैं।" रघुवीर ने दार्शनिक अंदाज में कहा।

मैं रघुवीर की बातों से बहुत प्रभावित हुआ। मैंने फिल्मों में ऐसे नायक देखे थे और उपन्यासों में ऐसे किरदार के बारे में पढ़ा था, लेकिन वास्तविक जीवन में कोई ऐसा किरदार मेरे सामने आ जायेगा, मैंने इसकी कभी कल्पना तक नहीं की थी। मैं बड़े गौर से उसकी बातें सुनता रहा।

रघुवीर कुछ देर के लिए खामोश रहा और फिर अचानक खड़े होते हुए बोला, "सर, मैं देवकी को अपमान, तिरस्कार और बदनामी के काले अंधेरे से निकालकर खुशियों की रोशनी में ले जाना चाहता हूं। मैं कल ही देवकी को अपने साथ लेकर जा रहा हूं। कल का सबेरा देवकी की जिंदगी का नया सबेरा होगा। कल सुबह वह काले अतीत से निकलकर यहां से सैकड़ों मील दूर एक नई जिंदगी की शुरुआत करेगी। बस, आप इस मामले को प्रेसवालों से बचाकर देवकी को तमाशा बनाने से रोकने की कृपा करेंगे।"

"मैं वचन देता हूं रघुवीर सिंह। मैं देवकी को बदनाम नहीं होने दूंगा। तुम खुशी से जाओ। मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।" मैंने वादा करते हुए कहा।

अगले दिन सुबह होते ही रघुवीर सिंह देवकी को अपने साथ लेकर आसाम चला गया।

घटना की चर्चा न होने के कारण लोग शीघ्र ही इसे भूल गये। लेकिन मैं रघुवीर सिंह के किरदार को आज तक नहीं भुला पाया हूं।

यद्यपि मैंने रघुवीर को इस घटना को पत्र-पत्रिकाओं में छपने-छपाने से रोकने का वचन दिया था, लेकिन आज मेरा वचन टूट गया। मुझे अपना वचन तोड़ने का जितना खेद है, उतनी ही इस बात से संतुष्टि भी है कि इस कथा के प्रकाशित होने के बाद आज की युवतियों को जहां देवकी के अहंकार से सबक मिलेगा, वहीं युवकों को भी रघुवीर के आदर्शों से प्रेरणा मिलेगी। ●

प्रस्तुति : लक्ष्मीदत्त मैंदोलिया/ कमल हीरा



एक निवेदन

'पुलिस फाइल से' के स्तम्भ के अंतर्गत हम पुलिस अधिकारियों के यादगार मामले छाप रहे हैं।

यदि आप पुलिस अधिकारी, न्यायाधीश, वकील, जेलर, परिवीक्षा अधिकारी रहे हैं, या इस तरह की सेवाओं से किसी भी रूप में जुड़े रहे हैं, तो अपने यादगार अनुभव हमें लिख भेजिए। आप उनको कहानी का रूप नहीं दे सकते, तो भी कोई बात नहीं। सम्पूर्ण विवरण हमें लिख भेजिए। उन पर कहानियां हम लिखा लेंगे और आपको पुरस्कार देंगे।

यदि संभव हो, तो फोटोग्राफ भी भेजें। विवरण के तथ्य सच्चे हैं, इस आशय का प्रमाणपत्र आपको संलग्न करना होगा। घटना का समय, नगर, थाने या न्यायालय का नाम लिखना आवश्यक है, ताकि हम दस्तावेजी सबूत से विवरण की पुष्टि कर सकें।

यदि कोई प्रकरण ऐसा है, जिसमें पात्रों के नामों का उल्लेख करने से उनकी प्रतिष्ठा पर आंच आती है, तो हम पात्रों के नाम बदलकर उन कहानियों को प्रकाशित करेंगे।

'भारतीय मनोरम कहानियां' वास्तविक जीवन से जुड़ी घटनाओं पर आधारित कहानियां छापती है, जो मिलती-जुलती परिस्थितियों में आनेवाली पीढ़ियों के लिए चेतावनी साबित होती है। यह हमारा सामाजिक दायित्व भी है। अपने अनुभव रजिस्टर्ड डाक/ कोरियर द्वारा निम्न पते पर भेजें:

'पुलिस फाइल से'
भारतीय मनोरम कहानियां
7, डी.डी.ए. कमर्शियल
सेंटर नं. 5, सेक्टर-1,
रोहिणी, दिल्ली-85
फोन: 7273591, 7167059

भारतीय

मनोरम कहानियाँ

सर्वेक्षण में भाग लेकर जीतिए इनाम

आप अपनी प्रिय पत्रिका 'मनोरम कहानियां' को अधिक आकर्षक और मनोरंजक बनाने के लिए अपना कुछ समय दें और प्राप्त करें आकर्षक पुरस्कार–

प्रथम पुरस्कार : रुपये 500/- नकद

द्वितीय पुरस्कार : रुपये 300/- नकद

तृतीय पुरस्कार : रुपये 200/- नकद

मनोरम कहानियां प्रश्नावली में केवल उन्हीं कहानियों के संबंध में अपनी राय दें, जो कि आपने पढ़ी हैं। सम्पादकीय विभाग द्वारा इस अंक में छपी कहानियों को स्तर-क्रम दिया गया है, उसी स्तर-क्रम के आधार पर आपके द्वारा भेजी गयी प्रविष्टियों को पुरस्कार हेतु चुना जायेगा। आपकी प्रविष्टि हमें 15 अप्रैल, 2002 तक प्राप्त हो जानी चाहिए। पुरस्कार विजेताओं के नाम मनोरम कहानियां के जून अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

नियम

1. केवल मनोरम कहानियां में प्रकाशित सर्वेक्षण फार्म को ही पुरस्कार हेतु स्वीकार किया जायेगा।
2. पुरस्कार के संबंध में प्रधान् सम्पादक द्वारा लिया गया निर्णय अंतिम एवं मान्य होगा तथा इस संबंध में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा।
3. लूथरा पब्लिकेशन तथा संबंधित संस्थाओं के कर्मचारी एवं उनके संबंधी इसमें भाग नहीं ले सकते।

प्रविष्टि भेजने का पता :
मनोरम कहानियां सर्वेक्षण,
7, डी.डी.ए. कमर्शियल सेंटर नंबर-5, सेक्टर-1, रोहिणी,
दिल्ली-110085 फोन : 7273591, 7127063। फैक्स: 7167059

मनोरम कहानियाँ सर्वेक्षण

अप्रैल 2002

कृपया निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त एवं स्पष्ट अक्षरों में लिखें। जिन प्रश्नों के एकाधिक उत्तर दिये गये हैं, उनके सामने बने बाक्स में ☑ का निशान लगाएं।

1. नाम श्री/श्रीमती/कु0...
2. पता...

....

3. मनोरम कहानियां के नियमित पाठक हैं अथवा कभी-कभी पढ़ते/पढ़ती हैं?

☐ नियमित ☐ कभी-कभी

4. इस अंक का मुख पृष्ठ आपको कैसा लगा?

☐ अत्यन्त आकर्षक ☐ आकर्षक ☐ अनाकर्षक

5. यदि आपने यह अंक किसी कहानी के शीर्षक से प्रभावित होकर लिया है तो उसका उल्लेख करें :

....

....

6. इस अंक में प्रकाशित कहानियों के बारे में आपकी क्या राय है :

शीर्षक	अत्यन्त रुचिकर	रुचिकर	अरुचिकर
1. कीर्तनवाले ठग	☐	☐	☐
2. दिल्ली से नेपाल चलनेवाली ठगचाल	☐	☐	☐
3. पंजाब में एक और नटवरलाल	☐	☐	☐
4. डा. राजेश! तेरा यह कैसा प्यार	☐	☐	☐
5. एक अभिनेत्री की मौत	☐	☐	☐
6. नेताजी नंबर 420	☐	☐	☐
7. खुराफाती दिमाग	☐	☐	☐
8. राजमहल	☐	☐	☐
9. नितिश कटारा हत्याकांड	☐	☐	☐
10. ब्लैकमेल	☐	☐	☐
11. एक रानी का बलिदान	☐	☐	☐
12. एक औरत का अहंकार	☐	☐	☐
13. नोट दोगुने करने का चमत्कार	☐	☐	☐
14. साबरमती एक्सप्रेस कांड	☐	☐	☐
15. उन्नीसवीं सदी का ठगजाल	☐	☐	☐
16. नक्सलियों के जीवन का खूबसूरत चित्रण : 'लाल सलाम'	☐	☐	☐
17. मंडी की शिवरात्रि	☐	☐	☐
18. मजबूर लड़की	☐	☐	☐

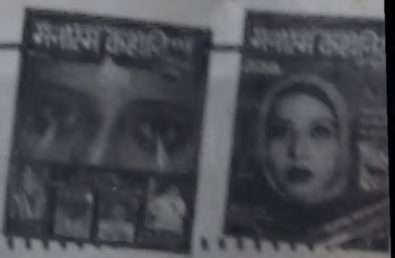
मनोरम कहानियां के पिछले विशेषांकों में से आपको सबसे अच्छा कौन-सा विशेषांक लगा?...............................

....

मनोरम कहानियाँ क्यों अच्छी लगती है?...............................

....

आपने लिखा हैं



● 'मनोरम कहानियां' का मार्च अंक पढ़ा। मुख पृष्ठ बहुत आकर्षक था और अलौकिक कथा विशेषांक को बिलकुल सार्थक करता था। इस अंक की अलौकिक कथाओं में 'जब साईं बाबा की कृपा होती है', 'उन घरों पर मंडराता अभिशाप', 'उस रात बारिश में' और 'एक अलौकिक व्यक्तित्व : स्वामी रमेशचंद्रानंदजी' कहानियां बेहद पसंद आयीं। 'मां का दूसरा चेहरा' और 'ऊंची उड़ान' बड़ी मार्मिक कहानियां थीं। आशा है, 'मनोरम कहानियां' में इसी तरह की स्तरीय रचनाएं पढ़ने को मिलती रहेंगी।

— श्यामशरण अरोड़ा, पटना

● 'मनोरम कहानियां' के मार्च, 2002 के अंक में प्रकाशित सत्यकथा 'सिद्धि के नाम पर नरबलि' पढ़कर हैरत हुई। आज वैज्ञानिक युग में भी पाखंडी और बेवकूफ तांत्रिक नरबलि जैसी जघन्य हत्या की राह अपनाता है, यह मनुष्यता के नाम पर घोर कलंक है। ऐसे बाबाओं को इंसान नहीं, हैवान ही कहा जाएगा। मासूम अमित की हत्या के एवज में बाबा लक्ष्मणगिरि को जितनी भी सजाएं दी जाएं, कम है।

— मयंक मोहन, कोलकाता

● 'मनोरम कहानियां' प्रथम अंक से ही मैं पढ़ रही हूं और हर महीने उत्सुकता से इसकी प्रतीक्षा करती हूं। इसमें प्रकाशित सत्यकथाएं रहस्य-रोमांच से भरपूर रहती हैं। इन कहानियों को पढ़कर अक्सर मेरे मन में यह विचार उठता है कि क्या संसार में वाकई इतना कुछ अलौकिक रहस्य भरा हुआ है?

— वीना गुप्ता, मेरठ

● 'मनोरम कहानियां' का रहस्य-कथा विशेषांक पढ़ा। इस अंक में प्रकाशित 'रहस्यमयी मम्मी', 'बोलती तस्वीर' और 'सामंत महल का रहस्य' जोरदार कहानियां थीं। इसी अंक में छपी 'आंखें' भी एक मर्मस्पर्शी कहानी थी। अंधी लड़की सोना से नूनीज ने प्यार तो किया, परंतु अपनी आंखों के मोहवश वह प्यार को ठुकरा कर चला गया। उसका प्यार अधूरा था। सत्यकथाओं में 'बीवी के मोर्चे पर फौजी शहीद' और 'वह बुरकेवाली' कहानियां दिल को झकझोरनेवाली थीं।

— नीरज पंडित, मुम्बई

● एक कहावत है कि हर पुरुष की कामयाबी के पीछे औरत का हाथ होता है। उसी प्रकार 'मनोरम कहानियां' के पीछे आपका व आपके सहकर्मियों का पूरा सहयोग है। तभी यह पत्रिका अपनी चरमसीमा पर है। हर नये कार्य के पीछे समय तो लगता है। परंतु अधिक नहीं। इस पत्रिका को पढ़कर मनोहर कहानियां व सत्यकथा की याद ताजा हो गई। मार्च, 2002 के अंक में प्रकाशित 'भारत के वीर बालक', 'प्यार पैसा और औरत' व 'अलौकिक व्यक्तित्व' को पढ़कर मन को अच्छा लगा। मैं स्वयं पुलिस (दिल्ली) आफिसर हूं। इतना व्यस्त रहने के बाद भी यह पत्रिका को खरीदकर जरूर पढ़ता हूं। यह पत्रिका बुलंदियों को छूये। यह मेरी शुभकामनाएं हैं।

— सुरेन्द्र बख्शी, नई दिल्ली

● 'मनोरम कहानियां' के मार्च अंक में प्रकाशित 'भारत के वीर बालक' बहुत उपयोगी और शिक्षाप्रद लेख है। यह अत्यंत गौरव की बात है कि प्रत्येक गणतंत्र दिवस के अवसर पर ऐसे वीर बालकों को भारत सरकार न केवल पुरस्कृत करती है, बल्कि उनकी पढ़ाई की भी व्यवस्था करती है। बच्चों द्वारा किये गये साहस और शौर्यपूर्ण कार्यों के लिए उन्हें पुरस्कृत करना वास्तव में आनेवाली पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक है। इस पत्रिका से यह भी पता चला कि साहसी और परोपकारी बच्चों को इस पुरस्कार के लिए कैसे शामिल किया जाता है। आपने सही लिखा है कि सरकार प्रतिवर्ष जितने भी वीर बालक-बालिकाओं को पुरस्कार देती है, वह उनकी वास्तविक संख्या नहीं होती। सचमुच गांव और शहरों में आये दिन ऐसी अनेकों घटनाएं घटती रहती हैं, जिनमें बच्चे कोई न कोई जोखिमपूर्ण कार्य कर गुजरते हैं। मगर बात सही मंच तक पहुंचने की है। जागरूकता और साधन-पैरवी के अभाव में गिने-चुने मामले ही प्रकाश में आ पाते हैं

— शिखा टंडन, लखनऊ

● 'मनोरम कहानियां' के मार्च अंक में प्रकाशित महान क्रांतिकारी को समर्पित एक उल्लेखनीय फिल्म 'वीर सावरकर' के बारे में पढ़कर बेहद खुशी हुई। वीर सावरकर पर फिल्म का निर्माण करके निर्माता सुधीर फड़के ने एक सराहनीय प्रयास किया है। अब तक हमने वीर सावरकर के बारे में सिर्फ किताबों में पढ़ा था, अब परदे पर देखकर दर्शकों को उनके बारे में जानकारी मिल सकेगी। सचमुच दो-दो अ कारावास की सजा भुगतने वाले एक क्रांतिकारी पर बनी यह फिल्म उनके प्र सच्ची श्रद्धांजलि ही समझी जाएगी।

— राजकुमार, क

● 'सात फेरों के लिए' कहानी के अंतर्ग वाजपेयी और रंजना केसरवानी की हरक बारे में पढ़कर मैं हतप्रभ रह गया। प दीवाने दोनों प्रेमी-प्रेमिका को जब शादी के लिए पैसे की जरूरत हुई, तो उन द अपने पड़ोसी की बच्ची को ही अपहृत धन जुटाने की योजना बना ली। प्रेमी तो प्रेमिका रंजना के दिल में भी यह डर पै हुआ कि अगर योजना सफल नहीं हुई औ खुल गयी, तो उसके बारे में लोग क्या और सचमुच हुआ भी ऐसा ही। वह न रही, न घाट की।

— शैलेन्द्र सिंह, उ

● 'मनोरम कहानियां' के मार्च अंक में प्र 'जवानों की आस्था का प्रतीक: तनोट मा मंदिर' के बारे में पढ़कर बेहद प्रसन्नत माता तनोट राय की चमत्कारी शक्तियों स राजस्थान परिचित है। यह अलग बात इनके बारे में बहुत कम लिखा-पढ़ा ग सांप्रदायिक आस्था और सद्भाव से परिपू देवी केवल हिन्दुओं की ही आराध्य नहीं ह सभी धर्म और संप्रदाय के लोग एक समान जाते हैं। तभी तो पाकिस्तानी सैन्य क ब्रिगेडियर शहनवाज खान को भी इस म सामने नतमस्तक होना पड़ा था। इस त महत्वपूर्ण लेख छापने के लिए आप बध पात्र हैं।

— शिवसागर, जैस

इस स्तंभ के लिए पाठकों के पत्र आम हैं। अपने विचार साफ और स्पष्ट शब्द निम्न पते पर लिखकर भेजें।

'आपने लिखा है'
भारतीय मनोरम कहानियाँ
7, डी.डी.ए. कमर्शियल सेंटर नंबर-
रोहिणी सेक्टर-1 दिल्ली-110085
फोन: 7273591, 7167059
फैक्स: 7167059

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामी विकास लूथरा ने शक्ति प्रिंटिंग प्रेस, 5ए/8, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 से मुद्रित तथा 7 डी.डी.ए कमर्शियल सेंटर नं. 5, सेक्टर-1, रोहिणी, दिल्ली-110 085 से प्रकाशित किया। सम्पादक: विकास लूथरा

सनसनीखेज सत्यकथाओं का एकमात्र मासिक

उदय सत्यकथा

मनोरम कहानियां का सह–प्रकाशन





सत्यकथा आकार में



प्रवेशांक

अप्रैल 2002

लूथरा पब्लिकेशंस की प्रस्तुति

Kawasaki Bajaj

bajaj auto ltd
Value for money, for years.



नई आकर्षक बजाज बॉक्सर CT. अविश्वसनीय माइलेज, आश्चर्यजनक क़ीमत.

पेश है, नए ज़माने की कावासाकी बजाज बॉक्सर CT. इसके रूप को बड़े प्यार से तराश कर निखारा गया है, जैसे- मल्टी-फ़ोकल रिफ़्लेक्टर के साथ इसका ख़ूबसूरत ऑप्टो-प्रिज़्म हेडलैंप, और आधुनिक अंदाज़ वाला स्पीडो-कॉनसोल. इतना ही नहीं, इसकी एक लीटर में 87 कि.मी. चलने की ख़ूबी, आकर्षक-आधुनिक रूप, 4-स्ट्रोक इंजन, आरामदायक सीट आदि कुछ ऐसी ख़ूबियाँ हैं, जिसपर हर कोई फ़िदा हो जाए. तभी तो सिर्फ़ 2 वर्षों में लगभग 4 लाख गाड़ियाँ बिक चुकी हैं. अब मंज़िल चाहे कितनी भी दूर हो मगर कावासाकी बजाज बॉक्सर CT. के हौसले पस्त होने वाले नहीं.

Kawasaki Bajaj BOXER

www.bajajauto.com

Leo Burnett B BAL 100362/01 HN



87 Km/litre — मानक परिस्थितियों में

4 stroke engine — बेहतर कार्यक्षमता के लिए

comfortable riding — सिरयानी फ्रंट फॉर्क-आरामदायक सफ़र के लिए

तराशा हुआ रूप * ऑप्टो-प्रिज़्म हेडलैंप * आकर्षक नया टैंक * नया टेल-लैंप और इंडिकेटर * आधुनिक स्पीडो-कॉनसोल